देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

9 772395 711007

Impact Factor
7.523

ISSN : 2395-7115
April 2023
Vol.-17, Issue-4(1)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

अतिथि सम्पादक :
डॉ. वर्षा रानी,
डॉ. नीलम यादव

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 17 ISSUE-4(1) (अप्रैल 2023) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

अतिथि सम्पादक :

डॉ. वर्षा रानी

संस्कृत विभाग,

डॉ. नीलम यादव,

भाषा विज्ञान विभाग,

डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविधालय, आगरा, उत्तर प्रदेश।

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल–एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)
डी.लिट् (मानद उपाधि), काठमांडू, नेपाल

विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक

टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर–335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा)

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL REFEREED/REVIEWED AND INDEXED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL
ISSN 2395-7115

सम्पादकीय सम्पर्क :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,
भिवानी–127021 (हरियाणा)
Email : nksihag202@gmail.com
मो. 09466532152

Published by :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board,
Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA
Email : grsbohal@gmail.com
Facebook.com/bohalshodhmanjusha
Website : www.bohalsm.blogspot.com
WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1100/-

Disclaimer :
1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

बोहल शोध मंजूषा परिवार*

मानद संरक्षक

प्रो. राधेमोहन राय
पूर्व उप प्राचार्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महा.,
अलवर, राजस्थान।

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
परीक्षा नियंत्रक,
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. विनोद तनेजा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
गुरूनानक वि.वि. अमृतसर
पंजाब।

सम्पादक मण्डल

सह सम्पादिका :
डॉ. रेखा सोनी
उप प्राचार्या, शिक्षा विभाग
टाटिया वि.वि. श्रीगंगानगर।

सह सम्पादिका :
डॉ. सुशीला आर्या
हिन्दी विभाग, चौ. बंसीलाल
विश्वविद्यालय, भिवानी।

प्रबंध सम्पादक :
समुन्द्र सिंह
भिवानी, हरियाणा।

विधि विशेषज्ञ

डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
जिला न्यायालय
भिवानी, हरियाणा।

अजीत सिहाग, एडवोकेट
पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट,
चंडीगढ़।

चरणवीर सिंह, एडवोकेट
जिला न्यायालय
पटियाला, पंजाब।

विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति

माई मनीषा महंत
किन्नर अधिकार ट्रस्ट
भूना, जिला कैथल, हरियाणा

डॉ. विश्वबंधु शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बाबा मस्तनाथ वि.वि. रोहतक

डॉ. संजय एल. मादार
विभागाध्यक्ष, पी.जी. केन्द्र
द.भा.हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

डॉ. गीता दहिया, प्राचार्या,
नैशनल टीटी कॉलेज फॉर गर्ल्स
अलवर, राजस्थान

डॉ. विनोद कुमार
हिन्दी विभाग, लवली प्रोफेशनल
यूनिवर्सिटी, पंजाब

डॉ. मो. रियाज़ खान
बीएमएस वूमैन कॉलेज आटोनोमेस
बेगलूरू

डॉ. कैलाशचन्द्र शर्मा 'शंकी'
पूर्व जि.शि.अधिकारी, च. दादरी

श्री सहदेव समर्पित
सम्पादक, शान्तिधर्मी, जीन्द

डॉ. अंजली उपाध्याय
उत्तर प्रदेश

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कालेज
धारवाड़, कर्नाटक

प्रो. अमनप्रीत कौर
गुरू तेग बहादुर खालसा कॉलेज
फॉर वूमैन, दसूहा, पंजाब

डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत विभाग, डॉ. भीमराव
आम्बेडकर, वि.वि., आगरा

प्रो. कमलेश चौधरी
राजकीय रणबीर महाविद्यालय
संगरूर, पंजाब

डॉ. किरण गिल
दीनदयाल टी.टी. महाविद्यालय
बारी, जिला सीकर, राज.

डॉ. सविता घुड़केवार
पीजी विभाग, दक्षिण भारत
हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

डॉ. परमजीत कौर
बरेली कॉलेज बरेली,
उत्तर प्रदेश।

डॉ. राजकुमारी शर्मा
नेपाल

डॉ. श्रीविद्या एन.टी.
श्री शंकराचार्य संस्कृत वि.वि.
केरल।

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
पी.जी.विभाग, दक्षिण भारत हिन्दी
प्रचार सभा, मद्रास

श्री राकेश ग्रेवाल
सन जॉस,
कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

डॉ. पंडित बन्ने
भारत महाविद्यालय,
सोलापुर (महाराष्ट्र)

डॉ. पायल लिल्हारे
अमरशहीद चंद्रेशेखर आजाद
शा.स्ना.महा. निवाड़ी, मध्यप्रदेश

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

डॉ. उमा सैनी
आई.ए.एस.ई. विश्वविद्यालय
सरदारशहर, राजस्थान

डॉ. मनमीत कौर
राधा गोविन्द वि.वि.,
रामगढ़, झारखण्ड।

डॉ. रीना उन्नीयाल तिवारी
शिक्षा संकाय,डी.ए.वी. पीजी
कालेज, देहरादून

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
डीन फिजिकल एजुकेशन
टांटिया वि.वि., श्रीगंगानगर,

डॉ. शबाना हबीब
त्रिवन्तपुरम, केरल

डॉ. शिवकरण निमल
राजस्थान

डॉ. राधाकृष्णन गणेशन
वाराणसी

डॉ. मानसिंह दहिया
हरियाणा

डॉ. नीलम आर्या
उत्तर प्रदेश

डॉ. रवि सुण्डयाल
जम्मू कश्मीर

प्रो. नरेन्द्र सोनी
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. रोहतास
डी.एन. कॉलेज, हिसार।

प्रो. सत्यबीर कालोहिया
पूर्व प्राचार्य

डॉ. इस्पाक अली
प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री
शिक्षा महाविद्यालय, बेंगलूरू

प्रो. रेखा रानी
गवर्नमेंट कॉलेज
संगरूर, पंजाब

डॉ. के.के. मल्हौत्रा
पूर्व विभागाध्यक्ष
गवर्नमेंट कॉलेज, गुरदासपुर

डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा
शासकीय महाविधालय,
लवकुश नगर, मध्य प्रदेश

डॉ. परमानन्द त्रिपाठी
एचओडी एजुकेशन, एल.एन.डी.
कालेज, मोतिहारी, बिहार

डॉ. करमजीत कौर
प्राचार्या, दशमेश गर्ल्स कॉलेज
चक आला, मुकेरिया, पंजाब

***सम्पूर्ण बोहल शोध मञ्जूषा परिवार/सम्पादक मण्डल अवैतनिक है।**

शोध–पत्र प्रकाशन के लिए निर्देश मंजूषा

गुगनराम सोसायटी (पंजीकृत) द्वारा शोधार्थियों व अध्येताओं के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों को प्रोत्साहित करने हेतू बोहल शोध मंजूषा ISSN 2395-7115 नामक बहुभाषिक अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य, मानविकी, प्रबंध, प्रौद्योगिकी, विधि, भूगोल, शिक्षा, पत्रकारिता पर केन्द्रीत इस शोध पत्रिका को विषय विशेषज्ञों तथा मनीषी विद्वानों की सक्रिय सहभागिता प्राप्त है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 1100 रु. है।

आप अपना शोध पत्र कम्प्यूटर से मुद्रित फोन्ट साईज 14, कृतिदेव–10, कृतिदेव–21 में व अंग्रेजी के Arial, Times New Roman में पेज मेकर या माइक्रोसोफ्ट वर्ल्ड में हमारी Email ID : grsbohal@gmail.com पर भेजें। शोध पत्र प्रेषित करने से पूर्व दिये गये सन्दर्भ, मात्रा आदि की पूर्णतया जाँच कर लें।

नोट :– उर्दू, पंजाबी आदि भाषा के शोध पत्र पेपर साईज 7x9.5 पर टाईप कराकर JPG या PDF फाईल हमारी ईमेल आई.डी. पर भेज सकते हैं।

हमारी पत्रिका में शोध पत्र लेखक के फोटो सहित प्रकाशित किये जाते हैं। इसलिए आप अपने शोध पत्र के साथ पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ, सम्पर्क सूत्र; टेलीफोन, मोबाईल नं., ई–मेल तथा पिनकोड सहित पत्र व्यवहार का पूरा पता (हिन्दी व अंग्रेजी) कम्प्यूटर द्वारा टाईप करवाकर भेजें।

शोध पत्र 2000–2500 शब्दों (4–6 पेज) से अधिक नहीं होनी चाहिए, यदि शब्द सीमा अधिक होती है तो सम्पादक को अधिकार होगा यथा स्थान संक्षिप्तीकरण कर दें। अस्वीकृत शोध पत्र की वापसी संभव नहीं है।

पत्रिका में प्रकाशित श्रेष्ठ शोध पत्र को हमारी सोसायटी/पत्रिका की ओर से बहुउपयोगी श्रीमती गिना देवी शोधश्री सम्मान प्रदान किया जायेगा।

शोध पत्र में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के विचार हैं। उनसे सम्पादक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है। शोध पत्र में प्रयुक्त किए गए तथ्यों के प्रति संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। पत्रिका में शोध आलेख प्रकाशन के लिए भेजने से पहले सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना लेखक का दायित्व है। प्रत्येक विवाद का न्यायक्षेत्र भिवानी (हरियाणा) होगा।

सम्पादकीय पद अव्यावसायिक और अवैतनिक हैं। पत्रिका में केवल शोध पत्र ही प्रकाशनार्थ भेजें। शोध पत्र का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय व प्रकाशित समस्त शोध पत्रों का सर्वाधिकार समिति/सम्पादक के पास सुरक्षित होगा।

नोट :

सहयोग/सदस्यता राशि 1100/– रू. का ड्राफ्ट/चैक/आई.पी.ओ. 'गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी' के नाम भेजें तथा ऑनलाईन बैंक में सहयोग जमा राशि की रसीद की फोटोप्रति अपने आलेख के साथ हमें मेल कर सूचित करने का कष्ट करें ताकि समय पर रसीद भेजी जा सके। ऑनलाईन सहयोग राशि के साथ 50/– रू. अतिरिक्त अवश्य जमा करवायें। प्रकाशन सहयोग शुल्क वापिस देय नहीं।

बैंक का नाम	:	**पंजाब नैशनल बैंक, हालु बाजार, भिवानी (हरियाणा)**
खाता धारक का नाम	:	**गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी**
बैंक खाता संख्या	:	**1182000109078119**
IFSC Code	:	PUNB0118200
MICR CODE	:	127024003

अप्रैल 2023

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. वर्षा रानी	9–9
		डॉ. नीलम यादव,	10–10
2.	शुभकामना संदेश		11–13
3.	मृदा का कृषि पर प्रभाव : एक भौगोलिक अध्ययन	डॉ० वेदप्रकाश	14–20
4.	छत्तीसगढ़ी कहानियों में पारिवारिक यथार्थ	शशि पाण्डेय,	
		डॉ. हीरा लाल शर्मा	21–24
5.	भारतीय योग्श्च दर्शनं	डॉ. कैलाश चन्द्र बुनकरः	25–31
6.	ਪੰਜਾਬੀ ਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦਾਮੁੱਢਲਾਇਤਿਹਾਸ	ਡਾ. ਪਰਮਜੀ ਤਕੋਰ 'ਪਾਹੁਲ'	32–40
7.	माघ का प्रकृति चित्रण	मधुबाला मीना	41–45
8.	दयालबाग़ का पूर्ण शिक्षा की दिशा में अवदान	डॉ. निशीथ गौड़	46–50
9.	कबीर – ना हिंदू ना मुसलमान	श्रवण कुमार यादव	51–58
10.	शैक्षणिक संस्थाओं में कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन	डॉ. राजश्री	59–66
11.	An Infertile Girl of Delhi Diagnosed with Vaginal Agenesis: A Psychosocial Case Study	Dr. Shashi Punam, Yogesh Kumar	67-72
12.	उत्तर प्रदेश का पत्रकारिता में योगदान	डॉ. जगदीश चन्द्र जोशी	73–75
13.	राजस्थान के लोक मृण्मय मोलेला फलकों का कलात्मक अध्ययन	Neelam Kumari, Prof. Meenakshi Thakur	76-81
14.	हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श (स्त्री स्थान : मान पर)	Dr. H. R. PUTTANNA	82-85
15.	नक्सलवाद के नाम पर आदिवासियों की सरकारी हत्या	डॉ० ममता कुमारी बाड़ा	86–88
16.	कुँडुख़ साहित्य में झारखण्ड की संस्कृति	चाँदनी कुमारी	89–91
17.	संजीव के उपन्यासों में आदिवासी समाज का चित्रण	श्वेता जायसवाल	92–97
18.	श्री जगन्नाथ : सेवा एवं सेवक	डॉ. प्रताप केशरी होता	98–105
19.	SANJAY LEELA BHANSALI : AN AUTEUR AND ARCHITECT	DEVANSHI MEHTA	106-113
20.	नंगातलाई का गाँव में उत्तर प्रदेश की संस्कृति का प्रतिबिम्बन	श्वेता सिंह	114–118

21.	विश्व सिनेमा में स्त्री अस्मिता का संघर्ष	डॉ. कनक लाता रिद्धि	119–123
22.	Cultural Criminology	Sanjeev Kumar Nimesh, Kumar Vivek Kant	124-129
23.	जनसंचार में हिन्दी भाषा की भूमिका	सुमेध आनन्द	130–135
24.	योग मार्तण्ड में मंत्र योग विमर्श	वसुंधरा	136–140
25.	महिला सशक्तिकरण एवं राजनीतिक सहभागिता : उत्तर प्रदेश के जनपद संभल में ग्राम पंचायतों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	कविता चौधरी सांगवान	141–148
26.	बहुमुखी रचनाकार गुलजार	राकेश कुमार, डॉ. पूनमलता मिड्डा	149–156
27.	हिन्दी में कम्प्यूटर का कार्य क्षेत्र	शिबानी राजभूषण	157–161
28.	21वीं सदी में भारतीय महिलाओ कें समक्ष चुनौतियां	Devkaran Ram Hudda	162-168
29.	Disturbances in American Society due to Second World War : A Study of the Works of Edward Albee	Dr. Ashok Kumar	169-175
30.	विधि विरूद्ध बालकों के मानवाधिकारों के परिप्रेक्ष्य में कोविड–1 महामारी की प्रभावशीलता	Devkaran Ram Hudda	176-181
31.	Opportunities for Exchanging Sports Bowling Management Skills in Career of Youth Cricketers in Bikaner Region	Jitender Singh, Dr. Braj Kishor Choudhary	182-185

अतिथि सम्पादक की कलम से.....

''गुरोराज्ञा महापूजा गुरोराज्ञा महोत्सवः।
गुरोराज्ञा सदा मान्या कंठैः प्राणगतैरपि''।।

– अना. महा. पेज नं. – 170

संस्कृत साहित्य में ज्ञान–विज्ञान, कला, संस्कृति, वाणिज्य, मानविकी, चिकित्सा, नीति–रीति, राजनीति इत्यादि सब कुछ समाहित है। संस्कृत अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन भाषाओं की जननी है यह सभी भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी की भूमिका निर्वहन करती है वहीं दूसरी ओर हिंदी सर्वप्रिय पुष्प बेल है। दोनों ही भाषाएं विश्व बंधुत्व एवं प्राणी मात्र के कल्याण के उपदेशों से संपूर्ण मानव जाति को अपने सुभाषित संदेशों से उद्‌बोधित करती चली आ रही है। इस ज्ञान–विज्ञान, साहित्य एवं संस्कृति के आदान–प्रदान का माध्यम पूर्व में गुरूपदेश अनंतर पुस्तक हुआ करती थी। आधुनिक युग में लेखक और पाठक के मध्य पत्र–पत्रिकाएं सेतु का कार्य कर रही है तो वहीं अत्याधुनिक तकनीकी साधन जैसे ई– पुस्तकालय, ई–पत्रिका, व्हाट्सएप, ट्विटर, टेलीग्राम, फेसबुक, गूगल, जूम एप, यूट्यूब इत्यादि ने लेखकों, पाठको, शोधार्थियों को अत्याधिक सहायता प्रदान की है।

इसी श्रृंखला में विगत कई वर्षों से बोहल शोध मंजूषा अनुसंधान के क्षेत्र में नवीन आयामों के नए कीर्तिमान स्थापित करते हुए लेखकों एवं शोधार्थियों की मूर्त संकल्पनाओं को जीवंत कर शैक्षिक क्षेत्र में अपना स्थान बनाए हुए है। वर्तमान अंक के लिए हमें बड़ी संख्या में शोधालेख प्राप्त हुए थे परन्तु पत्रिका के वृहद क्लेवर को ध्यान में रखते हुए इसे दो अंकों में प्रकाशित किया जा रहा है। संपूर्ण भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों के शोधार्थियों एवं प्राध्यापकों ने इस विशेषांक के लिए अपने शोधालेख भेज कर हमें जो सहयोग दिया है उसके लिए हम उनका हृदयतल से धन्यवाद करते हैं प्आप सभी के सहयोग के बिना अंक की कल्पना अधूरी थी और आशा करते हैं कि भविष्य में भी हमें आप सभी का सहयोग लगातार मिलता रहेगा।

मैं आदरणीया पद्‌मश्री प्रो. उषा यादव जी को धन्यवाद करती हूं जिन्होंने अपने आशीर्वाद स्वरुप शुभकामना संदेश भेज कर हमें प्रोत्साहित किया।

मैं आदरणीया प्रो. डॉ. विनीता सिंह डीन अनुसंधान, डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय आगरा एवं आदरणीय प्रो. प्रदीप श्रीधर निदेशक के.एम. इंस्टिट्यूट, डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा का भी धन्यवाद करती हूं जिन्होंने अपने व्यस्त समय में से समय निकालकर प्रस्तुत अंक के लिए शुभकामना सुमन भेजकर हमें ऊर्जस्वित किया।

–डॉ. वर्षा रानी
संस्कृत – विभाग
डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

अतिथि सम्पादक की कलम से.....

बोहल शोध मंजूषा के अप्रैल–२०२३ के विशेषांक में सम्मिलित आलेख सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनितिक, प्रकृति, मनोरंजन, पेशा अथवा किसी विभूति पर आधारित ज्ञान मंचन हैं, जिससे यह विशेषांक अपनी सार्थकता सिद्ध करता है।

किसी भी शोधलेख को लिखते हुए एक अनुसंधान कर्ता को निर्धारित मानदंडों का अनुकरण करना पड़ता है, निर्धारित विषय के सभी पहलुओं की गहराई में उतरना और उसके अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डालना ही किसी शोधालेख की सार्थकता होती है, इसमें कोई संदेह नहीं की प्रस्तुत विशेषांक के सभी आलेखों ने ऐसे ही पहलुओं को उजागर करने में अपनी भूमिका निभाई है। इस विशेषांक में जो भी आलेख सम्मिलित हैं, निश्चित रूप से उन्होंने निर्धारित मानदंडों का निर्वहन किया है एवं बोहल शोध मंजूषा के अप्रैल–२०२३ के अंक का भाग बने हैं।

प्रस्तुत विशेषांक निस्संदेह एक साहित्यिक प्रस्तुतीकरण है। मुझे आशा है कि पाठक इस विशेषांक के साहित्यिक पक्ष से अवश्य लाभान्वित होंगे।

–डॉ. नीलम यादव,
भाषाविज्ञान विभाग,
डॉ. बी.आर. अंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा (उ.प्र.)

शुभकामना–संदेश

शोधार्थियों के शोध/अनुसंधान की गतिविधियों के प्रोत्साहन हेतु बहुभाषिक अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका बोहल का वैश्विक महत्व हमारे सामने है। हर अंक की भाँति इसका अप्रैल 2023 अंक भी ज्ञान–विज्ञान के अछूते पहलुओं को प्रकाशित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगा। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि अंक में संग्रहीत शोध आलेख अपने विषय–वैविध्य, मौलिक चिंतन, गांभीर्य और शिल्प सौष्ठव से अंक को संग्रहणीय बनाएंगे। संपादन कला की गुणवत्ता के प्रति मैं आश्वस्त हूँ। अंक की सफलता के लिए मेरी अनन्त मंगलकामनाएँ।

–पद्मश्री उषा यादव

शुभकामना–संदेश

शोध और अनुसंधान की दिशा में गुगनराम एजुकेशनल एंड सोशल वेलफेयर सोसाइटी द्वारा बोहल शोध मंजूषा का एक बहुभाषिक शोध पत्रिका के रूप में प्रकाशन एक समसामयिक एवं सकारात्मक प्रयास है। इस शोध पत्रिका का अप्रैल 2023 का अंक इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। मानव ज्ञान की सभी शाखाओं यथा कला, संस्कृति, मानविकी प्रबंध, प्रौद्योगिकी आदि सभी विषयों के शोध पत्रों को यह पत्रिका एक मंच प्रदान करने के साथ–साथ उनकी एक अंतरराष्ट्रीय उपलब्धता भी सुनिश्चित करती है, साथ ही भविष्य में सभी विषयों की पारस्परिक संबद्धता के समसामयिक संदर्भ को अनवरत गति प्रदान करती रहेगी।

बोहल शोध मंजूषा का अप्रैल 2023 का अंक अनुसंधान के विकास की संभावना से परिपूर्ण है। उक्त संदर्भ में मेरी समस्त शुभकामनाएं।

प्रो. विनीता सिंह
अधिष्ठाता अनुसंधान
डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

शुभकामना–संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि डॉ. नीलम यादव जी और डॉ. वर्षा रानी जी ने बोहल शोध मंजूषा अंतर्राष्ट्रीय बहुभाषी शोध पत्रिका की कार्यकारिणी की अनुशंसा पर अप्रैल 2023 अंक की अतिथि संपादक के रूप में कार्य करते हुए इस अंक का कुशल संपादन किया। बोहल शोध मंजूषा अत्यंत उच्च श्रेणी की पीयर रिव्यूड पत्रिका है जो साधारण जनमानस के साथ–साथ अनुसंधान के क्षेत्र में शोधार्थियों को बहुभाषिक शोध विषय, शोध का क्षेत्र, शोध की विधियों के साथ–साथ नवीन शोध कार्य के लिए प्रेरित करती है। पत्रिका की भाषा का स्तर भी उच्च कोटि का है।

मैं बोहल शोध मंजूषा की कार्यकारिणी, प्रधान संपादक, अतिथि संपादक और विभिन्न विषयों के शोधार्थियों, प्राध्यापकों जिन्होंने उच्च कोटि के शोध आलेख प्रेषित किए हैं उन सभी को हृदय से शुभकामनाएं देता हूं।

प्रो. प्रदीप श्रीधर

डायरेक्टर, के. एम. आई.

डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा।

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 14-20

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

मृदा का कृषि पर प्रभाव : एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ० वेदप्रकाश
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष – भूगोल
किसान (पी०जी०) कॉलेज सिम्भावली जनपद हापुड़, उत्तर प्रदेश।

शोध पत्र सारांश :–

इस शोध लेख में कृषि पर मिट्टी के प्रभाव का एक भौगोलिक अध्ययन किया गया है। पृथ्वी की सतह का कोई भी हिस्सा जो पानी से ढका नहीं है, उसे भूमि कहा जाता है। भूमि सतह को संदर्भित करती है, जिसकी घटक मिट्टी, वनस्पति और परिदृश्य आकार की विशेषता है। भूमि एक आर्थिक वस्तु है जिसका मूल्य है और इसके स्वामित्व को खरीदा और बेचा और हस्तांतरित किया जाता है। यह राष्ट्र की अमूल्य संपत्ति है। भूमि को क्षेत्र की इकाइयों में मापा जाता है जैसे रू एकड़, हेक्टेयर, बीघा या नाली। भूमि तीन प्राकृतिक संसाधनों में से एक है, अन्य दो पानी और हवा हैं, जो इस पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व के लिए आवश्यक है। भूमि आवश्यक मानव गतिविधियों के लिए एक अनिवार्य संसाधन है। यह कृषि और वन उत्पादन, जल संचयन, मनोरंजन और आवास के लिए आधार प्रदान करता है। यही कारण है कि एक राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपनी मातृभूमि पर गर्व करता है और इसके संरक्षण के लिए जिम्मेदार है। कृषि के अलावा, भूमि के कई उपयोग हैं जैसे कि जंगलों, चरागाहों, मनोरंजक सुविधाओं, बाहरी संरचनाओं , सड़कों आदि। भूमि किसान की स्थायी आजीविका के लिए सबसे मूल्यवान संसाधन है। वह भूमि की जुताई करता है और उस पर खाद्य फसलें, फल, सब्जियां और अन्य फसलें उगाता है। प्रकृति और उपयोग के आधार पर, भूमि की कई किस्में हैं जैसे कृषि भूमि जिस पर मौसमी , वार्षिक या बहुवर्षीय फसलें जैसे बाग लगाए जाते हैं।

परिचय :–

मिट्टी पृथ्वी की ऊपरी परत है जो पौधे के विकास के लिए एक प्राकृतिक माध्यम प्रदान करती है। पृथ्वी की यह ऊपरी परत खनिज कणों और कार्बनिक पदार्थों का एक विशाल मिश्रण है जो कई लाखों वर्षों में बनी है और इस धरती पर जीवन के बिना अस्तित्व में आना असंभव है। भूमि के अभिन्न घटक के रूप में मिट्टी जीवन समर्थन प्रणाली का एक घटक है। भूमि की उपयोगिता

मिट्टी के प्रकार पर निर्भर करती है। इस कारण से, जनता मिट्टी और मिट्टी के बीच किसी भी अंतर पर विश्वास नहीं करती है, लेकिन वैज्ञानिकों का मानना है। वनस्पति के बिना एक भूमि पर, आप पहली नजर में मिट्टी को देख सकते हैं लेकिन घने जंगल में, इस प्रकार की मिट्टी दिखाई नहीं देती है क्योंकि मिट्टी की सतह गिर पत्तियों से ढकी हुई है। पौधे की वृद्धि को समर्थन देने के लिए मिट्टी एक महत्वपूर्ण संसाधन है। विभिन्न खेतों की मिट्टी उनकी उपस्थिति, विशेषताओं और उत्पादकता में उनके मूल और प्रबंधन के अनुसार भिन्न हो सकती है, लेकिन वे सभी कृषि और खाद्य सुरक्षा, वानिकी, पर्यावरण संरक्षण और जीवन की गुणवत्ता में समान रूप से महत्वपूर्ण कार्य करते हैं। मृदा को कृषि की उपयोगिता के दृष्टिकोण से परिभाषित किया जा सकता है।

" मिट्टी एक प्राकृतिक तत्व है जो चट्टानों के अपक्षय के परिणामस्वरूप विकसित होता है, इसमें भौतिक, रासायनिक और जैविक गुण होते हैं और पौधे के विकास और विकास के लिए एक माध्यम प्रदान करते हैं। "

मिट्टी की उर्वरता घटने के कारक :–

1. रासायनिक उर्वरकों का अनुचित और असंतुलित उपयोग :–

कृषि में रासायनिक उर्वरकों का अनुचित और असंतुलित उपयोग मिट्टी की उर्वरता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। रासायनिक उर्वरक इतने असंतुलित होते जा रहे हैं कि अब दुष्प्रभाव दिखने लगे हैं। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश, पौधों के लिए तीन मुख्य पोषक तत्व, देश के कई कृषि क्षेत्रों में अनिश्चित अनुपात में उपयोग किए जा रहे हैं। हमारे देश में पिछले वर्षों में नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश का अनुपात 9 : 3 : 1 रहा है, जो बहुत असंतुलित है। मुख्य रूप से फसल में नाइट्रोजन प्रदान करने वाले रासायनिक उर्वरकों के बढ़ते उपयोग से मिट्टी में कुछ गौण और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी हो रही है, जिससे मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। वहीं, फसलों की गुणवत्ता और पैदावार भी घट रही है।

2. दोषपूर्ण सिंचाई प्रणाली :–

मिट्टी की उर्वरता में कमी हमारे देश में एक चिंता का विषय है। दोषपूर्ण सिंचाई प्रणाली प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसके लिए जिम्मेदार है। आज, किसान बिना किसी समझ के देश के कई हिस्सों में सिंचाई के पानी का उपयोग कर रहे हैं। परिणामस्वरूप, कृषि में उत्पादन की लागत न केवल बढ़ जाती है, बल्कि मिट्टी की उर्वरता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। सिंचाई के पानी के अनियमित और अनियंत्रित उपयोग से पानी का ठहराव , मिट्टी की लवणता, पोषक तत्वों की हानि, मिट्टी की उर्वरता में कमी और मिट्टी का कटाव जैसी समस्याएं पैदा हो

रही हैं। खेत के उस हिस्से की भौतिक स्थिति जिसमें सिंचाई का पानी लंबे समय तक भरा रहता है, खराब हो जाता है। मिट्टी की संरचना गंभीर रूप से विकृत है। आखिरकार, मिट्टी की उत्पादकता और उर्वरता में काफी गिरावट आती

3. गहन फसल प्रणाली / मिट्टी का अनुचित और अत्यधिक दोहन :–

वर्तमान में, गहन फसल प्रणाली के तहत मिट्टी के अनुचित और अत्यधिक दोहन के कारण मिट्टी की उर्वरता कम हो रही है जो फसल की उपज पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही है। प्रत्येक फसल के बाद भूमि में पोषक तत्वों की कमी होती है, जिसकी भरपाई करना बहुत जरूरी है अन्यथा मिट्टी की उर्वरता, मिट्टी की उर्वरता और उत्पादकता घट जाती है। मिट्टी में नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश का अनुपात उच्च उपज वाले बौने, अर्ध . बीज और फसलों की संकर किस्मों की निरंतर खेती के कारण बिगड़ रहा है। फसलों को विभिन्न पोषक तत्वों की अलग – अलग मात्रा की आवश्यकता होती है। किसी एक पोषक तत्व की कमी को दूसरे तत्व की आपूर्ति से पूरा नहीं किया जा सकता है। उत्तर पश्चिम भारत में धान – गेहूं के फसल चक्र के तहत, न केवल मिट्टी में कार्बनिक कार्बन की मात्रा कम हो जाती है, बल्कि कुछ सूक्ष्म पोषक तत्वों जैसे जस्ता, लोहा और बोरान की भी कमी होती है।

4. खेती में कृषि रसायनों का बढ़ता उपयोग :–

पिछले कई दशकों में, जहरीले कृषि रसायनों जैसे जड़ी – बूटी, कीटनाशकों और संयंत्र नियामकों के अत्यधिक और असंतुलित उपयोग से मिट्टी की उर्वरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। उपर्युक्त रसायनों के उपयोग से खरपतवार, कीट और रोग नियंत्रित होते हैं, लेकिन ये जहरीले कृषि रसायन मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं, जिससे मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है। आज किसानों को इन रसायनों के उपयोग का सही ज्ञान नहीं होने के कारण उपजाऊ भूमि बंजर भूमि में बदल रही है। साथ ही, मिलावटी और नकली कृषि रसायनों के उपयोग के कारण मिट्टी की उर्वरता कम हो रही है।

5. निम्न गुणवत्ता वाले सिंचाई जल :–

खेती में सिंचाई का पानी बहुत महंगा उपकरण है, जिसके कारण लागत और उपज का अनुपात असंतुलित हो रहा है। कछुआ क्षेत्रों के पानी को देखना और पीना सही लगता है, लेकिन वास्तव में यह मिट्टी और फसलों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। फसल के उत्पादन में लंबे समय तक इस तरह के पानी के लगातार उपयोग के कारण , पहले तो उपज धीरे – धीरे कम होने लगती है और बाद में भूमि बांझ हो जाती है। नमक या खारे पानी से सिंचाई करने से मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता

है। इस तरह खारे और कम गुणवत्ता वाले पानी के उपयोग से खेती योग्य भूमि की उर्वरता लगातार कम हो रही है। लंबे समय तक खारे पानी से सिंचाई करने पर बीजों का अंकुरण कम हो जाता है। पौधों की प्रारंभिक अवस्था में, विकास कम होता है और पौधे छोटे रहते हैं। इसलिए निम्न गुणवत्ता वाला पानी मिट्टी की उर्वरता के लिए हानिकारक है ।

6. सतह और भूजल का अत्यधिक दोहन :–

सिंचित क्षेत्रों में सतह और भूजल के अनुचित और अत्यधिक दोहन के कारण जल स्तर लगातार गिर रहा है जो भूमि की उर्वरता और फसलों की उत्पादकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है। अंधाधुंध सिंचाई और फसलों में सिंचाई बढ़ाने से न केवल पानी की बर्बादी होती है, बल्कि उत्पादन की लागत भी बढ़ जाती है। वर्तमान परिवेश में, गहन फसल प्रणाली और मशीनीकरण के कारण भूजल पर दबाव इतना बढ़ गया है कि भूमिगत जल स्तर दिन–ब–दिन गिरता जा रहा है। खेती में पारंपरिक सिंचाई प्रणालियों का उपयोग किया जा रहा है जिसमें खेतों में सिंचाई का पानी भर गया है। इससे बहुत सारा पानी यहाँ चला जाता है या मिट्टी में रिसने से।

7. जैविक खादों का कम उपयोग :–

आजकल कृषि में पशुधन की संख्या कम हो रही है। पहले, खेती बैलों पर निर्भर थी। खेती के मशीनीकरण के कारण पूरे गाँव में बैलों की जोड़ी नहीं है। जिसके कारण खेतों में गोबर की खाद और पशुओं के उत्सर्जन का बहुत कम उपयोग किया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप मिट्टी में जीवाणु पदार्थ की कमी होती है। इसके अलावा, फसल चक्र में दलहन और फसल अवशेषों का समावेश कम बार किया जा रहा है। किसान बहुउद्देशीय पौधों की पत्तियों का उपयोग खाद के बजाय ईंधन के रूप में कर रहे हैं। आधुनिक खेती में, जैविक उर्वरकों और रासायनिक उर्वरकों का संयोजन बिगड़ रहा है। खाद खाद और हरी खाद के बजाय, एकल तत्व उर्वरकों का उपयोग बढ़ रहा है, जिसका सीधा प्रभाव मिट्टी की उर्वरता पर पड़ता है। इस प्रकार, मिट्टी में जीवाणु पदार्थ की कमी के कारण कई लाभकारी जीवाणुओं की संख्या कम हो रही है। ये लाभदायक सूक्ष्मजीव मिट्टी अपघटन और अपघटन में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, जो अंततः मिट्टी की उर्वरता के लिए घातक साबित होते हैं।

8. कृषि भूमि का बिगड़ता स्तर :–

ट्रैक्टर और भारी मशीनरी की खेती में, लकीरें सुरक्षित नहीं हैं, जिसके कारण अधिकांश वर्षा जल को धोया जाता है और नष्ट हो जाता है। इसी समयएलों को दिए जाने वाले पोषक तत्वों का एक बड़ा हिस्सा भी बारिश के पानी से

धुल जाता है। कृषि के मशीनीकरण के कारण, कृषि भूमि का स्तर बिगड़ रहा है जिसके कारण पूरे क्षेत्र में सिंचाई के पानी और पोषक तत्वों का वितरण समान रूप से नहीं किया जाता है। अधिकांश किसान खेतों की समतलता के महत्व को नजरअंदाज कर देते हैं, ताकि पूरे खेत में मिट्टी की उर्वरता और उत्पादकता समान न रहे।

9. फसल की औसत उपज :-

कृषि भूमि की बढ़ती हुई खरपतवार पिछले कई वर्षों से, कृषि भूमि में खरपतवार बढ़ रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप कृषि भूमि की उर्वरता और उत्पादकता कम हो रही है। कृषि भूमि में खरपतवारों का बढ़ता प्रकोप एक बड़ी समस्या है जो स्वचालित रूप से विभिन्न समस्याओं को जन्म देती है। ये खरपतवार फसल में दिए गए पानी और पोषक तत्वों का शोषण करते हैं, जिससे फसलों की गुणवत्ता, उपज और मिट्टी की उर्वरता कम हो जाती है। इस प्रकार किसान को उसकी फसल के अपेक्षित लाभ नहीं मिलते हैं। कुछ खरपतवारों में जहरीले रसायनों की मौजूदगी मिट्टी में मौजूद उपयोगी सूक्ष्मजीवों की संख्या को काफी कम कर देती है, जिसकी अनुपस्थिति में पौधों को पोषक तत्वों और खनिज लवणों का एक बड़ा हिस्सा उपलब्ध नहीं होता है। अंततः खेती योग्य भूमि की उर्वरता कम हो जाती है।

10. मृदा अपरदन :-

मिट्टी में अधिकांश पोषक तत्व, कार्बनिक पदार्थ और कीटनाशक ऊपरी मिट्टी में शामिल हैं। पृथ्वी की ऊपरी मिट्टी का आधा हिस्सा पिछले 150 वर्षों में कम हो गया है। मानव गतिविधियों से मिट्टी का क्षरण तेजी से बढ़ा है। जबकि पानी का कटाव नम क्षेत्रों में ढलान और पहाड़ी इलाकों की समस्या है, जबकि हवाई कटाव शुष्क, तूफानी क्षेत्रों के चिकनी और सपाट इलाके की समस्या है। मृदा अपरदन के तंत्र में मृदा कणों का शिथिलीकरण और पृथक्करण और पृथक मृदा का परिवहन शामिल है। मिट्टी की ऊपरी सतह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्राकृतिक स्रोत है। यह सतह पौधों को बढ़ने में मदद करती है। बारिश के मौसम में, लाखों हेक्टेयर उपजाऊ भूमि को काटकर अनियंत्रित पानी बंजर हो जाता है। हर साल बारिश के पानी से कई सौ मिलियन टन मिट्टी नष्ट हो जाती है, जिससे मिट्टी की उर्वरता और उर्वरता कम हो रही है। कुछ किसान भाई नहरों या नलकूपों का पानी सीधे अपने खेतों में खोलते हैं, जिससे मिट्टी के मजबूत कण बह जाते हैं। इस प्रकार एक ओर उपजाऊ भूमि का ह्रास होता है और दूसरी ओर सिंचाई के पानी के बहाव से कृषि उत्पादन का महत्वपूर्ण घटक नष्ट हो जाता है। किसानों की लापरवाही के कारण सैकड़ों वर्षों से खेतों में जमा उपजाऊ मिट्टी बारिश से बह जाती है। उपजाऊ कृषि भूमि की ऐसी अवमानना कृषि देश के लिए

उचित नहीं है।

मृदा संरक्षण :–

मृदा संरक्षण के लिए निम्नलिखित उपाय बहुत उपयोगी साबित हो सकते हैं।

1. **वृक्षारोपण :–** वृक्षारोपण मिट्टी के कटाव को कम करता है। पेड़ न केवल मिट्टी की ऊपरी उपजाऊ परत को पानी से या हवा के बहाव से जमा होने से रोकते हैं, बल्कि वे पानी के रिसाव को बेहतर ढंग से व्यवस्थित करके मिट्टी में नमी और पानी के स्तर को बनाए रखने में मदद करते हैं।

2. **पेड़ की कटाई पर प्रतिबंध :–** वृक्षारोपण के अलावा , पेड़ों की निर्बाध कटाई को नियंत्रित करने की आवश्यकता है। चिपको आंदोलन जैसे जागरूकता अभियानों द्वारा पेड़ों और जंगलों के महत्व को प्रचारित और प्रसारित किया जाना चाहिए।

3. समोच्च जुताई और सीढ़ी खेतों को बनाकर ढलानों की खेती करें।

4. **बाढ़ नियंत्रण :–** भारत में मिट्टी का कटाव बाढ़ से निकटता से संबंधित है। आमतौर पर बाढ़ बारिश के मौसम में होती है। इसलिए, वर्षा जल के भंडारण से अतिरिक्त जल निकासी बहुत उपयोगी हो सकती है।

5. **गुल्म का क्षरण :–** मिट्टी के क्षरण की समस्या के निदान के लिए बीहड़ों और रवाइन का पुनर्ग्रहण एक आवश्यक कार्य है। चंबल नदी की कृषि योग्य भूमि को कृषि योग्य बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

6. **हस्तांतरणीय कृषि पर प्रतिबंध :–** भारत के उत्तर पूर्व के पहाड़ी राज्यों में , कई किसान जंगलों को जलाते हैं और खेती करते हैं, जिससे वन संपदा को भारी नुकसान होता है।

7. परती भूमि को कृषि के अंतर्गत लाया जाना चाहिए।

8. खारा और क्षारीय मिट्टी को फिर से उपयोगी बनाया जाना चाहिए।

9. नहरों, नदियों और समुद्र के किनारों को कटने से रोकने के लिए विशेष उपाय किए जाने चाहिए।

10. कृषि में जैविक खाद का अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए। गोबर और हरी खाद को लोकप्रिय बनाया जाना

सुझाव और निष्कर्ष :–

वर्तमान परिवेश में बढ़ते शहरीकरण, औद्योगीकरण और आधुनिकीकरण के कारण कृषि योग्य भूमि का क्षेत्र दिन – प्रतिदिन घटता जा रहा है। भविष्य में इसके बढ़ने की संभावना नहीं है। देश की बढ़ती आबादी को खाद्यान्न की आपूर्ति करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का आवश्यकता से अधिक दोहन किया जा रहा है। जिसका परिणाम आज हम देख रहे हैं कि भूमि उत्पादकता, गिरते भूजल स्तर, घटते जल स्रोतों, घटते जैव विविधता, सूखे, बाढ़ और जलवायु परिवर्तन में कमी आ रही है।

यदि हम समय पर मुख्य रूप से मिट्टी और जल संरक्षण के प्राकृतिक संसाधनों पर विशेष जोर नहीं देते हैं, तो भविष्य में भोजन की गंभीर समस्या का सामना करना पड़ सकता है। इस संबंध में, मिट्टी की उर्वरता और उत्पादकता बढ़ाने में सटीक खेती महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। सटीक खेती सूचना प्रौद्योगिकी पर आधारित कृषि विज्ञान की एक आधुनिक अवधारणा है जो पर्यावरण के अनुकूल है, किसानों के लिए उपयोगी है और उत्पादन बढ़ाने के लिए संभावनाओं के साथ – साथ प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव को कम करने में मदद करती है। यह क्षेत्र की स्थानीय जानकारी प्राप्त करने के लिए जीआईएस, जीपीएस, रिमोट सेंसिंग सिस्टम और सूचना प्रौद्योगिकी जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग करता है।

उपरोक्त सभी तंत्रों से जानकारी एकत्र करके लागत उपकरणों की मात्रा निर्धारित की जाती है। सटीक खेती को स्थान विशेष कृषि के रूप में भी जाना जाता है। इसमें कॉस्टिंग टूल्स का अत्यधिक उपयोग किया जाता है। सटीक खेती में, लागत वाले उपकरण जैसे खाद और उर्वरक, सिंचाई, कीटनाशक और शाकनाशियों आदि का उपयोग केवल उसी स्थान पर किया जाता है जहाँ फसल को इनकी सबसे अधिक आवश्यकता होती है।

संदर्भ सूची :-

1. रोया चौधरी, एसपी मृदा ऑफ़ इंडिया काउंसिल ऑफ़ एग्रीकल्चर रिसोर्सेस, नई दिल्ली, 1963
2. सोसाइटी ऑफ सोयल साइंस–43 की मेहरोत्रा और गंगवार जौनाल।
3. बंसल पी. सी. (1987) भारत की समस्याओं की कृषि, नई दिल्ली।
4. डॉ. पांडे जे. एन. और डॉ. कमलेश एस. आर. (1999) कृषि भूगोल बसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर।
5. सिंह, जे. और ढिल्लों. एस. एस. (1982) भूगोल की कृषि।
6. बंसल पीसी (1987) भारत की समस्याओं का कृषि, नई दिल्ली।
7. डॉ. श्रीवास्तव एस. एस. (1970) पांच वर्षीय योजना आयोग हरियाणा के लिए मसौदा।
8. डॉ. देवरे टी. आर. (1998) क्षेत्रीय योजना और विकास, बसुंधरा प्रकाशन, गोरखपुर।
9. हुसैन माजिद ए. (2002) व्यवस्थित कृषि भूगोल।
10. उत्तर प्रदेश में फसल एकाग्रता के हुसैन, एम. पैटर्न, भारत की भौगोलिक समीक्षा, 32, (1970)
11. संसाधन भूगोल, डॉ. रामकुमार गुर्जर एवं डॉ. बी. सी. जाट, पंचशील प्रकाशन, जयपुर।
12. कृषि भूगोल, बी. एन. सिंह, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश।
13. कमलेश, एस.आर. (1996) : कृषि भूगोल, बिलासपुर संभाग में कृषि विकास का स्तर, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर।
14. कोली हरिनारायण (1996) : पर्यावरण एवं मानव, संसाधन, पोईन्टर पब्लिसर्स, जयपुर (राज).
15. कुमार, प्रमीला एवं श्री कमल शर्मा (1985) : कृषि भूगोल, म. प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल।

डॉ. वेद प्रकाश, Email - 2011vaad@gmail.com, मो० नं० 9411611360

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 21-24

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

छत्तीसगढ़ी कहानियों में पारिवारिक यथार्थ

शशि पाण्डेय
शोधार्थी, शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिलासपुर (छ०ग०)
डॉ. हीरा लाल शर्मा
शोध निर्देशक, सहायक प्राध्यापक, शासकीय नवीन महाविद्यालय, बिर्रा जांजगीर–चांपा (छ०ग०)

शोध सार :–

आधुनिक छत्तीसगढ़ी कहानी की शुरुआत बीसवीं सदी में हुई है। छत्तीसगढ़ी साहित्य में कहानी का महत्वपूर्ण स्थान और स्वरूप है। ये कहानियाँ अपने अंदर संपूर्ण आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक परिवेश के परिवर्तित रूप को चित्रित करने में सक्षम है। इस एक सदी में छत्तीसगढ़ी कहानी ने आदर्शवाद, प्रगतिवाद, मनोविश्लेषणवाद, आंचलिकता तथा मध्य वर्ग में चेतना के दौर से निकलते हुए अपने यात्रा में अनेक उपलब्धियां प्राप्त की हैं। ये कहानियाँ समय और समाज के बदलते स्वरूप के साथ चलते हुए अपने नित्य रंग रूप में बदलती हैं। प्राचीन समय में कहानी सुखांत होती थी, परंतु आधुनिक समय की कहानी यथार्थ रूपेण होती हैं। आधुनिक कहानियाँ साहित्य का विकसित कलात्मक रूप है, जिसमें लेखक अपनी कल्पना शक्ति के माध्यम से पात्रों, प्रसंगो एवं घटनाओं की सहायता से चरित्र चित्रण, दृश्य की उपस्थिति के प्रभाव की रचना करता है। आज के समय में कहानियों में सामाजिक आदर्श का रूप बदल रहा है। प्राचीनकाल में कहानियों में आदर्शवाद कल्पना से संबंध बना रहता था। परंतु आज यह संबंध यथार्थ से बना है, अर्थात कहा जा सकता है की कहानियों में युगबोध की छमता अधिक है। आधुनिक युग का प्रत्येक मानव अपने जीवन काल में जीवन से संबंधित समस्याओं से घिरा रहता है। इन्हीं समस्याओं में आर्थिक अभाव पारिवारिक कलह जैसे घटनाएं भी होती हैं। इन कहानियों की संकल्पना भूमंडलीकरण, आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण, वैश्वीकरण कर रहा है। जिसमें सामाजिक परिवेश में आर्थिक विडंबना मूल्य संघर्ष चिंता निराशा अकेलापन और आधुनिक होने की भावना को स्पष्ट करती हैं। इन्हीं यथार्थ का स्पष्ट रूप हमें छत्तीसगढ़ी कहानियों में भी दिखाई देता है।

मूलशब्द :– आधुनिकीकरण, संवेदनशील, मनोविश्लेषणवाद, पारिवारिक यथार्थ, वैश्वीकरण, मध्य वर्ग।

प्रस्तावना :–

आधुनिक समय में यथार्थ की भूमिका पर आधारित कहानियाँ अपना स्थान बना रही हैं। हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक डॉ. गुलाबराय ने यथार्थवाद के बारे में अपना विचार दिया है कि 'यथार्थ वह है जो नित नवीन रूप से हमारे सामने घटित और प्रस्तुत होता है, जिसमें दुख–सुख, धूप–छाँव, पाप–पुण्य मिश्रित रूप में रहता है। यह सामान्य भाव भूमि के समतल रहते हैं, एवं वर्तमान की वास्तविकता में सीमाबद्ध रहता है। स्वर्ग कल्पना

का खेल है वह संसार के करुण, क्रंदन एवं हाहाकार का वर्णन करता है। यह कठोर सत्य को कहने से भी नहीं हिचकिचाता, वह संसार की कलिमा पर भव्य आवरण नहीं डालता। वह स्वर्ग को भी काली मिट्टी के मुक्त कणों से मिश्रित देखना चाहता है। वह उसे तपा–गला कर उसमें चमक उत्पन्न कर लोगों को चकाचौंध में नहीं डालना चाहता।

इस तरह हम देखें तो यथार्थ मनुष्य के हर पहलुओं को दिखलाता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार साहित्य में यथार्थवाद वह प्रत्यन है जो साहित्यिक शिल्प विधान एवं बदलती हुई जीवन परिस्थितियों के बीच सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है।

वास्तव में यथार्थवाद एक विचारधारा है। इसी यथार्थ रूप को छत्तीसगढ़ी कहानी में चित्रित करने वाले प्रमुख कहानीकार – रामनाथ साहू, डॉ. उर्मिला शुक्ला, डॉ. शैल चंद्रा, कुबेर, डॉ. परदेशी राम वर्मा, सुधा वर्मा इत्यादि हैं। जिन्होंने कहानियों में व्यक्ति के जीवन स्तर और पीड़ा को बहुत ही मनोवैज्ञानिक यथार्थ रूप से अपनी कहानियों में संजोया और प्रस्तुत किया है।

आर्थिक अभाव का चित्रण :–

सुधा वर्मा की 'अंजोर' शीर्षक कहानी जिसमें आर्थिक अभाव की चरमसीमा है। जिसमें एक अनाथ लड़की 'सुखबती' की मर्मस्पर्शी कहानी है जो उसकी गरीबी की भयावह स्थिति को दर्शाती है। इस कहानी में सुखबती के पिता अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़कर काम के सिलसिले में नागपुर चले जाते हैं। जहां उनकी मृत्यु हो जाती है, परंतु सुखबती और उसकी मां को इस बात का पता नहीं चलता और वह उनके इंतजार में अपना दिन गुजारने लगते हैं। सुखबती की मां गांव में काम करके अपने बच्चों का पालन पोषण करते–करते एक दिन वह भी गुजर जाती है। सुखबती अब अपने दोनों भाइयों के साथ उस गांव में दूसरों के घरों में छोटा–मोटा काम कर अपना तथा अपने बड़े भाई जो कि नौ साल का है और छोटा भाई एक साल का है, उनकी देखभाल करती हैं। जब गांव में किसी को काम करने वालों की जरूरत होती तो वे सुखबती को बुलाते और उससे काम करवाते, उसके बदले में उसे पैसा एवं कपड़ा दे देते। सुखबती की गरीबी उसकी सबसे बड़ी समस्या थी जिसे वह सुधारने की कोशिश करती पर वह उसमें सफल नहीं हो पाती। उसी गांव में रामरतन नाम का एक इंजीनियर रहता है, जो गांव में दिपावली के समय अपने घर में आता है, और अपने घर में पटाखे फोड़ने के बाद जो पटाखे बच गए थे उन्हें बाहर छोड़ देता है। जिसे सुखबती लेकर आती है और उन्हीं पटाखों को जलाने की लालसा में अपने पड़ोसी के घर से दिया मांगती है। क्योंकि उसके घर में दिया भी जलाने के लिए नहीं होता जो उसके अभावग्रस्त जीवन का एक रूप दिखलाता है सुखबती कहती है।

"सुखबती कहिथे काकी एक ठक दीया देना फटाका चलाबो।

"फटाका कहां ले पायेव?" बडकू कहिथे बिन के लाने हन रामरतन कका के घर दुवारी ले।

"काय करहू ये आधा जले फटाका ल?" छोटू कहिथे हमन जलाबो।"

तो उसके पड़ोसी उसे अचरज भरी निगाह से देखती है, और बोलती है कि इस गरीब को फटाका कहां से मिल गया है पर जब वह पास में जाकर देखती है तो वह अधजले पटाखे होते हैं जिसे सुखबती जलाती है और अंधी हो जाती है।

रामनाथ साहू कृत 'बीज' शीर्षक कहानी में गरीब परिवार का चित्रण है। जिसमें सियाराम और चंपा दोनों

पति पत्नी गरीबी में अपना जीवन यापन करते हैं और उनके इस गरीबी की झलक उनके खान–पान में दिखाई देता है। जब चंपा कहती है कि सब ठीक है, लो चटनी–मिर्ची तैयार है, चावल का पानी पीकर चले जाओ, क्योंकि उनके पास खाने के लिए अनाज नहीं है।

"लेवा ठीक हे चटनी–मिरचा तियार हे, पानी–पसिया पी लेवा"

इन कहानियों में पारिवारिक आर्थिक अभाव का यथार्थ चित्रण है जो मन को झकझोर देती है।

पारिवारिक संवेदना का यथार्थ चित्रण :–

कपिल नाथ कश्यप की 'मौसी दाई' शीर्षक कहानी में सौतेली मां का आदर्श पुत्र प्रेम का स्वरूप है। जिसमें ग्रामीणों द्वारा पुत्र से सरल सहज रूप से पूछना कि उसकी सौतेली मां उससे प्रेम करती है, कि नहीं तब उस पुत्र का उत्तर के द्वारा प्रेम की पुष्टि करना मनोवैज्ञानिक धरातल को स्पर्श करता है। वह भी बहुत सरल सहज ढंग में सभी के प्रश्नों का उत्तर देता है कि हां मेरी मां मुझे बहुत प्रेम करती है।

लखन लाल गुप्ता की रचित कहानी 'देवरानी–जेठानी' में दो बहनों की आत्मीयता को दिखलाती हुई कहानी है जो उनके संवेदना को अभिव्यक्त करती हैं।

सुधा वर्मा 'खिरकी के संध' शीर्षक कहानी में पारिवारिक संवेदना का यथार्थ रूप है। जिसमें गणपत और भगवंती के दो बेटे और एक बेटी भागो रहती है। भागो की शादी हो जाती है, कुछ दिनों बाद भागों एक बेटी को जन्म देती है। जिसकी खुशी में उसका छोटा भाई इंदर मोटरसाइकिल से अपनी बहन और भांजी को देखने के लिए निकलते हैं, लेकिन इंदर की सड़क दुर्घटना में मौत हो जाती है। जिसके बाद उसका बड़ा भाई सुंदर अपनी बहन से नाराज रहने लगता है। जब भागो के ससुराल में कोई नहीं रहता तो वह वापस अपने मायके अपने पिता गणपत के पास आ जाती है। सुंदर के शादी के बाद उसकी पत्नी सुषमा भी उसी घर में आ जाती है। लेकिन अब दोनों के घर के बीच में एक दीवार बन जाती है जो परिवारिक संवेदना का अभाव उस घर में पैदा होता है तो वह मिटने का नाम ही नहीं लेता। परंतु भागो की बेटी रोज उस आंगन में आवाज लगाती कि मुझे अपने घर में बुला लो मामी परंतु उसकी मामी उसकी तरफ देखती भी नहीं और चढ़ते हुए कहती है।

"ममा ममा" चिल्लाये ल लग गे।

सुसमा कहिथे, अब ते सुतन घलो नई देवय, छाती ऊपर बइठे हावंय।

हिस्सा बांटा लेके मन नई भरे हे अब हमर जी ल लेही। लक्ष्मी चुप अपन माँ ले सपट के सुत जथे।

सुंदर की भांजी लक्ष्मी चुपचाप वापस आती और अपने मां के साथ सो जाती हैं। एक दिन सुंदर के साथ कारखाना में दुर्घटना हो जाती है। जिसमें वह पूरी तरह से जल जाता है, परंतु उसकी जान बच जाती है और वह बिस्तर पर लेटे लेटे बीमार रहने लग जाता है। जिसे देखकर भागो और उसकी बेटी बहुत तकलीफ में रहते हैं परंतु अपनी भाभी के व्यवहार के चलते अपने भाई से नहीं मिलते। भागो फिर अपने भाई सुंदर से मिलने आती है और कहती है कि मैं दोबारा अब इस घर में वापस नहीं आऊंगी। यहां से मैं जा रही हूं, मैं तुम्हें भोजन करने के लिए अपने घर बुला रही हूं आ जाना। इस शब्द को सुनकर सुंदर कहता है कि यह तुम क्या कह रही हो इस घर में तो मेरा और तुम्हारा बराबर का हक है। मैं तो जरूर तुम्हारे साथ भोजन करूंगा पर तुम्हारी भाभी जाने कि वह आएगी कि नहीं आएगी तभी उसकी भाभी सुषमा एक कुदाली लाकर घर के आंगन में खड़ी दीवार को तोड़ देती है और बोलती है कि मैं भी आऊंगी।

"अचानक सुसमा ह एक ठक कुदारी ल धरिस अउ बीच के दीवार ल खोदे ले धर लीस।

माटी के दीवार भरभरा के गिर गे। टंगिया ल फेक के कहिथे मैं ह इही मेर ले जाहूँ, मोर भांची ह मोर अंगना म खेलहीं। तैं ह तोर भाई ल राख मैं ह अपन बाबू अउ बेटी ल राखहूँ। जा जल्दी रांध आवत हम दूनो झन।"

यह कहानी भाई–बहन के बीच में उत्पन्न दरार और फिर मिलाप की घटना को दिखलाती हुई परिवारिक संवेदना का यथार्थ रूप प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष :–

पारिवारिक जीवन में हर समय कुछ ना कुछ घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन साहित्य में हमेशा से होता रहा है। यह साहित्य का हमेशा से पसंदीदा पक्ष रहा है, जिसे हम यथार्थ का नाम देते हैं। यह यथार्थ चित्रण मनुष्य की भलाई के लिए ही होना चाहिए ना कि उसकी बुराई को दिखाने के लिए। जिससे पाठक के मन में स्थिति को बदलने का साहस आए तथा वह इस बुरी स्थिति में ना फंसे। सुधा वर्मा, रामनाथ साहू, कपिल नाथ कश्यप और लखन लाल गुप्ता ने भी अपनी कहानियों के माध्यम से पारिवारिक जीवन का याथर्थ चित्रण किया हैं। कहानीकार अपनी कहानियों के माध्यम से मनुष्य को इसके बारे में जानकारी देता हैं कि हर एक व्यक्ति को दुनिया के समय अनुसार अपने में बदलाव लाना भी जरूरी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

1. डॉ. रामविलास शर्मा, उपन्यास में यथार्थ और आदर्श की सीमाएं, 1988, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 156
2. डॉ. सुधांशु कुमार नायक, काव्यशास्त्र के विविध आयाम 1998, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 145
3. सुधा वर्मा, अंजोर, धनबहार के छांव में, छत्तीसगढ़ी कहानी संग्रह, 2010, पहचान प्रकाशन, रायपुर छत्तीसगढ़, पृष्ठ संख्या 103
4. रामनाथ साहू, बीज, गति मुक्ति, छत्तीसगढ़ी कहानी संग्रह, 2016, वैभव प्रकाशन, रायपुर छत्तीसगढ़, पृष्ठ संख्या 12
5. डॉ. सत्येंद्र कुमार कश्यप, छत्तीसगढ़ी साहित्य में कपिल नाथ कश्यप का योगदान, पृष्ठ संख्या 296
6. श्रीमती पी.आर. बसंता, छत्तीसगढ़ी गद्य साहित्य का विकासात्मक अध्ययन, पृष्ठ संख्या 35
7. सुधा वर्मा, खिरकी के संध, धन बहार के छांव में, छत्तीसगढ़ी कहानी संग्रह, 2010, पहचान प्रकाशन, रायपुर छत्तीसगढ़ पृष्ठ संख्या 58
8. शिव शंकर शुक्ला, छत्तीसगढ़ी कहानियां, पृष्ठ संख्या 36
9. बी. एम. गिरिधरण (2020), शोध धारा, पृष्ठ संख्या 21–25

डॉ. आदित्य नाथ पाण्डेय

पारिजात हाइट्स, फ्लैट 105, पारिजात कॉलोनी, नेहरु नगर, बिलासपुर (छ०ग०), 495001

मोबाइल 8109164539, 7489986405

shashi2008pandey@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 25-31

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

भारतीय योगश्च दर्शनं

डॉ. कैलाश चन्द्र बुनकरः

प्राचार्य, राजकीय लक्ष्मीनाथ शास्त्री संस्कृत महाविद्यालय, चीथवाड़ी (जयपुर) पिन–303805

1. दर्शनम्–दृश्यते नेनेति दर्शनम्। दर्शन विषयस्यस्त्वात्मा। तदुक्तं बृहदारण्य कोपनिषदि–आत्मा वा अरे दृष्टव्यः.....। भारतीय दर्शनशास्त्रे आत्मदर्शनं जीवनस्य चरमलक्ष्यम्। श्रवणंमननंनिदिध्यासनंचेतिआत्मदर्शनस्य त्रीणिसाधनानि।

श्रोतव्यःश्रुतिवाक्येभ्योमन्तव्यश्चोपपत्तिभिः।
मत्वातुसततंध्येयः एतेदर्शनहेतवः।।

भारतीयदर्शनम् आस्तिकंनास्किञ्चेतिद्विधा विभक्तम् यत्र वेदप्रामाण्यं तदास्तिकम् ।वेदनिन्दकंनास्तिकम्।

मनुष्याः पशवैंपिस्व–स्वजीवनस्य रक्षायैप्रयत्नंकुर्वन्ति। पशोः जीवनंप्रायः निरूद्देश्यं भवति। तज्जीवनंसरल, सहजप्रवृत्तिनापरिचालितंभवति। परन्तुमनुष्यः स्वबुद्धेः सहायतांप्राप्नोति। सः संसारस्य स्वस्य च यथार्थज्ञानंप्राप्य तदनुसारंजीवनयापनंकर्तुमिच्छति। सः केवलंस्ववर्तमानलाभमेव न विचारयतिअपितुभविष्यस्य परिणामाणांविषये पितस्य चिन्तनंभवति। मनुष्यबुद्धेः विशेषतास्ति। बुद्धेः सहायतया सः युक्तिपूर्वकज्ञानंप्राप्नोति। युक्तिपूर्वकतत्वज्ञानप्राप्तेः प्रयत्न एव "दर्शनम्" इतिकथ्यते। मनुष्य कः? तस्य जीवनस्य किं लक्ष्यम् किमिदंजगत्? अस्य कोऽपिस्रष्टापिअस्ति वा? मानवेनकेनप्रकारेणजीवनं यापनीयम्? इतिअनेकेप्रश्नाः सन्ति। येषां समाधानंप्राप्तुंनैकदेशीयाजनाः प्रारम्भादेवअचेष्टन्त। भारतीयदर्शनानुसारंसम्पूर्णसम्प्रदायेषु एकोमान्यताप्रसिद्वा वर्ततेपरमतत्वस्य ज्ञानंप्राप्तु शक्नुमः। तदेवसम्यग् दर्शनंकथ्यते। मनुनाउक्त चः–

सम्यग् दर्शनेप्राप्तेसतिकर्माणि न बन्ध्नन्ति।
येषामियंसम्यग् दृष्टिर्नास्ति, ते एव संसारबन्धनेपाशिताभवन्ति।।

गीतायामपि चः–

तपस्विभ्योऽधिको योगीज्ञानिभ्योऽपिमतोऽधिकः।
कर्मिभ्यश्चाधिको योगीतस्माद्योगीभवार्जुन।।

योगदर्शनकारः पतंजलिकथ्यति :–विविधदर्शनानां मध्ये योगदर्शनस्य अत्यन्तंमहत्वपूर्णंस्थानमस्ति।

महाभारतेउक्त चः–"नतु योगकृतेप्राप्तु शक्यासापरमागतिः"

येआत्मासाक्षात्कारस्य जिज्ञासुः तेषांकृतेमहर्षिपत

जलेः योगदर्शम् अमूल्य निधि वर्तते। यः शरीरेन्द्रियचित्तादिसमस्तबन्धनरहितं शुद्वात्मतत्वंपश्यति, तस्य कृते योगः परमंसाधनम्। पातञ्जलसूत्रं योगमिदं वा अन्य मूलग्रन्थोवर्तते। योगसूत्रे व्यासकृतंप्रसिद्व भाष्यमस्ति, यत्

व्यासभाष्यं योगभाष्यं वा कथ्यते।

1. 'विज्ञातारमरेकेनविजानीयादिति' (बृहदा0 उप0 2/4/14)

2. 'मन्मनसा न मनुते' (केनोपनिषद् 1/5।)

अपरऽचः –यत्रोपरमतेचित्तं निरूद्वं योगसेवया।

यत्रचैवात्मनात्मानंपश्यन्नात्मनितुष्यति।।

द्रष्टव्यः6/46। (श्रीमद्0 गीता 6/20।)

भारतीय दर्शनस्य स्वरूपंः– मानवजीवनस्य समस्याअनन्तंवर्तते। तेपरिवर्तनशीलंपरन्तुतस्य समाधानं अपरिवर्तनीयं। भारतीय दर्शनस्य अपूर्वविशेषतातस्य स्वतन्त्र सत्तायांवर्तते। भारतीय दर्शनमेकंविशिष्टचिन्तनंवर्तते।गीतायामपि लिखत् ''अध्यात्मविद्याविद्यानांवादः प्रवदतामहम्'' (गीता 10/32)

स्वतन्त्र सत्ता एव भारतीय दर्शनस्य प्राणंवर्तते।इति लक्ष्यं मत्वामुण्डकोपनिषदिब्रह्मविद्यांअर्थात् दर्शनशास्त्रं सर्वविद्या–प्रतिष्ठाकथ्यते–सबह्मविद्यासर्वविद्याप्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठपुत्रय प्राह (1.1)

अर्थशास्त्रस्य निर्माता कौटिल्यानुसारंआन्वीक्षिकीविद्या अर्थात् भारतीय दर्शनंसमस्तविद्यानांप्रकाशपुत्र दीपकंवर्तते।समस्तकर्मणांअनुष्ठानस्य साधनमार्गंवर्तते।

2. योगसूत्रस्य विषयः–पात जलसूत्रं चतुर्षुपादेषुविभक्तम्।

1. प्रथमपादः समाधिपादः – अस्मिन् पादे योगस्य स्वरूपं, उद्देश्यं लक्षणं च चित्तवृत्तिनिरोधस्य उपाया, भिन्न–भिन्न योगानांविवेचनं च सम्यक्रूपेणवर्तते।

2. द्वितीयपादः साधनपादःसाधना – पादोवर्ततेअस्मिन् पादेक्रिया–योगः क्लेशः, कर्मफलं च तस्य दुःखात्मकः स्वभावः दुःखादिचतुष्टयम् (दुःख दुःखस्य निदानं, दुःखस्य निवृत्तिः तस्य उपायश्चेत्यादीनां) वर्णनमस्ति।

3. तृतीयपादः विभूतपादः – विभूतिपादोवर्तते–विभूतिपादे योगस्य अंतरंगावस्थायाः योगाभ्यास–जातसिद्वीनांवर्णनमस्ति।

संयोगो योगइत्युक्तः जीवात्मपरमात्मनोः।

4. चतुर्थपादः– कैवल्य–पादःअस्मिन् पादेमुख्यतः कैवल्यंमुक्तिर्वा एतस्य स्वरूपंविवेचितमस्ति। (प्रसंगानुसारं आत्मा, परलोकादिविषयाणांवर्णनं वर्तते)

3. सांख्य योगानांसम्बन्धः –

सांख्ययोगयोः घनिष्ठसम्बन्धोवर्तते। सांख्य सिद्वान्तस्य व्यावहारिकजीवनेप्रयोग एव योगावर्तते।ज्ञानस्य विषयेसांख्यस्य यः विचारोवर्तते स योगइति। सांख्योक्तं त्रिविधं प्रमाणं, प्रत्यक्षं, अनुमानं– शब्दं च योगस्य दर्शने पिमन्यते। सः सांख्यस्य पंचविंशतितत्वानामपि स्वीकरोति। परन्तु तस्मिन् एकम् ईश्वरतत्वं। सांख्यमतानुसारं विवेक–ज्ञानमेवमुक्तेर्साधनंवर्तते।तथा योगाभ्यास एव विवेक–ज्ञानस्य साधनमस्ति। सांख्ययोगयोः ऐक्यस्य उद्घोषः गीतायांकृतः।

सांख्ययोगौपृथग्बालाप्रवदन्ति न पण्डिताः।

एकमत्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दतेफलम्।। श्रीमद.गीता 5/4/

यत्सांख्यैः प्राप्यतेस्थानंतद्योगैरपिगम्यते ।

एकंसांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति।।

सांख्योपदेष्टा योगिश्रेष्ठः कपिलः योगस्य प्रथमप्रवर्तकः वर्तते।

महाभारतेस्पष्टमुक्तम्–

कपिलंपरमर्षि च प्राहुर्यतयः सदा।

अग्निः स कपिलो नाम सांख्ययोगप्रवर्तकः।। (11/3/65)

योगदर्शनम्ः– योगशब्दः युज् धातोर्धञ् प्रत्ययोकृतेसिध्यति। पणिनीय व्याकरणानुयारं युज्/समाधौ, पुजिर योगे,युज् संयमनेत्रिभि धातुभिः पृथक्–पृथक् सिद्वस्य 'योग' शब्दस्य अर्थः क्रमशः–

1. समाधिः 2. योजनम् 3. संयमनम् इति अस्ति। योगशास्त्रे योग शब्दस्य अभीष्टोर्थः समाधिः। चित्तवृत्ते र्निरोध एव स्वीकार्यः।

1. ''योगः समाधिः स च सार्वभौमः चित्तस्य धर्मः''। योगसूत्र (111)

2. योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः। योगसूत्र (112)

जीवात्मानपरमात्मनोभिन्नंमन्यमानानांभक्तवेदान्तिनाम् अन्येषांचोपासकयोगिनां दृष्टयापि योगेजीवपरमात्मनोः मेलनंभवति।एतैः शास्त्र सम्मतसाधनांकर्तुंप्रयुक्तः 'योग' शब्दः 'युजिर् योगे' धातोर्निष्पन्नः इतिमन्यते।

यथाः–यौगिक याज्ञवल्क्ये योगस्य लक्षणंकथितम्ः –

''संयोगो योगइत्युक्तः जीवात्मपरमात्मनोः''

चित्तवृत्तिनिरोधरूप समाध्यर्थ एव एतस्य पातञ्जलयोगस्य ग्रहणंकरणीयम्।

तथा स शब्दः दिवादिगणीय 'युज समाधौ' इति घञ् प्रत्ययोकृते।

अयं योग शब्दः अन्येषुअर्थेषुप्रयुक्तो न मन्तव्यः यतोहिपातञ्जलयोगः संयोगरूपोनास्तिअपितुतस्य वियोगफलकत्वमेवकर्तव्यम् अर्थात् ''कैवल्यम् दातृत्वञ्च स्वीकृतव्यम्।

सः दुःख निवारकोभवति–उक्त चगीतायाम्–

तंविद्याद् दुःख संयोगवियोगं योगसंज्ञितम्ः–

स निश्चयेन योक्तव्यो योगो निर्विण्णचेतसाः। 6।23।

पत्ंजलिना नुशासितस्य योगस्य एतस्य स्वरूपनिर्वाचनंकृत्वाभोजराज–

आहः–पत जलिमुनेरूक्तिः काप्यपूर्वाजयत्यसौ।

पुंप्रकृत्योर्वियोगो पि योगइत्युदितो यया।।

योगस्य अर्थः समाधिः चित्तवृत्तेः निरोधो वा अवश्यमेवास्ति परन्तु प्रत्येकंसमाधिः वा प्रत्येकंचित्तवृत्ति निरोधो वा योगइतिकथितुम् न शक्यते। तर्हिकीदृशः समाधिः योगइतिवक्तव्ययः। एतस्य प्रकाशनंसूत्रकारेण पतञ्जलिनाचातुर्येण कृतम्ः–

1. अथ योगानुशासनम्। योगसूत्र (111)

2. योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः –11– (112)

3. तदादुष्टुः स्वरूपे वस्थानम् –11– (113)

तृतीय सूत्रानुसारं 'तदा' शब्दः समस्यायाः समाधानंस्वयंकरोतितच्च चित्तवृत्ति निरोध लक्षण के योगेसिद्वे सतिद्रष्टा एव स्ववास्तविक (चिन्मात्रं) रूपे स्थितेप्रतिष्ठितो वा भवति। अर्थात् योगिकानमोक्षस्य सिद्विर्भवति। इत्थंसिद्वमिद्वं यत् मोक्ष प्रदश्चित्तवृत्तिनिरोध एव 'योग' उच्यते। येनचित्तवृत्तिनिरोधेनसमाधिनां वा कैवल्यंप्राप्तिर्नजायते।

सः चित्तवृत्तिनिरोधः समाधि मात्रं वर्तते न तु योगः। योगसाधनायाः वास्तवकम् उपादानंचित्तमेववर्तते।

योगसाधना :– योगसाधनायाः प्रधानम् उपायद्वयम् अस्ति। वैराग्यमभ्यासञ्च ऐहिकामुष्मिकसमस्तविषयेभ्यः वितृष्णानिःस्पृहभावश्च अपर वैराग्यमितिकथ्यते। बौदिकज्ञानंप्रतिविरक्त भावैंपरवैराग्यम्। अपरवैराग्यस्य उपयोगः सम्प्रज्ञात समाधेः सिद्वये परवैराग्यस्य चोपयोगअसम्प्रज्ञातसमाधेश्चसिद्वये क्रियते। चित्तंस्थिरमच चलंकर्तुं योगसाधनानां अनुष्ठानरूपप्रयत्न एव अभ्यासकथ्यते। इतिभाष्यकारोव्यासः कथयतिः–

''तत्सम्पिपादयिषयातत्साधनानुष्ठानमभ्यासः'' योगसूत्र (113)

वितर्कजन्य बाधारहितान एतेषामुपायानांसततानुष्ठानेनक्रमशः भूमिकानांविजयेनसम्प्रज्ञातसमाधेअसम्प्रज्ञात समाधेश्चसिद्विः कैवल्यस्य च प्राप्तिर्भवति।

योगसाधनायाःअंगानिः–

''यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यानसमाधयो ष्टावङगानि।''योगसूत्र 2।39।

चित्तवृत्तयः– पतंजलिः योगसूत्रं विरच्य योगदर्शनंप्रवर्तितवान्। युज्यतेमनो नेनेति योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः। योगसूत्रे चत्वारः पादाः 195 सूत्राणि च प्रथमेसमाधिपादे 51 सूत्रेषुचित्तवृत्त्यादिनिरूपणंवर्तते। द्वितीय साधनपादे 55 सूत्रेषुक्लेशनिवारणसाधनानिवर्णितानि। तृतीयेविभूतिपादे 55 सूत्रेषु ध्यानधारणादिवर्णनमस्ति। चतुर्थेकैवल्यपादे 34 सूत्रेषुसिद्विपंचककैवल्यनिरूपणंवर्तते। योगदर्शनसिद्वान्तः साख्यदर्शनतुल्यः। ईश्वरस्वीकृतिरेवात्र वैशिष्ट्यम्। अत एवास्य सेश्वरसांख्यमित्यपिसंज्ञा। योगः समाधिः चित्तस्य कोशगतअर्थमस्ति–अन्तरिन्द्रियं, अन्तःकरणं, अनुसंधानकारिणी वृत्ति, मन, बुद्वि अहंकारञ्च। तेषुसांख्यसम्मतबुद्धि, अंहकारंमनसि च, चित्तः सत्वप्रधानप्रकृतेर्परिणामंवर्तते। प्रकृति त्रिगुणात्मिकावर्ततेअतः चित्तमपि त्रिगुणात्मकंवर्तते। चित्तस्य क्षिप्तावस्था, गूढावस्था, विक्षिप्तावस्था, एकाग्रता, निरूद्ध इत्यादय पञ्चावस्थासन्ति। चित्तस्याकृतिंवृत्तिमुच्यते।

वृत्तेः द्वौस्वरूपं स्तः– 1. क्लिष्टः 2. अक्लिष्टः दुःखदायी दुःखरहित च (वृत्तयः प चतय्यः क्लिष्टा क्लिष्टाः) योगसूत्र, स. पा. 5

वृत्तयः प्रकृतिपुरूषस्य विवेकंउत्पादयति। यथा–सात्विकप्रसादादि। (क्लेशहेतुकाः कर्मक्षयप्रचये क्षेत्रीभूताः क्लिष्टाः। ख्याति–विषयगुणाधिकारविरोधिन्योऽक्लिष्टाः। क्लिष्टाप्रवाहिताअप्यक्लिष्टा–योगभाष्य।)

1. **प्रमाणं**–सत्यज्ञानमिदम् इति। प्रमाकारणंप्रमाणमुच्यते। प्रमाअनधिगतं, अबाधितं, अर्थविषयकंज्ञानंवर्तते। सांख्ययोगानुसारंप्रमाणं त्रयः (प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि) अस्य निरूपणंसांख्यदर्शनस्य 'ज्ञानमीमांसा' शीर्षकेकृतम्।

2. **विपर्ययं**–मिथ्याज्ञानंविपर्ययमुच्यते–यथारज्जुसर्पं वा शुक्तौरजतः ज्ञानंमिथ्याज्ञानमस्ति। सा स्व स्वरूपेस्थितंनास्ति। रज्जुसर्परूपे शुक्तिरजतरूपेप्रतीतयति। अन्तेरज्जु शुक्तेः च ज्ञानंभवति। अतः रज्जौसर्पंतथा शुक्तौरजतरूपंज्ञानंविपर्ययंवर्तते। विपर्यय वृत्तिः संसारस्य बीजभूतअविद्याउच्चते। अविद्याच पर्वी– 1. अविद्या 2. अस्मिता 3. राग 4. द्वेष 5. अभिनिवेशं इति।

3. **विकल्पं**–शब्दज्ञानात् उत्पन्नंसत्य वस्तुशून्यंज्ञानंवर्तते। कल्पनामात्रमिदमस्ति।

(शब्दज्ञानानुपाती वस्तुशून्योविकल्पः–योगसूत्र–9) यथा–

मृगतृष्णाम्भसिस्नातः रवपुष्पकृतशेखरः।
एवंवन्ध्यासुतो याति शशश्रृंग धनुर्धरः।।

4. **निद्रावृत्ति**– निद्राज्ञानस्याभावंमन्यते। ज्ञानाभावेनवृत्तिमिदंनिद्रावृत्तिंकथ्यते। अभावप्रत्ययालम्बनावृत्तिर्निद्रा

(योगसूत्र–10) अस्यापर नाम सुषुप्तिमपिवर्तते।

इति त्रिगुणात्मकं।

5. **स्मृति–वृत्ति–** अनुभूतिविषयासम्प्रमोषः स्मृतिः (योगसूत्र–11) सूत्रस्य भाष्यकारस्यानुसारं अनुभवंकारणरूपंस्मृतिश्चकार्यरूपंवर्तते। अनुभवं अज्ञातविषयस्य ज्ञानंवर्ततेतथास्मृतिज्ञातविषयस्य ज्ञानंवर्तते। स्मृतयः द्वयः–यथार्थंअयथार्थञ् च। एकस्य विषयंविद्यमानंपदार्थंवर्तते। अन्यस्य विषयंअविद्यमानपदार्थमस्ति। यथा–रज्जु–सर्पस्यानुभवंअनुभवाभासंअस्ति। तथैवस्वप्नस्य स्मृतिस्मृत्याभासंवर्तते। अतः स्मृतिवृत्तिसंस्कारजन्य ज्ञानमस्ति। यथा–ग्राह्ययोपरक्तः प्रत्ययोग्राह्याग्रहणोभयाकारनिर्भासः तज्जातीयकंसंस्कारमारभते।

स संस्कारः स्वव्य जकाञ्जनस्तदाकारामेवग्राह्यग्रहणोभयात्मिकांस्मृतिंजनयति (योगसूत्र भाष्य, तत्रैव)

चित्तवृत्तिनिरोधस्योपायः– अभ्यासवैराग्याभ्यांतन्निरोधः (योगसूत्र–12) चित्तनदीउभयतोवाहिनी। वहतिकल्याणाय वहतिपापाय च। यातुकैवल्याप्राग्धाराविवेकविषयनिम्नासाकल्याणवहा। संसारप्राग्धारा विवेकविषयानिम्नापापवहा।

(पातंजलयोगसूत्र, व्यासभाष्य–1–12)

बाह्य अन्तः प्रवाह च पश्चात् चित्तवृत्तिनिरोधरूप योगस्य प्राप्तिर्भवति।

अभ्यासः– तत्र स्थितौ यत्नोभ्यासः (योगसूत्र–12) स तुदीर्घकालनैरन्तर्यसंस्कारासेवितो दृढभूमिः (योगसूत्र–14) अभ्यासेनजीवनस्य लक्ष्यं सहजभावेनमनुष्यं प्राप्नोति।

वैराग्यं– वस्तुप्राप्ति तृष्णारहितंचित्तंवैराग्यंकथ्यते। वैराग्य द्वय–परमपरम च वैराग्य शब्दस्यो र्थंविरागस्य भावः। अपरवैराग्यस्य लक्षणं– दृष्टानुश्रविक विषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञावैराग्यम्।

अपरवैराग्यंचत्वारः–यतमान, व्यतिरेकं,एकेन्द्रियं,वशीकारंच। परवैराग्यस्य लक्षणं–प्रकृतिपुरूषस्य च पार्थक्यज्ञानेनगुणेषुतृष्णा एतस्याभावं (तत्परं पुरूषख्याते गुणवैतृष्णम्) (पात जलयोगसूत्रं–16)

तात्पर्यमस्ति त्रिगुणात्मिकाप्रकृतेर्भिन्नपुरूषस्य स्वरूपज्ञानमेवपरंवैराग्यम् वर्तते। एतेनसंसारस्य सम्पूर्णसंक्रमणंसमाप्तं भवति। पर–वैराग्यमेवज्ञानस्य पराकाष्ठावर्तते। इदंकैवल्यरागस्य अविनाभावीचिन्तनंवर्तते।

ऊंकारविन्दुसंयुक्तंनित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदंमोक्षदंचैवऊंकाराय नमोनमः।।

योगस्यमहत्वम्ः– आत्मोन्नतिसाधनरूपेणयोगस्य महत्वंप्रायः सर्वाण्यपि भारतीयदर्शनानि अङ्गीकुर्वन्ति। वेद–स्मृति–उपनिषद्–पुराणादिषुसर्वेष्वपि योगाभ्यास्यस्यवर्णनमस्ति। यावनमनुष्यय चित्तम् अन्तःकरणं वा निर्मलंस्थिरं च न भवतितावत् स धर्मंदर्शनं वा सम्यक् ज्ञातुं न शक्नोति। शुद्धहृदयेन शान्तचित्तेन च वयंगूढतत्वानिप्राप्तुं शक्नुमः। आत्मशुद्वये योग एव सर्वोत्तंसाधनंवर्तते। येन शरीरस्य चित्तस्य च शुद्धिर्भवति। अतः समस्तभारतीय दर्शनानि (चार्वाक् दर्शनं विहाय) स्वस्वसिद्वान्तानां यौगिकरीतिना ध्यान–धारणा माध्यमेनस्पष्टम् अनुभवंकर्तुंप्रयतन्ते। धर्मदर्शनं च–सम्पूर्णगीता–दर्शनंप्रायः धर्मस्य पारिभाषितस्य साधनंवर्तते।

अस्मिन् विषयेगीतायाः प्रथमाध्यायस्य प्रथमे श्लोकेउक्त चः–

धर्मक्षेत्रे कुरूक्षेत्रे समवेता युयुत्यवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैवकिमकुर्वतस जय।। (1.1 गीता)

गीतायाः अन्तिम् श्लोके पिउक्त चः–

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवानीतिर्मतिर्मम।। (गीता 18 / / 78)

आत्मनः जगतः सारतत्वंवर्तते।समस्तजीवानांकेन्द्रस्थलंवर्तते।

सामानवजीवनस्य सारमस्ति। कथयति– 'तत्वमसि' ईश्वरः समस्तसृष्ट्या सह एकाकारंवर्तते। यः एकत्वभावस्य, विराटविश्वेन एकत्वस्य अनुभवंकरोति। स एव धार्मिकंअस्ति, स एव धार्मिकंअस्ति, स एव सत्यमेवदार्शनिकमस्ति। ऋग्वेदस्य पुरूषसूक्तस्य एका ऋचा अस्मिन् सन्दर्भेदर्शनीयमस्ति। ईश्वरस्य विराट्रूपस्य चिन्तनमस्ति–

सहस्रशीर्षापुरूषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।

सभूमिसर्वतः स्पृत्वात्यतिष्ठद्दशाङगुलम्।।

श्वेताश्वतरउपनिषदः कथनमिदमपिद्रष्टव्य वर्तते–त्वमेवपुरूषः त्वमेव स्त्री, त्वमेवतरूणं इति–उक्त चः–

त्वं स्त्री त्वंपुमानसि, त्वंकुमारउत वा कुमारी।

त्वंजीर्णोदण्डेन वञ्चसि, त्वंजातो भवसिविश्वतोमुखः।।

(श्वेताश्वर उपनिषद 4.3)

धर्मदर्शनस्य च समन्वयंअस्मिन् देशेविद्यते, विश्वस्य कस्यापिदेशेनास्ति।पाश्चात्य दार्शनिकप्लेटोअस्य कथनानुसारदर्शनस्य उत्पत्तिमानवीय आश्चर्येनअस्ति– ''PHILOSO PHY BEGINS IN W0NDER '' आश्चर्यजनक तथाकौतुकमयं घटनायाः उत्पत्ति कस्य आश्यर्चजनक घटनयाभवति यद्यपि भारतीय दार्शनिक दुःखस्य व्यावहारिक सत्तायाः व्याख्या अभूतपूर्वरूपेणकरोति।अतः भारतीय दर्शनस्य सत्तास्वमेवअद्धितीय ''प्रंशसनीयंचास्ति। धर्मदर्शनस्य च सम्बन्धमपिअविच्छिन्नंवर्तते।

आत्मतत्त्वस्य प्राधान्यम्–भारतीय दर्शनेषुआत्मतत्वस्य प्राधान्यं दृश्यते। सर्वेषुदर्शनेषुआत्मतत्त्वस्य चिन्तनम् श्रवणंमननं च उपेदशविषयाः।तदुक्तं बृहदारष्यकोपनिषदि–

आत्मावारेद्रष्टव्यः श्रोतव्योमन्तव्योनिदिध्यासितव्चयः ।

आत्मनो वा अरेदर्शनेनमत्याविज्ञानेनेदंसर्वंविदितम्।।

आस्तिकदर्शनानिवेदानांपरमंप्रामाण्यंस्वीकुर्वन्ति। नास्तिकदर्शनानिवैदिकदर्शनस्य प्रतिक्रियायात्मकान्ति।

कर्मवादः– भारतीयदर्शनानिकर्मणः महृत्वंस्वीकृर्वन्ति। सर्वत्र कर्मसिद्धान्तः प्रतिपादितः। आजीवनंकर्मानुष्ठानं विधेयम्। तदुक्तंईशावास्योपनिषदि। कुर्वन्नेवेहकर्माणिजिजीविषेच्छतंसमाः। गीतायांनिष्कामकर्मोपदेशो

यथा–कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषुकदाचन। ब्रह्मणः अंशः जीवः अज्ञानेननिबध्यते। अज्ञानग्रस्तः स भूयोजायेतम्रियते च स ज्ञानेनबन्धनाद् विमुक्तोभूत्वाजीवनस्य चरमं लक्ष्यं मोक्षेप्राप्नोति। अत एवोक्तम् – ऋतेज्ञानान्नमुक्ति।

भारतीयदर्शनानांस्वतन्त्रम् अस्तित्वंवर्तते। इमानिकस्यचिदपि शास्त्रस्य अंगानि न सन्ति। उपनिषत्सुब्रह्माविद्यासर्वविद्याधारभूताप्रोक्ता। तदुक्तंमुण्डकोपनिषद–

स ब्रह्मविद्याप्रतिष्ठाम् अथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह।

अपि चः–सर्वेभवन्तुसुखिनः सर्वेसन्तुनिरामयाः।

सर्वे भद्राणिपश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभागभवेत्।।

उक्त चः–प्रदीपः सर्वविद्यानामुपायःसर्वकर्मणाम्।

आश्रयःसर्वधर्माणां शाश्वदान्वीक्षिकीमता।। (कौटिल्य अर्थशास्त्र 1.2)

भारतीयदर्शनस्य विश्वदर्शनजगतिमहत्वपूर्णंस्थानंवर्तते।

भारतीयदर्शनंसर्वतन्त्रं स्वतन्त्रं वर्ततेइतिस्वतन्त्र अध्ययनस्य विषयमस्ति।

उपसंहार :–

जनसाधारणदृष्ट्या योगः दुर्गमरहस्यमयश्च प्रतिभाति। अनेनप्रकारेण योगाभ्यासेनप्राप्तासिद्धि अपिअलौकिका एव। योगः आत्मसाक्षात्कारस्य सुदृढआधारोवर्तते। एतद्दृष्ट्या आत्मानित्य–शुद्ध–चैतन्य स्वरूपश्चास्ति। प्लेटो, अरस्तु, स्पिनोजा, कांट, हेगेलादि च वैज्ञानिका योगंस्वीकुर्वन्ति। आधुनिकमनस्तत्वविश्लेषणकर्तारः अस्मिन् विषये अत्यधिकंस्वज्ञानवृद्धिं कुर्वन्ति। योगतत्वस्य ज्ञानाय श्रद्धापूर्वकम् अस्य अध्ययनम् अभ्यासश्चआवश्यकौवर्तेते। अस्मिन् विषये ''मिसकास्टर'' (misscastar) कथयति। ममविश्वासो स्ति यत् जनाः जीवनस्य यवनिकापातंजानन्तिततोदूरेऽपि एकं प्रवेशद्वारमस्ति। ये दृढसंकल्पेनप्रस्थास्यन्तितेतज्ज्ञात्वापारंगमिष्यन्ति।

सन्दर्भ :–

1. भारतीयदर्शनम्।
2. पातंजलयोगदर्शनम्।
3. योगसूत्रम्।
4. श्रीमद्भगवद्गीता।
5. महाभारतम्।
6. बृहदारण्यकोपनिषद्।
7. केनोपनिषद।
8. ऋग्वेदपुरूषसूक्तम्।
9. कौटिल्य अर्थशास्त्रम्।
10. श्वेताश्वरउपनिषद्म्।
11. ईशावास्योपनिषद्म्।

मो0–9828546213

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 32-40

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

ਪੰਜਾਬੀ ਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦਾਮੁੱਢਲਾਇਤਿਹਾਸ

ਡਾ. ਪਰਮਜੀ ਤਕੋਰ 'ਪਾਹੁਲਾ'

ਐਸੋਸੀਏਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ , ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਖ਼ਾਲਸਾ ਕਾਲਜ, ਦਿੱਲੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ

'ਹਾਇਕੂ' ਜਾਪਾਨੀਕਾਵਿ-ਵਿਧਾਹੈਜੋਜਾਪਾਨੀਲਿਪੀਦੇ 17 ਅੱਖਰਾਂ 5-7-5 ਦੇਕ੍ਰਮਅਨੁਸਾਰਜੜਨਨਾਲਬਣਦੀਹੈ।ਇਹਕਵਿਤਾਦਾਛੋਟੇਤੋਂਛੋਟਾਅਤੇਸੰਖੇਪਰੂਪਹੈਜੋਕਿਤਿੰਨਪੰਕਤੀਆਂਵਿਚਬਹੁਤਹੀਸੂਖ਼ਮਭਾਵਾਂਦੇ 'ਹੁਣ' ਨੂੰਪ੍ਰਗਟਕਰਦਾਹੈ।ਇਸਲਈਭਾਵੇਂਇਸਕਾਵਿ-ਵਿਧਾਦੀਬਾਹਰੀਸੰਰਚਨਾਸਰਲਦਿਖਾਈਦਿੰਦੀਹੈਪਰਇਸਵਿਚਗਹਿਰੇਅਰਥਾਂਦਾਸੰਚਾਰਹੁੰਦਾਹੈ।ਪਰਮਿੰਦਰਸੋਢੀ 'ਹਾਇਕੂ' ਕਾਵਿਦੀਪਰਿਭਾਸ਼ਾਬੁੱਧਦੇਹਵਾਲੇਨਾਲਇਉਂਕਰਦਾਹੈ: ਚੇਤੰਨਅਵਸਥਾਦਾਨਾਂਹੀਹਾਇਕੂਹੈ।

ਜਾਗਣਾ

ਤੇਇਸਪਲਵਿਚ

ਜਾਗਣਾ(ਪੰਨਾ-7)

ਇਹਜਾਗਣਤੇਬੋਧਦਾਅਹਿਸਾਸਹੈ।ਇਸੇਬੋਧਦੀਝਲਕਦਾਸੁਨੇਹਾਹੁੰਦੇਹਨਹਾਇਕੂ :-

ਸੁੱਕੇਬਿਰਖਦੀਟਾਹਣੀ 'ਤੇ

ਕਾਂਇਕਆਣਬੈਠਾ

ਸਮਝੋਪੱਤਝੜਹੈਆਗਈ।(ਪੰਨਾ-12)

ਹਾਇਕੂਕਾਵਿਵਿਚਇਨ੍ਹਾਂਤਿੰਨਾਂਸਤਰਾਂਦੇਅਰਥਦਾਪਾਸਾਰਵਿਸਤ੍ਰਿਤਹੁੰਦਾਜਾਂਦਾਹੈ।ਹਾਇਕੂਕਵੀਕੋਲਬੋਧੀਭਿਖਸ਼ੂਵਾਂਗਇਕਛਿਣਵਿਚਲੁਕੀਸਦੀਵਤਾਨੂੰਲੱਭਣਦੀਤਲਾਸ਼ਹੈ।ਬੁੱਧ-ਧਾਰਾਨੂੰਅਮਲੀਜੀਵਨਵਿਚਮਹਿਸੂਸਕਰਨਤੇਵਰਤਣਨੂੰ 'ਜ਼ੇਨ' ਕਿਹਾਜਾਂਦਾਹੈ।ਪਹਿਲਾਂਪਹਿਲਇਸਕਾਵਿਰੂਪਨੂੰਬੋਧੀਭਿਖਸ਼ੂਆਂਨੇਹੀਪ੍ਰਚਲਤਕੀਤਾ।ਇਸਲਈਇਹਜਾਪਾਨਤੋਂਹੋਕੇਹੁਣਇਹਕਾਵਿ-ਧਾਰਾਪੂਰੇਵਿਸ਼ਵਸਾਹਿਤਦਾਅੰਗਬਣਗਈਹੈ।ਬੁੱਧ-ਪੁਰਖਜੀਵਨਦੀਹਰਸਥਿਤੀਵਿਚਸਹਿਜਵਿਚਰਣਦੇਯੋਗਹੁੰਦਾਹੈ।ਗੁਰਬਾਣੀਵਿਚਇਸਨੂੰ 'ਬ੍ਰਹਮਗਿਆਨੀ' ਦੀਅਵਸਥਾਕਿਹਾਗਿਆਹੈ।

ਬ੍ਰਹਮਗਿਆਨੀਸਦਾਨਿਰਲੇਪ॥

ਜੈਸੇਜਲਮਹਿਕਮਲਅਲੇਪ॥[1]

ਹਾਇਕੂਕਵੀਘਰੋਂਤੁਰਦਾਹੈਤਾਂਉਸਦੀਸੰਵੇਦਨਾਕੁਦਰਤਦੀਆਸ਼ਕਹੋਜਾਂਦੀਹੈ।ਉਹਕੁਦਰਤਵਿਚੋਂਬੋਲਦਾਹੈਅਤੇਕੁਦਰਤਉਸਵਿਚੋਂਬੋਲਣਲੱਗਦੀਹੈ। ਇਸੇਲਈਕੁਦਰਤਜਾਂਮੈਂਸਮਦੇਕਿਸੇਪਹਿਲੂਦਾਹਾਇਕੂਕਾਵਿਵਿਚਸਿੱਧਾਜਾਂਅਸਿੱਧਾਦਖ਼ਲਹੁੰਦਾਹੈ।ਉਹਪੱਤਿਆਂ, ਫੁੱਲਾਂ, ਦਰਖ਼ਤਾਂ, ਪੰਛੀਆਂਦੀਆਵਾਜ਼, ਕੀੜੀਆਂ, ਟਿੱਡੀਆਂ, ਪੱਥਰਾਂ, ਨਦੀਆਂ, ਝੀਲਾਂ, ਧੁੱਪਾਂ, ਛਾਵਾਂ, ਪੌਣਾਂਸੰਗਰਲਜਾਂਦਾਹੈ।ਉਸਵਿਚੋਂਦਵੈਤਖ਼ਤਮਹੋਜਾਂਦੀਹੈ।ਉਹਕਹਿਉੱਠਦਾਹੈ :

ਮੈਨੂੰਨਹੀਂਪਤਾ

ਕਿਹੜੇਬਿਰਖਤੋਂਆਰਹੀ

ਇਹਖੁਸ਼ਬੂ ?(ਪੰਨਾ-09)

ਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦਾਸੁਹਜਫੁੱਲਾਂ, ਚਿੜੀਆਂਤੇਤਿਤਲੀਆਂਤੱਕਹੀਸੀਮਤਨਹੀਂਹੋਸਕਦਾ, ਉਹਤਾਂਜਿਥੇਵੀਹੈਇਕਸਮਾਨਹੈ।ਉਹਤਾਂਜੀਵਨਦੀਹਰਧਾਰਾਵਿਚਇਕਸਾਰਵਿਚਰਦਾਹੈ।ਉਸਲਈਸਹਿਜਤਾ, ਸੁਹਜਤੇਸੰਵੇਦਨਾਇਕੋਹੀਸੂਖ਼ਮਵਰਤਾਰੇਦੇਨਾਮਹਨ।ਸੋਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦੀਪ੍ਰਮੁੱਖਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾ "ਘਟਨਾਅਤੇਕੁਦਰਤਦੇਕਿਸੇਵਿਸ਼ੇਸ਼ਪਹਿਲੂਦੀਮਾਰਫ਼ਤਮਨੁੱਖੀਭਾਵਾਂਨੂੰਵਿਅਕਤਕਰਨਵਿਚਹੈ, ਜੋਹੈਰਾਨੀ, ਖ਼ੁਸ਼ੀ-ਗ਼ਮੀ, ਇਕੱਲਤਾਅਤੇਧੰਨਵਾਦਆਦਿਦੇਅਹਿਸਾਸਪ੍ਰਗਟਕਰਨਲਈਉਹਉਸਪਲਤੇਆਪਣੀਚੇਤਨਾਨੂੰਕੇਂਦਰਤਕਰਦਾਹੈ, ਜਿਥੇਮਨੁੱਖੀਸੁਭਾਅਤੇਸਮੁੱਚੀਕੁਦਰਤਇਕੋਹੋਂਦਵਜੋਂਵਿਆਪਕਹੋਰਹੇਲੱਗਦੇਹਨ।"[2]ਇਹਇਕਸਹਿਜਅਨੁਭੂਤੀਤੇਛਿਣਾਂਦੀਗਾਥਾਹੈ।ਇਸਲਈਹਉਮੈਂ ਰਹਿਤਵਿਚਾਰਾਂਦਾਆਗਾਜ਼ਹੁੰਦਾਹੈ।

ਹਾਇਕੂਕਾਵਿਜਾਪਾਨੀਲੋਕਾਂਦੇਜੀਵਨ, ਸਭਿਆਚਾਰ, ਕਲਾਤੇਸਾਹਿਤਵਿਚਬੇਹੱਦਮਹੱਤਤਾਰੱਖਦਾਹੈ।ਅੱਜ 21ਵੀਂਸਦੀਦਾਮਨੁੱਖਵਿਗਿਆਨਤੇਤਕਨਾਲੋਜੀਦੇਦੌਰਵਿਚਵਿਚਰਰਿਹਾਹੈ।ਉਸਕੋਲਲੰਬੀਚੌੜੀਕਵਿਤਾਲਿਖਣਅਤੇਪੜ੍ਹਨਦੀਵਿਹਲਨਹੀਂਹੈ।ਇਸਲ ਈਹਾਇਕੂ-ਕਾਵਿਦੀਲੋਕਪ੍ਰਿਅਤਾਅਤੇਮਹੱਤਤਾਇਸਪਦਾਰਥਵਾਦੀਯੁੱਗਵਿਚਹੋਰਵੱਧਗਈਹੈ।ਹੁਣਇਹਜਾਪਾਨਦੀਧਰਤੀਤੱਕਹੀਸੀਮਤਨਹੀਂਬਲਕਿਸਮੁੱਚੇਸੰਸਾਰਦੇਸਾਹਿਤਦਾਮਹੱਤਵਪੂਰਨਅੰਗਬਣਚੁੱਕੀਹੈ।

ਪੰਜਾਬੀਵਿਚਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦਾਚਰਚਾਸੰਨ 2001 ਵਿਚਪਰਮਿੰਦਰਸੋਢੀਦੀਅਨੁਵਾਦਤਪੁਸਤਕ 'ਜਾਪਾਨੀਹਾਇਕੂਸ਼ਾਇਰੀ' ਨਾਲਸ਼ੁਰੂਹੋਇਆ।ਇਸਪੁਸਤਕਵਿਚਲੇਖਕਨੇ 17ਵੀਂਸਦੀਦੇਜਾਪਾਨੀਸਾਹਿਤਕਾਰਮਾਤਸੂਓਬਾਸ਼ੋਦੇਚੋਣਵੇਂਹਾਇਕੂਕਾਵਿਤੋਂਗੱਲਸ਼ੁਰੂਕਰਕੇ 20ਵੀਂਸਦੀਤੱਕਦੀਜਾਪਾਨੀਹਾਇਕਕਵਿਤਾਦਾਸੰਖੇਪਇਤਿਹਾਸਬਿਆਨਿਆਹੈ।

ਇਸਪੁਸਤਕਵਿਚਜਿਥੇਕਾਵਿਦੀਪਰਿਭਾਸ਼ਾ, ਵਿਧੀਅਤੇਸ਼ੈਲੀਪੱਖਨੂੰਉਘਾੜਿਆਹੈ, ਉਥੇਕੁਝਪ੍ਰਮੁੱਖਜਾਪਾਨੀਹਾਇਕੂਕਵੀਆਂਦੇਪੰਜਾਬੀਵਿਚਅਨੁਵਾਦਕੀਤੇਹਨ।ਜਿਵੇਂ-ਮਾਤਸੂਓਬਾਸ਼ੋ, ਯੋਸਾਬੂਸੋਨ, ਸਾਨਤੋਕਾ, ਨਾਤਸੂਮੇ,ਚੀਯੋ-ਨੀ, ਇੱਸਾਰਯੋਕਾਨ, ਸ਼ੰਕੀਮਾਸਾਓਕਾ, ਓਜ਼ਾਕੀ, ਹੋਸ਼ਾਈਅਤੇਕੁਝਹੋਰਹਾਇਕੂਕਵੀ।

ਇਸਦੌਰਦੀਕਵਿਤਾਵਿਚਤਿਤਲੀਤੇਲੜਕੀਦਾਕਾਵਿਬਿੰਬਸਾਰੇਕਵੀਆਂਨੇਸਿਰਜਿਆਹੈ।

ਇਕਤਿਤਲੀ

[1]ਗੁਰੂ ਗ੍ਰੰਥ ਸਾਹਿਬ,ਅੰਗ-272

[2]ਪੰਨਾ-13

ਕੁੜੀਦੇਰਾਹਵਿਚ

ਕਦੇਅੱਗੇ,ਕਦੇਪਿੱਛੇ।(ਚੀਯੋਨੀ)(ਪੰਨਾ-74)

ਹਾਇਕੂਕਵੀਪ੍ਰਕ੍ਰਿਤੀਤੇਪੰਛੀਆਂਦੀਇਕਮਿਕਤਾਨੂੰਇਨ੍ਹਾਂਸਤਰਾਂਰਾਹੀਂਬਿਆਨਕਰਦਾਹੈ:-

ਨਿੱਕੀਆਂਚਿੜੀਆਂ

ਫੁੱਲਾਂਵੱਲਮੂੰਹਖੋਲਦੀਆਂ

ਇਹਵੀਪੂਜਾਹੈ।(ਇੱਸਾ)(ਪੰਨਾ-79)

ਪਰਮਿੰਦਰਸੋਢੀਨੇਹਾਇਕੂਕਾਵਿਬਾਰੇਇਸਪੁਸਤਕਵਿਚਭਰਪੂਰਜਾਣਕਾਰੀਦਿੱਤੀਹੈ।ਉਸਨੇਹਾਇਕੂਤਿਤਲੀਆਂਦੇਹਮਸਫ਼ਰ, ਹਾਇਕੂ: ਸਭਿਆਚਾਰਪਿਛੋਕੜ, ਜਾਪਾਨੀਬੁੱਧਤਵ(ਜ਼ੇਨ) ਦੇਅਕਸਅਤੇਚੀਨੀਦਾਰਸ਼ਨਿਕਧਾਰਾਤਾਓਦੇਹਾਇਕੂਵਿਚਵਿਅਕਤਹੋਣਵਾਲੇਪ੍ਰਮੁੱਖਗੁਣਾਂਲੱਛਣਾਂਦਾਭਰਪੂਰਵਰਣਨਕੀਤਾਹੈ।ਸਹਿਜਤੇਸਰਲਤਾਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦੇਅਮੀਰੀਗੁਣਹਨ:-

ਸੁੱਖ 'ਚਵੀ

ਦੁੱਖ 'ਚਵੀ

ਘਾਹਉੱਗਦਾਰਿਹਾ।(ਸਾਨਤੋਕਾ) (ਪੰਨਾ-61)

ਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦੀਉੱਘੀਵਿਸ਼ੇਸ਼ਤਾਇਹਹੈਕਿਇਸਵਿਚਭਾਸ਼ਾਸਰਲਹੁੰਦੀਹੈ।ਕੁਦਰਤਦੇਸਮੁੱਚੇਅਤੇਸਹਿਜਵਰਤਾਰੇਲਈਪਿਆਰਦਾਭਾਵਹੁੰਦਾਹੈ।ਜਿਵੇਂ :-

ਅਸੀਂਤੈਨੂੰਘਰਕਿਰਾਏ 'ਤੇਦਿੰਦੇਹਾਂ

ਜਦਤਕਤੇਰੇਬੋਟਪਲਨਹੀਂਜਾਂਦੇ

ਨੀਚਿੜੀਏ।(ਇੱਸਾ)(ਪੰਨਾ-86)

ਕੁਦਰਤਦੀਵਿਤਕਰਾਰਹਿਤਫ਼ਿਤਰਤਬਾਰੇਸਾਨਤੋਕਾਦਾਲਿਖਿਆਹਾਇਕੂ :-

ਵੱਡਾਬਿਰਖਵੀ

ਮੈਂਵੀ, ਕੁੱਤਾਵੀ

ਭਿੱਜਰਹੇਕਿਣਮਿਣਹੇਠ।(ਸਾਨਤੋਕਾ)(ਪੰਨਾ-59)

ਕੁਦਰਤਜੋਵੀਦੇਰਹੀਹੈ, ਹਰਕਿਸੇਨੂੰਸਹਿਜਸੁਭਾਅਤੇਬਗ਼ੈਰਕੋਈਭੇਦਭਾਵਕੀਤਿਆਂਦੇਰਹੀਹੈ।ਹਾਇਕੂਕਵੀਅਨੁਸਾਰ, ਸਾਧਾਰਨਤੇਕੁਦਰਤੀਗੱਲਾਂਪਿੱਛੇਲੁਕੀਵਿਸ਼ਮੈਕਾਰੀਸੱਤਾਨੂੰਪਛਾਣਨਾਤੇਹੈਰਾਨੀਦੇਭਾਵਵਿਚਡੁੱਬਜਾਣਾਅਤੇਫਿਰਇਸਹੈਰਾਨਕਰਦੇਣਵਾਲੇਤੱਤ/ਭਾਵਉਪਰਪੂਰਾਧਿਆਨਕੇਂਦ੍ਰਿਤਕਰਨਦੀਹਾਇਕੂਅੰਦਰਪਈਕਵਿਤਾਦਾਆਧਾਰਹੈ :

ਝੜਨਸਮੇਂਵੀ

ਮਨਸਹਿਜ

ਪੋਸਤਸਹਿਜ(ਏਤਸੂਜ਼ਿਨ) (ਪੰਨਾ-24)

ਕੁਝਵਿਦਵਾਨਅਨੁਭਵਦੇਇਸਕੇਂਦਰਭਾਵਨੂੰਹਾਇਕੂ 'ਛਿਣ' ਦਾਨਾਮਦਿੰਦੇਹਨ।'ਯੂਸੂਦਾ'ਅਨੁਸਾਰਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦਾਰੂਪਕਪੱਖਇਕਸਾਹਤੋਂਲੰਮੇਰਾਨਹੀਂਹੋਸਕਦਾਅਤੇਉਸਅੰਦਰਵਾਪਰਰਹੀਘਟਨਾਵਿਚਕਿੱਥੇ ਕੀਤੇਕਦੋਂਦੇਤਿੰਨਤੱਤਾਂਨੂੰਪਹਿਚਾਣਿਆਜਾਸਕਦਾਹੈ।ਜਿਵੇਂ :

ਕਿੱਥੇ : ਸੁੱਕੇਬਿਰਖਦੀਟਾਹਣੀ 'ਤੇ

ਕੀ : ਕਾਂਇਕਆਣਬੈਠਾ

ਕਦੋਂ : ਸਮਝਪੱਤਝੜਹੋਆਗਈ।(ਪੰਨਾ-26)

ਇਉਂਇਸਪੁਸਤਕਤੋਂਪਹਿਲਾਂਪਰਮਿੰਦਰਸੋਢੀਨੇ'ਅਜੋਕੀਜਾਪਾਨੀਸ਼ਾਇਰੀ'ਵਿਸ਼ੇਸ਼ਅੰਕ 'ਅੱਖਰ' ਮੈਗ਼ਜ਼ੀਨਵਿਚਪ੍ਰਕਾਸ਼ਿਤਕੀਤਾਅਤੇਇਸਦਾਸਾਹਿਤਜਗਤਵਿਚਚਰਚਾਛਿੜਿਆ।ਡਾ. ਸੁਤਿੰਦਰਸਿੰਘ,ਮਨਜੀਤਸਿੰਘਨੇਜਾਪਾਨੀਹਾਇਕੂਬਾਰੇਪੱਤਰਪੱਤ੍ਰਿਕਾਵਾਂਅਤੇਸਾਹਿਤਕਸਭਾਵਾਂਵਿਚਇਸਬਾਰੇਮੁੱਢਲੀਜਾਣਕਾਰੀਦਿੱਤੀਹੈ।ਹਿੰਦੀਸਾਹਿਤਜਗਤਵਿਚਵੀਇਸਕਾਵਿ-ਵਿਧਾਅੰਦਰਕਵਿਤਾਵਾਂਲਿਖੀਆਂਗਈਆਂਹਨ।ਸਤਿਆਭੂਸ਼ਨਵਰਮਾ, ਭਗਤੀਸ਼ਰਣਅਗਰਵਾਲ, ਕਸ਼ਮੀਰੀਲਾਲਚਾਵਲਾਅਤੇਅਗੇਅਆਦਿਨੇਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦੀਰਚਨਾਕੀਤੀ।

ਪੰਜਾਬੀਵਿਚਬਸੰਤਕੁਮਾਰਰਤਨਅਤੇਜਸਵੰਤਸਿੰਘਵਿਰਦੀਨੇਪੰਜਾਬੀਹਾਇਕੂਸ਼ੁਰੂਕੀਤੇ। 2005 ਵਿਚਮਲਕੀਤਸਿੰਘਸੰਧੂਦੀ 'ਬਿਖਰੇਮੋਤੀ' ਪੁਸਤਕਸਾਹਮਣੇਆਈਅਤੇਇਸੇਦੌਰਾਨਹੀਕਸ਼ਮੀਰੀਲਾਲਚਾਵਲਾਤੇਜਰਨੈਲਸਿੰਘਭੁੱਲਰਦੀਪੁਸਤਕ 'ਪੰਜਾਬੀਹਾਇਕੂ' ਨਾਲਸਾਹਿਤਜਗਤਵਿਚਹਲਚਲਪੈਦਾਹੋਈ।ਇਸਦੇਨਾਲਉਰਮਿਲਾਕੌਲ, ਪ੍ਰੋ. ਦਾਤਾਰਸਿੰਘ, ਪ੍ਰੋ. ਮਲਕੀਤਸਿੰਘ,ਬਿਕਰਮਜੀਤਨੂਰ,ਸੋਨੀਤਨੇਜਾ, ਡਾ. ਸੁਰਿੰਦਰਕੰਬੋਜ, ਸੋਹਨਸਿੰਘਬਰਾੜ, ਬੂਟਾਸਿੰਘਵਾਕਿਫ਼ਅਤੇਸੁਖਦੇਵਕੌਰਚਮਕਆਦਿਕਵੀਆਂਨੇਪੰਜਾਬੀਵਿਚਹਾਇਕੂਲਿਖਣਦੀਪਰੰਪਰਾਪੈਦਾਕੀਤੀ।ਇਨ੍ਹਾਂਦੁਆਰਾਲਿਖੇਹਾਇਕੂਵੱਖ-ਵੱਖਪੱਤਰ-ਪੱਤ੍ਰਿਕਾਵਾਂਵਿਚਅਕਸਰਛਪਦੇਰਹਿੰਦੇਹਨ।

ਕਸ਼ਮੀਰੀਲਾਲਚਾਵਲਾਦੀਆਂਤਿੰਨਪੁਸਤਕਾਂਵਿਚੋਂਇਕਵਿਚਜਰਨੈਲਸਿੰਘਭੁੱਲਰਦੇਹਾਇਕੂਵੀਸ਼ਾਮਿਲਹਨ।ਕਸ਼ਮੀਰੀਲਾਲਚਾਵਲਾਦੀਖ਼ਾਸੀਅਤਇਕੋਵੇਲੇਹਿੰਦੀ-ਪੰਜਾਬੀਭਾਸ਼ਾਵਿਚਹਾਇਕੂਲਿਖਣਵਿਚਹੈ।ਉਹਦੋਨਾਂਹੀਭਾਸ਼ਾਵਾਂਵਿਚਹਾਇਕੂਕਵਿਤਾਦਾਨਿਭਾਅਬਾਖ਼ੂਬੀਕਰਦਾਹੈ।ਇਸਲਈਕਸ਼ਮੀਰੀਲਾਲਚਾਵਲਾਪੰਜਾਬੀਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦੇਜਨਮਦਾਤਾਕਹੇਜਾਸਕਦੇਹਨ।ਭਾਵੇਂਇਨ੍ਹਾਂਦੇਸਮਕਾਲੀਮਲਕੀਤਸਿੰਘਸੰਧੂਜੋਇਸਦੁਨੀਆਵਿਚਨਹੀਂਹਨ, ਨੇਵੀਪੰਜਾਬੀਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦੀਆਂਭਾਵਪੂਰਤਵੰਨਗੀਆਂਪੇਸ਼ਕੀਤੀਆਂਹਨ।ਜਿਵੇਂ:-

ਸੁਣਚਮਚੇ

ਚਮਚਾਹੀਰਹਿਣਾ

ਭੁੱਲਨਾਜਾਈਂ(ਪੰਨਾ-42)

ਪਰਕਸ਼ਮੀਰੀਲਾਲਚਾਵਲਾਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦੀਧੁਨਵਿਚਲੱਗਿਆਹੋਇਆਹੈਅਤੇਉਸਦੀਆਂਦਰਜਨਤੋਂਵੱਧਪੁਸਤਕਾਂਇਸਗੱਲਦੀਗਵਾਹੀਭਰਦੀਆਂਹਨ।ਉਹਸਮਾਜਕਵਿਸ਼ਿਆਂਨੂੰਸੂਖਮਛੂਹਾਂਨਾਲਬੇਈਮਾਨੀਦੀਪ੍ਰਧਾਨਤਾਤੇਈਮਾਨਦਾਰੀਦੀਗੌਣਅਵਸਥਾਦਾਇਉਂਜ਼ਿਕਰਕਰਦਾਹੈ:-

ਈਮਾਨਦਾਰੀ

ਜ਼ਿੰਦਾਨਹੀਂਹੈਹੁਣ

ਸਾਡੇਦਿਲਾਂ'ਚ (ਪੰਨਾ-53)

ਅੱਜਪੰਜਾਬਦੀਨੈਜਵਾਨੀਜੋਨਸ਼ਿਆਂਦੇਰਾਹਤੁਰਪਈਹੈ, ਕਵੀਹਾਇਕੂਰਾਹੀਂਇਉਂਬਿਆਨਕਰਦਾਹੈ :-

ਸਾੜਗੇਨਸ਼ੇ

ਮਸਤਜਵਾਨੀਆਂ

ਬੁਝਾਵੇਕੌਣ।(ਪੰਨਾ-47)

ਕਵੀਮਾਂਬੋਲੀਦੀਅਹਿਮੀਅਤਅਤੇਮਾਤ-ਭਾਸ਼ਾਪ੍ਰਤੀਚੇਤਨਤਾਦੇਅਹਿਸਾਸਨੂੰਇਸਹਾਇਕੂਕਾਵਿਰਾਹੀਂਇਉਂਪ੍ਰਗਟਾਉਂਦਾਹੈ:-

ਲੈਕੇਖੁਸ਼ਬੂ

ਥਾਂ-ਥਾਂਵੰਡਦੇਵਾਂਗਾ

ਮਾਤਭਾਸ਼ਾਦੀ।(ਪੰਨਾ-87)

ਇਸੇਤਰ੍ਹਾਂਜਰਨੈਲਸਿੰਘਭੁੱਲਰਦੁਆਰਾਪੰਜਾਬਵਿਚਅੱਤਵਾਦਦੇਦੌਰਤੋਂਕਰਕੇਪੰਜਾਬਦੀਕਿਰਸਾਨੀਦੀਨਿਘਰਦੀਸਥਿਤੀਨਸ਼ੇ, ਰਿਸ਼ਵਤਖੋਰੀ, ਗੱਲਲੀਡਰਾਂਦੇਬਾਰੇ, ਦਾਜਦਾਕੋਹੜ, ਏਡਜ਼ਅਤੇਅੱਜਦਾਗੰਭੀਰਵਿਸ਼ਾਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣਪ੍ਰਤੀਚੇਤਨਾਬਾਰੇਇਉਂਕਹਿੰਦਾਹੈ:-

ਪਰਾਲੀਸੜੀ

ਪ੍ਰਦੂਸ਼ਣਵਧਿਆ

ਧੂੰਆਂਹੀਧੂੰਆਂ। (ਪੰਨਾ-72)

ਕਸ਼ਮੀਰੀਲਾਲਚਾਵਲਾਦੀਆਂਦੋਹੋਰਮਹੱਤਵਪੂਰਨਪੁਸਤਕਾਂ 'ਹਾਇਕੂਯਾਤਰਾ' ਅਤੇ 'ਯਾਦੇਂ'ਹਨ।ਕਵੀਇਨ੍ਹਾਂਪੁਸਤਕਾਂਰਾਹੀਂਜ਼ਿੰਦਗੀਸੱਚਨੂੰਸਾਡੇਸਾਹਮਣੇਸਾਕਾਰਕਰਦਾਹੈ।ਉਹਮੁਟਿਆਰਦੇਬਿੰਬਨੂੰਜ਼ਿੰਦਗੀਨਾਲਤਰਜ਼ੀਹਦਿੰਦਾਹੈ :-

ਤਨਅਸਾਡੇ

ਸਮਾਜਨਾਲਜੁੜੇ

ਕੁੜੀਜ਼ਿੰਦਗੀ।(ਪੰਨਾ-09)

ਪਰਿਵਰਤਨਲਈਕ੍ਰਾਂਤੀਕਾਰੀਵਿਚਾਰਧਾਰਾਦਾਆਗਾਜ਼ਹੈਜ਼ਿੰਦਗੀ।

ਜਾਗਸਾਥੀਆ

ਬਦਲਸਮਾਜਨੂੰ

ਕ੍ਰਾਂਤੀਜ਼ਿੰਦਗੀ।(ਪੰਨਾ-04)

ਉਹਜ਼ਿੰਦਗੀਦੇਬ੍ਰਹਿਮੰਡੀਅਰਥਾਂਦਾਪਾਸਾਰਇਸਹਾਇਕੂਰਾਹੀਂਇਉਂਕਰਦਾਹੈ :-

ਕਦੇਸਾਗਰ

ਹੈਕਦੇਸਮੁੰਦਰ

ਬੂੰਦ-ਜ਼ਿੰਦਗੀ।(ਪੰਨਾ-10)

ਜ਼ਿੰਦਗੀਇਕਅਣਬੁੱਝੀਬੁਝਾਰਤਹੈ, ਜ਼ਿੰਦਗੀਦੇਸੂਖ਼ਮਅਹਿਸਾਸਦਾਭੰਡਾਰਇਸਪੁਸਤਕਵਿਚਛਪਿਆਪਿਆਹੈ।ਇਹੋਹੀਕਵੀਕਸ਼ਮੀਰੀਲਾਲਚਾਵਲਾਦੀਪ੍ਰਾਪਤੀਹੈ।ਉਹਪੰਜਾਬੀਭਾਸ਼ਾਪ੍ਰਤੀਆਪਣੇਪਿਆਰਨੂੰਸਕੂਲਾਂਵਿਚਜਾਕੇਉਨ੍ਹਾਂਛੋਟੇਬੱਚਿਆਂਕਰਨੀਸਿਖਾਉਂਦਾਹੈ, ਜੋਪੰਜਾਬੀਭਾਸ਼ਾ, ਪੰਜਾਬੀਬੋਲੀਅਤੇਪੰਜਾਬੀਸਭਿਆਚਾਰਨੂੰਮੁਹੱਬਤਕਰਦੇਹਨ।ਕਵੀ'ਪੰਜਾਬੀਅਦਬੀਪਰਿਕਰਮਾ'ਪੱਤਰਅਤੇ'ਹਿੰਦੀਅਦਬੀਮਾਲਾ'ਦੇਸੰਪਾਦਕਹੋਣਕਰਕੇ, ਉਹਇਸਕਾਵਿ-ਵਿਧਾਨੂੰਪ੍ਰਫੁੱਲਤਕਰਨਲਈਅਕਸਰਵਿਸ਼ੇਸ਼ਅੰਕਕੱਢਦਾਰਹਿੰਦਾਹੈਅਤੇਨਵੇਂਉਭਰਦੇਕਵੀਆਂਨੂੰਉਤਸ਼ਾਹਤਕਰਦਾਹੈ।ਇਹਪੰਜਾਬੀਸਾਹਿਤਅਤੇਪੰਜਾਬੀਅਤਲਈਮਾਣਵਾਲੀਗੱਲਹੈ।ਉਹਲਗਾਤਾਰਲਿਖਰਿਹਾਹੈ, ਅੱਜਦਰਜਨਤੋਂਵੱਧਪੁਸਤਕਾਂਰਾਹੀਂਹਾਇਕੂਕਾਵਿਨੂੰਪ੍ਰਫੁਲਤਕੀਤਾ।

ਅਗਲੀਪੁਸਤਕ 'ਨਿਮਖ'ਅਮਰਜੀਤਸਾਥੀਦੁਆਰਾਲਿਖੀਗਈਹੈ।ਇਹਆਪਣੇਨਾਮਵਾਂਗਹੀਪਲਛਿਣਦੇਅਹਿਸਾਸਾਂਦੀਗਾਥਾਬਿਆਨਕਰਦੀਹੈ।ਅਮਰਜੀਤਸਾਥੀਕੈਨੇਡਾਦੀਧਰਤੀ'ਤੇਵਿਚਰਦਿਆਂਆਪਣੇਨਾਲਆਪਣੀਪੰਜਾਬੀਰਹਿਤ, ਪੰਜਾਬੀਸਭਿਆਚਾਰ, ਮਨੁੱਖਤੇਜਾਨਵਰਾਂਦੀਪੁਰਾਣੀਸਾਂਝ, ਸਮੇਂਦੀਸੰਭਾਲ, ਮੌਸਮੀਤਬਦੀਲੀਆਂਨੂੰਕਲਾਤਮਕਛੂਹਾਂਦਿੰਦਾਹੈ:-

ਰੱਖੀਪੱਤਝੜਤਆਈ

ਬੇਬੇਦੀਫੁਲਕਾਰੀ

ਧੁੱਪੇਸੁੱਕਣੀਪਾਈ।(ਪੰਨਾ-28)

ਚਰਖਾਜੋਅੱਜਸਾਡੇਚੇਤਿਆਂ'ਚੋਂਵਿਸਰਗਿਆਹੈ, ਪਰਕਵੀਦੀਸਿਮ੍ਰਿਤੀਵਿਚਅੱਜਵੀਕਾਇਮਹੈ :-

ਇਕਦੂਣੀਦੂਣੀ

ਬੱਚਾਪੜ੍ਹੇਪਹਾੜੇ

ਬੀਬੀਕੱਤੇਪੂਣੀ।(ਪੰਨਾ-30)

ਇਸਪੁਸਤਕਬਾਰੇਨਵਤੇਜਭਾਰਤੀ, ਹਰਿੰਦਰਮਹਿਬੂਬਅਤੇਸੁਤਿੰਦਰਸਿੰਘਨੂਰਨੇਟਿੱਪਣੀਕਰਦਿਆਂਕਿਹਾਹੈਕਿ 'ਨਿਮਖ' ਪੁਸਤਕਦਾਕਮਾਲਇਸਦੀਸੂਖਮਕਾਵਿਕਤਾਅਤੇਸਾਦੀਭਾਸ਼ਾਵਿਚਹੈ, ਇਹਪੰਜਾਬੀਭਾਵ-ਬੋਧਅਤੇਜਾਪਾਨੀਜ਼ੇਨਸੁਰਤਨਾਲਜੁੜੀਹੋਈਹੈ।ਇਹਦੂਹਰੇਅਵਚੇਤਨਦੀਕਵਿਤਾਹੈ।ਜੋਪਾਠਕਨੂੰਕੀਲਦੀਤੁਰੀਜਾਂਦੀਹੈ।ਨਵਤੇਜਭਾਰਤੀਇਸਨੂੰਨਿਸ਼ਕਾਮਦ੍ਰਿਸ਼ਟੀਦੀਕਵਿਤਾਕਹਿੰਦਾਹੈ।ਡਾ. ਪ੍ਰਿਥਵੀਰਾਜਥਾਪਰਨੇਇਸਪੁਸਤਕਦਾਰੀਵਿਊਕਰਦਿਆਂਲਿਖਿਆਕਿਇਸਪੁਸਤਕਅੰਦਰਕਵੀਦਾਅੱਧੀਸਦੀਦਾਅਨੁਭਵਬੋਲਦਾਹੈ।ਕਵੀਬਹੁਤਹੀਨੀਝਨਾਲਵੇਖੇ-ਪਰਖੇਜ਼ਿੰਦਗੀਦੇਸੱਚਨੂੰਪਾਠਕਾਂਦੇਰੂਬਰੂਕਰਦਾਹੈ।

ਅਮਰਜੀਤਸਾਥੀਨੇਹਾਇਕੂਦੀ 17

ਧੁਨੀਚਿੰਨ੍ਹਾਂਵਾਲੀਪਰੰਪਰਾਨੂੰਆਧਾਰਨਹੀਂਬਣਾਇਆਬਲਕਿਉਸਦੇਰਚਿਤਹਾਇਕੂਵਿਚਤਾਂਇਹਗਿਣਤੀਕਈਥਾਈਂ 25-26 ਅੱਖਰਾਂਤੱਕਪੁੱਜਜਾਂਦੀਹੈ।ਜਿਵੇਂ :-

ਕੱਤਕਮਾਹਸੁਹਾਵਣਾ

ਘਰਮੂਹਰੇਗੁਲਦਾਉਦੀਆਂ

ਵਿਹੜੇਰੰਗਲੇਰੁੱਖ।(ਪੰਨਾ-45)

ਸਾਥੀਦੀਕਵਿਤਾਦਾਅਮੀਰੀਗੁਣਦ੍ਰਿਸ਼ਵਰਣਨਵਿਚਹੈ —

ਹਰਿਮੰਦਰਪਰਿਕਰਮਾ

ਮਾਪੇਟੇਕਣਮੱਥਾ

ਬੱਚੇਵੇਖਣਮੱਛੀਆਂ।(ਪੰਨਾ-13)

ਅੱਜਦੇਪਦਾਰਥੀਮਨੁੱਖਦੀਹੋਣੀਜਿਸਵਿਚਬੱਚੇਦਾਬਚਪਨਅਤੇਬਜ਼ੁਰਗਾਂਦੀਸੰਭਾਲਦੋਵੇਂਹੀਗੁੰਮਗਏ।

ਉਲਝੇਤਾਣੇ-ਬਾਣੇ

ਡੇ-ਕੇਅਰਵਿਚਬੱਚੇ

ਬਿਰਧਘਰਾਂਵਿਚਸਿਆਣੇ।(ਪੰਨਾ-59)

ਸਾਥੀਦੀਕਵਿਤਾਵਿਚੋਂਕਿਰਸਾਨੀਸੰਕਟਵੀਉਭਰਦਾਹੈ :-

ਪਾਣੀਲਾਉਂਦਾਸੌਂਗਿਆ

ਲੈਸਰਹਾਣੇਵੱਟ

ਲੱਗਾਬਿਜਲੀਕੱਟ(ਪੰਨਾ-51)

ਸੰਰਚਨਾਦੀਵਿਧੀਪੱਖੋਂਭਾਵੇਂਇਸਪੁਸਤਕਵਿਚ 5-7-5 ਦੀਧੁਨੀਚਿੰਨ੍ਹਾਂਦਾਅੰਕੜਾਵੱਧਘੱਟਹੈਪਰਇਹਤਿੰਨਪੰਕਤੀਆਂਵਿਚਹੈ, ਇਸਲਈਰੂਪਕਪੱਖਤੋਂਇਹਜਾਪਾਨੀਜ਼ੇਨਹਾਇਕੂਕਵਿਤਾਨੂੰਆਧਾਰਬਣਾਉਂਦੀਹੈ।ਇਸੇਹੀਦੌਰਦੀਇਕਹੋਰਮਹੱਤਵਪੂਰਨਪੁਸਤਕ 'ਖਿਣ'ਇਕਬਾਲਦੀਪਦੁਆਰਾਲਿਖੀਗਈਹੈ।ਡਾ.ਕਰਨਜੀਤਸਿੰਘਟਿੱਪਣੀਕਰਦਿਆਂਇਸਨੂੰਅਸਮਾਨੀਰੰਗਾਂਦੇਜਲਨਾਲਤੁਲਨਾਦਿੱਤੀਹੈ।ਡਾ. ਨਰਿੰਦਰਸਿੰਘਨੇਇਸਪੁਸਤਕਦੀਲੰਮੀਭੂਮਿਕਾਵਿਚ 'ਖਿਣ' ਦਾਵਿਸ਼ਲੇਸ਼ਣਕਰਦਿਆਂਕਿਹਾਹੈਕਿ"ਜਿਵੇਂ – 'ਖਿਣ' ਸਮੇਂਦੀਲਘੂਤਮਇਕਾਈਹੈ।ਇਸਵਿਚਮਾਨਵੀਵਿਹਾਰਾਂਨੂੰਪਕੜਣ, ਘੋਖਣ, ਪੜਚੋਲਣਦਾਪੁਰਜ਼ੋਰਜਤਨਹੈ।"[3]

'ਖਿਣ' ਪੁਸਤਕਵਿਚਜਿਥੇਜ਼ਿੰਦਗੀਦੇਵੱਖ-ਵੱਖਰੰਗਾਂਦੀਸੋਝੀਹੁੰਦੀਹੈ, ਉਥੇਸਮਾਜਦੀਸਥਿਤੀਅਤੇਉਸਦੀਵਿਦਿਅਕਪ੍ਰਣਾਲੀਬਾਰੇਗੁੱਝਾਵਿਅੰਗਮਿਲਦਾਹੈ।

ਵਿਦਿਆਦਹਿਸ਼ਤਮਾਰੀ

[3]ਪੰਨਾ-16

ਡਾਢੀਔਖੀਭਾਰੀ

ਚੁੱਕਨਾਸਕੇਖਾਰੀ।(ਪੰਨਾ-83)

ਮਾਂਬੋਲੀਪੰਜਾਬੀਦੀਦੁਰਦਸ਼ਾਬਾਰੇਇਹਤਿਪਦਾ :-

ਗ਼ੈਰਜਹੀਬੋਲੀ

ਬੱਚੇਸਾਡੇਬੋਲਣ

ਭਈਏ, ਸਾਡੀਬੋਲੀ।(ਪੰਨਾ-58)

'ਖਿਣ' ਪੁਸਤਕਦੀਆਂਇਨ੍ਹਾਂਤਿਪਦੇਹਾਇਕੂਕਵਿਤਾਵਾਂਦੀਖੂਬੀਰੂਪਕਅਤੇਸ਼ੈਲੀਪੱਖਤੋਂਵਿਚਾਰਨਤੇਪਤਾਲੱਗਦਾਹੈਕਿਇਸਕਵਿਤਾਵਿਚਰਸ, ਲੈਅਅਤੇਵਿਚਾਰਦੇਨਾਲਇਕਸੰਗੀਤਕਧੁਨਪੈਦਾਹੁੰਦੀਹੈ।ਇਹਤਿਪਦੇਹਾਇਕੂਨਿੱਕੇ-ਨਿੱਕੇਪ੍ਰਭਾਵਤੇਸੰਵੇਦਨਸ਼ੀਲਤਾਦਾਖ਼ਜ਼ਾਨਾਹੈ।ਡਾ. ਨਰਿੰਦਰਸਿੰਘਨੇਇਸਕਵਿਤਾਨੂੰਛੋਟੀਚਾਦਰਵਿਚਪੂਰੇਪੈਰਪਸਾਰਣਦੀਕਲਾਕਿਹਾਹੈ।

ਇਹਜਿੰਨੇਬਾਹਰੀਬਣਤਰਦੀਵਿਧੀਪੱਖੋਂਸਰਲਲੱਗਦੇਹਨ, ਓਨੇਕਈਵਾਰਪੜ੍ਹਨਨਾਹਿਰੇਅਰਥਾਂਦਾਸੰਚਾਰਕਰਦੇਜਾਂਦੇਹਨ।ਇਹਰਚਨਾਆਪਣੇਸਮੇਂਦਾਸੱਚਹੋਣਦੇਬਾਵਜੂਦਸਮੇਂਤੋਂਪਾਰਜਾਣਦੀਸਮਰੱਥਾਰੱਖਦਾ ਹੈ।ਇਸੇਲਈਇਹਪ੍ਰਭਾਵਸ਼ਾਲੀਹੈ:-

ਤੂੰਮੈਂਤਬਲਾ

ਜ਼ਾਕਿਰਹੁਸੈਨਦਾ

ਬੰਸਰੀਚੌਰਸੀਆਦੀ। (ਪੰਨਾ-19)

ਸਮੇਂਨੂੰਪਛਾਣਨਦਾਅਹਿਸਾਸ 'ਖਿਣ' ਦੇਹਾਇਕੂਕਾਵਿਵਿਚਬੜੀਸ਼ਿੱਦਤਨਾਲਪ੍ਰਗਟਹੋਇਆਹੈ :-

ਵੱਤ `ਚਕੇਰੇਹੁੰਦੇਬੀਅ

ਹਾਸਿਆਂਦੀਫ਼ਸਲਭਲਾ

ਸਾਂਭਿਆਂਸਾਂਭੀਜਾਂਦੀ।(ਪੰਨਾ-21)

ਭਾਰਤੀਜੀਵਨਸ਼ੈਲੀਦੇਮੁਕਾਬਲੇਵਿਦੇਸ਼ੀਸਾਫ਼ਸੁਥਰੇਪਣਦਾਬਿਆਨਕਵੀਇਉਂਕਰਦਾਹੈ:-

ਸੜਕ'ਤੇਥੁੱਕਦਾ

ਉਹਸੋਚੇ, ਵਿਦੇਸ਼

ਸਾਥੋਂਸਾਫ਼ਸੁਥਰਾ। (ਪੰਨਾ-23)

ਤਕਨਾਲੋਜੀਦੇਯੁੱਗਵਿਚਬੱਚੇਦੀਜੀਵਨਸ਼ੈਲੀਅਤੇਮਨੁੱਖਦੀਹੋਣੀਕੁਝਇਸਤਰ੍ਹਾਂਹੋਗਈਹੈ :-

ਪੜ੍ਹਦਾਬੱਚਾ

ਟੀ.ਵੀ. ਤੱਕਦਾ

ਕੰਨ'ਤੇਈਅਰਫੋਨ।(ਪੰਨਾ-65)

ਇਉਂਅਸੀਂਕਹਿਸਕਦੇਹਾਂਕਿ 'ਖਿਣ' ਪੁਸਤਕਵਿਚਜਿਥੇਕੁਦਰਤਦੇਵਰਤਾਰੇਦੀਗੱਲਕੀਤੀਹੈ, ਉਥੇਮਨੁੱਖਵੱਲੋਂਆਪਣੇਹੱਥੀਂਆਪੇਹੀਤਬਾਹੀਦੇਵਰਤਾਰੇਨੂੰਸੂਖਮਮਨੋਭਾਵੀਅਹਿਸਾਸਾਂਨਾਲਜੋੜਿਆਗਿਆਹੈ :-

ਰੱਖਦੇਦੇਭਰ

ਪਿਉਦਦਾਕਮਾਲ

ਪਾਕਿਸਤਾਨ, ਹਿੰਦੁਸਤਾਨ।(ਪੰਨਾ-87)

ਇਉਂਇਸਪੁਸਤਕਵਿਚਕਵੀਨੇਉਨ੍ਹਾਂਖਿਣਾਂਨੂੰਪਕੜਨਦੀਕੋਸ਼ਿਸ਼ਕੀਤੀਹੈਜੋਸਾਡੇਆਲੇ-ਦੁਆਲੇਨਿੱਤਵਾਪਰਦੇਹਨ।

ਅਸੀਂਇਸਪਰਚੇਵਿਚ 21ਵੀਂਸਦੀਦੇਮੁੱਢਲੇਪੰਜਾਬੀਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦਾਜਾਇਜ਼ਾਲੈਣਦਾਨਿਮਾਣਾਜਿਹਾਯਤਨਕੀਤਾਹੈ।ਇਹਹਾਇਕੂਕਾਵਿਪਰੰਪਰਾਵਿਚਪਹਿਲਾਕੰਮਹੈ।ਇਸਲਈਇਸਦੀਸਥਿਤੀਅਤੇਸੰਭਾਵਨਾਖੁੱਲ੍ਹੀਆਂਹਨ।ਨਵੀਂਸਦੀਦੀਆਮਦਨਾਲਜਿਥੇਕਲਾਤੇਸਾਹਿਤਦੇਖੇਤਰਵਿਚਨਵੀਆਂਸੰਭਾਵਨਾਵਾਂਪੈਦਾਹੋਰਹੀਆਂਹਨ, ਉਥੇਪੰਜਾਬੀਕਾਵਿਪਰੰਪਰਾਦੇਇਤਿਹਾਸਵਿਚਪੰਜਾਬੀਹਾਇਕੂਕਾਵਿਦਾਨੋਟਿਸਲਿਆਜਾਣਾਸਮੇਂਦੀਮੰਗਹੈ।ਅੱਜਹਾਇਕੂਕਵੀਨਵੇਂ-ਨਵੇਂਪ੍ਰਯੋਗਕਰਰਹੇਹਨਜਿਵੇਂਹਾਇਕੂਤਿਪਦੇ, ਹਾਇਕੂਗੀਤ, ਹਾਇਕੂਕਵਿਤਾ, ਹਾਇਕੂਦੋਪਦੇ, ਹਾਇਕੂਗਜ਼ਲਅਤੇਹਾਇਕੂਰੁਬਾਈ, ਹਾਇਕੂਤਾਂਕਾ, ਸਦੋਕਾ, ਰੇਂਗਾਆਦਿ।

ਅੰਤਵਿਚਅਸੀਂਕਹਿਸਕਦੇਹਾਂਕਿਹਾਇਕੂਕਵਿਤਾਉਹਕਵਿਤਾਹੈਜਿਸਦਾਆਕਾਰਨਿਸ਼ਚਿਤਹੈਭਾਵਤਿੰਨਪੰਕਤੀਆਂਵਿਚਮੁਕੰਮਲਕਵਿਤਾਕਹਿਣੀ।ਦੂਸਰਾਇਸਦੀਸੰਰਚਨਾ 5-7-5 ਦੇਪੈਰਾਮੀਟਰਅਨੁਸਾਰਹੋਣੀਚਾਹੀਦੀਹੈ।ਤੀਸਰਾਨੁਕਤਾਉਸਸਾਹਮਣੇਵਾਪਰਰਹੇਛਿਣਨੂੰਫੜਨਾਹੈ।ਜਿਸਨਾਲਸਾਡੀਚੇਤਨਾਜਾਗਉੱਠੇ।ਇਸਵਿਚਪ੍ਰਕਿਰਤੀਦੀਇਕਸਾਰਤਾ, ਕੁਦਰਤੀਮੈਸਮੀਵਰਤਾਰੇਦੇਦ੍ਰਿਸ਼ਵਰਣਨਕਰਕੇਇਹਵਿਧੀਪੱਖੋਂਵੱਖਰੀਵਿਧਾਹੈ।ਇਸਕਵਿਤਾਨੇਆਪਣੇਮੂਲਸੁਭਾਅਸੰਖੇਪਤਾ,ਸੂਖਮਤਾਤੇਸੁਹਜਤਾਨੂੰ ਦੇਸ਼ਕਾਲਦੀਹਰਸੀਮਾਂਤੋਂਪਾਰਜਾਕੇਵੀਕਾਇਮਰੱਖਿਆਹੈ।ਇਹੀਇਸਹਾਇਕੂਕਾਵਿਧਾਰਾਦੀਪ੍ਰਾਪਤੀਕਹੀਜਾਸਕਦੀਹੈ।

<u>ਸਹਾਇਕ ਪੁਸਤਕ ਸੂਚੀ :</u>

1. ਸੋਢੀਪਰਮਿੰਦਰਜੀਤ, ਜਾਪਾਨੀਹਾਇਕੂਸ਼ਾਇਰੀ, ਏਸ਼ੀਆ ਵਿਜ਼ਨ, 2001.
2. ਸੰਧੂਮਲਕੀਤਸਿੰਘ, ਬਿਖਰੇਮੋਤੀ, ਅਮਰਜੋਤੀਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਮੁਕਤਸਰ, ਪੰਜਾਬ, 2005.
3. ਚਾਵਲਾਕਸ਼ਮੀਰੀਲਾਲਤੇਭੁੱਲਰਜਰਨੈਲਸਿੰਘ, ਪੰਜਾਬੀਹਾਇਕੂ,ਅਮਰਜੋਤੀਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਮੁਕਤਸਰ, ਪੰਜਾਬ, 2005.
4. ਚਾਵਲਾਕਸ਼ਮੀਰੀਲਾਲ, ਹਾਇਕੂਯਾਤਰਾ:ਹਿੰਦੀ-ਪੰਜਾਬੀਹਾਇਕੂਸੰਗ੍ਰਹਿ, ਅਮਰਜੋਤੀਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਮੁਕਤਸਰ, ਪੰਜਾਬ, 2007.
5. ਚਾਵਲਾਕਸ਼ਮੀਰੀਲਾਲ,ਯਾਦੇਂ:ਹਿੰਦੀ-ਪੰਜਾਬੀਹਾਇਕੂਸੰਗ੍ਰਹਿ, ਅਮਰਜੋਤੀਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਮੁਕਤਸਰ, ਪੰਜਾਬ, 2008.
6. ਸਾਥੀਅਮਰਜੀਤ, ਨਿਮਖ,ਗ੍ਰੇਸ਼ਿਅਸਬੁਕਸ, ਪਟਿਆਲਾ,ਪੰਜਾਬ,2008.
7. ਇਕਬਲਦੀਪ, ਖਿਣ, ਮਨਪ੍ਰੀਤ ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ,ਦਿੱਲੀ,2008.

ਸਿੰਗਲਮਨੋਹਰ, ਸੂਈਸਮੇਂਦੀ,ਸ਼ਾਂਤੀਪ੍ਰਕਾਸ਼ਨ, ਮੁਕਤਸਰ,ਪੰਜਾਬ 2008.

ਡਾ. ਰਮਜੀਤ ਕੌਰ ਪਾਹੁਲ

ਐਸੋਸੀਏਟ ਪ੍ਰੋਫੈਸਰ , ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ ਖ਼ਾਲਸਾ ਕਾਲਜ, ਦਿੱਲੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ

(9810669865)

paramjitkaur9805@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 41-45

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

माघ का प्रकृति चित्रण

मधुबाला मीना

क

प्रकृति ईश्वरीय विभूति है, उसकी सुष मानव नवोन्मेष शालिनी है। मानवीय कल्पना तो प्रकृति के बीच विकसित होती है, साथहीमानवीय अनुभूतियों के लिए भी प्रकृति एक प्रेरक शक्ति के रूप में काम करती है। कवि की प्रतिभा प्रकृति के कोमल स्पर्श से ही जागती है, यही कारण है कि विश्व के सभी देशों में प्रत्येक कवि प्रकृति का अपने दृष्टिकोण से पर्यवेक्षण कर उसके प्रति अपनी संवेदनात्मक प्रतिक्रिया अपने काव्य में अवश्य व्यक्त करता है। संस्कृत के कवियों ने प्रारम्भ से ही प्रकृति के विभिन्न पक्षों और क्रियाकलापों को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से हृदयंगम किया है और अपने–अपने ढंग से उसका चित्रण किया है। वैदिक ऋषियों में तो उषा के अरूणोदय का दृश्य देखकर तो सोता हुआ कवि भी जाग पड़ता है, वे उषा को कभी नवयौवन तरूणी के रूप में देखते है, तो कभी सूर्य को प्रेमी के रूप में। आदि कवि वाल्मिकी का प्रकृति चित्रण सर्वाधिक सहज और स्वाभाविक है। कालिदास ने भी प्रकृति का चित्रण स्वाभाविक और सरल शब्दों में किया है, संस्कृत के महाकवियों में कालिदास को जहाँ सहज शैली का शुद्ध रसवादी कवि माना जाता है, वहाँ माघ को अलंकृत शैली का प्रौढ़ अलंकारवादी कवि कहा जाता है। इसी कारण राजस्थान के मूर्धन्य महाकवि माघ का प्रकृति वर्णन भी अलंकृत शैली में ढला हुआ है, वे प्रकृति के विभिन्न क्रियाकलापों को उत्प्रेक्षा, रूपक आदि अलंकारों के झरोखे से देखकर अपनी प्रौढ़ और अलंकारमय शब्दावली में निबद्ध कर महाकवि सुलभ भारी भरकम शैली में प्रस्तुत करते है। महाकवि की दृष्टि में प्रकृति केवल देखने की ही वस्तु नहीं है अपितु उससे विभिन्न प्रकार की शिक्षा भी प्राप्त की जा सकती है, अतः कवि ने अनेकों बार प्रकृति को उपदेशक के रूप में प्रस्तुत किया है।

महाकवि माघ ने बाह्म तथा अन्तः प्रकृति का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है, बाह्म प्रकृति के चित्रण में कवि की अन्तरात्मा मानों प्रत्येक दृश्य के साथ रम सी गई है। रैव तक पर्वत का वर्णन करते हुए माघ हमें वह दृश्य दिखाते हैं जब अरूणोदय से पूर्व पूर्णिमा का गोल चन्द्रमा पहाड़ से नीचे की ओर अस्त होने जा रहा है और पहाड़ के एक ओर घण्टे की तरह लटकता हुआ लगता है तो दूसरी ओर लाल सूर्य का गोला उदित हो रहा है और पहाड़ के दूसरी ओर लटकते हुए घण्टे की तरह लग रहा है। कवि उस क्षण पहाड़ को ऐसे हाथी की उपमा देता है जिसके दोनों ओर दो घण्टे लटके हुए हो–

उदयति विततोर्ध्व रश्मि रज्जवाहिम रूचौहिम धाम्नि यातिचास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बि घटाद्वय–परिवारि–तवारणेन्द्रलीलाम्।।[1]

प्रस्तुत श्लोक में प्रकृति के एक दृश्य को चित्रोपम शैली में निबद्ध किया है, किन्तु यहाँ विद्वज्जनों को

अधिक चमत्कार पर्वत को हाथी की और सूर्य और चन्द्रमा को लटकने वाले घण्टों की उपमा में दिखलाई दिया है, इसीलिए इस श्लोक को लेकर महाकवि माघ को ''घण्टा माघ'' कहा जाने लगा था। चन्द्रोदय का वर्णन भी इसी विशेषता को लिए हुए है। पूर्णिमा के दिन समुद्र में ज्वार उठ रहा है, सफेद फेन पिंड उछल रहे है। समुद्र के किनारे ऊँचा पर्वत खड़ा हुआ है। मक्खन के गोले के समान गोल चन्द्रमा समुद्र से निकलकर ऊपर उछलता सा लगता है। माघ कल्पना करते है कि मानों पृथ्वी रूपी हंडिया में समुद्र रूपी दही भरकर किरणों की डोरी में बंधी पर्वत की मथानी से दही बिलोया जा रहा है। तभी तरंगो की यह विलोडन की सी ध्वनि उठ रही है और तुरन्त ही चन्द्रमा रूपी मक्खन निकलकर ऊपर उठने लगा है –

द्रुततर–कर–दक्षाः क्षिप्त वैशाख शैले दधति दधानि की शानारवान् वारिणीव।
शशि न मिव सुरौद्याः सार मुद्धर्तुमे ते कलशि मुदधिगुर्वी वल्लवा लोडयन्ति।।[2]

महाकवि माघ ने बाह्म प्रकृति का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है, बाह्म प्रकृति के चित्रण में कवि की अन्तर्रात्मा मानों प्रत्येक दृश्य के साथ रम सी गई है। दृश्यों का ऐसा संश्लिष्ट चित्रण है कि चित्र आँखों के सामने नृत्य सा करने लगता है यथा–

उदयशिखरिश्रृंगप्रांगणेष्वेवरिंगन्
सकमलमुखहासंवीक्षितः पद्मिनीभिः।
विततमृदुकराग्रः शब्दयन्त्यावयोभिः,
परिवततिदिवोंड के हेल या बालसूर्यः।।[3]

अर्थात् जैसे कोई बालक आंगन में खेल रहा है, स्नेहशील माँ उसे पुकार रही है और वह हँसते हुए अपने कोमल हाथ फैलाकर गोद में जा गिरता है, उसी भाँति यह बाल सूर्य उद्यांचल के शिखर रूपी आंगन में थिरकता हुआ, खिले हुए कमल मुखों से हंसती हुई पदिमनीयों को देखते–देखते अपने कोमल करों (किरणों) को फैलाकर, पक्षियों के कलरव के ब्याज से पुकारती हुई अपनी आकाश रूपी माता की गोद में लीला पूर्वक उचक रहा है। उदय होते हुए बाल सूर्य का यह वर्णन कितना संजीव व सालंकारिक है, प्रस्तुत प्रकृति अप्रस्तुत संबंधों की स्नेहमयी अनुभूति की कैसी तीव्र संवेदना कराती है। माघ के प्रकृति वर्णन के प्रायः प्रत्येक श्लोक में प्रकृति के किसी भी पक्ष का जो वर्णन मिलता है। उसमें इस प्रकार का अलंकार चमत्कार अवश्य दिखलाई देता है। एक पद्य में जो पहले भी उद्घृत है, उन्होनें सूर्योदय का वर्णन करते हुए समुद्र के उस पार क्षितिज से उठते हुए सूर्य को कलश की उपमा दी है। और कहा है कि दिशा रूपी महिलाएँ किरणों की डोरियों से बंधे सूर्य रूपी कलश को मानो समुद्र से ऊपर खींच रही है :–

वितत–पृथुवरत्रातुल्यरूपैर्मयूखैः कलशइवगरीयान् दिग्भिराकृष्यमाणः।
कृतचपल–विहंगालापकोलाहलाभिर्जलनिधि–जलमध्यादेष उत्तार्यतेर्कः।।[4]

इस प्रकार आलंकारिक प्रकृति वर्णन पर अधिक जोर देते हुए भी महाकवि माघ ने अनेक स्थलों पर ऐसी कोमल और मनोरथ भावनाएँ भी प्रकृति के विभिन्न दृश्यों में गूंथ दी है, जो बुद्धि के साथ–साथ हृद्य को भी झकझोर देती है। ऐसे स्थल प्रकृति के मानवीकरण द्वारा इसके विभिन्न कार्यकलापों में मानवीय भावनाओं के आरोपण के स्थल है। सूर्य की इस बाल लीला के चित्रण के साथ रात्रि और प्रातः, संध्या को दी हुई माता और छोटी बालिका की उपमा भी इसी प्रकार उल्लेखनीय है– रात्रि मानो माता है और उषाकालीन संध्या उसकी

बालिका है तभी तो ज्यों ही रात्रि रूपी माता जाती है। उसके पीछे–पीछे उषा भी दौड़ती चली जाती है। अरूण कमल ही उसके कोमल हाथ पैर है। जिन्हें फैलाकर वह माता के पीछे दौड़ रही है। उसके नेत्र कमलों में भौरों का काजल लगा हुआ है। पक्षियों के कलरव के बहाने मानों वही अपनी माता को पुकारती उसके पीछे दौड़ी चली जा रही है :–

अरूण–जलज–राजी–मुग्ध–हस्ताग्रपादा बहुलमधुप–माला–कज्जलेन्दीवराक्षी।
अनुपततिविरावैः पत्रिणांव्याहरंतीरजनिमचिरजातापूर्वसंध्या सुतेव।।[5]

इस प्रकार प्रकृति वर्णन करते हुए महाकवि माघ ने अनेक सा दृश्य संजोये है और प्राकृतिक दृश्यों व स्थितियों में मानवीय भावनाओं और स्थितियों के प्रतिबिम्ब देखे है। पक्षियों के प्रातःकालीन कलरव को कभी उन्होनें पनघट की 'चख–चख' की उपमा दी है तो कभी माता की पुकार की और कभी छोटी बालिका के चीत्कार की। एक स्थान पर पक्षियों के इस कलरव को इन्होनें कन्या की विदा के समय बूढ़े बाप के विलाप की उपमा भी दी है। पर्वत की उपत्यकाओं से उड़ते हुए पक्षियों के कलरव में माघ ने बूढ़े पर्वत का क्रंदन देखा है, पर्वत क्यों क्रंदन कर रहा है? इसलिए कि उसकी गो दमें पलकर बहने वाली नदियाँ जो उसकी पुत्रियाँ है, अब अपने ससुराल अपने पति समुद्र से मिलने विदा हो रही है। इस विदाई पर वह विलख रहा है :–

अपशंकमंकपरिवर्तनोचिताश्चलिताः पुरः पतिमुपेतुमात्मजाः।
अनुरोदितीव करूणेन पत्रिणांविरूतेनवत्सलतयैष निम्नगाः।।[6]

यह सब देखते हुए भी माघ का कवित्व चरमोत्कर्ष को प्राप्त करने के लिए अलंकार चमत्कार का ही अधिक सहारा लेता है। अपने एक मात्र महाकाव्य शिशुपाल वधम् के छठे सर्ग में माघ विभिन्न ऋतुओं का वर्णन करते हुए यमक, श्लेष आदि शब्दालंकारों और अर्थालंकारों से सजाकर मनोरम शब्द शय्या में अनेक पद्य प्रस्तुत किये है। ऐसे पद्य शब्द लालित्य, अलंकृत शैली और प्रकृति वर्णन तीनों का त्रिवेणी संगम उपस्थित कर देते है :–
स्फुरदधीर–तडिन्नयनामुहुः प्रियमिवागलितारूपयोधरा।

जलधरावलिप्रतिपालितस्वसमयासमयाज्जगतीधरम्।।[7]
समय एवकरोतिबलाबलंप्रणिगदन्तइतीव शरीरिणाम्।
शरदिहंसरवा परूषीकृत–स्वरमयूरमयूरमणीयताम्।।[8]

अर्थात् जैसे कोई चंचल नयना एवं उन्नत स्तना नायिका प्रियतम की प्रतीक्षा करने में असमर्थ होकर निर्दिष्ट समय से पूर्व ही अभिसरण करती है, उसी भाँति चमकती हुई बिजली एवं उमड़े हुए श्यामकाय मेघो से युक्त वर्षा–ऋतु अपने प्रियतम रैव तक पर्वत के समीप समय से पूर्व आ पहुँची है। महाकवि माघ ने शरद ऋतु का वर्णन करते हुए भी एक सुंदर उपदेश दिया है कि समय ही शरीर धारियों को बलवान और निर्बल बनाता है। ऋतुओं का संबंध संयोगात्मक–वियोगात्मक दोनों पक्षों से है। माघ के ऋतु वर्णन में ये सब मिलते है। महाकवि माघ ने एक पौराणिक कथा को प्रातःकालीन दृश्य में चित्र के समान सामने ला दिया है :–

स्टतरमुपरिष्टादल्पमूर्तेर्ध्रुवस्य, स्फुरतिसुरमुनीनांमंडलंव्यस्तमेतत्।
शकटमिवमहीयः शैशवे शाङ्र्गपाणे–श्पलचरणकाडब्जप्रेरणोंतुंगिताग्रम्।।[9]

प्रातःकाल होने में कुछ ही क्षण शेष है, सप्तर्षि आकाश में लम्बे पड़े हुए है। उनका पिछला भाग नीचे झुका हुआ है और अगला भाग ऊपर उठा हुआ है। अधोभाग की ओर छोटा सा ध्रुवतारा कुछ–कुछ चमक रहा

है। सप्तर्षियों का आकार गाड़ी (शकट) के सदृश है ऐसी गाड़ी जिसका जुआ ऊपर उठ गया हो। प्रातःकाल के इसी दृश्य को देखकर श्रीकृष्ण के बाल्यकाल की एक घटना स्मृति पटल पर चित्रित हो जाती है। गाड़ी का रूप बनाकर शकटासुर नाम का एक दानव शिशु श्रीकृष्ण को मारने के लिए आता है। श्रीकृष्ण ने पालने में खेलते–खेलते उसको लात मार दी। उनके आघात से शकटासुर का अग्र भाग ऊपर उठ गया और पश्चात् भाग नीचे की ओर झुक गया। श्रीकृष्ण उसके तले आ गये, यही दृश्य इस समय सप्तर्षियों की अवस्थिति का है।

माघ वास्तव में उच्च कोटि के कवि है। उनका सारा काव्य प्रौढ़ उदात्त शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। प्रत्येक वर्णन, प्रत्येक भाव साधारण शब्दों में न होकर अलंकारों में विभूषित भाषा में प्रकट किया है। इस कारण सम्पूर्ण काव्य आदि से अंत तक प्रभावोत्पादक हो गया है। शैली की असाधारणता सर्वत्र झलकती है। प्रत्येक सर्ग में ओजो गुणमयी कविता का विकास दिखाई पड़ता है। प्रायः प्रत्येक सर्ग में कुछ ऐसे पघ है, जो वर्णन–सौन्दर्य, भाव–सौष्ठव अथवा विचार–गाम्भीर्य की दृष्टियों से अद्वितीय कहे जा सकते है। माघकाव्य के वर्णन बड़े सजीव एवं सा लंकार है। प्रकृति–पर्यवेक्षण शक्ति अद्भुत एवं प्रभावपूर्ण है। उनके प्रकृति के शब्द चित्र बड़े ही मनोरम है। परिमाणात्मक दृष्टि से देखा जाये तो प्रकृति–वर्णन के प्रसंग में माघ ने सर्वाधिक उपयोग समासोक्ति अलंकार का किया है। यह अलंकार अपने आप में मानवीयकरण का ही अलंकार है। जब कवि किसी भी वर्णनीय–स्थान, स्थिति या घटना का चित्रण करते हुए उसमें मानवीय भावनाओं और स्थितियों का आरोपण करता है तो समासोक्ति अलंकार माना जाता है। माघ ने प्रकृति के प्रायः प्रत्येक कार्यकलाप को मानवीय रंगो में रंगकर रखा है। शिशुपाल वध के नवें सर्ग में मनोरम प्रति माक्षरा छंदों में संध्या, प्रभात आदि का वर्णन करते हुए माघ ने कभी ढलते सूर्य की विवशता और अंतिम क्षणों की चलाचली की बेला की असहायता का चित्रण किया है तो कहीं दिन ढलने के दृश्य में उम्र ढलने की मार्मिक और कचोटने वाली टीस को सटीक शब्दों में रख दिया है :–

प्रतिकूलतामुपगतेहिविधौ, विफलत्वमेतिबहुसाधनता।

अवलम्बनाय दिनभर्तुरभून्नपतिष्यतः करसहस्रमपि।।[10]

विरलातपच्छविरनुष्णवपुः परितोविपाण्डु दधदभ्रशिरः।

अभवदगतः परिणतींशिथिलः परिमंद–सूर्यनयनों दिवसः।।[11]

अर्थात् दिन ढल चला है, जवानी की धूप अब समाप्त हो चली है। शरीर में गर्मी नहीं रही। बादलों के रूई जैसे टुकड़ों की सफेदी सिर पर झलकने लगी है। सूरज रूपी नयनों की ज्योति मंद हो चली है। अपनी अलंकृत शैली की योजनाओं में महाकवि माघ ने जहाँ–जहाँ ऐसे मानवीय करण का पुट दिया है। वहां उनका प्रकृति चित्रण बड़ा ही मार्मिक बन पड़ा है।

महाकवि माघ के प्रभात–वर्णन में प्रकृति का चित्रण एवं माननीय चेष्टाओं का वर्णन बहुत ही आनन्द–विभोर करने वाला है। वे तिमिर का आँचल समेटती हुई तमिस्रा को कभी भद्र नारी के रूप में[12] तो कभी घर को लौटती हुई गणिकाओं को रजनी के रूप में[13] प्रस्तुत कर देते है। नानाविध नायिकों की भूमिका निभाता हुआ निशाकर[14] नाना नायिकाओं का रूप धारण करने वाली प्राची–प्रतीची दिशाएँ[15] कवि कल्पना का रम्य श्रृंगार लिए आविर्भूत अरूणोदय माघ कवि प्रभात वर्णन के अद्भुत अलंकार है। अपनी अलंकृत शैली की योजनाओं में महाकवि माघ ने जहां–जहां मानवीय करण का पुट दिया है। वहां–वहां प्रकृति चित्रण बड़ा ही मार्मिक बन पड़ा है।

प्रकृति के वर्णन में कवि ने कही व्यवहारों का वर्णन प्रकृति के क्रिया कलापों से कराया है तो कहीं पर

मानवीय संबंधों की पहुँच प्रकृति तक प्रदर्शित की है। किन्तु आश्चर्य की बात है कि प्रकृति के इस कमनीय वर्णन में कवि ने क्या चेतन प्रकृति, क्या अचेतन प्रकृति का वर्णन करने में कथा के प्रवाह में किसी भांति की बाधा उपस्थित नहीं होने दी। कवि ने प्रकृति में मानव के भावों, उनके सुख–दुख, करूणा, हर्ष, विषाद आदि को बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किया है। कवि ने नदी, रैव तक और पक्षियों के कूँजन के माध्यम से पिता का वात्सल्य, पुत्री का निर्भय होकर पिता की गोद में खेलना, पति गृह जाना, पिता का क्रंदन इन सबका सुन्दर रंगीन चित्र प्रस्तुत किया है। कालिदास की नायिका दीप शिखा बनकर रसिकों का मनमोह रही है, तो माघ ने दीप शिखा को ही नायिका बनाकर रसिकों को मुग्ध कर दिया।[16]

अंत में इतना ही कहना उचित होगा कि एक कुशल फोटोग्राफर जिस प्रकार कैमरे की सहायता से चित्र उतारने में समर्थ होता है। महाकवि माघ ने भी प्रकृति चित्रण में वैसा ही कार्य किया है। लेकिन साथ ही कवि ने उनमें भाव स्पन्दन को लिए हुए सजीवता को भी प्रस्तुत किया है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. शिशुपालवधम् – 4/20
2. शिशुपालवधम् –
3. शिशुपालवधम् – 11/47
4. शिशुपालवधम् – 11/44
5. शिशुपालवधम् –
6. शिशुपालवधम् – 4/47
7. शिशुपालवधम् – 6/25
8. शिशुपालवधम् – 6/44
9. शिशुपालवधम् – 11/3
10. शिशुपालवधम् – 9/6
11. शिशुपालवधम् – 9/3
12. शिशुपालवधम् – 10/91
13. शिशुपालवधम् – 11/20
14. शिशुपालवधम् – 11/22, 23
15. शिशुपालवधम् – 11/12, 16
16. शिशुपालवधम् – 11/18

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 46-50

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

दयालबाग़ का पूर्ण शिक्षा की दिशा में अवदान

डॉ. निशीथ गौड़

असिस्टेंट प्रोफेसर, डी.ई.आई. (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग़, आगरा 282005

पढ़ते सहस्रों शिष्य हैं पर फीस ली जाती नहीं,
वह उच्च शिक्षा तुच्छ धन पर बेच दी जाती नहीं।
देवस्त्र– भोजन भी स्वयं कुलपति पढ़ाते हैं उन्हें।
बस भक्ति से संतुष्ट हो दिन–दिन बढ़ाते हैं उन्हें।[1]

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत भारती' में प्राचीन शिक्षा का जो आदर्श स्वरूप व्यक्त किया है, उत्तर प्रदेश के आगरा जिले में स्थित दयालबाग़ नगरी अपनी स्थापना के दिन (20 जनवरी 1915) से ही राष्ट्र के उत्थान के लिए इसी दिशा में तत्पर प्रतीत होती है। स्थापना के तुरंत बाद ही एक भव्य भवन का निर्माण प्रारंभ हुआ जो प्रायः दो वर्षों में तैयार हो गया। यह भवन था आर. ई. आई. (राधास्वामी एजूकेशनल इंस्टीट्यूट)। 1 जनवरी 1917 से यहाँ जूनियर हाई स्कूल की कक्षाएं प्रारंभ हो गईं। कालांतर में यह इंटर मीडिएट कॉलेज, डिग्री कॉलेज और सन् 1981 में डी. ई. आई. डीम्ड विश्वविद्यालय बना। यहाँ शिक्षा नई शैली लिए विकसित हुई श्रमदान से और इसका आदर्श लेकर बालक– बालिकाओं के सर्वांगीण विकास के प्रयत्न किए जाते रहे हैं।

आगरा विश्वविद्यालय के एक दीक्षांत समारोह में भाषण देते हुए दयालबाग़ के संस्थापक परम गुरु साहब जी महाराज ने फरमाया था– "Education, more education, education made perfect is the only panacea of all the ills and evils of this country."[2]

अर्थात् शिक्षा, अधिक शिक्षा और पूर्ण शिक्षा ही इस देश के रोगों और दुर्गुणों की रामबाण औषधि है। देखना यह है कि जब से दयालबाग़ नगरी के निर्माण की कल्पना निर्माता के मस्तिष्क में आई होगी तब से अब तक 108 वर्ष बीत गए हैं। इस अवधि में न केवल शिक्षा अपितु उद्योग, कृषि, गौ–पालन एवं संरक्षण अभियांत्रिक, तकनीकी, औषधि निर्माण और भवन निर्माण जैसे अन्य क्षेत्रों में दयालबाग़ ने आशातीत सफलता प्राप्त की है। इसी कारण देश–विदेश में इसे स्वप्न लोक के रुप में मान्यता मिली है यही नहीं इसके आसपास जो शताब्दी कॉलोनियाँ विकसित हुई है वे भी दयालबाग़ के क्षेत्र में ही समझी जाती हैं। यह इसकी लोकप्रियता का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है। नैतिक मूल्यों को आचरण में ढालना यहाँ की दैनिक जीवन चर्या का अंग बन गया है। खेतों का काम, दिन में अपने– अपने संस्थानों में निष्ठापूर्वक काम ने यहाँ के निवासियों को दैवीय जीवन प्रदान किया है, जो सादा जीवन उच्च विचार का प्रतीक है।

विख्यात लेखक पॉल ब्रिंटन ने 'ए सर्च इन सीक्रेट इंडिया' 3 में इस नगरी की भूरि–भूरि प्रशंसा की है।

वे लिखते हैं कि मैं योगियों की खोज में पूर्वी दिशा की यात्रा करते हुए भारत की पवित्र नदियों के तटों पर गया। मैंने पूरे देश का भ्रमण किया और फिर मैं भारत के हृदय तक पहुँचा।

पॉल ब्रिंटन पूर्वी जगत की आध्यात्मिक परंपराओं की खोज में निकले बीसवीं शताब्दी के सबसे महान खोजियों में से एक थे। वे पत्रकार भी थे। अपनी पुस्तक के 13वें अध्याय में उन्होंने दयालबाग़ को ईश्वर के बगीचे के रूप में बताया है और वे यहाँ की जीवन प्रणाली, दृढ़ आत्म निर्भरता, गहन व्यावहारिकता, मितव्ययिता, अनुशासन के संयोजन एवं आध्यात्मिक वातावरण से अत्यधिक प्रभावित होते हैं।

दयालबाग़ में उन्हें राधास्वामी मत के छठे गुरु परम पूज्य साहब जी महाराज का आतिथ्य प्राप्त होता है वे उन्हें देखकर अत्यधिक प्रभावित होते हैं और लिखते हैं दयालबाग़ में मेरे चारों ओर व्याप्त विभिन्न और भौतिकवादी गतिविधियों के प्रमुख आयोजक, योग के एक रहस्यमय रूप का अभ्यास करने वाले एक लाख से अधिक लोगों के गुरु, कुल मिलाकर मैं उन्हें एक शानदार व्यक्तित्व मानता हूँ, जो भारत में कहीं नहीं, पूरी दुनिया में कहीं भी मैं उनके जैसा दोबारा मिलने की उम्मीद नहीं कर सकता।

उनका व्यवहार विनम्र और कोमल है और वह श्रेष्ठता के साथ मेरा स्वागत करते हैं।

बिना किसी संदेह के मैंने उसे पाने से पहले 14 साल एक सच्चे गुरु की खोज में बिताए। मैं आपके राधास्वामी सिद्धांतों की स्पष्ट समझ बनाने की कोशिश कर रहा हूँ।

साहब जी महाराज कहते हैं कि आपने यहाँ दयालबाग़ में हमारे जीवन के दो पहलू देखे हैं लेकिन हमारी गतिविधियां तीन गुना हैं। मनुष्य की अपनी प्रकृति तीन गुना है, आत्मा, मन और शरीर इसलिए हमारे पास शारीरिक कार्य के लिए कार्यशालाएं हैं और खेत हैं, मानसिक विकास के लिए कॉलेज हैं और अंत में आध्यात्मिक गतिविधियों के लिए समूह बैठकें होती हैं, इस प्रकार हम प्रत्येक व्यक्ति के लिए सामंजस्य पूर्ण और सर्वांगीण विकास का लक्ष्य रखते हैं। लेकिन हम आध्यात्मिक पक्ष पर सबसे अधिक ज़ोर देते हैं और हमारे यहाँ का प्रत्येक सदस्य अपने व्यक्तिगत योग अभ्यासों को नियमित रूप से करने का प्रयास करता है।

पॉलब्रिंटन लिखते हैं कि मैं उनसे स्वतंत्र रूप से सवाल करता हूँ और ब्रह्मांड और मनुष्य से संबंधित राधास्वामी मत की शिक्षाओं के ऐसे अंशों का अध्ययन करता हूं जो मुझे उपलब्ध कराए गए हैं। मैं दूर तक देखता हूँ सूक्ष्म विचारों के इस मधुर प्रवाह को ग्रहण करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। हमारे चारों ओर एक अच्छी खासी सभा उनके वक्तव्य को सुनने में अत्यधिक रुचि ले रही है और उनके शांत आश्वासन मुझे आकर्षित करते हैं। उनकी शिक्षाएं आश्चर्यजनक रूप से नवीन हैं।

10 अगस्त 2003 को दयामय हुजूर सतसंगी साहब ने स्वीकारा था, 'दयालबाग़ स्वयमेव ही आर्य नगरी के रूप में विकसित हो रहा है।' उनके इस कथन से वैदिक नैतिक आदर्शों को जीवन में अपनाने की दिशा में दयालबाग़ अग्रसर है, ऐसा प्रतीत होता है।

चार वेदों के अतिरिक्त चार उपवेद, छः वेदांग, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक, उपनिष द्वैदिक वाङ्मय में ही समाहित हैं पर प्रधान रूप से हम यहाँ वैदिक नैतिक मूल्यों में से कुछ नैतिक मूल्यों की चर्चा करेंगे और देखेंगे कि दयालबाग़ ने उन्हें कहाँ तक स्वीकारा है। वेदों में वर्णित नैतिक मूल्य हैं :–

1. केवलाघोभवतिकेवलादी।[4] अर्थात् जो मनुष्य अकेले खाता है वह अकेले पाप का भागी होता है।
2. नऋतेश्रान्तस्यसख्याय देवाः।[5] अर्थात् परिश्रम किए बिना देवता सहायक नहीं होते।

3. नससखायोनददातिसख्ये।[6] अर्थात् जो मित्र की सहायता नहीं करता वह मित्र नहीं है।

4. योजागारतमृचःकामयन्ते।[7] अर्थात् जो जागृत रहता है उसे ऋचाएं चाहती हैं।

5. अग्नेनयसुपथारायेअस्मान्।[8] अर्थात् हे अग्निदेव! हमें धन के लिए सन्मार्ग में ले चलो।

6. कुर्वन्नेवेहकर्माणिजिजीविषेच्छतंसमाः।[9] अर्थात् इस लोक में हम कर्मशील रहते हुए ही सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करें।

7. कृतंमेदक्षिणेहस्तेजयोमेसव्यआहितः।[10] अर्थात् मेरे दाहिने हाथ में कर्म है तो बाएं हाथ पर सफलता रखी है।

8. शतहस्तसमाहरसहस्रहस्तसमाहर।[11] अर्थात् सौ हाथों से संग्रह करो तथा हज़ार हाथों से दान दो।

9. ब्रह्मचर्येणतपसाराजाराष्ट्रंविरक्षति।[12] अर्थात् ब्रह्मचर्य एवं तप से ही राजा विविध प्रकार से राष्ट्र की रक्षा करता है।

10. समानमुप्रशंसिषम्।[13] अर्थात् सहयोगियों की संवर्धना करें।

11. मित्रास्पान्त्यद्रुहः।[14] अर्थात् स्नेही मित्र ही संरक्षक होतेहैं।

12. भद्राउतप्रशस्तयः।[15] अर्थात् सुंदर वाणियॉ कल्याणकारी होती हैं।

13. आतेवत्सोमनोयमत्।[16] अर्थात् आपका शुद्ध मन संयमित हो।

14. संगच्छध्वंसंवदध्वंसंवोमनांसिजानताम्।[17] अर्थात् एक साथ चलो एक साथ बोलो तुम्हारे मन एक सा समझें।

15. भद्राहिन प्रमतिः।[18] अर्थात् हमारी बुद्धि कल्याणकारी हो।

16. हस्तच्युतंजनयत प्रशस्तम्।[19] अर्थात् हाथों के कौशल से श्रेष्ठ का निर्माण करें।

17. श्रद्धामाता।[20] अर्थात् श्रद्धा ही जननी है।

18. नरिपुरीशीतमर्त्यः।[21] अर्थात् असहयोगी व्यक्ति उन्नत नहीं होता।

19 सनिंमेधामयासिषम्।[22] अर्थात् अर्जन शील बुद्धि को प्राप्त करें।

20. पावकाः नः सरस्वती।[23] अर्थात विद्या ही हमें पवित्र करने वाली है। 21. मनुःकविः।[24] अर्थात् भविष्य की योजना करने वाला ही वस्तुतः मानव है।

वैदिक वाङ्मय के ये नैतिक आदर्श हमने अपने जीवन की प्रयोगशाला में परीक्षण करके और जीवनोपयोगी पाने के कारण व्यावहारिक रूप में अपनाए हैं :–

1.	उद्यमिता	2.	आस्था
3.	आदर्शना गरिकता	4.	परोपकारिता
5.	कठोर परिश्रम	6.	मिष्ठभाषण
7.	कर्त्तव्यनिष्ठा	8.	सत्कर्म परायणता
9.	मन– वचन–कर्म की एकरूपता	10.	संगठन
11.	दूरदर्शिता	12.	समाजसेवा
13.	सादा जीवन उच्च विचार।		

धार्मिक विश्वास :–

'नहिसत्यात्परोधर्मः' के अनुसार हमारे प्रमुख धार्मिक विश्वासों में से प्रथम है– सत्यनिष्ठा।

1. **सत्यनिष्ठा :–** सद्गुरु के मार्गदर्शन में नित्य सत्संग और सुरति शब्द योग साधना।

सत्य की यह टेक वेदों में सर्वत्र दिखाई देती है। अकेले यजुर्वेद में गायत्री मंत्र (ओंकार एवं व्याहृतियों को छोड़कर) ऋचा के रूप में तीन बार आया है और प्रसंगानुसार टीकाकार ने तीन प्रकार के अर्थ दिये हैं :–

ऋचा क्रमांक 100

तत्सवितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधियोयोनः प्रचोदयात्।

संपूर्ण जगत के जन्मदाता सविता (सूर्य) देवता की उत्कृष्ट ज्योति का हम ध्यान करते हैं जो (तेज सभी सत्कर्मों को संपादित करने के लिए) हमारी बुद्धि को प्रेरित करता है।

ऋचा क्रमांक 1281

सर्वप्रेरक, पापनाशक, वरण करने योग्य, देव (सत्चित् आनन्द) स्वरूप सविता देव को हम धारण करते हैं वे उत्पादक प्रेरक देव हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर चलने श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा प्रदान करें।

ऋचा क्रमांक 1637

हम उन सर्वप्रेरक सविता के तेज को धारण करते हैं जो हमारी बुद्धि (कर्म) को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें।

हम भी इसी वैदिक मान्यता सत्य के अनुगामी है किंतु हमारा वैशिष्ट्य है संत सद्गुरु के मार्गदर्शन में सुरति शब्द योग द्वारा सत्य की खोज। योगश्चित्त वृत्ति निरोधः। 25 अर्थात् चित्तवृत्तियों का सर्वथा रुक जाना अथवा नियंत्रित हो जाना योग है। योग की इस परिभाषा को भी मान्यता प्रदान की गई हैं।

2. **सेवा :–**

दयालबाग़ निवासियों की यह मान्यता है कि सेवा से ही श्री मिलती है। सेवा जीवन चर्या का एक अनिवार्य अंग है। ऋग्वेद[26] तथा सामवेद[27] में भी सेवा एवं परोपकार को स्पष्ट मान्यता मिली है।

3. **नैतिक आदर्श :–**

जिन आदर्शों पर राधास्वामी मत लिखा हुआ है, उनकी व्याख्या पहले ही की जा चुकी है।

4. **कृषि व्यवस्था :–**

संसार के प्राचीनतम ग्रंथवेद में भी कृषि के आदर्श स्वरूप का उल्लेख मिलता है। अथर्ववेद के तीसरे कांड का 17वॉं सूक्त कृषि सूक्त है। इस सूक्त के ऋषि विश्वामित्र तथा देवता सीता हैं। इसमें मंत्र दृष्टा ऋषि ने कृषि को सौभाग्य बढ़ाने वाला बताया है। कृषि एक उत्तम उद्योग है। कृषि से ही मानव जाति का कल्याण होता है। प्राणों के रक्षक अन्न के उत्पत्ति कृषि से ही होती है। ऋतु की अनुकूलता, भूमि की अवस्था तथा कठोर श्रम कृषि–कार्य के लिए आवश्यक है। हल से जोती गयी भूमि को (इन्द्रः सीतांनिगृह्णातु)[28] वृष्टि के देव इन्द्र उत्तम वर्षा से सीचें तथा सूर्य अपनी उत्तम किरणों से उसकी रक्षा करें यही कामना ऋषि ने की है।

दयालबाग की जीवन शैली में प्रातःकाल एवं सायंकाल दोनों समय कृषि कार्य सेवाभाव से अनिवार्य रूप से प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किया जाता है, यह कार्य यहॉं के निवासियों की जीवनचर्या का एक अंश है।

नए परिवेश में श्रद्धा युक्त दयालबाग़ निवासी एवं राधास्वामी मतावलम्बी खेतों में श्रमदान करते हैं तो वे

आंतरिक आनंद की अनुभूति तो करते ही हैं स्वावलंबन का एक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। विशेष बात होती है सद्गुरु का सान्निध्य।

ये उद्धरण और व्याख्या हमें इस मान्यता की ओर ले जाते हैं कि दयालबाग़ स्वयं एक आर्यनगरी के रूप में विकसित हो रहा है जो पूर्ण शिक्षा का परिणाम है।

निष्कर्ष :-

इन वैदिक नैतिक आदर्शों के अनुरूप दयालबाग़ का प्रत्येक निवासी सूर्योदय से पूर्व उठने वाला, आस्थावान उद्यमी, ईमानदार, देश का उत्तम नागरिक, कठोर परिश्रमी, संतोषी, धैर्यवान, शिष्ट, मृदुभाषी, कर्त्तव्य निष्ठ, कर्म सिद्धांत में विश्वास रखने के कारण सत्कर्मों में ही लिप्त रहने वाला, गुरुभक्त, अनुशासित,दयालु, सत्यभाषी, शाकाहारी, लक्ष्य, विचार एवं क्रिया में एकरूपता रखने वाला, संगठित दूरदर्शी समाजसेवी एवं सादा जीवन उच्च विचार को व्यवहार में अपनाने वाला है।

'सर्ववेदात् प्रसिद्धयति' के अनुसार दयालबाग़ एक आर्य नगर के रूप में विकसित हो रहा है। इसकी प्रगति का रहस्य भी यही वेद मार्ग का अनुशीलन है।

संदर्भ :-

1. भारत भारती, मैथिलीशरण गुप्त, 176
2. Discourses on education in Dayalbagh : A vision of complete education- साहब जी महाराज पृष्ठ– 64
3. एसर्चइन सीक्रेट इंडिया, पॉलब्रिंटन, अध्याय 13
4. ऋग्वेद 10/117/6
5. ऋग्वेद 10/117/4
6. ऋग्वेद 10/117/4
7. ऋग्वेद 5/44/14
8. ऋग्वेद 1/189/1
9. यजुर्वेद 40/2
10. अथर्ववेद 7/50/8
11. अथर्ववेद 19/5/17
12. अथर्ववेद 19/5/17
13. सामवेद 204
14. सामवेद 206
15. सामवेद 111
16. सामवेद 8
17. ऋग्वेद 7/191/2
18. सामवेद 66
19. सामवेद 72
20. सामवेद 90
21. सामवेद 104
22. सामवेद 171
23. सामवेद 189
24. सामवेद 90
25. योगदर्शनम्, महर्षि पतंजलि : 1/2
26. ऋग्वेद 10/117/4
27. सामवेद 171
28. अथर्ववेद 3/17/4

nishithgaur@dei.ac.in

9319108941

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 51-58

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

कबीर – ना हिंदू ना मुसलमान

श्रवण कुमार यादव

क

बहुत कम साहित्यकार ऐसे होते हैं, ज्यों–ज्यों सदियां बदलती रहती है, उनकी प्रासंगिकता बढ़ती जाती है। उनके साहित्य, विचार और वाणी से समाज हमेशा चालित होता रहता है। ऐसे ही कुछेक साहित्यकारों की श्रेणी में से हैं कबीर और हमेशा रहेंगे सृष्टि के कयामत तक। निराले लोग निराले तरह से ही इस लोक में आते हैं। जैसे तुलसी और कबीर आए। आए तो दुनिया ने एकाएक अपनाया नहीं, गए तो दुनिया ने भूलाया नहीं। अद्भुत असीम अविस्मरणीय अमरता लिए। ऐसी ही अमरता लेकर मध्यकाल में हमारे सामने प्रकट होते है कबीर। अपने अद्भुत शक्ति और अद्भुत साहस के साथ, अपनी फक्कड़ मस्त मौला स्वभाव के साथ।

जीवन वृत्त :–

कबीर के जन्म तथा मृत्यु के विषय में कई किंवदंतियां तथा जनश्रुतियां हैं। अगर जनश्रुतियों पर विश्वास करें तो लोग कहते हैं कि इनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के घर हुआ, किंतु लोक लज्जा के कारण उन्होंने उसे वाराणसी लहरतारा तालाब के पास छोड़ दिया। वहां से गुजर रहे जुलाहा दंपत्ति नीरू और नीमा इस बच्चे को अपने घर लाकर लालन–पालन किया। यही बालक बड़ा होकर कबीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। जनश्रुति जो भी हो कबीर प्रकृति पुत्र थे। जिस तरह से वह संसार की जीवन अरण्य में आए। सरदार पूर्ण सिंह के शब्दों में कहा जाए तो "वीरों के बनाने के कारखाने कायम नहीं हो सकते। वे तो देवदार के दरख्तों की तरह जीवन के अरण्य में खुद–ब–खुद पैदा होते हैं। और बिना किसी के पानी दिए, बिना किसी के दूध पिलाए, बिना किसी के हाथ लगाये, तैयार होते हैं। दुनिया के मैदान में अचानक ही सामने आकर खड़े हो जाते हैं।'[1]

कबीर जैसा व्यक्तित्व एक धर्म के बंधन में कैसे समा सकता था उसका प्रकटन तो ऐसे होना ही था। जो मनुष्य को मनुष्य मानता हो उसका अवतरण हिंदू या मुसलमान के घर से कैसे होता। वह तो समाज को मानवता का पाठ पढ़ाने आए थे, बिल्कुल निराले आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में "वे मुसलमान होकर भी असल में मुसलमान नहीं थे। वे हिंदू होकर भी हिंदू नहीं थे। वे साधु होकर भी साधु नहीं थे। वे वैष्णव होकर भी वैष्णव नहीं थे। वे योगी होकर भी योगी नहीं थे। वह कुछ भगवान की ओर से ही निराले बनाकर भेजे गए थे। वह भगवान के नरसिंह अवतार की मानव प्रतिमूर्ति थे।'[2] कबीर के जन्म समय को लेकर हिंदी विद्वानों में एकमत का भाव नहीं कबीर संप्रदाय में कबीर के जन्म के संबंध में कहा गया है।

'चौदह सौ पचपन साल गए,
चंद्रावार एक ठाठ ठए।

जेठ सुदी बरसायत को
पूरनमासी प्रकट भए।।'

अर्थात् संवत् 1455 की ज्येष्ठ पूर्णिमा को कबीर का जन्म हुआ। परंतु गणना से ज्येष्ठ पूर्णिमा को इस वर्ष सोमवार दिन नहीं पड़ता 1456 में पड़ता है इसलिए द्विवेदी जी का मानना है कि कबीर का जन्म संवत् 1456, 1399 ईसवी को हुआ पर कुछ विद्वान 1455 संवत् के आधार पर 1398 ईसवी मानते हैं। कबीर उस समय के प्रसिद्ध संत रामानंद जी के शिष्य थे। इस विषय में जनश्रुति है कि एक दिन अंधेरे में कबीर गंगा घाट की सीढ़ियों पर सोए हुए थे। गंगा स्नान को जाते समय रामानंद जी का खड़ाऊ अनजाने में इनको लगा, तो वह कहे राम –राम कह बेटा राम–राम इस तरह कबीर ने उनको अपना गुरु मान लिया। कबीर के मुसलमान शिष्य शेख तकी को उनका गुरु बताते हैं। कबीर की मृत्यु के बारे में कहा जाता है कि वह मृत्यु के समय मगहर चले गए, क्योंकि ऐसा प्रसिद्ध था कि जिस व्यक्ति की मृत्यु काशी में होती है ,उसे स्वर्ग प्राप्त होता है और जिसकी मृत्यु मगहर में होती है, उसे नरक प्राप्त होता है। कबीर ने इस अंधविश्वास का खंडन करने के लिए अपने अंतिम समय मगहर चले गए और वहीं पर अपना प्राण त्यागा। कबीर का कहना था कि अच्छे कर्म करोगे तो मगहर मरो या काशी स्वर्ग मिलेगा बुरे कर्म करोगे तो मगहर मरो या काशी नरक मिलेगा बुरे कर्म करके काशी में मरने से स्वर्ग नहीं मिलेगा। मैंने तो जीवन में किसी का बुरा नहीं किया। किसी को धोखा नहीं दिया, मैं मगहर में मरूंगा तो भी स्वर्ग ही जाऊंगा नर्क नहीं।

'जो कबीर काशी मरै तो, रामै कौन निहोरा'।

कबीर के नाम पर बहुत पुस्तकें बताई जाती है। लेकिन ये सभी पुस्तकें कबीर की नहीं है, उनके नाम से दूसरों ने अपनी रचनाएं उसमें जोड़ दी है। कबीर पढ़े–लिखे नहीं थे ऐसा कुछ लोग कहते हैं जैसा कि एक दोहा है 'मसि कागद छुओ नहीं कलम गही नहीं हाथ।' कुछ लोग इसकी व्याख्या इस तरह से करते हैं कि कबीर ने कभी कागज कलम छुआ नहीं अर्थात कबीर पढ़े–लिखे नहीं थे। लेकिन वहीं कुछ लोगों का कहना है इसका मतलब पढ़ाई से नहीं बल्कि कबीर कहना चाहते हैं कि मैंने जो कुछ भी कहा है, सिर्फ कहा है। मैंने उसको लिखा नहीं उसे सुनकर लिखा दूसरे लोगों ने, दूसरे लोगों से तात्पर्य शिष्यों से था। कबीर की प्रामाणिक रचना बीजक है। जिसके महत्वपूर्ण तीन खंड हैं साखी, सबद, रमैनी इनके पदों को अलग–अलग विद्वानों ने संपादित किया श्यामसुंदर दास ने 'कबीर ग्रंथावली', 'अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध' 'कबीर रचनावली', 'श्याम सुंदर दास', 'कबीर वचनावली' और श्री क्षिति मोहन सेन 'कबीर के पद' प्रमुख है। के अलावा भी बहुत से विद्वानों ने कबीर के पदों का संग्रह संपादन किया है।

कबीर का समय :–

राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से यह समय बहुत ही उथल–पुथल और संक्रमण संघर्ष का रहा। अगर हम भक्ति काल के समय को देखे तो इसका उदय और विस्तार तुगलक वंश से लेकर मुगल वंश शाहजहां के शासन काल तक रहा 10वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से ही पश्चिमोत्तर से तुर्क आक्रमणकारियों का आक्रमण शुरू हो गया था। भारतीय राजपूत राजाओं मे एकता नहीं थी, वे एक दूसरे को नीचा दिखाने में प्रयत्नरत थे। मोहम्मद गौरी, कुतुबुद्दीन ऐबक, इल्तुतमिश, रजिया बेगम, बलबन, खिलजी वंश लोदी वंश, मुगल वंश राजनीतिक रूप से यह समय इस्लामिक आक्रमणकारियों और शासकों का था। सामाजिक रूप से भी समाज

पर इस्लाम का प्रभाव इन शासकों के द्वारा ज्यादा से ज्यादा स्थापित करने का काम किया जा रहा था। हिंदू समाज इस समय जातियों में बंटा हुआ था, हिंदुओं मे जो छोटी जातियां समझी जाती थी, समाज में उनको ज्यादा सम्मान नहीं मिल रहा था। धार्मिक रूप से यह समय जरूर जागृत हो रहा था, जिसका उदय भक्ति आंदोलन के रूप में हुआ, भक्ति की धारा दक्षिण से उत्तर भारत तरफ आई जैसा कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास में लिखा है।

"भक्ति के आंदोलन की जो लहर दक्षिण से आई उसी ने उत्तर भारत के परिस्थिति के अनुरूप हिंदू, मुसलमान दोनों के लिए एक सामान्य भक्ति मार्ग की भी भावना कुछ लोगों मे जगाई।'[3] उस समय मुस्लिम शासकों द्वारा हिंदू मंदिरों को तोड़ा जा रहा था हिंदुओं को प्रताड़ित किया जा रहा था, परेशान किया जा रहा था। जिसका वर्णन शुक्ल जी ने इन शब्दों में किया "देश में मुसलमानों का राज प्रतिष्ठित हो जाने पर हिंदू जनता के हृदय में गौरव गर्व और उत्साह के लिए अवकाश न रह गया था, उसके सामने ही उसके देव मंदिर गिराए जाते थे देव मूर्तियां तोड़ी जाती थी और पूजा का अपमान होता था''।

अपने पौरुष से हताश जाति के लिए भगवान की भक्ति और करुणा की और ध्यान ले जाने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग ही क्या था।'[4] इस प्रकार के संक्रमणकाल में तत्कालीन परिस्थितियों के बीच कबीर ने लोगों के हृदय में मानव धर्म को स्थापित करने का प्रयत्न किया और अपने उपदेश से समाज को जाति, पंथ, धर्म, संप्रदाय से अलग मानवता की राह पर चलने का संदेश दिया।

भक्ति, प्रेम और सदगुरू :–

कबीर का अपने ईश्वर से एकात्म है, ईश्वर की भक्ति करने को कबीर ने साधु संगति को आवश्यक माना है, उनका मानना है कि भक्ति में अहंकार का विनाश हो जाता है। भक्ति की शीतल चंदन रुपी स्पर्श से विषय जनित वासनाओं का भयंकर पापमय जंगल नष्ट हो जाता है। समाधि में उस परम ब्रह्म का अनुभव किया जा सकता है जो परम अविनाशी और निर्विकार है उसका जीव से जब साक्षात्कार होता है, तब कोई विषय वासना जीवात्मा में नहीं रह जाती, जीवात्मा ईश्वरमय हो जाती है।

'तूं तूं करता तू बता
मुझ में रही न हूं।
वारी फेरत बली गई
जित देखु तित तू।।'[5]

ईश्वर के प्रति अनुराग प्रकट करने के लिए स्वानुभूति परक आत्म निवेदन तथा अपने परम ब्रह्म का नाम स्मरण किया, अपने उस निरंजन के प्रति दास्य, दैन्य, सख्य, रति, वात्सल्य आदि सभी भाव से अपना मन लगाया, कबीर का मानना है कि भक्ति मे सबसे प्रमुख है अहम् का तर्पण, जब हम अपने अहम् का तर्पण करते हैं, तो आत्मा और परमात्मा के बीच का जो भेद है, वह समाप्त हो जाता है और उस परमात्मा से जीवात्मा का एकाकार हो जाता है तब कबीर कहते हैं।

"हम ना मरिहै मरिहै संसारा
हमको मिला जियावनहारा।
साकत मरिहै संत जन जीवहिं, भरी–भरी राम रसायन पीवहिं

हरि मरिहै तो हमहूं मरिहै, हरि न मरै हम काहे को मरिहैं।
कहे कबीर मन मन ही मिलावा, अमर भये सुख सागर पावा।'[6]

कबीर के काव्य में सच्चाई एवं अनुभूति की प्रधानता है। यह सच्चाई नकारने के स्वर में भी है एवं भक्ति तथा प्रेम के निरूपण में भी ,दुविधा ग्रस्त मन से या कपट के साथ आप प्रेम के रास्ते पर नहीं जा सकते। वहां पर चलने के लिए आपको अपना मन निश्चल और बिल्कुल छल कपट से रहित रखना पड़ता है, यहां पर कोई चालाकी, होशियारी नहीं चलती यहां तो सिर्फ समर्पण चलता है।

'कबीर यह घर प्रेम का, खाला का घर नाही।
सीस उतारि हाथ करि, सो पैठे घर माहि।।'[7]

'प्रेम पियाला जो पियै, सीस दच्छिना देय।
लोभी सीस न दे सके, नाम प्रेम का लेय।।'[8]

'सवै रसायन मै पिया, प्रेम समान न कोय।
रति एक तन में संचरै, सब तत कंचन होय।।'[9]

कबीर का ईश्वर प्रेम के प्रति जो लगाव है अखंड है और अविचल है। यह प्रेम भाव ही व्यक्ति को साधारण से असाधारण बनाता है, जब यही प्रेम भाव उस परमसत्ता के प्रति जागृत होता है, तब जीवात्मा के तन–मन का कण–कण उस परम स्वरूप में भाव विभोर हो जाता है अंतर्मन में एक उजास छा जाता हैं। प्रेम का प्रकाश चारों तरफ जगमग ,जगमग करने लगता है, वाणी से सुगंधित सुवास फूटने लगती है।

'प्रीत जो लागी धुल गई, पैठि गई मन माहि।
रोम रोम पीउ पीउ करै, मुख कि सरधा नाहि।।'[10]

'पिंजर प्रेम प्रकासिया, अंतर भया उजास।
सुख करि सूती महल में, बानी फूटी बास।।'[11]

'प्रेम न खेतों निपजे, प्रेम न हाट बिकाय।'[12]

यह प्रेम किसी खेत में नहीं उपजता, किसी बाजार में नहीं बिकता, कि जो चाहे ले ले राजा हो या रंक सबके लिए शर्त एक है, कि वह शीश उतार कर हाथ पर धर ले। जिसमें ऐसा साहस नहीं, बल नहीं, आत्मसमर्पण नहीं, ऐसे लोगों का यहां कोई काम नही है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी कहते हैं, कबीर दास भक्त और पवित्रता को एक कोटी में रखते थे। दोनों का धर्म कठोर हैं, दोनों की वृत्ति कोमल है दोनों के सामने प्रलोभन का दुष्कर जंजाल है, दोनों ही कांचन पदधर्मी है –बाहर से मृदु, भीतर से कठोर, बाहर से कोमल भीतर से परुष।'[13]

निर्गुण संत कवियों ने गुरु सद्गुरु को विशेष महत्व दिया कबीर जिसमें प्रमुख है। सांसारिक माया बंधन के आवरण से छुटकारा तथा ईश्वर से साक्षात्कार सद्गुरु के माध्यम से ही हो सकता है। सदगुरू दिव्य ज्ञान की दिव्य ज्योति हो जलाता है, जिससे सारा अज्ञानमय अंधकार छट जाता है, मन का मैल धुल जाता है और सब कुछ सत्–सत् दिखने लगता है। गुरु धोबी की भांति मनरुपी कपड़े को धुलकर स्वच्छ और सुंदर कर देता है। मन दर्पण के समान दर्पित होने लगता है, कबीर कहते हैं।

"गुरु धोबी सिप कपड़ा, साबुन सिरजनहार।

मन की मैन छुड़ाए के, चित दरपन करि लेय।।"[14]

गुरु पारस गुरु परम है, चंदन वास सुवास।

सतगुरु पारस जीव को, दिन्हो मुक्ति निवास।।[15]

कबीर ने सतगुरु को ईश्वर से भी बड़ा स्थान और सम्मान दिया। वे कहते हैं गुरु ने ही ईश्वर की राह बताई इसलिए गुरु का स्थान सबसे पहले और बड़ा है, अगर गुरु ने ज्ञान नहीं दिया होता तो, मैं ईश्वर को कैसे जान पाता –

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काकै। लागे पांव।

बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।''[16]

कबीर का कहना है कि गुरुजी है जो किसी को इस संसार से, मोह माया के बंधनों से, अंधकार के द्वार से, बाहर निकाल कर, एक ऐसे संसार में ले जाता है, जहां पर सब कुछ ज्ञान के प्रकाश में आपको दिखने लगता है। संसार की बुराइयां अच्छाइयां, प्रेम, कपट और आप अपने अनुसार जो रास्ता आपको अच्छा लगता है उस रास्ते पर चल पड़ते हैं, अगर गुरु ना हो तो आपके हृदय मन का अंधकार समाप्त न हो, और मन का अंधकार जब समाप्त नहीं होगा तो ऐसे ही होगा जैसे किसी अंधेरे में रखी हुई वस्तु बिना प्रकाश के नहीं दिखाई देती है, वैसे ही संसार में जो कुछ भी है, वह गुरु के ज्ञान के बगैर आप उसकी अच्छाई बुराई नहीं समझ सकते। सब कुछ हो नकारने का साहस।

कबीर समाज की व्यवहारिकता एवं बनी बनाई मर्यादा की उपेक्षा कर जन्म धारण किया और इसी कारण समाज ने जिसे अपनाने से पहले कड़वा अनुभव किया। समाज की मान्यता, परंपरा, आदर्श नियम आदि के प्रति कड़ा विद्रोह व्यक्त किया। सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य, अपने वाणियों से उन मान्यताओं पर प्रहार किया जो जन और समाज को अवांछित परंपराओं के बंधन में बांधे हुए है। कबीर को वह सब कुछ स्वीकार नहीं, जो मनुष्य मानवता की राह में रोड़ा हैं, अरुप है, असत्य है। हर एक बंधन, जो मानवता की राह में रोड़ा है। उन्होंने जमकर अपने शब्द बाण चलाएं हिंदू हो या मुस्लिम उन्होंने किसी को नहीं छोड़ा जो भी उनकी मानवता के सांचे मे फिट नहीं बैठता, उसको दौड़ा–दौड़ा कर, दरेर–दरेर कर खूब सुनाया।

"मन ना रंगाए रंगाए जोगी कपरा।

आसन मारि मंदिर में बैठे,

नाम छाड़ि पूजन लगे पथरा।

कनवा फड़ाय जटवा बढौले

दाढ़ी बढ़ाई जोगी होई गैले बकरा।

जंगल जाए जोगी धुनिया रमौले

काम जराय जोगी होय गैले हिजरा।।

मथवा मुराई जोगी कपड़ा रंगौले,

गीता बांचे के होय गैले लबरा।

कहहि कबीर सुनो भाई साधो

जम दरवजवा बांधल जैबे पकड़ा।।''[17]

ये प्रहार तदयुगीन छद्म धर्माचारों, अंधविश्वासों पर है। कैसे–कैसे लोग भगवान और भक्त दोनों को धोखा दे रहे। लोगों के पूजा–पाठ व्रत तीरथ पर व्यंग करने का साहस कबीर ही कर सकते थे, नमाज रोजा मंदिर, मस्जिद, हिंदू, मुस्लिम सबको अपने लपेटे में लिया कबीर ने किसी को नहीं बख्शा, किसी को नहीं छोड़ा।

"पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजू पहाड़।
ताते यह चाकी भली, पीस खाय संसार।।'[18]
अरे इन दोउन राह न पाई।
हिंदू अपनी करे बढ़ाई गागर छुवन न देई।।
वेस्या के पायन तर सोए यह देखो हिंदुआई।
मुसलमान के पीर औलिया मुर्गी मुर्गा खाई।।
खाला केरी बेटी व्याहै घरहि में करें सगाई।
बाहर से एक मुर्दा लाए धोय धाय चड़वाई।।
सब सखियां मिल जेवन बैठी घर भर करे बढ़ाई।
हिंदुन की हिंदूआई देखी तुरकन की तुरकाई,
कहें कबीर सुनो भाई साधो कौन राह है जाई।।'[19]

कबीर अपनी वाणियों के माध्यम से हिंदू या मुस्लिम समाज जो भी था, जहां पर धर्मगत बाह्यआडंबर अंधविश्वास, भ्रांतियां थी दोनों को एक ही डंडे से फटकार लगाई कबीर ने ऐसा प्रहार करने का जो साहस दिखाया वह पंडित और मुल्लो दोनों को बुरा लगा, लेकिन कबीर ने किसी की परवाह नहीं की, जो कहा डंडे की चोट पर, जो किया डंडे की चोट पर, बेपरवाह होकर उन्हें किसी की कोई परवाह नहीं, वह तो सिर्फ मनुष्य को मनुष्यता का पाठ पढ़ाना चाह रहे थे, उनका कहना था, सब एक हैं। कोई ऊंचा नहीं, कोई नीचा नहीं, कोई छोटा नहीं, कोई बड़ा नहीं, कोई हिंदू नहीं, कोई मुस्लिम नहीं, किसी की कोई जाति नहीं, किसी की कोई पात नहीं, सबका एक धर्म है वह है मानवता। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं –"वे मनुष्य बुद्धि को व्याहत करने वाले सभी वस्तुओं को अस्वीकार करने का अपार साहस लेकर अवतीर्ण हुए थे। पंडित, शेख, मुनि, पीर, औलिया, पुरान, रोजा, नमाज, एकादशी, मंदिर और मस्जिद उन दिनों मनुष्य चित्त को अभिभूत कर बैठे थे, परंतु वे कबीर का मार्ग न रोक सके। इसलिए कबीर अपने युग के सबसे बड़े क्रांतदर्शी थे।'[20] कबीर को समाज में धर्म और जाति के नाम पर विभाजन स्वीकार नही। यथा :–

"एकै हाड़ त्वचा मलमूत्रा, रुधिर गुदा एक मुद्रा
एक बिंदु ते सृष्टि रच्यो है, को ब्राम्हण को सुद्रा।
रजगुण ब्रह्मा तमोगुण शंकर सतोगुण हरि सोई
कहें कबीर राम रमि रहिया, हिंदू तुरक न कोई।।''[21]
"जौ तू बाभन बभनी जाया, आन बाट है क्यों नहीं आया।
जौ तू तूर्क तूर्कनी जाया, तौ भीतर खतना क्यों कराया।।'[22]

समाज पंथ, धर्म, जाति, संप्रदाय तरह–तरह के वर्गों में बटा हुआ है उस व्यवस्था पर कबीर कितना कठोर कड़ा प्रहार करते हैं। कहते हैं सब एक हैं सब एक हो एक बन कर रहो जैसे :–

''दुई जगदीश कहां से आए,कहो कौन भरमाया।
अल्लाह, राम, रहीम, केशव, हरि, हजरत नाम धराया
गहना एक कनक ते गहना, तांमैं भाव न दूजा।।
वही महादेव वही मोहम्मद, ब्रह्मा आदम कहिए।
कोई हिंदू कोई तुरक कहावे एक जमीं पर रहिए।।''[23]

दो भगवान कहां से आए बताओ? तुम्हें कौन भरमा रहा है, तुम अल्लाह कहते हो, राम कहते हो, रहीम कहते हो, केशव कहते हो, हरि कहते हो, हजरत कहते हो, अलग–अलग नामों से पुकारते हो वह ईश्वर सब एक है उसके नाम सिर्फ अलग हैं। जैसे कनक (स्वर्ण) एक होता है। उसके अलग–अलग गहने बनाए जाते हैं, उसी प्रकार से ईश्वर के अलग–अलग नाम हैं ईश्वर तो एक ही है। वही महादेव है, वही मोहम्मद है, वही ब्रह्मा है, वही आदम है इसीलिए ना कोई हिंदू है ना कोई मुस्लिम है सब मिलकर एक जमीन पर प्यार से रहो। ऐसा स्नेह ददेरमय प्रहार हिंदी साहित्य तो क्या संपूर्ण विश्व साहित्य में दुर्लभ होगा, ऐसा साहस कबीर जैसा महान व्यक्तित्व वाला व्यक्ति ही कर सकता था और किया जैसा कि द्विवेदी जी ने लिखा है– "वे जब पंडित या शेख पर आक्रमण करने को उद्धत होते हैं, तो उन्हें इस प्रकार पुकारते हैं, मानो वे नितांत नगण्य जीव हो, केवल वाह्यचारों के गड्डर, केवल कुसंस्कारों के गड्ढे, साधारण हिंदू गृहस्थ पर आक्रमण करते समय लापरवाह रहते हैं, और इस लापरवाही के कारण ही उनके आक्रमण मुलक पदों में एक सहज सरल भाव और एक जीवंत काव्य मूर्तिमान हो उठा है। यही लापरवाही कबीर के व्यंग्यों की जान है।'[24] सब कुछ को नकारने का साहस ,सबको एक ही स्वर में लताड़ने का साहस, धर्मगत रूढ़िवादी विश्वासों को चुनौती देने का साहस, मुल्ला, पंडित मौलवी सभी धर्मावलंबियों को ललकारने का साहस ऐसा साहस, कोई वीर ही कर सकता था और ऐसे ही वीर थे 'क–बीर'। डॉ. पूर्ण सिंह के शब्दों में "सच है, सच्चे वीरों की नींद आसानी से नहीं खुलती। ये सत्व गुण के क्षीर समुद्र में ऐसे डूबे रहते हैं, कि इनको दुनिया की खबर ही नहीं होती। वे संसार के सच्चे परोपकारी होते हैं। ऐसे लोग दुनिया के तख्ते को अपनी आंखों की पलकों से हलचल में डाल देते हैं। जब ये शेर गरजते हैं, तब सदियों तक इनकी आवाज की गूंज सुनाई देती रहती है, और सब आवाजें बंद हो जाती हैं।[25]

कबीर जैसा व्यक्तित्व सदियों में कभी–कभी धरती पर आता है, और जब आता है तो दुनिया को अचंभित कर देता है अपने प्रकटन से, अपने वाणी और अपने विचारों से, अपने धैर्यता से ,सब कुछ अलग ही प्रकट होता है। इस बात को कबीर ने अपने जन्म से मृत्यु तक सिद्ध किया, कि वे बिल्कुल निराले थे, सबसे अलग, सबसे भिन्न, वे प्रकृति पुत्र थे तभी तो इस धरती पर वह ना हिंदू होकर आए, ना मुस्लिम होकर आए, वे इंसान होकर आए इस दुनिया में, लोगों के अंदर इतना साहस नहीं था कि तत्काल कबीर के तेज को स्वीकार कर सकें, तो उनको स्वीकार किया प्रकृति ने, धरती ने अपनी गोद दी, सूरज ने अपना ताप दिया, हवाओं ने अपनी सांसे दी, जल ने जीवन दिया सच्चे अर्थों में कबीर प्रकृति पुत्र थे, ना हिंदू ना मुसलमान।

संदर्भ सूची :–

1. दिलजन अरुणिमा (संपादक)–निबंधश्री, सच्ची वीरता, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, संस्करण –1982 पृष्ठ संख्या –5

2. द्विवेदी आचार्य हजारी प्रसाद–हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास– राजकमल प्रकाशन, छठा संस्करण –1990, तीसरी आवृत्ति– 1999 पृष्ठ संख्या 75
3. शुक्ल आचार्य रामचंद्र–हिंदी साहित्य का इतिहास, अशोक प्रकाशन नई दिल्ली, नवीन संस्करण, पृष्ठ संख्या –37
4. वही –पृष्ठ संख्या –35
5. दास श्यामसुंदर (संपादक) –कबीर वचनावली, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, पद संख्या–144, संख्या –106
6 वही –पद संख्या –221, पृष्ठ संख्या –250
7. वही –पद संख्या –101, पृष्ठ संख्या 103
8. वही– पद संख्या –104, पृष्ठ संख्या –103
9. वही –पद संख्या –117, पृष्ठ संख्या –104
10. वही –पद संख्या –112, पृष्ठ संख्या– 104
11. वही –पद संख्या –58, पृष्ठ संख्या–99
12. वही –पद संख्या– 103, पृष्ठ संख्या –103
13. दिवेदी आचार्य हजारी प्रसाद– कबीर, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 15वीं आवृत्ति 2009, पृष्ठ 129
14. दास श्याम सुंदर –कबीर वचनावली, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, पद 305, पृष्ठ 120
15. वही– पद 310, पृष्ठ 120
16. वही– पद 300, पृष्ठ–117
17. वही –पद संख्या 198, पृष्ठ 243
18. वही–पद संख्या 198, पृष्ठ 243
19. वही –पद 196, पृष्ठ 242
20. दिवेदी आचार्य हजारी प्रसाद, हिंदी साहित्य उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन छठा संस्करण –1990, तीसरी आवृत्ति 1999, पृष्ठ संख्या 79
21. दास श्यामसुंदर (संपादक) कबीर वचनावली, नागरी प्रचारिणी सभा काशी, पद– 92, पृष्ठ 208
22. वही –पद 90, पृष्ठ 208
23. वहीं –पद 91, पृष्ठ 208
24. द्विवेदी आचार्य हजारी प्रसाद –हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, छठा संस्करण 1990, तीसरी आवृत्ति 1999, पृष्ठ 79
25. दिलजन अरुणिमा (संपादक) निबंधश्री, सच्ची वीरता विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, तृतीय संस्करण 1982 पृष्ठ –2

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 59-66

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

शैक्षणिक संस्थाओं में कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

डॉ. राजश्री

सह आचार्य, शिक्षा संकाय, स्कूल ऑफ एजुकेशन, संस्कृति यूनीवर्सिटी, मथुरा।

सारांश :–

प्रस्तुत अध्ययन आगरा जनपद की 450 स्तरीकृत यादृच्छिकी विधि द्वारा चयनित शैक्षिक संस्थानों में कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति ज्ञात करने हेतु किया गया। मानसिक स्वास्थ्य के आयामों सकारात्मक आत्ममूल्याकंन, वास्तविक प्रत्यक्षीकरण, व्यक्तित्व संश्लेषण, समूह जनित व्यवहार, स्वायत्तता तथा वातावरणीय सक्षमता को अध्ययन में सम्मिलित किया गया। अध्ययन हेतु सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी, डॉ0 जगदीश एवं डॉ0 ए0के0 श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ अनुसूची सूची का प्रयोग किया गया। विभिन्न सांख्यकीय विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष में कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य आयामों पर सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षिक स्तरानुसार प्रभाव परिलक्षित हुये।

प्रस्तावना :–

प्रकृति ने स्वभाववश ही नारी को स्नेह, करूणा, संवेदना, सहिष्णुता, सामंजस्य आदि गुणों से सॅवारा है। आज नारी घर में ही नहीं बल्कि बाहरी दुनिया में भी अधिपत्य स्थापित कर रही हैं और जब तक वह अपने कार्य क्षेत्र में भली भॉति सामंजस्य स्थापित नहीं कर लेती, सन्तुष्ट नहीं होती है। आज के समाज में हमारी जीवन शैली कार्य व्यस्तता के कारण परिवर्तित हुई है। जिसका प्रभाव महिलाओं में न केवल शारीरिक अपितु मानसिक स्वास्थ्य पर भी हुआ है। कार्य व्यस्तता/अधिकता के घातक प्रभावों से नईपीढ़ी किस तरह बेपरवाह है, इसका सबूत यह है कि बड़े शहरों के अस्पतालों में आने वाले मरीजों मे से 50 प्रतिशत मानसिक तनाव से पीड़ित होते हैं।

आधुनिक समय में कार्य प्रभाव तथा असमायोजन के कारण मानसिक विकृतियॉ बढ़ती जा रही हैं। बाल शोषण, बालहत्या, पारिवारिक विघटन, आत्महत्या जैसी घटनायें प्रायः देखी जा सकती हैं। इनका प्रतिकूल प्रभाव समाज के साथ–साथ कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है, क्योंकि ऐसी परिस्थितियों में उनके लिये समायोजन स्थापित करना आसान नहीं होता है। अतः अधिकांश महिलायें अवसाद ग्रस्त हो जाती हैं, और प्रायः जीवन से किसी न किसी रूप में असन्तुष्ट रहती हैं। विवाहित कामकाजी महिलाओं में से लगभग 50 प्रतिशत महिलायें नौकरी करने के साथ, घरेलू उत्तरदायित्वों के निर्वहन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण घर तथा नौकरी दोनों में असमायोजन की स्थिति दृष्टिगोचर होती है। मिश्रा (2009) द्वारा सम्पादित शोध अध्ययन "मैरिटल एडजस्टमेंट एण्ड पेरेण्ट चाइल्ड रिलेशनशिप ऑफ वर्किंग वूमैन" के परिणाम

स्वरूप इस तथ्य की पुष्टि हुई कि वह कार्य करके अपने आर्थिक पक्ष को तो सुदृढ़ कर लेती हैं, लेकिन अपने बच्चों के साथ समय व्यतीत नहीं कर पाती हैं। वे अपने किये जाने वाले घरेलू कार्यो से सन्तुष्ट नहीं होती हैं। मानसिक रोग, पारिवारिक हिंसा व लैंगिक भेदभाव तथा कार्य व्यवसाय/नौकरी का विचारों तथा सामाजिकता से गहरा सम्बन्ध होता है। इसके चलते महिला मनोरोगियों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

मर्टन (1968) के अनुसार ''एक सामाजिक संरचना के अन्तर्गत सदस्यों के लिये कुछ निश्चित पदों तथा कार्यो की व्यवस्था होती है, परन्तु जब किसी समाज में प्रमुख पदों से सम्बन्धित कार्यो की कोई निश्चितता नहीं होती है, तब व्यक्ति के व्यवहार में असंगति पनप सकती हैं। यह महिलाओं के व्यवहार में अंसगतियों का कारण भी बन सकता है। जब महिलायें अपनी कार्य व्यस्तता के कारण सभी क्षेत्रों में पूर्ण रूप से समायोजन नहीं कर पाती हैं, तो उनके मन में दबाब उत्पन्न होता है। जिससे वे तनाव ग्रस्त हो जाती हैं और उनका मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

अतः कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य के आयामों का अध्ययन किया गया।

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य के विविध आयामों का अध्ययन।
2. कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य का सामाजिक आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पना :–

कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर सामाजिक आर्थिक व शैक्षिक स्तर के आधार पर सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध अध्ययन की परिसीमाकंन :–

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल आगरा जनपद के शैक्षिक संस्थानों में कार्यरत महिलाओं पर किया गया।
2. केवल उन कार्यरत महिलाओं पर अध्ययन किया जायेगा, जो कम से कम 6 घंटे प्रतिदिन नियमित रूप से कार्यरत हों।
3. एक निश्चित आयु वर्ग (25–35 वर्ष) की महिलाओं को ही अध्ययन में सम्मिलित किया गया।

अध्ययन विधि :–

वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि।

न्यादर्श :–

स्तरीकृत यादृच्छिकी विधि द्वारा आगरा जनपद में शैक्षणिक संस्थाओं में कार्यरत महिलाओं में से उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक स्तर में विभक्त कर 450 कार्यरत महिलाओं को अन्तिम न्यादर्श के रूप में चयन किया गया।

अध्ययन उपकरण :–

सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी एवंडा0 जगदीश एवं डा0 ए0के0 श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ अनुसूची सूची का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी प्रविधियाँ :–

वर्णनात्मक सांख्यिकीय, अनुमानात्मक सांख्यिकीय।

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य 1.0 : कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन मानसिक स्वास्थ्य के छः विविध आयामों को समेकित कर निम्नवत किया गया है :–

तालिका संख्या 1 कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य के विविध आयामों के प्राप्तांकों के विवरणात्मक सांख्यिकीय मान (N=450)

मानसिक स्वास्थ्य के विविध आयाम	मध्यमान	मानक विचलन	स्तर
सकारात्मक आत्ममूल्यांकन	30.00	4.86	औसत
वास्तविक प्रत्यक्षीकरण	21.90	3.30	निम्न
व्यक्तित्व संश्लेषण	30.00	3.40	निम्न
स्वायत्तता	15.53	2.12	औसत
समूहजनित व्यवहार	22.40	3.20	अति निम्न
वातावरणीय सक्षमता	26.40	3.90	निम्न स्तर
योग	151.00	10.90	निम्न

उपरोक्त तालिका में दर्शित सांख्यकीय मानों से स्पष्ट है कि कार्यरत महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्य निम्न स्तर का है। मानसिक स्वास्थ्य के विविध आयामों का अध्ययन करने पर पाया गया कि सकारात्मक आत्म मूल्यांकन तथा व्यक्तित्व संश्लेषण के मध्यमान 30.00 सर्वाधिक हैं। वातावरणीय सक्षमता का मध्यमान 26.40 द्वितीय स्थान पर, समूह जनित व्यवहार का मध्यमान 22.40 तृतीय स्थान पर, वास्तविक प्रत्यक्षीकरण का मध्यमान 21.90 चतुर्थ स्थान पर तथा स्वायत्तता का मध्यमान सबसे न्यून 15.53 पाया गया।

आयामों के स्तरों की गणना द्वारा ज्ञात हुआ कि कार्यरत महिलाओं में सकारात्मक आत्म मूल्यांकन तथा स्वायत्तता औसत स्तर के, वातावरणीय सक्षमता, वास्तविक प्रत्यक्षीकरण तथा व्यक्तित्व संश्लेषण निम्न स्तर के तथा समूह जनित व्यवहार अति निम्न स्तर के पाये गये। स्वायत्तता तथा सकारात्मक आत्म मूल्यांकन अधिक पाया गया, जिसका तात्पर्य है कि महिलायें कार्य के साथ–साथ, वह अपने अस्तित्व को परिवार से अलग नहीं देखती हैं, वह अपने संदर्भ में निर्णय लेने में सक्षम हैं। परिवार को प्रधानता देते हुये वह अपनी स्वायत्तता को बनाये रखती हैं। साथ ही वह जीवन की वास्तविकताओं को सकारात्मक रूप से सामना करने की क्षमता रखती हैं।

चित्र सं. 1– कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य के विविध आयामों के मध्यमानों का दण्ड चित्र।

उद्देश्य 2– कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य का सामाजिक आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।

उद्देश्य 2.1 कार्यरत महिलाओं के सकारात्मक आत्म मूल्यांकन का अध्ययन

तालिका सं. 2 सकारात्मक आत्म मूल्यांकन

प्रसारण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता	अंश	वर्ग मान	माध्य सार्थकता	एफ स्तर
अ.	शैक्षिक स्तर	48.02	1	48.02	10.95''	<.01
ब.	सामाजिक–आर्थिक स्तर	14.58	1	14.58	3.32	>.01
स.	अन्तःक्रिया (अ/ब)	5.07	1	5.07	1.16	>.01
	समूहों के साथ	1956.39	446	4.39		
	योग	2024.06	449			

''सार्थकता स्तर .01

सकारात्मक आत्म मूल्यांकन पर शैक्षिक स्तर का सार्थक प्रभाव पड़ता है, जबकि सामाजिक–आर्थिक स्तर का एवं अन्तःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। .01 विश्वास स्तर पर F.01 (1, 446) पर आवश्यक प्रसारण विश्लेषण का तालिका मान 6.70 है। गणना द्वारा प्राप्त प्रसारण विश्लेषण (शैक्षिक स्तर) का मान .01 विश्वास स्तर पर तालिका मान से अधिक है। अतः कार्यरत महिलाओं के शैक्षिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के आयाम सकारात्मक आत्म मूल्यांकन पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य 2.2 कार्यरत महिलाओं के वास्तविक प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन

तालिका सं. 3 वास्तविक प्रत्यक्षीकरण

प्रसारण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता	अंश	वर्ग मान	माध्य सार्थकता	एफ स्तर
अ.	शैक्षिक स्तर	90.68	1	90.68	9.04**	<.01
ब.	सामाजिक–आर्थिक स्तर	117.56	1	117.56	11.72**	<.01
स.	अन्तःक्रिया (अ/ब)	25.15	1	25.15	2.51	>.01
	समूहों के साथ	4471.79	446	10.03		
	योग	4705.16	449			

''सार्थकता स्तर .01

तालिका में दर्शित मान यह प्रदर्शित करते हैं कि वास्तविक प्रत्यक्षीकरण पर शैक्षिक स्तर तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पड़ता है, जबकि अन्तःक्रियात्मक प्रभाव नहीं पड़ता है। .05 विश्वास स्तर पर F.05 (1, 446) पर आवश्यक प्रसरण विश्लेषण का तालिका मान 3.86 तथा .01 विश्वास स्तर पर F.01 (1, 446) पर आवश्यक प्रसारण विश्लेषण का तालिका मान 6.70 है। गणना द्वारा प्राप्त प्रसारण विश्लेषण (शैक्षिक स्तर) का मान .01 विश्वास स्तर पर तालिका मान से अधिक है। अतः कार्यरत महिलाओं के शैक्षिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के आयाम वास्तविक प्रत्यक्षीकरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका के अनुसार .05 विश्वास स्तर पर F.05 (1, 446) पर आवश्यक प्रसारण विश्लेषण का तालिका मान 3.86 तथा .01 विश्वास स्तर पर F.01 (1, 446) पर आवश्यक प्रसारण विश्लेषण का तालिका मान 6.70 है। गणना द्वारा प्राप्त प्रसारण विश्लेषण (सामाजिक–आर्थिक स्तर) का मान .01 विश्वास स्तर पर तालिका मान से

अधिक है। अतः कार्यरत महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के आयाम वास्तविक प्रत्यक्षीकरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य 2.3 कार्यरत महिलाओं के व्यक्तित्व संश्लेषण का अध्ययन

तालिका संख्या 4 व्यक्तित्व संश्लेषण

प्रसारण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता	अंश	वर्ग मान	माध्य सार्थकता	एफ स्तर
अ.	शैक्षिक स्तर	0.57	1	0.57	0.04	>.01
ब.	सामाजिक–आर्थिक स्तर	121.68	1	121.68	8.68''	<.01
स.	अन्तःक्रिया (अ/ब)	491.38	1	491.38	35.06''	<.01
	समूहों के साथ	6251.54	446	14.02		
	योग	6865.16	449			

''सार्थकता स्तर .01

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि व्यक्तित्व संश्लेषण पर शैक्षिक स्तर को कोई सार्थक प्रभाव नहीं होता, जबकि सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक व सामाजिक–आर्थिक स्तर का अन्तःक्रियात्मक सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका के अनुसार .05 विश्वास स्तर पर F.05 (1, 446) पर आवश्यक प्रसारण विश्लेषण का तालिका मान 3.86 तथा .01 विश्वास स्तर पर F.01 (1, 446) पर आवश्यक प्रसारण विश्लेषण का तालिका मान 6.70 है। गणना द्वारा प्राप्त प्रसारण विश्लेषण (शैक्षिक स्तर) का मान .01 विश्वास स्तर पर तालिका मान से अधिक है। अतः कार्यरत महिलाओं के शैक्षिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के आयाम व्यक्तित्व का संश्लेषण पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका के अनुसार .05 विश्वास स्तर पर F.05 (1, 446) पर आवश्यक प्रसारण विश्लेषण का तालिका मान 3.86 तथा .01 विश्वास स्तर पर F.01 (1, 446) पर आवश्यक प्रसारण विश्लेषण का तालिका मान 6.70 है। गणना द्वारा प्राप्त प्रसारण विश्लेषण (सामाजिक–आर्थिक स्तर) का मान .01 विश्वास स्तर पर तालिका मान से अधिक है। अतः कार्यरत महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के आयाम व्यक्तित्व संश्लेषण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक स्तर के संयुक्त प्रभाव के संदर्भ में प्राप्त एफ मान .01 विश्वास स्तर पर सार्थक पाया गया। अतः शैक्षिक स्तर, सामाजिक–आर्थिक स्तर के साथ व्यक्तित्व संश्लेषण पर सार्थक प्रभाव दर्शाता है। तालिका के अनुसार कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य के आयाम व्यक्तित्व संश्लेषण पर सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य 2.4 कार्यरत महिलाओं के समूह जनित व्यवहार का अध्ययन

तालिका संख्या 5 समूह जनित व्यवहार

प्रसारण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता	अंश	वर्ग मान	माध्य सार्थकता	एफ स्तर
अ.	शैक्षिक स्तर	128.00	1	128.00	12.19''	<.01
ब.	सामाजिक–आर्थिक स्तर	0.01	1	0.01	0.00	>.01
स.	अन्तःक्रिया (अ/ब)	182.65	1	182.65	17.40''	<.01
	समूहों के साथ	4681.66	446	10.50		
	योग	4992.32	449			

** सार्थकता स्तर .01

उपरोक्त तालिका के मान यह दर्शाते हैं कि कार्यरत महिलाओं के समूह जनित व्यवहार पर शैक्षिक स्तर तथा शैक्षिक एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का अन्तः क्रियात्मक सार्थक प्रभाव .01 विश्वास स्तर पर पड़ता है। कार्यरत महिलाओं समूह जनित व्यवहार पर शैक्षिक स्तर के सार्थक प्रभाव की पुष्टि एफ मान 12.19 से होती है। तालिका संख्या 7 से प्राप्त मान .01 सार्थकता स्तर पर शैक्षिक स्तर की सार्थकता को प्रकट करते हैं।

उद्देश्य 5 कार्यरत महिलाओं के स्वायत्तता का अध्ययन

तालिका सं. 6 स्वायतत्ता

प्रसारण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता	अंश	वर्ग मान	माध्य सार्थकता	एफ स्तर
अ.	शैक्षिक स्तर	50.67	1	50.67	2.16	>.01
ब.	सामाजिक–आर्थिक स्तर	8.27	1	8.27	0.35	>.01
स.	अन्तःक्रिया (अ/ब)	107.38	1	107.38	4.58'	<.05
	समूहों के साथ	10460.18	446	23.45		
	योग	10626.50	449			

** सार्थकता स्तर .05

उपरोक्त तालिका के अनुसार कार्यरत महिलाओं के शैक्षिक तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर का स्वायतत्ता पर सार्थक प्रभाव नहीं होता है। जबकि शैक्षिक तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर का अन्तः क्रियात्मक सार्थक प्रभाव .05 विश्वास स्तर पर पड़ता है। प्रसारण विश्लेषण तालिका के अनुसार .01 विश्वास स्तर पर F.01 (1, 446) पर आवश्यक प्रसरण विश्लेषण का तालिका मान 6.70 है। गणना द्वारा प्राप्त प्रसारण विश्लेषण शैक्षिक स्तर का मान .01 विश्वास स्तर पर तालिका मान से कम है। अतः कार्यरत महिलाओं के शैक्षिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के आयाम स्वायतत्ता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका के अनुसार .01 विश्वास स्तर पर F.01 (1, 446) पर आवश्यक प्रसारण विश्लेषण का तालिका मान 6.70 है। गणना द्वारा प्राप्त प्रसारण विश्लेषण शैक्षिक स्तर का मान .01 विश्वास स्तर पर तालिका मान से कम है। अतः कार्यरत महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के आयाम स्वायतत्ता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक स्तर के संयुक्त प्रभाव के संदर्भ में प्राप्त एफ मान (4.58) .05 विश्वास स्तर पर तालिका मान से अधिक है। अतः शैक्षिक स्तर एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का संयुक्त रूप से स्वायतत्ता को प्रभावित करता है। कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य के आयाम स्वायतत्ता पर सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव पड़ता है।

उद्देश्य 2.6 कार्यरत महिलाओं के वातावरणीय सक्षमता का अध्ययन

तालिका संख्या 7 वातावरणीय सक्षमता

प्रसारण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता	अंश	वर्ग मान	माध्य सार्थकता	एफ स्तर
अ.	शैक्षिकस्तर	8.82	1	8.82	0.80	>.01
ब.	सामाजिक–आर्थिक स्तर	11.84	1	11.84	1.08	>.01
स.	अन्तःक्रिया (अ/ब)	112.02	1	112.02	10.17''	<.01
	समूहों के साथ	4911.82	446	11.01		
	योग	5044.50	449			

** सार्थकता स्तर .01

कार्यरत महिलाओं के शैक्षिक स्तर तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर का वातावरणीय सक्षमता पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। जबकि शैक्षिक तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का अन्तः क्रियात्मक सार्थक प्रभाव .01 विश्वास स्तर पर पड़ता है। प्रसारण विश्लेषण तालिका के अनुसार .01 विश्वास स्तर पर F.01 (1, 446) पर आवश्यक प्रसारण विश्लेषण का तालिका मान 6.70 है। गणना द्वारा प्राप्त प्रसारण विश्लेषण शैक्षिक स्तर का मान .01 विश्वास स्तर पर तालिका मान से कम है। अतः कार्यरत महिलाओं के शैक्षिक स्तर और सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनके मानसिक स्वास्थ्य के आयाम वातावरणीय सक्षमता पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा शैक्षिक स्तर के संयुक्त प्रभाव के संदर्भ में प्राप्त एफ मान (10.17) .01 विश्वास स्तर पर तालिका मान से अधिक है। अतः शैक्षिक स्तर एवं सामाजिक–आर्थिक स्तर का संयुक्त प्रभाव वातावरणीय सक्षमता पर सार्थक पाया गया। कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य के आयाम वातावरणीय सक्षमता पर सामाजिक–आर्थिक एवं शैक्षिक स्तर का .01 विश्वास स्तर पर सार्थक रूप से अन्तःक्रियात्मक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष :–

कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य के विविध आयामों का सामाजिक–आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक स्तर के संदर्भ में अध्ययन करने यह ज्ञात हुआ कि सकारात्मक आत्म मूल्यांकन, वास्तविक प्रत्यक्षीकरण तथा समूह जनित व्यवहार पर शैक्षिक स्तर का सार्थक प्रभाव होता है। जबकि वास्तविक प्रत्यक्षीकरण एवं व्यक्तित्व संश्लेषण पर सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव प्रदर्शित हुआ। व्यक्तित्व संश्लेषण, समूह जनित व्यवहार, स्वायतत्ता एवं वातावरणीय सक्षमता पर शैक्षिक तथा सामाजिक–आर्थिक स्तर का अन्तःक्रियात्मक प्रभाव परिलक्षित हुआ। कार्यरत महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्य का स्तर निम्न पाया गया।

कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य आयाम स्वायतत्ता व सकारात्मक आत्म मूल्यांकन औसत स्तरीय,

वास्तविक प्रत्यक्षीकरण, व्यक्तित्व संश्लेषण तथा वातावरणीय सक्षमता निम्न स्तरीय, समूह जनित व्यवहार अति निम्न स्तरीय रहे। स्वायतत्ता व सकारात्मक आत्म मूल्यांकन कार्य व परिवार में प्रभुत्व तथा निर्णय लेने की क्षमता को प्रकट करते हैं। भारतीय सामाजिक परिवेश में महिलाओं को निर्णय लेने की पूर्ण स्वतंत्रता नहीं है, कार्यरत होने पर उनमें निर्णयन क्षमता का विकास होता है, आत्म मूल्यांकन उनकी इस क्षमता को प्रभावी बनाता है। वास्तविक प्रत्यक्षीकरण, व्यक्तित्व संश्लेषण, वातावरणीय सक्षमता का निम्न स्तरीय होना दर्शाता है कि वे अनेकों कारणों से कार्य क्षेत्र व परिवार में वास्तविकता के अनुरूप न्याय नहीं करती हैं। कार्यरत महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्य का स्तर निम्न होने के कारणों में कार्य का दबाब, अकारण हस्तक्षेप, समायोजन व पारिवारिक असहयोग, संतुष्टि आदि प्रमुख हैं।

निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर की कार्यरत महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्य, उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर की महिलाओं की तुलना में उत्तम पाया गया, जबकि उच्च शैक्षिक स्तर की कार्यरत महिलाओं का मानसिक स्वास्थ्य, निम्न शैक्षिक स्तर की कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य से उत्कृष्ट रहा। कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य पर सामाजिक आर्थिक स्तर व शैक्षिक स्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. बासु, सारा (2011) "ए स्टडी ऑफ मेण्टल हेल्थ एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ सैकेण्डरी स्कूल टीचर्स" भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, अंक 30 पृ0 19–25
2. बेस्ट, जे0 डब्ल्यू (1995) ''रिसर्चइन एजुकेशन'' प्रेटिसहाल ऑफ इंडिया प्रा0 लि0 नई दिल्ली।
3. बुच एमबी (1983–88) ''फोर्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
4. बुच एमबी (1988–92) ''फिफ्थ सर्वे आफ रिसर्च इन एजुकेशन'', एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
5. बी. भूषण एवं के. शेख (2002) ''कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं की असुरक्षा भावना, चिन्ता तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन'' बी0एच0यू0, वाराणसी।
6. कांग एवंचेंग (2006) "मेंटल हेल्थ : ए स्टडी ऑफ रूरल एडोलोसेंट" इंटरनेशनल डिर्जटेशन एबस्ट्रेक्ट, वर्ष 68, अंक 2
7. चन्द्रा, एस0 एस0 एवं शर्मा, आर0 के0 (1997) ''रिसर्च इन एजुकेशन'', अटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
8. चौहान, एस0 (1982) ''एडवांस एजुकेशनल साइक्लोजी'' विकास पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली।
9. क्लेरोट एवं बेड्रेगल (2003) "मेंटल हेल्थ ऑफ टीचर्स फ्राम 12 बेसिक स्कूल इन ए सबअर्बन कम्युनिटी इन चिली" इंटरनेशनल डिर्जटेशन एब स्ट्रेक्ट, वर्ष 65, अंक 2
10. कार्नबेच, एल0 जे0 (1966) ''एशेंसियल्स ऑफ साइक्लोजिकल टेस्टिंग'' टोक्यो वीदर हिलइंक।
11. दुध्राता, रेवती आर0 एवंजोशान, योगेश ए0 (2012) "मेंटलहेल्थ एण्ड डिप्रेसन अमांग वर्किग एण्ड नान वर्किग वूमैन" आइ0 जे0 एस0 आर0 पी0 वा0 2(8) पृ0 1–5
12. डे, निराधार (2009) "टीचर एडजस्टमेंट एण्ड मेंटल हेल्थ" आई0जे0पी0ई0 पटना, 40(1–2) पृष्ठ संख्या 159–162

Dr. Rajshree, Associate Professor, School of Education, Sanskriti University, Mathura
Address : 17, Ganesh Vihar, UPSIDC Road Sikandra, Agra-282007 UP
Mob. 9411086060, Rajshri.dei@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 67-72

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

An Infertile Girl of Delhi Diagnosed with Vaginal Agenesis: A Psychosocial Case Study

Dr. Shashi Punam

Associate Professor & Head, Department of Social Work, CUHP)

Yogesh Kumar

(Student MSW, Department of Social Work, Central University of Himachal Pradesh)

Abstract :-

The most beautiful structure in the structure of God is the woman. Woman is one of the most beautiful creations of God. According to Hinduism, God lives where woman is worshipped. The society having no respect for woman has nothing in a true sense. Infertility is not just a disability to experience motherhood; it is also a Bio-Psycho-Social health issue that can lead to decreased quality of life, psychological issues, marital troubles, and sexual dysfunction. Due to cultural and social pressure, lack of understanding, and other factors that can create mental health issues, women in India are burdened with the cost of infertility treatment. However, in this instance, the girl has Vaginal Agenesis and is infertile as a result of a biologically developmental issue that began in her mother's womb.

Aim : The objective of this study is to evaluate the participant's psychological state, including levels of sadness and anxiety, the degree of social support from family and peers, and the degree of health concern associated with her issue.

Methodology : A detailed psychosocial case study of infertile girl since her birth.

Tool used in the study : Interviewer has used open ended interview and self-prepared socio demographic chart for the current study.

Result : After conducting a thorough case study, the researchers discovered that the girl who was experiencing infertility owing to biological dysfunction had experienced gloominess, insomnia, and lack of family support. It is necessary to conduct additional research to better understand their effects and try to manage psychological and emotional support strategies to overcome their issue.

Keywords : Vaginal agenesis, Infertility, Psychosocial Status, Developmental issues.

Introduction :-

Infertility is the inability to get pregnant naturally with one's own. Infertility in humans refers to a woman's inability to conceive and give birth to a child through biological means. The causes of infertility may vary accordingly. Another factor that could be an obstacle is male infertility. There are two types of infertility :

1) Primary infertility that refers to a couple being unable to conceive a child for one reason or the other.
2) Secondary infertility occurs when a woman is unable to conceive a child for the second time as she has faced no such issue while giving birth to the first child. However, in this case, the respondent has faced multiple psychosocial issues due to vaginal agenesis.

Vaginal Agenesis : A rare disorder called vaginal agenesis causes neither the vagina nor the uterus to fully or completely develop. This disorder starts before birth and could possibly lead to kidney or skeletal problems. Mullerian agenesis, Mullerian aplasia, and Mayer-Rokitansky-Küster-Hauser (MRKH) syndrome are other names for the disorder.

Symptoms :

Females who don't menstruate but have vaginal agenesis may go unreported until they are in their teens (amenorrhea). Typical female development is generally followed by further puberty symptoms.

Some characteristics of vaginal agenesis include :

- The genitalia resemble those of a regular woman.
- The vagina may be missing or have only a tiny indentation where a vaginal opening would normally be. It may also be shorter without a cervix at the end.
- There could be no uterus or merely a partially formed one. The endometrium, which is tissue that lines the uterus, can cause monthly cramps or persistent abdominal pain.
- The ovaries are usually fully formed and functional, albeit they could be in an uncommon part of the abdomen. The pair of tubes that eggs pass through on their way from the ovaries to the uterus (the fallopian tubes) can occasionally be missing or form abnormally.
- When a female does not start menstruating during puberty, vaginal agenesis is frequently diagnosed. It is frequently effective to create a vagina by using a vaginal dilator, a tube-shaped instrument that, when used repeatedly, can extend the vagina. Occasionally, surgery may be required. Getting treated makes it feasible to engage in vaginal activity.

Causes :

The reason why the Mullerian ducts fail to develop normally during the first 20 weeks of pregnancy is unknown. This condition is known as vaginal agenesis. The uterus and vagina often form from the lower portion of these ducts, while the fallopian tubes form from the top portion. The absences of the vagina, a partial or incomplete uterus, or both are caused by underdeveloped Mullerian ducts.

Complications :

Your sexual relationships may be impacted due to vaginal agenesis, but after treatment, you should have no problems engaging in sexual activity. Women who lack or have a partially formed uterus are unable to get pregnant. However, if your ovaries are healthy, in vitro fertilization can be a viable option for you to get pregnant. To carry the pregnancy, the embryo may be inserted into the uterus of another person (a gestational carrier). With your doctor, go over your reproductive treatment options.

A patient's physical, mental, emotional, spiritual, and medical health can all be adversely affected by the medical condition of infertility, particularly in the condition of vaginal agenesis. This rare medical disorder still affects both the patient and their relationships, in addition to the patient as a whole. Everyone has a right to the best of physical and mental health. Primary and secondary infertility issues are not new to society, but the infertility caused by vaginal agenesis isa rare problem for which the patient will be advised to undergo surgery; once recovered, she will be able to have sex but cannot get pregnant. Due to this, many women have suffered from profound grief and agony, which is disturbing and devastating mentally as well as emotionally. A worldwide issue, related to primary and secondary infertility affects 7-15% of all marriages. The realization that one is childless is linked to severe psychological shock, a sensation of disbelief, and mental anguish, which may have an impact on the couple's interpersonal connections and psychological welfare. Due to the mixed family system and the influence of elders, there is even more social pressure in India for couples to have children. The bulk of social criticism associated with being "sterile" is directed at women, who are frequently held responsible for infertility. Despite the fact that male infertility is a crucial topic in any discussion of infertility. The main objective of this case study is to find out the psychosocial problems of a girls who are suffering from infertility due to vaginal agenesis and to shed light on those problems.

Socio demographic data sheet of the Respondent

1	Name	Ms. M.
2	Gender	Female
3	Age	27 Year
4	Education	M.Sc. Nursing from Delhi University
5	Background	Urban
6	Family Type	Nuclear
7	No. of Family members	4
8	Family Income	1 Lakh per Month
9	Marital Status	Unmarried
10	Socio-economic Status	Upper-Middle
11	Religion	Hindu
12	Domicile	Delhi
13	Source of Information	Patient herself, Her Treatment Case
		record file, Patient's Friend
14	Quality of the Information	Reliable and Adequate

Detailed Case History of the Respondent :

Ms. C., 27, is a native of West Delhi. She is single and holds master's degree in nursing from Ahilya Bai College of Nursing at Delhi University. She resides with her mother, younger brother, who is also single, and an older sister. The respondent has been a nurse in a government hospital for the past 4 years. With a prepared questionnaire containing all relevant questions, the interviewer begins the interview. The answer went into great depth about her issue, claiming that it is infertility from her mother's womb itself, which she first learned about at the age of 13. She was immediately terrified and cried for the following few months. Later, she started taking care of herself. She claimed that the only member of her family who is aware of her infertility is her mother. The respondent always worries about how she will explain her situation to everyone in the family and is also hesitant to disclose because of the fear of being shamed for being infertile. In addition, the respondent stated that she wishes to settle down with someone who could marry her despite knowing her health complication, that is, infertility. Her infertility, which was hidden until now, may not be made public so that she wouldn't have to be ashamed in front of others. Currently, she is so anxious that even if a man learns about this problem, he will immediately distance himself from her. She might not feel normal compared to other girls or vice versa. While the respondent was speaking about her background, she mentioned that she thought about getting married to a male acquaintance, but her father rejected

the union because he was unaware of her infertility. Before she could inform her father about this, he suddenly passed away in the second wave of COVID-19. Now, the respondent revealed that she is often pressurized to get married by family members due to her government employment and her father's absence. Because of this, she is constantly afraid of making her sterility known to everyone. She is going through extreme stress and anxiety due to this pressure and her health concerns. She is indecisive at this point of time and unable to find any solution as a result. After the completion of current case study, the researcher has suggested to the respondent about the relaxation technique, light exercise, and mindfulness technique to overcome her psychological issues. And if she feels severe mental health issues, she should contact mental health professionals. The researcher has also referred her to gynecologist for further consultation about the surgery and to pursue her life and future with a male life partner who is interested to marry her without an expectation of having biological kids.

Need of Study :

Just as many problems in the society are attacking the lives of women, in the same way, infertility due to Vaginal Agenesis is also acting as a kind of social exploitation for women. Through this study, it can be seen that any infertile woman is suffering from mental stress and is in a type of trauma. The purpose of this study or case study is to understand the mental health status or silence of a women suffering from infertility and to establish coordination between their desires and problems.

Result :

Mild psychosocial stress is still being experienced by the respondent. She still hasn't come to the right decision or is unable to comprehend why she decided to pursue her family and profession with a man as her partner. She is still dealing with the social and psychological effects of the biological effect. As is well known, our government works to modify how people who have biological abnormalities are viewed.

Suggestion :

Any girl who learns about her inability to experience motherhood after marriage or even engage in sexual activity without adequate surgery feels depressed and is shamed by society. Therefore, we need to be aware of these developmental difficulties and reprocess the way we think about infertility and vaginal agenesis.

Conclusion :

Infertility has adversely affected the quality of life for many women. Even we can described like Infertility is a term used to describe the inability of a couple to get pregnant or the inability of a woman to carry a pregnancy to term. Women struggling with infertility have a big influence on their

marriages and frequently think less of themselves than other women because of this health concern. However, a girl who has biological malfunction since birth, such as Vaginal Agenesis, which develops in mother's womb, may be discovered throughout infancy or during an adolescent girl's menstrual cycle.

References :

1. Bean, E. J., Mazur, T., & Robinson, A. D. (2009). Mayer-Rokitansky-Küster-Hauser syndrome: sexuality, psychological effects, and quality of life. Journal of pediatric and adolescent gynecology, 22(6), 339-346.
2. Morgan, E. M., & Quint, E. H. (2006). Assessment of sexual functioning, mental health, and life goals in women with vaginal agenesis. Archives of sexual behavior, 35, 607-618.
3. Tabong, P. T. N., & Adongo, P. B. (2013). Understanding the social meaning of infertility and childbearing: a qualitative study of the perception of childbearing and childlessness in Northern Ghana. PloS one, 8(1), e54429.
4. Herlin, M. K., Petersen, M. B., &Barnstorm, M. (2020). Mayer-Rokitansky-Küster-Hauser (MRKH) syndrome: a comprehensive update. Orphanet Journal of Rare Diseases, 15(1), 1-16.
5. Benson, R. C. (1975). Gynecologic Examination. Pediatric Annals, 4(1), 8-9.
6. Hickey, R. J., Zhou, X., Settles, M. L., Erb, J., Malone, K., Hansmann, M. A., ... & Forney, L. J. (2015). Vaginal microbiota of adolescent girls prior to the onset of menarche resemble those of reproductive-age women. MBio, 6(2), e00097-15.
7. Patek, E. (1974). The epithelium of the human fallopian tube: a surface ultrastructural and cytochemical study. Actaobstetricia et gynecologicaScandinavica, 53(sup31), 4-28.
8. Wester, T., Tovar, J. A., &Rintala, R. J. (2012). Vaginal agenesis or distal vaginal atresia associated with anorectal malformations. Journal of Pediatric Surgery, 47(3), 571-576.
9. Zurawin, R. K., Dietrich, J. E., Heard, M. J., & Edwards, C. L. (2004). Didelphic uterus and obstructed hemivagina with renal agenesis: case report and review of the literature. Journal of pediatric and adolescent gynecology, 17(2), 137-141.
10. Troiano, R. N. (2003). Magnetic resonance imaging of Mullerianduct anomalies of the uterus. Topics in Magnetic Resonance Imaging, 14(4), 269-279.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 73-75

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

उत्तर प्रदेश का पत्रकारिता में योगदान

डॉ. जगदीश चन्द्र जोशी
असि0 प्रोफेसर, एम0बी0 रा0 स्ना0 महाविद्यालय, हल्द्वानी (नैनीताल)

उत्तर प्रदेश में पत्रकारिता का सम्बन्ध स्वतंत्रता आन्दोलन से रहा है। यहाँ की पत्रकारिता और पत्रकार अपनी अलग कार्य शैली के कारण विशेष पहचान बनाने में सफल रहे हैं। स्वाधीनता आन्दोलन के समय उत्तर प्रदेश की पत्रकारिता का मूलस्वर राष्ट्रहित, राष्ट्रीयता एवं जनजागरण था। इस कारण अनेक पत्रकारों को अंग्रेजी हुकूमत का कोप भाजन भी बनना पड़ा। स्वतंत्रता के पूर्व पत्रकारिता जिन उद्देश्यों तथा लक्ष्यों के प्रति समर्पित थी, स्वतंत्रता के बाद वह बदल गये। स्वाधीनता के बाद नेहरू युग का उदय हुआ और हिन्दी पत्रकारिता ने राष्ट्रीय सामाजिक विकास के लिए नई जमीन की तलाश शुरू की। संविधान ने अभिव्यक्ति की आजादी ही नहीं दी बल्कि सूचनाओं को प्राप्त करने व देने का अधिकार भी दिया।

30 मई सन् 1926 को 'उदन्त मार्तण्ड' (द राइजिंग सन्) का प्रकाशन कलकत्ता से शुरू हुआ। इसके सम्पादक कानपुर निवासी पं0 युगल किशोर शुक्ल थे, जो उन दिनों कलकत्ता में रह रहे थे। भारत में 30 मई को हिन्दी पत्रकारिता दिवस भी मनाया जाता है। उत्तर प्रदेश में सन् 1845 में सर्वप्रथम प्रकाशित होने वाला समाचार–पत्र 'बनारस अखबार' था। इसके सम्पादक गोविन्द नाथ थंते थे। सन् 1852 में आगरा से 'बुद्विप्रकाश' का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसके सम्पादक मुंशी सदासुख लाल थे। ऐतिहासिक महत्व की 'कविवचन सुधा' का प्रकाशन भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने वाराणसी से सन् 1868 में किया।

'पत्रकारिता के प्रारम्भिक दौर में गुलामी के खिलाफ संघर्ष, सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ संघर्ष और साहित्य सृजन को प्रमुख स्थान मिला। इसमें व्यावसायिकता के बजाय जोखिम अधिक था और इसी जोखिम में जीना लेखकों – पत्रकारों ने अंगीकार किया। किन्तु अब पत्रकारिता ने भी जीवन के तमाम व्यवहारों के साथ व्यावसायिकता में प्रवेश कर लिया है। अब हम इसे व्यावसायिकता से हटकर नहीं देख सकते है और इसमें हमें अपनी मनोवृति, क्षमता, रूचि के अनुसार सम्भावनायें तलाशनी ही होंगी।'[1]

सफल नाटककार, उत्कृष्ट कवि, सशक्त व्यंग्यकार एवं जागरूक पत्रकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का हिन्दी पत्रकारिता में अकल्पनीय योगदान रहा है। 'भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने पत्रकारिता में नयी विधाओं का प्रारम्भ किया। निबन्ध का प्रारम्भ उन्होंने किया जिसे बाद में बालकृष्ण भट्ट तथा प्रतापनारायण मिश्र ने इसे अपने विचारों को प्रकट करने का एक सशक्त माध्यम बनाया। अपने निबन्धों के माध्यम से पत्र–पत्रिकाओं में अंग्रेजी शासन पर व्यंग्य भी किये।'[2]

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'बाल विबोधनी' पत्रिका 'हरिश्चन्द्र पत्रिका' और 'कविवचन सुधा' पत्रिकाओं का

सम्पादन किया। भारतेन्दु की हिन्दी साहित्य की अनेक विधाओं में अंग्रेजी शासन का विरोध, स्वाधीनता की उत्कृष्ट आकांक्षों तथा जातीय भावबोध झलकता है। इस सम्बन्ध में हेरम्ब मिश्र का कथन उचित लगता है कि 'सर्वोत्तम पत्रकारिता साहित्य है और सर्वोत्तम साहित्य पत्रकारिता है।'[3]

सन् 1868 में भारतेन्दु जी ने वाराणसी से 'कविवचन सुधा' का प्रकाशन कर हिन्दी पत्रकारिता में इतिहास रचा। सन् 1877 में प्रयाग से बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप' का मासिक प्रकाशन प्रारम्भ किया। मालवीय जी ने 1907 में प्रयाग से 'अभ्युदय' एवं अंग्रेजी में 'द लीडर' तथा अल्मोड़ा से बुद्विबल्लभ पंत ने 'अल्मोड़ा समाचार' निकाला, जिसे अंग्रेजों ने बन्द करा दिया। जबकि तारामोहन मिश्र ने सन् 1850 में 'सुधाकर' का प्रकाशन आरम्भ किया। महर्षि दयानन्द से प्रभावित होकर मुंशी बख्तावर सिंह ने 1870 में शाहजहाँपुर से 'आर्यदर्पण' साप्ताहिक निकाला। ऐतिहासिक महत्व की पत्रिका 'सरस्वती' सन् 1900 में प्रकाशित होनी आरम्भ हुई। सन् 1920 में काशी निवासी शिव प्रसाद गुप्त ने दैनिक 'आज' की नींव रखी, जिसके प्रथम सम्पादक श्री प्रकाश थे। दूसरे नम्बर पर इसके सम्पादक बाबू विष्णु पराड़कर बने। मूलरूप से महाराष्ट्र निवासी पराड़कर ने 'आज' को नया आयाम, नई गति, निर्भीक राष्ट्रीय विचारधारा व हिन्दी को सुन्दर स्वरूप प्रदान किया। इन पर अंग्रेजों ने राजद्रोह का अभियोग भी लगाया। पराड़कर जी के सहयोग से 1929–30 में सीताराम जी के सम्पादकत्व में गुप्त रूप से 'रण भेरी' का प्रकाशन किया गया, जिसके पीछे पूरी अंग्रेज पुलिस व सी.आई.डी. लगी रही, परन्तु उसे पकड़ नही सकी। कुछ समय बाद दैनिक 'आज' का अंग्रेजी संस्करण 'ज्वकंल' भी प्रकाशित हुआ तथा 'अवकाश' पत्रिका का भी प्रकाशन होने लगा। कुछ समय बाद यह बन्द हो गया। गोरखपुर से सन् 1919 में दशरथ द्विवेदी ने 'स्वदेश' नामक साप्ताहिक पत्र निकाला। इसके देशभक्ति पूर्ण लेखों के कारण संस्थापक संपादक द्विवेदी जी व लेख लिखने वाले 'उग्र' जी को जेल जाना पड़ा। पूर्वांचल से प्रकाशित यह पत्र विदेशों में भी मंगाकर पढ़ा जाता था।

उत्तर प्रदेश की प्रमुख साहित्यक, साप्ताहिक एवं मासिक पत्रिकाओं में हंस, सरस्वती, माधुरी, अभयुदय, सनातन धर्म, संसार, संगम, देशदूत, समाज, मर्यादा, स्वार्थ, चाँद एवं सुधा आदि मील का पत्थर सिद्व हुई हैं। शिव मंगल गाँधी ने राष्ट्रीय विचार धारा से ओत–प्रोत 'जीवन' साप्ताहिक निकाला। शिव प्रसाद शास्त्री ने 1915 में 'ज्ञान शक्ति' व गया प्रसाद शुक्ल सनेही ने 'कवि' नामक पत्र निकाला। इलाहाबाद से 'भारत' और 'अमृत पत्रिका' नामक दो समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे थे। इसके अतिरिक्त यहाँ से 'सुकवि' 'सुमित्रा' मासिक व 'रामराज्य' साप्ताहिक तथा 'वर्तमान' और 'विश्वामित्र' का भी प्रकाशन हो रहा था। लखनऊ से 'विप्लव' 'वासंती' 'रसवंती' बालविनोद, 'युग चेतना' 'पाँचजन्य' 'राष्ट्रधर्म' और 'तरूण भारत' का प्रकाशन महत्वपूर्ण रहा है। सन् 1947 के बाद यहाँ से 'नवजीवन' 'स्वतंत्र भारत', 'द पायनियर' 'नेशनल हेराल्ड', 'द टाइम्स ऑफ इण्डिया, द हिन्दुस्तान, द इकानामिक टाइम्स, राष्ट्रीय सहारा, हिन्दुस्तान, आज, राष्ट्रीय स्वरूप, स्वतंत्र चेतना, कौशी आवाज, कुबेर टाइम्स, अमर उजाला दैनिक जागरण, अमृत प्रभात, डी0एन0ए0, जन टाइम्स, उर्दू दैनिक आग, 'मरकज जदीद' अवधनामा, दारूलसफा जैसे महत्वपूर्ण समाचार पत्रों का प्रकाशन हो रहा है। इनमें कुछ समाचार पत्र बन्द भी हो चुके है। प्रदेश के प्रमुख शहरों जैसे लखनऊँ, इलाहाबाद, कानपुर, गोरखपुर, वाराणसी फैजाबाद, आगरा, मेरठ, सहारनपुर, बरेली से कोई महत्वपूर्ण समाचार पत्रों का प्रकाशन हो रहा है।

डॉ0 रामविलास शर्मा ने उस समय के समाचार पत्रों के बारे में कहा है 'सम्पादक के व्यक्तित्व की छाप जैसी 'ब्राह्मण' पत्र पर थी वैसी और किसी पर नहीं। इसे कानपुर से प्रताप नारायण मिश्र ने निकाला था और

उनकी नस–नस में जो शरारत और विद्रोह भरा हुआ था, वह उसकी एक–एक लाइन से प्रकट होता था। हास्य के साथ स्वाधीन चेतना फैलाने में यह पत्र सबसे आगे था। इससे ही कुछ मिलता–जुलता राधाचरण गोस्वामी का 'भारतेन्दु' था, जिसे उन्होंने बृन्दावन से निकाला था।'[4]

उत्तर प्रदेश के प्रमुख व विशिष्ट पत्रकारों में पं0 युगलकिशोर शुक्ल, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पं0 मदन मोहन मालवीय, महावीर प्रसाद द्विवेदी, गणेश शंकर विद्यार्थी, बाबू राव विष्णु पराड़कर, श्री प्रकाश, पं0 कमलापति त्रिपाठी, डॉ0 सम्पूर्णानन्द, मुकुट बिहारी वर्मा, अज्ञेय, रघुवीर सहाय, शीला झुनझुनवाला, अक्षय कुमार जैन, अशोक जी, लक्ष्मीशंकर व्यास, अच्युतानंद मिश्र, नरेन्द्र मोहन, डॉ0 विद्यानिवास मिश्र, भगवान दास अरोड़, जयप्रकाश भारती, अतुल माहेश्वरी, अशोक अग्रवाल, के0 विक्रमराव, शार्दुल विक्रम गुप्त, भानुप्रताप शुक्ल वचनेश त्रिपाठी, वीरेश्वर द्विवेदी, राजनाथ सिंह 'सूर्य', नन्दकिशोर श्रीवास्तव आनन्द मिश्र अभय, नरेन्द्र भदौरिया, प्रकाश पाण्डेय, राजीव शुक्ला, राजीव सचान आदि नाम प्रमुख रहे हैं।

इस प्रकार स्वाधीनता से पूर्व हिन्दी पत्रकारिता का उद्देश्य देशवासियों में राष्ट्रप्रेम की भावना जागृत करना, सामाजिक व आर्थिक समस्याओं को दूर करना एवं देश को स्वतंत्र कराना रहा था। 'हमारे स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारिता और पत्रकारों ने अपना अमूल्य योगदान दिया है। विदेशी शासन के दौरान देश में समाचार पत्र भी दासता की बेड़ियों में जकड़े हुए थे। इसके बावजूद अनेक साहसी पत्रकारों ने अखबारों द्वारा जनमानस में स्वाधीनता के प्रति चेतना जागृत करने का कार्य किया।'[5]

उत्तर प्रदेश से आज अनेक पत्र–पत्रिकाएं प्रकाशित हो रही है। अनेक प्रतिष्ठित पत्रकार इनसे जुड़े हैं। वर्तमान में पत्रकारिता का उद्देश्य दैनिक जीवन की गतिविधियों, सामाजिक जीवन के विविध पक्षों एवं राजनैतिक घटनाओं को प्रस्तुत करना भी है। इसके साथ ही वह साहित्यिक भाषा तथा उनकी विविध विधाओं का भी विकास कर रही है। बाजारवाद के प्रभाव से हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप निरंतर बदलता जा रहा है। इस सबके बावजूद उत्तर प्रदेश में हिन्दी समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं का महत्व बना हुआ है।

संदर्भ :–

1. पत्रकारिता एक परिचय– डॉ0 राकेश दयाल, पृष्ठ–10
2. हिन्दी पत्रकारिता : सिद्वान्त और स्वरूप– सविता चड्ढा, पृष्ठ–11
3. हिन्दी पत्रकारिता : सिद्वान्त और स्वरूप– सविता चड्ढा, पृष्ठ–15
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास–डॉ0 श्रीनिवास शर्मा, पृष्ठ–750
5. हिन्दी पत्रकारिता : इतिहास एवं विकास–आर0के0 गुप्ता, पृष्ठ– 203

मो. 7500334778

E-Mail:joshihindi01@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 76-81

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

राजस्थान के लोक मृण्मय मोलेला फलकों का कलात्मक अध्ययन

Neelam Kumari, Research Scholar
Prof. Meenakshi Thakur, Supervisor
Dayalbagh Educational Institute, (Deemed University) Dayalbagh, Agra- 282005, India

सारांश :–

प्राचीनकाल से वर्तमानकाल तक भारत में कला के माध्यम से धार्मिक संदेशों को प्रदान करने की परम्परा चली आ रही है। कला का स्वरूप परिवर्तनशील है, समाज व सभ्यता के विकास का प्रभाव सदैव कलाओं पर पड़ता रहा है, जिसके उदाहरण हमें भारतीय ललित कलाओं व लोक कलाओं में दृश्टव्य होते हैं। लोक कला प्रत्येक प्रान्त व क्षेत्र की लोक संस्कृति की परिचायक होती है जैसे : बिहार की मधुबनी, बंगाल के कालीघाट, महाराष्ट्र की वर्ली तथा राजस्थान के मोलेला मूर्तिशिल्प आदि। लोक कला जनमानस में व्याप्त कला है, जो किसी विशेष अनुष्ठान, यज्ञ, त्यौहारों व अवसरों पर निर्मित की जाती है। मृण्मय प्रान्तों में कला द्वारा भारत के विभिन्न प्रान्तों में कला को उत्कृष्टता के शिखर तक पहुंचाने व विकसित होने हेतु अवसर प्राप्त हुए। मृण्मय कला के क्षेत्र में कार्यरत कलाकार रूप एवं आकार के ज्ञान के सम्बन्ध में धनी है। राजस्थान में मृण्मय द्वारा विभिन्न सजावटी एवं धार्मिक फलकों व विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। मैं अपने इस शोध पत्र के माध्यम से राजस्थान की लोक मृण्मय मोलेला फलकों का कलात्मक अध्ययन प्रस्तुत करूँगी।

Keyword : मृण्मय, मोलेला फलक, खापें, सृजित।

सम्पूर्ण जगत में मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है, जो आश्चर्यजनक कलाओं से परिपूर्ण है। मनुष्य के पास अपने मनोभावों को व्यक्त करने के जितने भी साधन है, उनमें कला सबसे सशक्त है। कला की उत्पत्ति आदिम अवस्था में आत्मभिव्यक्ति अलंकरणप्रियता, प्राकृतिक शक्तियों की उपासना, कुतूहल तथा मनोरंजन आदि किसी एक या समस्त प्रवृत्तियों में से हुई थी। वर्तमान में यह स्थिर करना बहुत कठिन है कि इनमें से कौन–सी प्रवृत्ति सर्वप्रथम कलाकृत्तियों के निर्माण में सहायक हुई थी। प्रारम्भिक वनवासी मानव ने भयवश या आवश्यकता पूर्ति हेतु शिलाचित्रों का निर्माण किया, जिसका विकसित रूप हमें धार्मिक कला के रूप में दृष्टव्य होता है। भारत में धर्म ने कला को ऐश्वर्य एवं समृद्धि प्रदान की। वात्सायन ने ''शैवतन्त्र'' तथा ''कामसूत्र'' में 64 कलाओं का वर्णन किया है। वात्सायन के कामसूत्र की आलोचना करते हुए वात्सायन के समकालीन लेखक ''जसमंगला'' ने कहा है कि ''कामसूत्र में 64 कलाओं का वर्णन शरीर के विभिन्न अंगों के समान किया है। यह कहना गलत है कि प्राचीन मनुष्य में 64 कलाओं की जानकारी थी। मनुष्य ने अपनी अभिव्यक्ति को प्राचीन युगातीत से

आधुनिक युग तक विभिन्न माध्यमों के द्वारा आध्यात्मिक, कलात्मक एवं सौन्दर्यात्मक स्वरुपों में अभिव्यक्त किया है।''

भारतवर्ष अपनी शास्त्रीय कला के साथ–साथ अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक लोक कला के लिए विश्व प्रसिद्ध है। लोक कलाओं का जन्म मानवीय भावनाओं व उनकी परम्पराओं पर आधारित है, क्योंकि यह जनमानस की अभिव्यक्ति है। यह शास्त्रीय कला व व्यावसायिक कला की पृष्ठभूमि भी है। लोक कलाओं का जन्म मानवीय भावनाओं व उनकी परम्पराओं का दर्पण होता है। लोक कला परम्परा की यह विशेषता है कि यह लोक संस्कृति का अभिन्न अंग होकर पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती रहती है।

प्रारम्भिक वनवासी मानव ने प्रकृति के अभिन्न अंगों में सौन्दर्य की अधिष्ठात्री देवी को अमूर्त में देखा था तथा अपने प्रयासों द्वारा उसे मूर्त रुप प्रदान करने का प्रयास किया। मनुष्य ने अपनी संस्कृति एवं सभ्यता के विकास एवं अपनी कलात्मक प्रतिभा को बौद्धिकता के साथ विकसित करके गीली मृत्तिका को अपनी अभिव्यक्ति का साधन बनाकर मृण्मय कला के रुप में साकार किया तथा इन्हीं मृण्मय मूर्तियों ने धार्मिक रुप प्राप्त कर लोक कलाओं को भी विकसित किया। टेराकोटा का शाब्दिक अर्थ 'पकी हुई' मिट्टी से है। टेराकोटा या पकी मिट्टी या मृण्मय की कलाकृतियाँ प्राचीन भारतीय परम्परा का एक विशेष अंग रही हैं। वेदों के स्त्रोतों में भी हमें मृण्मय कला का उल्लेख प्राप्त होता है।

भारत देश एक ग्राम्य प्रधान देश है। यहाँ के गाँव के परिवारों में निवास करने वाले परिवारों में कुम्भकारों की संख्या अत्यधिक है। ये कुम्भकार स्थानीय तौर पर उपलब्ध लचीली मिट्टी द्वारा मृद भाण्ड, वस्तुओं एवं मूर्तियों का निर्माण करते हैं। इसके पश्चात् इन मृदभाण्ड, वस्तुओं, पात्रों एवं मूर्तिशिल्पों को सुखाकर 750a-800ac के तापमान पर भट्टियों में पकाया जाता है। पकने के उपरान्त यह मृण पात्र तथा वस्तुऐं लाल भूरे रंग में परिवर्तित हो जाती हैं, जो टेराकोटा के नाम से जानी जाती है, जिसकी प्रकृति अत्यधिक कठोर, सुरागदार तथा टिकाऊ होती है। मृण्मय अर्थात् पकी हुई मिट्टी से निर्मित ये पात्र, मूर्तिशिल्प तथा वस्तुऐं मनुष्य की रचनात्मक कुशलता के साथ–साथ दैनिक तथा सौन्दर्यात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति में भी सहायक होते हैं।

मृण्मय परम्परा लगभग 1500 से 1700 वर्ष प्राचीन है। प्राचीन समय में अधिकतर प्रत्येक गाँव में कुम्भकार होते थे, जो इस मृण्मय कला में निपुण थे। भारत के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में हमें शिल्प कला के नमूने दृष्टव्य होते हैं। उदाहरणार्थ– मृण्मय खपरैल, मृण्मय पात्र, मृण्मय मूर्तिशिल्प, मृण्मय द्वारा निर्मित सजावटी वस्तुऐं, मृण्मय फलक इत्यादि शिल्प कला कौशल के उदाहरण हैं। भारत में ऐसे कई क्षेत्र विशेष हैं, जहाँ हमें मृण्मय कला के उत्कृष्ट उदाहरण दृष्टिगोचर होतें हैं, उन्हीं में से एक है राजस्थान के उदयपुर के निकट बसा मोलेला गाँव।

राजस्थान अपनी ऐतिहासिक इमारतों, हवेलियों, सांस्कृतिक धरोहरों तथा अतिथि सत्कार हेतु जाना जाता है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के शिल्पों जैसे– कागजी पोटरी, मृण्मय पोखरण शाण्ड से सुसज्जित कला, ब्लू पोटरी, मोलेला के मृण्मय फलेक्स आदि हेतु यह विश्व प्रसिद्ध है। मालेला अपनी पृष्ठभूमि में अरावली पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ है। मोलेला गाँव के अन्दर प्रवेश करते ही कुम्हारों के घर के आगे बड़े–बड़े साइन बोर्ड, घरों के आगे बने चबूतरों एवं बरामदों में देवी–देवताओं की मृणमूर्तियाँ एवं फलक दृष्टिगोचर होते हैं। मोलेला गाँव में कुम्हारों की दो खापें (जाति) निवास करती हैं– मेवाला तथा मेवाड़ा। मोहनलाल, खेमराज, श्यामलाल, जमनालाल, भगवती लाल तथा देवीलाल आदि मेवालिया कुम्हार है, इसके विपरीत जीतमल, रोशनलाल तथा चुन्नीलाल मेवाड़

कुम्हार है। मोलेला गाँव के कुम्हारों ने अपनी शिल्प कला के उत्कृष्ट कौशल से राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है। पूर्व में इस गाँव के कुम्हार मृण्मय द्वारा दैनिक पात्र व उपयोगी वस्तु ही निर्मित करते थे, तत्पश्चात् धीरे–धीरे इन लोगों ने पात्रों के साथ–साथ लोक मृण्मय देवी–देवताओं को फलकों पर सृजित करना आरम्भ किया।

मोलेला गाँव के निवासी हिन्दू धर्म से प्रेरित हैं तथा हिन्दू धर्म पर ही आधारित रीति–रिवाजों व संस्कृति का पालन करते हैं। मोलेला निवासी धार्मिक रुप से अपने कुल देवता ''धर्मराज'' के उपासक होते हैं तथा इन्हीं के आर्शीवाद प्राप्ति के उपरान्त मृण्मय मोलेला फलक का सृजन करते हैं। यहाँ के मृण्मय मूर्तिशिल्पों व फलकों में कुम्हार के ध्यान व हस्त कौशल का असाधारण समन्वय दृष्टव्य होता है। इन मृण्मय फलकों के निर्माण में महिलाऐं भी अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करती हैं। मृण्मय तैयार करने से लेकर परिष्करण तक पूर्ण प्रक्रिया में वह सहभागी होती हैं। पूर्णतः सृजित इन फलकों की गुणवत्ता को खापे द्वारा जाँचा जाता है। खापा इस सम्पूर्ण प्रक्रिया का सूत्राधार भी होता है। साथ ही इन आदिवासियों का धार्मिक मार्गदर्शक भी।

भारत में मोलेला मृण्मय फलक शिल्पकला के क्षेत्र में अपना एक उच्च स्थान रखते हैं, जो कि पूर्णतः लोक कला पर आधारित है। मोलेला मृण्मय फलकों की विषयवस्तु के अर्न्तगत धार्मिक, सामाजिक, ग्रामीण क्रियाकलापों, कुल देवी–देवताओं एवं समकालीन समय की गतिविधियों का अंकन किया जाता है। भारत में समकालीन समय में मृण्मय द्वारा भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में कार्य प्राप्त हो रहा है, परन्तु मोलेला शिल्पकला अपनी तकनीकी विशेषता के कारण सम्पूर्ण भारत में अपना श्रेष्ठ स्थान बनाये हुए है। अलग–अलग कुछ संख्या में मृण्मय फलको पर हाथों द्वारा बिना चाक की सहायता से खोखले उभारदार आकृतियों का सृजन करने के पश्चात् एक बड़े समूह के पैनल में उसको एक साथ एकत्रित कर रुपायित कर दिया जाता है।

इस प्रकार की तकनीकी का प्रयोग अन्य क्षेत्रों में भित्ति कार्य हेतु किया जाता है। मृण्मय फलक के समूह पैनल का उत्कृष्ट उदाहरण हमें उदयपुर के रेलवे स्टेशन ''उदयपुर सिटी'' की भित्ति पर अंकित फलकों में दृष्टिगोचर होता है, जिसको पदमश्री पुरस्कार से सम्मानित कलाकार श्री मोहनलाल जी ने बनाया था। इस सम्पूर्ण फलक को हाथ से ही बिना चाक की सहायता के निर्मित किया गया है तथा विषय वस्तु के रुप में श्रीनाथ जी व उनसे सम्बधित कथाओं के दृश्यों का अंकन किया गया है साथ ही इसके अर्न्तगत कहीं–कहीं पशु–पक्षियों की आकृतियों को भी निर्मित किया गया है। (Fig. No.1)

Fig. No.1- Plaque Based on Lord Shri Nath JI made by Mohanlal Kumhar

Source- https://www.udaipurblog.com/molela-art-in-udaipur.html

धर्मराज :–

धर्मराज अर्थात् धर्म के रखवाले अथवा धर्म पर राज करने वाले देवता। यह देवता समुदाय विशेष पर अपना आधिपत्य करने वाले हैं। लोक में यह देवनारायण के रुप में प्रतिष्ठित हैं। यह मनुष्य के कर्मो का लेखा–जोखा करने वाले देवता हैं। मेवाड़ अंचल में सवाई भोज व साढू माता के पुत्र के रुप में जन्म लेने वाले उदान्त को धर्मराज कहा जाता है। बूली नामक घोड़ी इनकी सवारी होती है। कई बार धर्मराज की मूर्ति को पक्की ईटों के रुप में ही स्थापित कर दिया जाता है, जिस कारणवश इन्हें ''ईटों का श्याम'' भी कहा जाता है। इन्हीं के आदेश उपरान्त ही कुम्हारों ने प्रतिमा निर्माण कार्य प्रारम्भ किया था। मोलेला समुदाय में धर्मराज को घोड़ी पर सवार तथा हाथ में शस्त्र के रुप में भाला व मुख पर ओज दर्शाया जाता है। (Fig. No.2)

Fig. No.2- Household God Dharmraaj made by Jamnalal Kumhar

Source- https://30stades.com/2021/08/08/molela-rajasthans-terracotta-plaque-art-bhil-mins-tribals-clay/

गणेश :–

गणेश के रुप से सभी परिचित हैं। मोलेला मृण्मय फलक सृजन में विषयवस्तु को ध्यान में रखते हुए संयोजन की सभी विशेषताओं को विशेष रुप से सम्मिलित किया जाता है। भगवान गणेश को फलक के मध्य में सृजित करके उनकी प्रभाविता को जनसामान्य के मध्य प्रस्तुत किया गया है। गणेश की आकृति को आकर्षित बनाने हेतु आभूषणों को बनाया गया है। गणेश जी को चर्तुभुजधारी रुप में अंकुश, परशु, मोदक तथा वरमुद्रा धारण किये हुए दर्शाया गया है। वर्तमान समय में गणेश जी के पैनल व फलक सजावट हेतु भी प्रयोग किये जाने लगे हैं, जिसके अर्न्तगत गणेश जी को विभिन्न मुद्राओं एवं भाव–भंगिमाओं के साथ सृजित किया जाने लगे हैं। (Fig. No.3)

Fig. No. 3 - Lord Ganesha made by Jamnalal Kumhar

Source- https://images.app.goo.gl/iV1hy6Q4x1pNukp27

एक ही फलक पर विभिन्न देवी–देवताओं का संयोजन– एक ही फलक पर विभिन्न देवी–देवताओं जैसे– गणेश, राधाकृष्ण, नागदेवता, कुलदेवता धर्मराज दियोनरायण, दुर्गा आदि का अंकन किया जाता है। इसके साथ ही सूर्य व चन्द्र को भी ऊपर की तरफ गणेश जी के दोनों ओर दर्शाया गया है। मालेला शिल्पियों की यह विशेषता है कि उनके शिल्पों में परिप्रेक्ष्य न होते हुए भी उनका अपना परिप्रेक्ष्य दृष्टिगोचर होता है, जिसको कलाकार अपनी कल्पना व अनुभव के द्वारा सृजित करता है। मोलेला की कला का रुप सरलतम तथा लोक कला पर आधारित होता है, जिसमें आकृतियों को अत्यधिक सरल रुप में द्विआयामी प्रभाव लिए हुए अधिक उभार एवं गोलाई के साथ दर्शाने का प्रयास किया जाता है, इसके साथ ही

पाँच बहनों (स्वागत के प्रतीक रुप में) को भी निर्मित किया जाता है। (Fig. No.4)

Fig. No. 4 - Combination of Many Gods in One Plaque made by Jamnalal Kumhar

Source- https://www.dsource.in/gallery/molela

दुर्गा :–

दुर्गा देवी को आमतौर पर घोड़े या शेर पर सवार हाथों में त्रिशूल एवं डमरु लिए हुए दर्शाया गया है। देवी दुर्गा में कई बाधाओं को दूर करने की, अच्छी फसल को पुनः स्थापित करने की एवं शरीर को स्वस्थ बनाये रखने की अपार शक्ति होती है। देवी व उसके वाहन के स्वरुप सिंह दोनों को ही रौद्र भाव के साथ सृजित किया जाता है। (Fig. No.5)

Fig. No.5 - Godess Durga made by Jamnalal Kumhar

Source - https://artsandculture.google.com/asset/votive-palque-of-durga/gHb4JL42RRJ9Q

निष्कर्ष :–

मोलेला की मृण्मय शिल्प कला अन्य मृण्मय शिल्पकलाओं से पूर्णतः भिन्न है, जो कि आधुनिक युग में भी अपना अस्तित्व बनाये हुए है। इसके अन्तर्गत मृण्मय से निर्मित फलकों को मुख्य रूप से सृजित किया जाता है, जो कि अन्दर से खोखले हाते हैं। मालेला के मृण्मय फलको की इस अनोखी तकनीक ने आज इस शिल्पकला को भारत में ही नहीं अपितु विश्वभर में सर्वोच्च स्थान दिलाया है। इन फलकों की अनोखी विशेषता है कि यह द्विआयामी होते हैं, परन्तु अधिक उभार के साथ निर्मित करने के कारण यह त्रिआयामी प्रभाव का आभास कराते हैं। साथ ही यह फलक अन्दर से खोखले होने के कारण वजन रहित होते हैं।

प्राचीन समय में विभिन्न जनजातियाँ अपनी धार्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु तथा पूजा आराधना के लिए इन मृण्मय फलकों को खरीदने मोलेला गाँव आते थे, परन्तु वर्तमान समय में इन मृण्मय फलकों का प्रयोग घरों, होटलों व संग्रहालयों आदि स्थानों में सजावट हेतु किया जाता है तथा साथ ही इन मृण्मय फलकों व मृण्मय वस्तुओं का निर्माण देश–विदेशों में भेजने हेतु भी किया जाता है।

मोलेला कला की लोकप्रियता को देखते हुए भारत सरकार ने मोलेला के कलाकार को राष्ट्रीय पुरस्कार एवं विशेष सम्मानीय पुरस्कार पद्मश्री जैसे पदक से विभूषित किया है, जिनमें कलाकार मोहनलाल का नाम उल्लेखनीय है। इन्हें सन् 1984 ई. में स्टेट अवार्ड, सन् 1988 ई. में मास्टर क्राफ्टमैन नेशनल अवार्ड, सन् 1991 ई. में कलाश्री अवार्ड, सन् 1997 ई. में राज रतन अवार्ड, सन् 2003 में शिल्प गुरू अवार्ड तथा सन् 2012 में पदमश्री पदक से सम्मानित किया गया है। (Fig. No.6)

Fig. No.6- Mohanlal Chaturbhuj Kumhar receiving the Padma Shri for Molela Teraacotta Craftsmanship in 2012

Source- https://30stades.com/2021/08/08/molela-rajasthans-terracotta-plaque-art-bhil-mina-tribals-clay/

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. जयसिंह, नीरज–1989, राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
2. विजयवर्गीय, रामगोपाल–1953, राजस्थानी चित्रकला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
3. अग्रवाल, श्याम बिहारी– 1996,भारतीय चित्रकला का इतिहास (प्राचीन), रुप शिल्प प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. गर्ग, प्रेम प्रकाश–1956, मिट्टी व कुट्टी के काम, विद्या भवन सोसाइटी, राजस्थान।

Bibliography :-

1. Kala, S.C.-1993, Terracotta of North India, Agam Kala Prakashan, Delhi
2. Dhavalikar, M.K.-1977, Masterpieces of Indian Terracottas, D.B. Taraporevala Sons & Co.
3. Ganguly, O.C.-1959, Indian Terracotta Art, Rupa & Co.

Internate Websites :-

1. www.molelaterracottaart.com
2. www.rajasthanvisit.com
3. www.dailyudaipur.com
4. www.potteryindia.com

Address- Ashoka Estate Colony, near S.S Public School, Prayag Milan Watika Sewla Sarai, Agra,
Uttar Pradesh, Pin code- 282001
neelamkumariagra51@gmail.com, meenatk19@yahoo.co.in
Mob No. 8057427315

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 82-85

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श

(स्त्री स्थान : मान पर)

Dr. H. R. PUTTANNA
Associate Professor & Head of Hindi Department
St. Anne's Degree College for Women, #23, Cambridge Road, Halasuru, Bengaluru 08

शोध संक्षेप :–

भारतीय हिन्दी साहित्य में आदिकाल से लेकर आज तक नारी के प्रति दृष्टि का सच्चा लेखा–जोखा, उपन्यास, कहानी, कविता में मिलता है। इसकी एक लम्बी कहानी ही है। इस संसार में जब लिपि का आविष्कार हुआ तब से कुछ न कुछ लेखन के रूप में लोगों के या समाज के सामने प्रतिबिंबित होने लगा। शुरू में लोग इसे इतना महत्व नहीं देते थे कि वह केवल कुछ लोगों तक सीमित था। जब इस का प्रसार और प्रचार हुआ तब नए–नए चिंतक नए–नए विचारधाराओं को लेकर मनुष्य के दिल और दिमाग के अंदर घुसने लगें। उन दिनों नारी–पुरुष के शारीरिक भेद तो मानते थे परन्तु स्थान–मान में कोई अंतर नहीं था। उन दिनों से लेकर आज तक नारी एक शक्ति बनकर एक उन्नत स्थान प्राप्त की है। परंतु बाद में भारत देश में माईग्रेशन का बहुत बड़ा प्रभाव पड़ने लगा। दूर–दूर से लोग अनेक कामकाज के लिए देश विदेशों की यात्रा करने लगे। तब से इतिहास में भी उतार चढ़ाव होने लगा। कुछ मूल्य टूटे, कुछ मूल्य सुधरे, कुछ जो नहीं होना था वह होने लगे, बाद में कुछ जो सुधरना था वह नहीं सुधरे। प्रमुख रूप से नारी के प्रति जो उतार चढ़ाव हुआ वह बहुत शोचनीय रहा कि आज तक नारी मानसिक, शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विचारों में संपूर्ण स्वतंत्र जीवन प्राप्त करने में असफल रही है। स्वतंत्र पूर्व और स्वतंत्र के बाद, स्वदेशी या परदेशी परतंत्र में अगर सबसे ज्यादा तनाव भोगी है वह नारी है। इसमें सबसे बडा हाथ नारी दृष्टिकोण है। भारतीय संस्कृति, आचार विचार दृष्टि में नारी का एक मूल्य है परंतु पाश्चात्य समाज में वह केवल एक वस्तु बन गई है।

'औरत ने जनम दिया मर्दों को, मर्दों ने उसे बाजार दिया
जब भी चाहा मसला, कुचला, जब भी चाहा दुतकार दिया',
'मर्दों ने बनाई जो रस्में, उनको हक का फार्मान कहा
औरत के जिंदा जलने को कुर्बानी और बलिदान कहा,
इस्मत (स्त्री इज्जत–सतीत्व) के बदले रोटी दी और उसको भी एहसान कहा'।[1]

दोस्तों, मैंने कहीं पढ़ा था कि 'पुरुष एक मनुष्य है परंतु स्त्री एक देह है, एक मशीन है, एक ब्रांड है।' आप सब जानते होंगे, एक टी.वी. चौनल जो एम. टी. वी. नाम से बहुत प्रसिद्ध है।' जब भी किसी चौनल की

रेटिंग गिरने लगती है वह अचानक सुहाना सेक्स, गरम पोर्न की ओर दौड़ लगाने लगता है। अमेरिका का सांस्कृतिक औजार सेक्स ही है।'[2] कितना गिरा हुआ काम। ठीक है मानेंगे यह अमेरिका की संस्कृति है। परंतु भारत को क्या हुआ। अमेरिका की संस्कृति को दिखाते–दिखाते हमारी संस्कृति को क्यों बदल रहे हैं। परिणाम हम सब के सामने है कि अगर कोई स्त्री या स्त्री देह या स्त्री का गिरा हुआ व्यक्तित्व का प्रदर्शन मीडिया में नहीं हुआ तो वह चैनल की स्थिति भीख मांगने की जैसी हो जाती है और उसका निदेशक और निर्माता को आत्महत्या कर लेना पड़ता है।

यह वर्तमान भारत की मीडिया की स्थिति है। कारण गिरी हुई संकृति को प्रोत्साहित करना और नई पीढ़ी को बुरे रास्ते पर ले जाना। मां का कसम! अगर कोई बेटी, बहन, मां या कोई अच्छी लड़कियों के साथ बाजार जाते या और कहीं बाहर जाते हैं तो डर लगता है कि छोटे से लेकर बड़े उम्र तक के पुरुष वर्ग उस स्त्री को ऊपर से नीचे तक खाने के जैसे देखते रहते हैं। दिल पर हाथ रखके बोल दीजिए यह झूठ है? इंटरनेट/मोबाइल के जरिए स्त्री देह की उत्तेजित छवियां बच्चे–बच्चे तक को बिगाड़ रहा है। इस प्रकार की स्थिति में क्या हमारी घर की लड़की बच सकती है?' देहाती (नगरीय) शक्तिशाली वर्ग जो जमींदार, महाजन, थानेदार, तहसीलदार, पटवारी, हवलदार, फोरेस्ट रेंजर, विकास अधिकारी, वन या शराब ठेकेदार, आदि सीमांत समाजों की औरत पर अपना पुश्तैनी हक समझते ही हैं। आजादी के (75 वर्ष) बावजूद, सामंती और औपनिवेशिक मानसिकता हिंदुस्तान में फैली हुई है। इसी मानसिकता से लैस होकर शासन करते हैं सरकारी प्रतिनिधि।'[3] शुरू में ही स्पष्ट किया गया है कि भारतीय स्त्रियों के सामने खड़ी बड़ी बाधा बहुत प्राचीनता का है।

पवित्र हिन्दू धर्म के ग्रंथ–रामायण और महाभारत में भी स्त्रियों की इसी तरह की शोचनीय स्थिति पर ही प्रकाश डाला है। सीता, द्रौपदी, कुंती, गांधारी, मंडोदरी, शूर्पनखा आदि अनेक पात्र आज भी बहुत प्रभावित करते हैं परंतु पाश्चात्य संस्कृति के बाद इन सभी पात्रों को पाश्चत्य का रूप दिया गया परंतु आज भी सब की घर घर की कहानी रामायण है कुछ महाभारत है, कहने के लिए केवल समय, पात्र और वेषभूषण बदला है बाकी सब और भी ज्यादा ही है।

अगर स्त्री और उसकी आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक स्थिति–गति के बारे में प्रकाश डालेंगे तो वहां पर भी बहुत शोचनीय स्थिति दिखाई देती है। आर्थिक परावलम्बन स्त्री आत्म विश्वास को आगे बढ़ने नहीं देता। कुछ घटनाओं में अगर वह आर्थिक रूप से सदृढ़ भी है तो भी वहां घर का मालिक पुरुष उन पैसों पर अपना अधिकार चलाता रहता है। पुरूष बराबरी अधिकतर–वेतन केवल सरकारी नौकरियों में दिखाई देता है। 100% महिलाओं में 30% महिला सरकारी नौकरी करती रहती है तो बाकि 70% की महिलाओं स्थिति आज भी गिरी हुई है। ग्रामीण क्षेत्रों को छोड़िए नगरीय क्षेत्रों में भी स्त्री वेतन समस्या है। ऊपर से घर के मालिक का। इस प्रकार स्त्री आर्थिक स्थिति में संपूर्ण रूप से गिरी हुई है।

दूसरी ओर सामाज के आचार–विचार, संप्रदाय आदि स्त्री को आगे बढ़ने नहीं देती। सरल शब्दों में कहा गया तो वह पुरुष समाज के कारण। कभी–कभी स्त्री को देह मानकर और कभी–कभी स्त्री को देवी कहकर, शारिरिक और मानसिक रूप से उस पर अत्याचार किया जा रहा है। कहीं पढ़ा था, 'घर में बुर्का, बाहर बिकिनी. ..' कैसा राक्षस 'सैको' मनःस्थिति की सोच। घर में रहेगी धर्म–कर्म, संप्रदाय, संस्कृति, आचार–विचार, देवी, मां, बहन, पत्नी आदि बड़े– बड़े शब्दों के प्रयोग से भावना मूर्ख (सेंटीमेंट्स फूल्स) कर देते हैं। वही स्त्री बाहर मिलती

है उसे बिकिनी में, आनन्द और मौज मस्ती की वस्तु के रूप में देखते हैं। इसका स्पष्ट उत्तर यही है कि यह सब सदियों पुरानी परंपरा है जो स्त्री को केवल, केवल पुरुष की सुख सुविधा के लिए ही बनाया गया है। स्त्री का कोई अपना अस्तित्व नहीं है। वह पुरूषों की कठपुतली है जो उनके इशारे पर नाच रही है। भारतीय राजनीतिक बातों बोलना है तो स्त्री के सभी अधिकर संविधान के अंदर है अगर बचकर कोई बाहर आ जाते हैं तो बहुत बड़े भाग्यशाली बन जाती है वह भी पुरूषों की बातों के अनुसार। कारण यह समाज 'पितृसत्तात्मक समाज' है। यहां घर या समाज का मालिक पुरुष ही होते हैं।

'अंधकार भरी गुफाओं में खोजने का
उनका अपना फलसफा
जैसे हर मुद्दे पर आत्ममंथन के बाद
उतर आतीं धरती पे बंधी, सधी
जिंदगी को वापस पाने का स्वप्न लिए
लड़कियां और लड़कियां
सूरज की तरफ आंख किए।'(4)

आज का समय ही आत्ममंथन का समय है कि हर जगह पर स्त्री डर–डर के जी रही है। अन्धकार में डूब गई है। अगर कोई स्त्री सुन्दरता का वर्णन करेगा 'श्रृंगारपरक रचना'के बजाए 'यौन वर्णन' में आ जाता है। आज कला और साहित्य के नाम शील और अश्लील का अंतर ही गायब हो गई है। हर जगह पर केवल पूँजीवाद बड़े से बड़े पैमाने पर काम कर रहा है। अश्लील सामग्री का कारोबार संचालित करता है। निदेशक, निर्माता, प्रकाशक, विक्रेता, कहानीकार, गाना आदि के लिए अश्लीलता सोने की खान बन गई है। आप बताइए कि लड़कियाँ किस गुफा में जा के बैठेगी?

बेटे–बेटी के बीच का भेदभाव आज का नहीं हैं। सदियों से यह चलकर आया है और कुछ लोग तो इसे पारंपरिक दृष्टि से देखते हैं। बेटों की पूजा होती है और बेटियों की भ्रूण हत्या। पुत्र को तो पैदा होते ही पूरे अधिकार दिए जाते हैं और पुत्री का पैदा होते ही सारे के सारे नियम लागू हो जाते हैं। बेटा स्वतंत्र होकर, बेटी बंधन में रहकर।

"गत वर्षों में परिवार के भीतर–बाहर यौन–हिंसा के आंकड़ों का आंतक लगातार बढ़ रहा है। परिवार के बाहर हिंसा, लूट, दमन, शोषण और उत्पीड़न से बचने के लिए मध्य वर्गीय स्त्री परिवार या विवाह संस्था की 'घरेलु गुलामी' स्वीकारती है। लेकिन परिवार में भी हिंसा, भ्रूण हत्या, हत्या, आत्महत्या, दहेज–हत्या, बलात्कार, यौन शोषण और उत्पीडन कम नहीं। अजीब दुष्चक्र है। इसीलिए यह प्रायः घर चोदने पर विवश होती है या कर दी जाती है। घरेलु गुलामी से मुक्ति की तलाश में निकली औरत के पास जीवनयापन के लिए श्रम है या शरीर। निम्न वर्ग की स्त्रीयों के लिए तो मेहनत मजदूरी करना आर्थिक विवशता है ही। वेतन या मजदूरी तक पुरुष के बराबर नहीं मिलाती, ऊपर से यौन शोषण अलग। भ्रूण हत्या से सती का तक, आधे अधूरे कानून और उनकी भी साड़ी व्याख्याएं पुरुष हितों को पोषिता करती हुई। कौन सुनता मानता है अदालती आदेश और विधि आयोग के संशोधन सुझाव? संविधान की समीक्षा करेंगे जो संभव ही नहीं।"(5)

यह सब देखने बाद मुझे कवयित्री सविता सिंह की कविता का शीर्षक प्रभावित करता है कि, "मैं किसकी

औरत हूँ, कौन है मेरा परमेश्वर?"

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-

1. साहिर लुधियानवी, स्त्री : मुक्ति का सपना, अथिति संपादक – अरविंद जैन और लीलाधर मंडलोई, संपादक/सहायक संपादक – प्रो. कमला प्रसाद और राजेंद्र शर्मा, पृष्ठ संख्या 23
2. सुधीश पचौरी (सहारा 22 फरवरी), मीडिया और स्त्री देह : कुछ बातें – लीलधर मंडलोई, स्त्री –मुक्ति का सपना, पृष्ट संख्या 25, वाणी प्रकाशन।
3. चंद दारुण यादें – रामशरण जोशी, 'स्त्री – मुक्ति का सपना', अथिति संपादक – अरविंद जैन और लीलाधर मंडलोई, संपादक/सहायक संपादक – प्रो. कमला प्रसाद और राजेंद्र शर्मा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 40 (ब्राकेट में लिखे दोनों शब्दों को समय के अनुसार बदला गया है)
4. सूरज की तरफ आँख किए (उदय सहाय) पृष्ठ संख्या 283 : मुक्ति का सपना, अथिति संपादक – अरविंद जैन और लीलाधर मंडलोई, संपादक/सहायक संपादक – प्रो. कमला प्रसाद और राजेंद्र शर्मा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
5. स्त्री मुक्ति का सपना अतिथि संपादक : अरविंद जैन, सम्पादक/सहायक सम्पादक : प्रो. कमला प्रसाद और राजेंद्र शर्मा, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।

Phone No: 9901511260

E-mail id: puttannahr@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 86-88

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नक्सलवाद के नाम पर आदिवासियों की सरकारी हत्या

डॉ० ममता कुमारी बाड़ा
हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

हमारी भारतीय सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत ऐसी मान्यता बस गयी है कि नक्सलवाद हिंसक अपराधियों का एक गिरोह है, जो अपने निहित स्वार्थ साधन के लिए निर्दोषों की हत्याएँ, लूटपाट के द्वारा समाज में अशांति फैलाता है, परन्तु ठीक इसके विपरीत दूसरे विचारकों के अनुसार, नक्सलवाद एक राजनीतिक विचारधारा है, जो मार्क्सवाद, लेनिनवाद और माओ–त्से–तुंग सिद्धांत से संचालित और अनुशासित है। चूंकि पश्चिम बंगाल के नक्सवादी जिले में हुए आदिवासी किसानों के सशस्त्र विद्रोह से इसकी बुनियाद अनुप्रमाणित है, इसलिए इस विचारधारा को माननेवाले नक्सलवादी कहे जाने लगे। नक्सलवाद को समस्या मानने से पहले हमें यह विचार कर लेना चाहिए कि आखिर किस वजह से नक्सलवाद समस्या बनी हैं, या साजिश के तहत निर्दोष आदिवासियों को नक्सली बनाया जाता है। नक्सलवाद पर गौर करें तो इसके उत्स में कॉर्पोरेट घरानों की लूट ही दिखाई देती है। यह समस्या वहाँ पर पनपता है, जहाँ गरीबी, निरक्षरता, आर्थिक समानता, भूमि का असमान स्वामित्व और सरकारी शोषण हो या कहे कि जानबूझकर ऐसी स्थितियाँ बनायी जाती है ताकि वे हमेशा शोषित ही रहे।

एक तरफ सरकारी योजनाएँ विकास के प्रयास आदि से वंचित आदिवासियों का कसूर सिर्फ इतना होता है कि वह अपनी भूख मिटाने, अधिकार, न्याय पाने के लिए सरकार और उसके तंत्र की तरफ आस भरी नजरों से देखता है तो दूसरी ओर वही सरकारी तंत्र इन अव्यवस्थाओं से मुक्ति दिलाने के सपने दिखाकर नक्सलवादी तंत्र जनसमर्थन के रूप में अपने सत्ता प्राप्ति के अभियान में एक साधन के रूप में उनका उपयोग कर रहा है। वास्तव में नक्सलवाद सरकारी तंत्र की उपेक्षात्मक रवैये का परिणाम है। पहले तो इनकी जल, जंगल, जमीन और आदिवासी स्त्रियों की आबरू लूटो और जब वे अपने ऊपर हो रहे इन अत्याचारों का विरोध करें तो उन्हें नक्सली कहकर गोली मार दो – ''गश्ती दल का घात लगाकर हमला। हमले का नेतृत्व परमेश्वर सिंह पाहन कर रहा थाा। दुलमी बांध परियोजना का विरोध करते वह नक्सली संगठनों के करीब आ गया था। पाहन के साथ दो अन्य कुख्यात नक्सली भी जवाबी फायरिंग में मारे गये।''[1]

अमेरिका में एक कहावत है–'द ओनली रेड इण्डियन इज ए डेड रेड इण्डियन' यानि की 'मरा हुआ आदिवासी अच्छा आदिवासी है। यहाँ पर संसाधनों पर कब्जा की बात है, सम्पदा आदिवासियों को अपने लिए चाहिए। सरकार उस पर कब्जा कर रही है। आदिवासी यही सवाल पूछ रहें कि पचास–साठ सालों बाद वे कहाँ जायेंगे। जब जल, जंगल, जमीन आदिवासियों की तो नोटों से खरीदने वाले पूंजीपतियों की यह कैसे हो गई? नक्सल के नाम पर सरकार जंगलों में पुलिसिया राज कायम कर रही है। आदिवासी जंगल में कदम रखता और

जंगल कानून की किसी मनगढ़ंत धारा के हवाले से उसे धमकाने का दौर शुरू हो जाता। बकरी, मुर्गी या देह की आग बुझाने को लकड़ी उगाही का यह अजीबोगरीब कुत्सित तरीका है। आदिवासी शोषण की ये कहानियाँ अन्तहीन है। जब जिसे जहाँ मौका मिलता आदिवासी को लूटने का नया तरीका ईजाद कर लेता। यह सब इसलिए हो रहा है ताकि कॉर्पोरेट कंपनियाँ आसानी से प्राकृतिक संसाधनों को लूट सके। नक्सलियों के नाम पर निर्दोष आदिवासियों को देश का खतरा बताकर गोली से छलने कर देना आज से नहीं बल्कि बहुत पहले से चला आ रहा है। और अब तो हद ही हो रही है। आदिवासियों की तासीर को समझे बिना सरकार इन पर नक्सलवादी होने का लेबल चस्पा किए दे रही है। आदिवासी तो यह भी नहीं जानते कि आतिथ्य और सुरक्षा के एवज में उन्हें कैसी कीमत चुकानी पड़ रही है – ''आठ करोड़ आदिवासियों की हिमायत का दम भरनेवाली सरकार को तो अब सिर्फ उद्योगपतियों का हित दिखता है। बड़े–बड़े कारखाने दिख रहे हैं। वह उदारवाद के रास्ते पर चलकर सिर्फ टाटा, बिड़ला और बागड़बंधु के बारे में सोचती है। एकदम अमेरिकी अंदाज में। अमेरिका ने भी तो उद्योगीकरण के लिए अपने एबओरिजिनल को इसी तरह खदेड़ा। क्या भारत सरकार का भी ऐसा ही इरादा है।''[2]

सरकार नक्सलवाद को देश के लिए बड़ा खतरा मानती है, लेकिन वह इनके जड़ में जाना नहीं चाहती है न ही नक्सलवादियों की सामाजिक, आर्थिक, पृष्ठभूमि का अध्यन करना चाहती है। सरकारी तंत्र के नकारा और भ्रष्ट होने से विकास के लिए आवंटित धनराशि या योजनाएँ राजनीतिक भ्रष्टाचार की नालियों में बह रहा है। जब भी आदिवासी अपनी अस्मिता की अपनी पहचान की बात करते हैं तो उसे विकास विरोधी छवि में डाल दिया जाता है। यह सारा खेल विकास से जुड़ा हुआ है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि खनिज, जल, जंगल, जमीन आदि की दृष्टि से देश का सबसे सम्पन्न इलाका है। लेकिन यहाँ पर बसने वाली आदिवासी सबसे गरीब। ऐसा क्यों है कि इतने साधन, सम्पन्न वाले हिस्सों में रहने वाले आदिवासी ही सबसे गरीब है। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन सम्पन्न इलाकों को हम बस मिलकर लूटते हैं। यहाँ होने वाले विकास का लाभ उन्हें मिलना चाहिए पर नहीं मिला। इसके विपरीत हमारी नीतियाँ कुछ ऐसी है कि इनकी जमीनें छीन ली जाती हैं। जंगलों को काटकर उनकी जीविका के साधन नष्ट कर दिए जाते हैं। इससे एक बात तो यह पता चलती है कि आदिवासियों का एक प्रमुख मुद्दा जमीन और जंगल का है। भारत के वन कानून आदिवासी–विरोधी है। आजादी के बाद भी इनकी हालत नहीं बदली, बल्कि राष्ट्रीय उद्यानों, अभ्यारण्यों और टाइगर रिजर्वों के रूप में उनकी जिन्दगी पर नये हमले हुए हैं। वैश्वीकरण के दौर में निर्यातोन्मुखी विकास और राष्ट्रीय आय की ऊँची वृद्धि दर के चक्कर में देशी–विदेशी कम्पनियों और सरकार के सहयोग से इन इलाकों के जल, जंगल, जमीन पर हमले का एक नया दौर शुरू हुआ है और आदिवासी जब इसका विरोध करें तो उन्हें नक्सली कहकर रास्ते से हटा देती है– ''सरकार के पास नक्सलियों और आदिवासियों की पहचान का कोई फार्मूला है ही नहीं। जब अर्द्धसैनिक दलों के दस्ते गोली चलाते हैं तो वह कैसे गारंटी देगी कि मरनेवाला आदिवासी नहीं नक्सली है। संविधान में आदिवासी को विशेष दर्जा देने वाली सरकार को इस बात से जरा भी मतलब नहीं कि ऑपरेशन ग्रीन हंट सिर्फ आदिवासी की जान ले रहा है। गोली जिसे भी लगे वह आदिवासी है।''[3]

4 नवम्बर 2009 को भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने यह स्वीकार किया कि बंदूकों के साये में आदिवासी क्षेत्रों का विकास संभव नहीं है। उन्होंने यह भी माना कि आधुनिक आर्थिक विकास की

प्रक्रिया से आदिवासियों को जोड़ने में व्यवस्था असफल रही है। आज नक्सलवाद से निपटने के लिए या कहें कि निर्दोष आदिवासियों की प्रमाणिक हत्या के लिए सलवा जुडूम, ऑपरेशन ग्रीन हंट, ऑपरेशन कोबरा, ऑपरेशन हॉक जैसी योजनाएँ चला रही है। चिदम्बर को यह कहने की सुविधा है कि यह युद्ध सरकार ने नक्सलियों पर नहीं बल्कि नक्सलियों ने सरकार पर थोपा है। कुछ ऐसा ही दावा छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री रमन सिंह करते हैं–''सलवा जुडूम आन्दोलन जंगल की आग जैसा है। इस आग से जो भी लड़ने की कोशिश करेगा, झुलस कर मर जायेगा। जंगल की आग तभी बुझती है जब बारिश होत है और उसके बाद ही नयी कोपलें फूटती है।''[4]

मनमोहन सिंह या वर्तमान सरकार भले ही इन्हें सबसे बड़े खतरे के रूप में चिह्नित करे, लेकिन हकीकत यह है कि नक्सली बनते नहीं बनाये जाते हैं। और इसे बंदूक के बल पर रोकने की कोशिश व्यर्थ है। सरकार कहती है कि वह बंदूक लेकर नहीं विकास लेकर जा रही है, लेकिन वह यह नहीं समझती कि उसका विकास आदिवासी को उजाड़ता है। यह सरकार की नाकामी है कि उसका एक बड़ा हिस्सा उससे नाखुश है। अगर कायदे से हिसाब लगायें तो कुछ बड़े शहरों में सारी दौलत और सारी तरक्की सिमटी हुई है बाकि और बड़ा भारत अलग–अलग असंतोष के अंधरे में जी रहा है और अपनी बगावत के लिए गोलियाँ खा रहा है। सब कुछ खोने का और नक्सलियों की मौत मरने के डर से चेराबण्डा राजू पूछते हैं :–

''पर्वतों को तोड़कर, पत्थरों को फोड़कर,
बनायी योजनाएँ ईंट, लहू से जोड़कर
श्रम किसका है? धन किसका है?
जंगलों को काटकर, धरती को जोतकर
फसलें उगायीं स्वेद लहरों से खींचकर
भात किसका है? माड़ किसका है?''[5]

संदर्भ सूची :–

1. गायब होता देश – रणेन्द्र, पेंगुइन बुक्स इंडिया, प्रथम संस्करण–2014, पृष्ठ संख्या–38
2. माओवादी या आदिवासी – सं0 महाश्वेता देवी, अरूण कुमार त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण–2011, पृष्ठ संख्या–23
3. वही –पृष्ठ संख्या–22
4. बुलडोजर और महुआ के फूल–सं. राकेश कल्शियान, पानोस दक्षिण एशिया, जनवरी–2008, पृष्ठ संख्या–54
5. माओवादी या आदिवासी–सं0 महाश्वेता देवी, अरूण कुमार त्रिपाठी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण–2011, पृष्ठ संख्या–86

डॉ० ममता कुमारी बाड़ा
पता – C/o कमल कुमार कुजूर, चिरौंदी देवी मण्डप के पीछे, बोड़ेया रोड, राँची, झारखण्ड – 834006
मो.नं.– 8797551074
smamtakhalkho@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 89-91

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

कुँडुख़ साहित्य में झारखण्ड की संस्कृति

चाँदनी कुमारी

शोधार्थी, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

सारांश :-

कुँडुख़ साहित्य में झारखण्ड की संस्कृति दर्पण की तरह साफ–साफ झलकता है लेखक, कवि, अपनी रचना में यहाँ की संस्कृति को बखूबी वर्णन किए है कल से आज/वर्त्तमान समय में बदलते परिवेश को अपनी लेखनी में शामिल किए है। कथा साहित्य में जैसे– कहानी, उपन्यास, नाट्य और पद्य साहित्य में कविता लेखन में विशेष रूप से विषय वस्तु यहाँ की संस्कृति को चुना है।

कुँडुख़ झारखण्ड की उराँव जनजातियों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है। यह भाषा झारखण्ड के राँची, लोहरदगा, गुमला, लातेहार, गढ़वा, सिमडेगा, आदि जिलों में बोली जाती है। इसके अलावा मध्य प्रदेश, उड़ीसा, बिहार, पश्चिम बंगाल, असम, दिल्ली आदि राज्यों से लेकर विदेशों तक फैला हुआ जैसे– नेपाल, भूटान, बांग्लादेश आदि देशों में क्षेत्र विशेष के अनुसार बोली जाती है। झारखण्ड में मुख्यतः नौ जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा की पठन–पाटन प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक होती है, यह ये भाषाएँ रोजगार परक भाषा बन चुकी है। ये भाषाएँ हैं– संताली, कुँडुख़, मुण्डा, नागपुरी, हो, पंचपरगनिया, खोरठा, खड़िया और कुरमाली। अतः छोटे–बड़े सभी समूहों की अपनी भाषिक, विशेषता होती है। झारखण्ड बहुभाषी प्रदेश है यहाँ की सम्पर्क भाषा हिन्दी व नागपुरी है। झारखण्ड प्रदेश में विभिन्न, जाति के लोग निवास करते है। सभी का सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, सम्पर्क एवं आदान–प्रदान को अपने गोद में बसाएँ हुए झारखण्ड की अपनी बहुलवादी, समन्वयवादी, ही यहाँ की संस्कृति है। संस्कृति जीवन का संस्कार है। हमारी मनोवृत्तियों का परिष्कार है जिसे हम स्वयं बनाते हैं और इसी से नियंत्रित होते है। किसी संस्कृति को समझे बिना किसी क्षेत्र विशेष, भाषा विशेष की संस्कृति का विश्लेषण कर पाना संभव हीं होता है। संस्कृति के दो पक्ष होते हैं– (1) भौतिक (2) अनुभुतिक। भौतिक संस्कृति में रहन–सहन, खान–पान, वेश–भूषा जो दृश्यमान है। परन्तु संस्कृति सिर्फ बाह्य न होकर अन्तर्मन में बसा हुआ है। जो भावनाओं से ओत–प्रोत है। यह सामाजिक एवं सामूहिक होती है। इसके साथ–साथ अदृश्य कुछ मुख्य बिन्दुएँ है जो संस्कृति के वास्तविकता को बतलाते है। जैसे– आस्था, विश्वास संस्कार, आदर्श आदि। इसे ही अनुभूतिक पक्ष कहा जाना चाहिए। यहाँ की संस्कृति का सहज दर्शन हमें यहाँ के समाज में रहने वाले लोगों के रहन–सहन, वेश–भूषा, परब–त्योहार, रीति–रिवाज आदि में अन्तनिहित क्रिया–कलापों में हो जाते है। इसके अतिरिक्त यहाँ की और भी विभिन्न सामाजिक पहलुओं में जैसे यहाँ की सहिया, अखरा–जतरा, मदईत, धांगर, उधरा–पँईचा आदि संस्कृति विद्यमान है। जो कि झारखण्ड की सामाजिक समरसता में चार–चाँद लगा देते है। समरस्ता यहाँ की आदि संस्कृति रही है।

सहिया झारखण्ड का अनोखा रिश्ता है। जो जाति, धर्म, सम्प्रदाय, समाज, वर्ग, भाषा, संस्कृति, देश, परदेश, लिंग नहीं देखता, देखता है तो मात्र दो हृदयों की अंतरगता। यह बनाए न बनता और मिटाए न मिटता ऐसा विराट संबंध है सहिया। यह रिश्ता कही भी, कभी भी किसी से भी जोड़ा जा सकता है।

''झारखण्ड की संस्कृति में यहाँ की दो पुराने समुदाय के विरल संयोग से सामाजिक, समरसता सामुहिकता, संगीतप्रियता, आडम्बरहीनता, शोषण विहीन व्यवस्था, सहयोगिता और समानता की धारा प्रवाहित हुई। वह अनेक झंझटों, से गुजरने के बाद भी समाप्त नहीं हुई बल्कि पहले से कहीं अधिक और पुष्ट हुई। इसका जीवन्त उदाहरण है– ''सहिया बइन करेक मदइत एहे हामर रीत।'' अर्थात् सहिया स + हिया, स का अर्थ समान, साथ–साथ और हिया का अर्थ हृदय, अर्थात कहा जा सकता है। समान हृदय के रिश्ता बनकर मदईत/मदद करना ही हमारी (सहिया) की रीत/संस्कृति है।''[1]

मदइत संस्कृति– पैसा से अधिक प्रेम का महत्त्व रहा है। इसका सबसे सुदर उदाहरण– मदईत। मदईत मदद से कहीं और आगे है। मद्द अर्थात् सहयोग लेकिन मदईत अर्थात् सहयोग और स्नेह भी है। सामुहिकता, साथ में मिलकर निर्धारित काम को करना। इसी प्रकार यहाँ धांगर–गोमके का रिश्ता बहुत ही अनूठा होता है। यह आधुनिक समय के मालिक व नौकर वाली संस्कृति नहीं है। यहाँ के धांगर–धांगरिन आधुनिक समय वाले नौकर की तरह ही सेवा का ही काम करते थे परन्तु वे घर के सदस्य की हैसियत से रहते थे। मालिक व नौकर की प्रथा नहीं थी। यह संस्कृति धीरे–धीरे लुप्त हो रही है। अखड़ा–जतरा को झारखण्डी संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। यह एक ऐसा सामूहिक सांस्कृति स्थल है जिसका प्रयोग यहाँ के लोग पूजा करने, सामूहिक बैठक, सांस्कृतिक कार्यक्रम, शाम में एक साथ नाच–गान करने के लिए होता है।

''झारखण्डी समाज की ऐसी परम्परा है जो मुसीबत को टालता : पँइचा है। मुसीबत में तन से, मन से, धन या साधन से लोग पँइचा देते है। कौन जाने किसके जीवन में कब, कहाँ, कैसे चीज की जरूरत हो जाए। यह पँइचा की परम्परा झारखण्डी समाज को सदा से जोड़ कर पूरे समाज को रखा है।''[2]

कुँडुख़ लोक साहित्य में झारखण्ड की संस्कृति समाहित है। किसी जाति, क्षेत्र या समूह का मूल वगैर वहाँ के लोक संस्कृति को जाने पूर्ण नहीं होता है। शिष्ट साहित्य का आधार स्तंभ भी लोक साहित्य होता है।

''लोक साहित्य के अन्तर्गत, लोकगीत, लोक कथा, लोकगाथा, लोकनाट्य, कहावत, मुहावरा, पहेली जो हमें सैकड़ों वर्षों पुरानी परम्परा से पीढ़ी–दर–पीढ़ी प्राप्त होता है। वे अमूल्य साहित्य के साथ–साथ लोक संस्कृति के वाहक है। लोकगीत के अलावे लोककथा लोक साहित्य का गद्य भाग होता है जिसमें विस्तार से संस्कृति के दर्शन होते है। इसमें संस्कृति के अनछुए अनजाने तत्व होते हैं चूँकि कथा मात्र मनोरंजन का माध्यम नहीं होता, इसमें समाज के सभी पहलुओं का सोच–विचार का, खान–पान, रहन–सहन का आस्था विश्वास आदि जैसे संस्कृति के सभी पहलु होते हैं। सैकड़ों लोक गीत, लोककथा, लोकगाथा, कहावत, पहेली, मुहावरा आज भी लोगों के कण्ठाहार बने हुए है।''[3] कुँडुख़ लोकगीतों का वृहत संग्रह ''लील खोरआ खेखेल'' पुस्तक दो भाग में, संग्रहित है इसके संग्रहणकर्त्ता, W.G. Archar एवं धर्मदास लकड़ा है। इसमें 2660 गीत है[4], जो साहित्य के लिए धरोहर है। इसी तरह लोक कथा, कहावत, कुँडुख़ पहेली मुहावरा आदि का भी संग्रह, संकलन, प्रकाशन कुँडुख़ साहित्य में व्यापक स्तर पर हुआ है।

साहित्य समाज का दर्पण है। किसी भी पुराने समय की संस्कृति और वर्त्तमान समय की संस्कृति, को

जानने के लिए शिष्ट साहित्य का अध्ययन नितांत आवश्यक है। साहित्य की दो विधाएँ होती है गद्य एवं पद्य। कुँडुख़ साहित्य में पद्य विधा में महाकाव्य, खण्डकाव्य, स्फूट, काव्य आदि की रचनाएँ मिलती है। इन काव्यों का होना कुँडुख़ साहित्य के विकास के लिए अति आवश्यक और सौभाग्य भी है। कुँडुख़ साहित्य में खण्ड काव्यों की रचनाएँ अत्यधिक है जिसमें झारखण्ड की संस्कृति पूर्णतः दिखाई देती है। इस साहित्य में महाकाव्य की संख्या थोड़ी कम है।

शिष्ट साहित्य में कविता का स्थान प्रमुख होता है कवि अपनी मनोभाव, समाजिक परिघटना अच्छे बुरे सभी पहलुओं को अपनी कविता का विषय वस्तु बनाता है। जो जीवन्त संस्कृति के द्योतक है। इनके सूक्ष्म विश्लेषण से समाज के संस्कृति के सभी पहुलओं को जाना जा सकता है।

कुँडुख़ गद्य साहित्य के कथा साहित्य अर्थात् उपन्यास विद्या कहानी बहुतायत में मिलते हैं। उपन्यास ऐसी विधाएँ है जिसमें संस्कृति को बहुत ही नजदीक से दिखाया गया है। कहा जाए तो संस्कृति को ही उपन्यास में दर्शाया गया है। कुँडुख़ साहित्य में कालजयी रचना ''सिन्दरी'' जिसके लेखक है। डॉ. नारायण भगत है। यह झारखण्डी संस्कृति का जीवन्त दस्तावेज है। इसे उपन्यास में संस्कृति के बदलते स्वरूप का सुन्दर वर्णन किया गया है। वर्तमान में हो रहे सामाजिक परिघटना को अपनी लेखनी में शामिल किए है उनकी इन्हीं सरल शैली ही उपन्यास की विशेषता को दिखती है। इस तरह नाट्य विधा में पियुस लकड़ा द्वारा रचित नाटक ''अयंग जिया'' कुँडुख़ साहित्य में है जो साहित्य जगत को मर्माहित कर देती है। ''अपंग जिया'' का अर्थ है माँ का हृदय जो पेट में पल रही बेटी से संघर्ष शुरू होता है और अन्त तक यह संघर्ष चलता रहता है। माँ अपना अस्तित्व को बचाने के लिए अपना प्राण तक न्योछावर कर देती है। समाज में हो रहे कुरीतियों का साफ–साफ वर्णन मिलता है। श्री जस्टीन एक्का द्वारा रचित विधा ''नम्हे एड़पा'' समाज के लिए उदाहरण है। ''नम्है (एड़पा)'' का अर्थ हमारा घर है इस कहानी के अंदर घर की सारी परिस्थितियों का वर्णन वर्त्तमान परिवेश के आधार दिखाया गया है। कुँडुख़ कवि एवं साहित्यकार, कहानीकार, नाटककार समाज की संस्कृति को बहुत ही अच्छे ढंग से साहित्य विधा में पिरोया है जो समाज के लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज है। कुँडुख कवियों में दवले कुजर का नाम अग्रणी है, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 नारायण उराँव, महली लिवन्स तिर्की, डॉ0 निर्मल मिंज झरिया, प्रो0 इन्द्रजीत उराँव, डॉ0 फ्रांसिस्का कुजूर आदि है।

झारखण्ड में कुँडुख़ भाषा का पठन–पाठन प्रारंभ करने का श्रेय डॉ0 निर्मल मिंज 'झरिया' को जाता है इनके सुविचार से कुँडुख़ साहित्य का विकास क्रम शुरू हो पाया।

संदर्भ :–

1. डॉ0 गिरिधारी राम गौंझू, झारखण्ड की सांस्कृति विरासत, पृष्ठ सं0– 19
2. डॉ0 गिरधारी राम गौंझू, झारखण्ड की सांस्कृतिक विरासत, पृष्ठ सं0– 47
3. डॉ0 भुवनेश्वर अनुज, नागपुरी लोक साहित्य, पृष्ठ संख्या– 09
4. W.G. Archer और धर्मदास लकड़ा, लील खोरआ खेख़ेल।

चाँदनी कुमारी, पति कृष्णा उराँव, सुभाष नगर, ईटकी रोड, बजरा, (नियर बजरा पेट्रोल पम्प)
पोस्ट–हेहल,, थाना–सुखदेवनगर, जिला – राँची। पिन – 834005, झारखण्ड।
मो0 नं0 – 9934441268, 7909023009, E-Mail ID – chandnikumari01586@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 92-97

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

संजीव के उपन्यासों में आदिवासी समाज का चित्रण

श्वेता जायसवाल
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची।

आदिवासी समाज का जीवन प्रकृति के काफी नजदीक होता है। वे प्रायः जल, जंगल और पहाड़ों के बीच रहते हैं। उनकी दिनचर्या प्रकृति के माध्यम से ही आगे बढ़ती है। वे प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग करके अपना जीवन जीते हैं। ''कठिनाई भरे जीवन को जीने के अभ्यस्त ये आदिवासी विपरीत परिस्थितियों में भी जीना जानते हैं क्योंकि ये मूलतः उत्सव–धर्मी एवं आनन्दवादी सोच के लोग होते हैं। इनका रहन–सहन दिखावे से कोसों दूर होता है। अभावग्रस्त होने के बावजूद ये हीन–भावना से ग्रसित नहीं होते।'' आदिवासी लोग अपने जीवन को बहुत ही सहज ढंग से जीने के अभ्यस्त होते हैं। इनके जीवन में भाग–दौड़ और आपा–धापी के लिए कोई स्थान नहीं होता। फिर भी ये सभ्यता की दौड़ में पिछड़ गए हैं। अनपढ़, अज्ञानता और अंध विश्वास के कारण ये लोग अभावग्रस्त जीवन जीने को विवश हैं। मूलभूत सुख–सुविधाओं से वंचित होने के कारण यह समाज गरीबी के कारण गंभीर बीमारियों से ग्रस्त है।

इनकी वर्तमान स्थिति आर्थिक अभावों के कारण दयनीय है। वे अपना जीवनयापन करने के लिए खदानों, कारखानों एवं शहरों में आकर मजदूरी करते हैं। अपने हक और अधिकारों की लड़ाई लड़ते हैं क्योंकि वे जिस भूमि पर रहते हैं उसके नीचे अपार खनिज सम्पदा भरी पड़ी है लेकिन उस पर सरकार, ठेकेदार, पूंजीपति वर्ग अपना अधिकार जमा कर उन्हें उनकी ही जमीन से बेदखल कर देते हैं। ''आदिवासियों का कहना है कि धरती भगवान ने बनाई। हम उनके बेटे हैं तो बीच में सरकार कहाँ से आ गयी .....। फिर संविधान के 19वें अनुच्छेद में आदिवासियों के अधिकार की चर्चा की गई है। क्यों होता है उसका उल्लंघन?''[1]

संजीव के अधिकांश उपन्यास आदिवासी जीवन पर केन्द्रित हैं। जिसमें उन्होंने आदिवासी समाज के जीवन संघर्ष, उनकी स्थितियों और परिवर्तन की चुनौतियों का चित्रण किया है। उनके उपन्यासों में संथाल, थारू, उराँव, कोबला जनजाति का यथार्थ चित्रण किया गया है। जिसमें छोटानागपुर, बंगाल, बिहार, झारखण्ड, उड़ीसा और महाराष्ट्र के आदिवासी समुदायों का दर्द दिखाई देता है। उनके उपन्यासों का फलक खदान के सबसे निचले सतह से लेकर आज के पूंजीपतियों द्वारा उजाड़े गए गाँवों तक फैला हुआ है। 'सावधान! नीचे आग है' उपन्यास में संजीव ने कोयला खदान में काम करने वाले मजदूरों की यथार्थ स्थिति, उनका नरकीय जीवन और संघर्ष करते हुए मृत्यु को प्राप्त होना दिखाया है।

यह उपन्यास एक वास्तविक घटना पर आधारित है जहाँ अनेक मजदूर खदान के भीतर दब कर मर जाते हैं और उनके लाशों तक को पहचानना मुश्किल हो जाता है। खदान में काम करने वाले मजदूरों के जीवन में

पूरा अंधेरा ही अंधेरा है। न वे अपने बच्चों को ठीक से पढ़ा–लिखा पाते हैं और न ही वे अपनी जिंदगी भी ठीक से गुजार पाते हैं। संजीव ने धूल और धुआँ से के शहर झरिया का अत्यंत कलात्मक बिम्ब प्रस्तुत किया है – ''आग की नदी दामोदर और धुआँसे का शहर झरिया! कुहासा नहीं, धुआँसा!, धूल, धुआँ और कुहासा – इनसे मिलकर एक शब्द बनता है धुआँसा। इस धुआँसे के जाल में उलझ तारों की झिलमिलाहट लिए जल रही हैं, दूर–दूर की बत्तियाँ? दोनों ओर खण्ड–खण्ड जुड़ते–टूटते हार्ड कोक प्लांट की दैत्यामुखी ज्वाला की कतारें।''[2] अन्य जगहों की अपेक्षा इन क्षेत्रों में काफी असमानता, शोषण, गरीबी, बेरोजगारी और लाचारी दिखाई देती है। यहाँ जैसा मजदूरों का शोषण होता है शायद ही अन्य जगहों पर ऐसा कहीं होता हो। न जाने कितनी धूल, गर्दे, कालख अपनी साँसों से फाँकते ये मजदूर यहाँ जिंदा हैं इसका अंदाजा लगाना मुश्किल है।

यहाँ हर गरीब जीवन को जी नहीं रहा है बल्कि उसे किसी तरह ढो रहा है या घसीट रहा है। ''अपना–अपना घर और अपने–अपने रिश्तों–नातों का छोड़कर जो मजदूर यहाँ के लिए एक बार निकल आते हैं तो जिंदगी भर के लिए यहीं के हो जाते हैं। दुबारा फुर्सत ही नहीं मिलती कि वे अपने वतन को लौट सके। झरिया जैसे कोयलांचल में कार्य करने वाले मजदूरों की तो यहाँ कई–कई पीढ़ियाँ गुजर गयी हैं। लेकिन जिन गरीब आदिवासियों की जमीनों को छीन लिया गया उनका दर्द भी यहां दिखाई देता है। आदिवासी समुदाय को पूंजीपति वर्ग तरह–तरह के लालच देकर उनकी जमीनों को ले लेते हैं फिर बाद में जब वे उसका विरोध करते हैं तो उन्हें पुलिस प्रशासन द्वारा मखाया जाता है या उन्हें नक्सली घोषित करवा दिया जाता है।''[3] जिन आदिवासियों की जमीनों पर ये खदानें स्थापित हैं उन्हें आज कोई लाभ नहीं मिलता। पूंजीपति वर्ग धोखे से उनकी जमीनें कब्जा कर लेते हैं। और उन्हें विस्थापित कर दिया जाता है। वे अपनी ही जमीनों से कोयला चोरी करने के लिए विवश हैं। मुआवजे के नाम पर भी उन्हें पर्याप्त पैसा नहीं मिल पाता है। विकास के नाम पर सबसे ज्यादा नुकसान आदिवासियों को ही उठाना पड़ता है। इस उपन्यास में संजीव ने आदिवासी समाज के नरकीय जीवन स्थितियों का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

'धार' उपन्यास में संथाल परगना और छोटानागपुर में रहने वाले संथाल आदिवासियों के जीवन का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में संथाल परगना के आदिवासियों की स्थिति उनके शोषण, संघर्ष और जीवन की चुनौतियों को और उसके साथ ही साथ अपने मन में पाल रहे सपनों को भी पूरी वास्तविकता के साथ उजागर करने की कोशिश की गई है। यहाँ संथाल आदिवासी दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष करते हैं। तेजाब की फैक्टरी लगने से खेती बाड़ी तथा कुआँ–तालाब सभी खराब हो गए हैं। संथालों के खेत बंजर हो गए हैं। तेजाब की फैक्टरी से निकलने वाले धुँए से वहाँ के लोग कई बिमारियों से ग्रसित हैं। मैना इस उपन्यास की ऐसी सशक्त पात्र हैं जो खुद अपने अधिकारों के लिए लड़ती है और अपने समाज को भी बचाने का भरपुर प्रयास करती है। इसके लिए उसे अनेक यंत्रणाएँ सहनी पड़ती है।

वह कहती है – ''हमको याद आता, जब हम बच्चा था, खेती से चार–छौ महीना का काम चल जाता, आज एक दिन का भी नई। खेत खतार, पेड़ रूख, कुआँ, तालाब हम और हमारा बच्चा तक आज तेजाब में गल रहा है। भूख में जल रहा है।''[4] कितनी विकट परिस्थिति है। पूँजीपति लोग आदिवासियों का शोषण कर अपना घर भर रहे हैं और वे लोग एक वक्त की रोटी नहीं जुटा पा रहे हैं। यह हमारी कैसी सामाजिक व्यवस्था है? शायद यही वजह है कि रईस और ज्यादा रईस होते जाते हैं और गरीब और भी गरीब। पूंजीपतियों और ठेकेदारों

के द्वारा आदिवासियों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है। वे अपनी जीविका चलाने के लिए सरकारी खदानों से अवैध कोयला निकालते हैं। गहरी खदानों में जमीन धँस जाने के कारण कई बार आदिवासी मजदूर जिंदा दफन होते हैं। उनकी न कोई खबर लेता है न उन्हें न्याय ही मिल पाता है। उल्टा उनसे रिश्वत ली जाती है। जब वे इनका विरोध करते हैं तो उन्हें जेल में डाल दिया जाता है। उन्हें प्रताड़ित किया जाता है। मैना अपने आदिवासी समाज को भयानक भेड़िया रूपी महेन्द्र बाबू की कुटिलता और शोषण से सजग करती है। और कड़ी मेहनत के बाद मैना अन्य लोगों की मदद से जन खदान का निर्माण करती है। लेकिन महेन्द्रबाबू की कुटिलता तथा पुलिस, भ्रष्ट अधिकारियों के कारण जन खदान को नष्ट कर दिया जाता है। कई आदिवासी तथा मैना बुलडोजर के नीचे शहीद हो जाते हैं। किन्तु उसकी मृत्यु चेतना और संघर्ष की समाप्ति नहीं है, ''वह मरी नहीं, मर सकती ही नहीं, जहाँ–जहाँ अँधेरे में जुगनू आप को चमकता दिखलाई दे, ईमानदारी से पुकारिये, मैना! कान साधे रहिए बहुत गहराई से कोई जवाब आएगा। हूँ.....।[5]'' मैना आदिवासी परम्परा में उपजी सूरज की किरण है, उसमें साहस, स्वाभिमान, सेवाभाव, अन्याय के खिलाफ संघर्ष, विद्रोह, राष्ट्रीय भावना, आत्मबल आदि विशेषताएँ हैं। मैना की मृत्यु नहीं होती क्रांति की ज्योति का निर्माण होता है।

'पाँव तले की दूब' उपन्यास में झारखण्ड के छोटानागपुर के आदिवासियों के जीवन संघर्ष को दिखलाया गया है। उपन्यास में गैर आदिवासी खुदीप्त द्वारा आदिवासियों की तमाम समस्याओं, जड़ताओं को दूर किया जाता है। ''उपन्यास का शीर्षक सार्थक है क्योंकि पाँव तले की दूब को व्यक्ति अनजाने, सहजता से कुचल देता है। इसमें उसे अपराध बोध भी नहीं होता यही स्थिति आदिवासियों की है जो सदैव शोषित रहे हैं। बढ़ते हुए औद्योगीकरण के कारण आदिवासियों को विस्थापन की पीड़ा झेलनी पड़ती है।''[6] झारखण्ड का निर्माण 15 नवम्बर 2000 को हुआ। परन्तु उसके निर्माण के लिए जो आन्दोलन हुए उसमें आदिवासियों की अहम भूमिका रही है। उपन्यास में तीन आयामों को चित्रित किया गया है। वे हैं – 'झारखण्ड आन्दोलन, औद्योगीकरण की समस्या और आदिवासी जीवन। औद्योगीकरण के नाम पर आदिवासियों का विकास तो नहीं हुआ परन्तु वे विस्थापित होने के लिए बाध्य अवश्य हुए। उपन्यास में पंच पहाड़, बाघमुंडी और डोकरी अंचल के आदिवासियों के जीवन स्थिति और शोषण को दिखाया गया है। जहाँ वे अज्ञानता, अंधविश्वास और आरण्यप्रिय संस्कृति के कारण दयनीय एवं अभावग्रस्त जिंदगी जीते हैं। वे सदियों से शोषण को मूक होकर सहते आ रहे हैं। परन्तु अब नई पीढ़ी शोषण का विरोध करती है।

फिलिप के शब्दों में – ''यह धरती सोना उगलती है और उस सोने की धरती की हम कंगाल संतान हैं। प्रदेश की दो–तिहाई आय हमसे होती है और हमारी हालत न तन पर साबूत कपड़ा, न पेट में भरपेट भात, दवा–दारू, पढ़ाई–लिखाई की बात छोड़ दीजिए। बहुत पैसा दिया सरकार ने सरकार घोषणाएँ करती नहीं थकती लेकिन हम कंगाल के कंगाल।''[7] सरकार एक ओर आदिवासियों के विकास की योजनाएँ बनाती है तो दूसरी तरफ व्यवस्था और पूंजीपति उस विकास योजनाओं की निधि को खुलेआम लूट लेते हैं। सुदीप्त इन आदिवासियों के लिए लड़ते–लड़ते सत्ता, पूंजीतंत्र और माफिया जैसे विरोधी तत्वों से आहत होकर घोर निराशा में आत्महत्या कर लेता है। उसके कार्यों को आगे बढ़ाने में माझी हड़ाम की बेटी जो पहले विकलांग थी सुदीप्त द्वारा अस्पताल भेजने से ठीक हो जाती है। वह आदिवासी समाज तथा उनकी समस्याओं को समाप्त करने का संकल्प लेती है। सुदीप्त आदिवासियों को उनके अधिकार दिलाने के लिए पूरी तरह से आदिवासियों के प्रति

समर्पित है। वह उन्हें सभी सुख–सुविधाएँ उपलब्ध करवाने के लिए अनेक कार्य करता है। वह उनके अधिकारों, उनके हक और उनके अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष करता है। लेकिन घोर निराशा से ग्रसित होकर आत्महत्या कर लेता है। सुदीप्त ने आदिवासी गांव के लिए जो विकास किए थे, जो क्रांति के बीज बोए थे, वे जन्म ले रहे थे। उसको निराश होने की जरूरत ही नहीं थी। आज आदिवासियों की मूल समस्या जल, जंगल और जमीन को लेकर है। जिसके वे दावेदार हैं, उनको किस तरह वहाँ से विस्थापित किया जा रहा है यह उपन्यास गहरे अर्थों में इन समस्याओं को उठाता है। पूंजीपति वर्ग अपने कारखानों के नाम पर उनकी जमीनी हक को, मालिकाना हक को छीन रहे हैं। सुदीप्त इन आदिवासियों को सचेत करता है ताकि इनका शोषण न हो सके। इस उपन्यास में संजीव ने आदिवासियों के सामाजिक स्थिति उनके संघर्ष को यथार्थ रूप से प्रस्तुत किया है।

'जंगल जहाँ शुरू होता है' उपन्यास में संजीव ने बिहार के चम्पारण जिले के थारू आदिवासियों के जीवन संघर्ष और डाकू समस्या का यथार्थ अंकन किया है। थारू आदिवासियों के जीवन संघर्ष पर केन्द्रित इस उपन्यास में शोषण की कई परतें बिछी हुई हैं जो लोकतंत्र को पीछे की ओर धकेल रही हैं। भारत में आजादी का मतलब सिर्फ उच्च और अभिजात्य वर्ग की आजादी से होता है। जबकि वंचित वर्ग की आजादी का कोई मतलब नहीं होता है उनके लिए आजादी का मतलब गुलामी ही होता है। उपन्यास मुख्यतः डाकू समस्या पर केन्द्रित होते हुए भी पूर्णतः उसी पर केन्द्रित नहीं है। बल्कि उसके कई आयाम हैं जो लोकतंत्र की भ्रष्ट नीतियों और सभी को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक न्याय के साथ ही ठीक–ठीक सही भू–प्रबंधन का न होना है, उपन्यास उन सभी तथ्यों को उजागर करता है। इस तरह यह उपन्यास आदिवासी जनजीवन, डाकू समस्या और लोकतंत्र कि अराजगता पर आधारित है।

''उपन्यास में आदिवासियों का प्राकृतिक संघर्ष, जमींदारों द्वारा किया जा रहा शोषण, बेगारी, औरतों का शारीरिक शोषण आदि विषयों पर टिप्पणियाँ की गई हैं। नेताओं के द्वारा डाकुओं की मदद से बूथ कैप्चरिंग, पुलिस के द्वारा आदिवासी डाकू उन्मूलन आदि विषयों के साथ थारू, धाँगड़, दुसाध, नोनिया आदि आदिवासियों का जीवन–चित्रण उपन्यास में चित्रित है।''[8] उपन्यास में यह बात भी स्पष्ट होती है कि कोई व्यक्ति डकैत या नक्सली बनता है तो उसके लिए आसपास का वातावरण जिम्मेवार होता है। काली जैसा युवक यदि डाकू बनता है तो उसके पिछे वहाँ की जालिम व्यवस्था जिम्मेवार है। काली के परिवार के साथ किए गए अत्याचार और भाभी के साथ हुए बलात्कार उसे एक दुर्दांत डाकू बना देता है। उसके भाई बिसराम को पुलिस मार–पीट कर उसका फर्जी एनकाउंटर करते हैं। काली की व्यथा का चित्रण करते हुए लेखक ने लिखा है – ''मेरी भतीजी को साँप ने डंसा, भैया को आप और पांडे जी ने मिलकर डंसा, पत्नी को किसी औरत को बेचने वालों ने ..... अब सारा कुछ छीनकर नियति ने मुझे सोलह आने डाकू बनने को ठेल दिया है। मेरे अंदर का जंगल घना होता जा रहा है।..... वहीं कभी मुलाकात होगी।''[9] काली की व्यथा से डी.एस.पी. कुमार भी काफी दुःखी होता है। और उसे आत्मसमर्पण करने की सलाह देता है। उसे 'दिमाग को कैसे नियंत्रित करें' और 'भागो नहीं, दुनिया को बदलो' किताबें देता है। लेकिन काली व्यवस्था की सभी चालाकियों को समझता है।

वह जानता है कि समर्पण के नाम पर उसका एनकाउण्टर कर दिया जाएगा। थारू आदिवासी डाकू और पुलिस दोनों के बीच पिसते हैं। यदि वे डाकुओं का साथ देते हैं तो पुलिस परेशान करती है और यदि पुलिस का साथ देते हैं तो डाकू परेशान करते हैं। आदिवासियों के साथ होने वाली ज्यादतियाँ, अत्याचार, शोषण और

अन्याय की अंतिम अवस्था आ जाती है तब वे डाकू या नक्सली बनते हैं। ''प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक भी प्रतीकात्मक है। जंगल जहाँ शुरू होता है वहीं से थारू जनजाति की समस्याएँ, संघर्ष, उत्पीड़न का प्रारम्भ हो जाता है। यहाँ जंगल मात्र पर्यावरणीय या प्राकृतिक संदर्भ न होकर थारू जनजाति की व्यथा–कथा को उजागर करता है।''[10] यहाँ की जनजातियाँ अभावों व अशिक्षा के कारण अंधविश्वास की शिकार हैं। जिसके कारण उनके अंदर अंधविश्वास जादू–टोना, भूत–प्रेत, ओझा–गुनी के प्रति गहरा विश्वास बना रहता है। अज्ञानता के कारण ये लोग गंभीर से गंभीर बीमारी को भी झाड़–फूँक से ठीक करने में ज्यादा विश्वास करते हैं, अस्पताल नहीं जाते। जिसके कारण उनकी मौत हो जाती है। उनके लिए ओझा आसानी से मिल जाते हैं मगर अस्पताल ढूँढने से भी नहीं मिलता। संजीव ने अपने उपन्यासों के माध्यम से अनपढ़ होने के कारण अंधविश्वासों पर जीने वाले आदिवासी जनजातियों को शिक्षित करके उसे सुधारने की प्रेरणा देते हैं। ''उनके उपन्यास एक साथ आदिवासियों के कई प्रश्नों को हमारे सामने उपस्थित करता है। जिसमें आदिवासियों का अभावग्रस्त जीवन, पिछड़ापन, नारी शोषण, निर्धनता, आर्थिक शोषण, व्यवस्था की विसंगतियाँ, सांस्कृतिक संकट, अज्ञान, अंधश्रद्धा, असुरक्षा आदि का सशक्त अंकन संजीव ने अपने कथा साहित्य में किया है, जो केवल मात्र खानापूर्ति न होकर आदिवासी समस्याओं को समाप्त करने की एक रचनात्मक संघर्ष की शुरूआत है।''[11]

'फाँस' उपन्यास में महाराष्ट्र के 'कोबला' जनजाति का वर्णन है। जो प्राचीन समय से जंगलों में रहते आए हैं और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति जंगलों से प्राप्त पेड़–पौधे, फल–फूल और औषधि आदि से करते हैं। लेकिन सत्ताधारी लोग, नेता और सरकार विकास के नाम पर इन्हें इनके निवास स्थान से हटा देती है। उन्हें जंगलों से भगाया जाता है। जिसके कारण बीमारी, गरीबी, भूखमरी आदि अनेक समस्याओं से कोबला जनजाति को जूझना पड़ता है। उनकी जमीनें हड़पकर उनको रहने के लिए जमीन का एक टुकड़ा भी नहीं दिया जाता है। शिक्षा के अभाव के कारण उनका और उनके बच्चों के जीवन में कोई बदलाव नहीं आता। उनकी अज्ञानता के कारण ही लोग उनका शोषण करते हैं उन्हें नुकसान पहुँचाते हैं। ''कोबला आदिवासी लोग भी अंध–विश्वास को मानते हैं। जादू–टोना, व्रत, पूजा–अर्चना, बलि आदि में अधिक विश्वास करते हैं। इतना ही नहीं उनके भगवान ईश्वर नहीं होते हैं। वह लोग तो नदी, पर्वत, वृक्ष आदि को ही भगवान मानकर पूजा–अर्चना करते हैं। जब कोई व्यक्ति बीमार पड़ जाता है तो सही इलाज भी नहीं करवाते हैं। ओझा के पास जाकर तरह–तरह की विधियाँ करवाते हैं। कभी–कभी तो उनके अंधविश्वास के कारण व्यक्ति मर भी जाता है। यह सब अशिक्षा के कारण ही होता है।''[12] विकास के नाम पर आदिवासियों को छला जाता है। उनसे उनके जंगल और जमीनें छीनी जाती है।

उपन्यास में शकुन अपनी दोनों बेटियों के साथ–साथ गाँव की अन्य महिलाओं के साथ जंगल में महुआ चुनने जाती है तो सिपाही खुदाबक्श महिलाओं को धमकाता है। शकुन कहती है – ''इसी जंगल से हमारे बाप दादे भी बाँस, मावा, बहेर्रा और सखुआ के बीज लाते रहे। बहेर्रा, केन और तेन्दू के पत्ते भी और अब जंगल सरकारी हो गया। अब हम छू भी नहीं सकते।''[13] आदिवासी जंगलों की रक्षा करना चाहते हैं। किन्तु सरकार और उनके दलाल जंगलों को काट कर बड़ी–बड़ी कम्पनियाँ बनाना चाहते हैं। सरकार द्वारा बड़ी–बड़ी योजनाएँ शुरू की जाती है और उसका लाभ पूँजीपति लोग उठाते हैं। आदिवासियों को फूटी–कौड़ी भी नहीं मिलती। आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं होने के कारण ये लोग कर्ज लेने के लिए विवश हैं। कर्ज न चुका पाने की स्थिति

में ये लोग विवश होकर आत्महत्या कर लेते हैं। इतना कुछ सहने के बाद अब 'कोबला' आदिवासियों के भीतर क्रांति की ज्वाला भड़कने लगी है। वे अब अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने लगे हैं। उनके जीवन में थोड़ बदलाव आने लगा है। इसका कारण है संघर्ष। संघर्ष के बिना सफलता पाना मुश्किल है। 'कोबला' जनजाति अब अज्ञानता से ऊपर उठकर अपने अधिकारों की माँग कर रहे हैं और उन्हें मिल भी रहे हैं। अपने रास्ते में आने वाली रूकावटों का डटकर सामना भी कर रहे हैं। वे संगठित होकर आने वाली हर समस्याओं का सामना करने के लिए तैयार हो गये हैं।

संदर्भ-सूची :-

1 डॉ0 राणावत उषा कीर्ति, डॉ0 दुबे शीतला प्रसाद, डॉ0 पाण्डेय सतीश, आदिवासी केन्द्रित हिन्दी साहित्य, अतुल प्रकाशन, कानपुर, 2017, पृष्ठ सं0–16

2 संजीव, सावधान! नीचे आग है, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2018, पृष्ठ सं0–14

3 यादव रवीन्द्र कुमार, आदिवासी स्वर और संजीव के उपन्यास, शुभम पब्लिकेशन्स् कानपुर, पृष्ठ सं0–61

4 संजीव, धार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ठ सं0–56

5 वही, पृष्ठ सं0–209

6 डॉ0 चौधरी प्रमोद, आदिवासी केन्द्रित हिन्दी उपन्यास, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2017, पृष्ठ सं0–38

7 संजीव, पाँव तले की दूब, वागदेवी प्रकाशन, बीकानेर, 2005, पृष्ठ सं0–112

8 सं0 डॉ0 देवरे शिवाजी, डॉ0 खराटे मधु, समकालीन हिन्दी, उपन्यासों में आदिवासी विमर्श, विद्या प्रकाशन, कानपुर 2016, पृष्ठ सं0–193

9 संजीव, जंगल जहाँ शुरू होता है, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृष्ठ सं0–193

10 सं0 डॉ0 चंदेल उपेन्द्र सिंह, डॉ0 मेहरा दिलीप, आदिवासी संवेदना और हिन्दी उपन्यास, उत्कर्ष पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर, 2017, पृष्ठ सं0–84

11 सं0 डॉ0 कुरे रमेश सम्भाजी, डॉ0 शिंदे मालती धोंडोपंत, शिंदे प्राचार्य प्रवीण अनंत राय, आदिवासी साहित्य : विविध आयाम, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2013, पृष्ठ सं0–248

12 बारैया किरण सिंह, संजीव कृत फाँस उपन्यास में किसान एवं आदिवासी संघर्ष, विकास प्रकाशन, कानपुर 2019, पृष्ठ सं0–67

13 संजीव, फाँस, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2015, पृष्ठ सं0–20

ई–मेल : shwetajayswal1986@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 98-105

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

श्री जगन्नाथ : सेवा एवं सेवक

डॉ. प्रताप केशरी होता

रेंज स्कूल, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, चांदीपुर, बालेश्वर, ओड़िशा – 756025

जगन्नाथ : परिचय, व्युत्पत्ति एवं मान्यता :–

हिंदुओं के चार धामों में श्री जगन्नाथ धाम, पुरी एक पवित्र एवं मुख्य धाम व क्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठित है, जहाँ श्री जगन्नाथ जी की पूजा होती है। केवल जगन्नाथ ही नहीं परंतु श्री बलदेव एवं सुभद्रा जी के साथ श्री सुदर्शन की आराधना ही अन्य सभी पवित्र तीर्थस्थलों से इसकी स्वतंत्रता एवं आस्था की व्यापकता को प्रमाणित करती है। जगन्नाथ जी की पूजा केवल हिंदू ही नहीं करते बल्कि वे बौद्ध के द्वारा भी ओड़िशा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, झाड़खंड, असम, मणिपुर एवं त्रिपुरा तथा बांग्लादेश में पूज्य एवं आराध्य हैं। विभिन्न मतवादों से ऐसा माना जाता है कि प्रायरू हजार वर्षों से साल के ग्यारह महीने हिंदू देवता विष्णु तथा छद्मवेश में एक महीना भगवान बुद्ध के रूप में जगन्नाथ जी की पूजा होती आ रही है। जाति, धर्म, वर्ण– इन सबसे ऊपर समस्त जन–मानस के आराध्य हैं प्रभु जगन्नाथ।

भक्तों के समूह में वे 'जगत्' (संसार) के साथ 'नाथ' (स्वामी) के रूप में प्रतिष्ठित है। जगन्नाथ शब्द का अर्थ 'जगति' (सर्वोच्च स्थान, रत्नवेदी) पर अधिष्ठित या विराजमान 'नाथ' (स्वामी/मालिक/प्रभु) मानना समीचीन है। परंतु भक्ति, भावना से, हृदयोच्छ्वास से उद्वेलित आस्था और विश्वास होती है। इसलिए ओड़िआ भक्तों में कई नामों से उन्हें संबोधित करने की रीति चल पड़ी है। जैसेजगा, 'जगबंधु' (जगत का बंधु), 'कालिआ साआंत' (काले वर्ण के प्रभु) 'दारु ब्रह्म', 'दारु देवता' (दारु अर्थात् काष्ठ व लकड़ी से निर्मित देवता), 'चका आखि'/'चका नयन' (गोल आँखों के कारण) आदि। 'जगन्नाथ' बुद्ध के लिए संबोधित एक तिब्बतीय शब्द है।[1] कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि 'जगन्नाथ' शब्द की व्युपत्ति आदिवासी शब्द 'जगनेलो' (लकड़ी से निर्मित देवता) से हुई है जिसका प्रयोग शबरों द्वारा पूजित जगन्नाथ के लिए हुआ करता था।[2]

परंतु इन सबसे ऊपर दारुब्रह्म पुरुषोत्तम के अनगिनत नामों से श्री जगन्नाथ नाम का स्वातंर्त्य तथा वैशिष्ट्य वर्णनातीत है। इसी नाम के स्मरण, मनन एवं उच्चारण मात्र से भाव महाभाव में रूपांतरित हो जाता है, प्राण उद्वेलित हो उठता है, हृदय की व्यकुलता अदम्य हो जाती है और उनके दर्शन के लिए आँखें बेचैन हो जाती हैं। इसे प्रभु की महिमा कही जाएगी....जाती रही है।

श्री जगन्नाथ के सेवक एवं नीति :–

प्रभु जगन्नाथ सोलह कलाओं (निवृत्ति, प्रतिष्ठा, विद्या, शांति, इंधिका, दीपिका, रेचिका, मोचिका, परा, सूक्ष्म, सूक्ष्म अमृत, ज्ञान, ज्ञान अमृत, अप्यायनी, व्यापिनी, व्योपरूपा) के स्वामी हैं, पतित पावन हैं। शायद इसलिए

उन्होंने अपने हर भक्तों को उनकी सेवा करने का अधिकार प्रदान किया है।

महाप्रभु श्री जगन्नाथ के मंदिर निर्माण के पश्चात् चतुर्धा मूर्ति की पूजा नीति तथा पर्व त्योहार आदि के लिए राजा गजपति के साथ–साथ सेवक तथा सेवायतों एवं उनकी रीति–नीति के बारे में 'मादलापांजि' में स्पष्ट निर्देश है। किंतु देश के आजाद होने के पश्चात् श्रीमंदिर (जगन्नाथ मंदिर) सरकार द्वारा परिचालित हुआ एवं सरकार के 1954 ई. के अधिनियम के अनुसार सारी रीति–नीति का अनुपालन होता आया है। फिर भी तमाम शास्त्र, पुराणादि और मादलापंजि में वर्णित प्रभु जगन्नाथ के मंदिर निर्माण एवं विभिन्न राजाओं द्वारा परिचालित विधिओं के अनुसार सेवक एवं सेवायतों के कर्तव्यों एवं दायित्वों का निर्वहन होता आ रहा है।

जगन्नाथ धाम, पुरी के राजा गजपति राजा के नाम से विख्यात हैं। और गजपति राजा ही प्रभु जगन्नाथ जी के प्रधान सेवक के रूप में वंशानुक्रमिक अपनी भूमिका निर्वहन करते आ रहे हैं। चंदन यात्रा, स्नान यात्रा, दोल यात्रा एवं प्रसिद्ध रथ यात्रा जैसे अवसरों पर इनका विशेष योगदान होता है। साथ ही नवकलेवर जो उन्नीस वर्षों में एक बार आयोजित होता है, में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राजा गजपति के साथ–साथ प्रभु जगन्नाथ जी की सेवा एवं रीति–नीति की आपूर्ति के लिए कुल 118 प्रकार के सेवक हैं। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से उनके नाम एवं कार्य–सूची वर्णक्रमानुसार दी जा रही है।

ध्यातव्य यह है कि जगन्नाथ मंदिर की सेवा–नीति के लिए कुछ स्वतंत्र शब्दों का प्रचलन है, जो जगन्नाथ–संस्कृति का परिचायक है। उनकी (शब्दों की) मौलिकता एवं स्वतंत्रता बनाए रखने के लिए उनका केवल मात्र लिप्यातंरण किया जा रहा है।

1. **अखंड मेकाप** :– मुख्य मंदिर व श्री मंदिर या गुंडिचा मंदिर को प्रभु के अवस्थान के समय अखंड बइठा (दीप) एवं दीए जलाकर आलोकित करने वाले सेवक।
2. **अणसर सुध (शुद्र) सुआर एवं सुध (शुद्र) सुआर** :– वल्लभ भोग तथा अन्य पूजा विधि की व्यवस्था करना इनका दायित्व होता है। ये शूद्र होने के कारण साल भर मंदिर धोने तथा झाडू लगाने का काम करते हैं।
3. **अमालु तेली और पूर खरड़ा** :– ये सातपुरी अमावास्या में सभी प्रकार के पूरबनाते हैं।
4. **अमोणिहा छतार** :– प्रसाद (भोग) के आगे–आगे छतरी पकड़े चलते हैं।
5. **आरती बलिता (बत्ती) सेवा** :– विग्रहों की दैनिक आरती के लिए आवश्यक बत्ती संबद्ध सेवकों तक पहुँचाने का कार्य करते हैं।
6. **आस्थान प्रतिहारी** :– पूजा के उपरांत टेरा (परदा) डालने का कार्य करते हैं।
7. **ओझा महारणा** :– ये लोहार हैं। मंदिर के सभी प्रकार के लोहे का काम करते हैं।
8. **करतिया** :– रथ निर्माण के लिए लकड़ी चिरने का कार्य करते हैं।
9. **कलाबेठिआ** :– रथों को दक्षिण दिशा में घुमाते हैं एवं रथ खींचते हैं।
10. **काहालिया** :– काहाली (तूरी जैसा एक सुषीर वाद्य) बजाते हैं।
11. **कुंभार बिसोइ** :– मिट्टी के बर्तन पहुँचाते हैं। यह सेवा अभी बंद है।
12. **कोठ करण** :– तलवार एवं चाकू लिए सुरक्षा का दायित्व निर्वहन करते हैं।
13. **कोठ भोग जोगाणिआ (कोठ भोग पहुँचाने वाला)** :– ये प्रतिदिन गोदाम में गुड़, घी, प्रसाद के लिए

आवश्यक सामग्री तथा लकड़ी रसोई में पहुँचाते हैं।

14. **कोठ भोग पाणिआ :–** कोठ भोग के लिए कूए से पानी निकालकर पाकशाला में पहुँचाते हैं।
15. **कोठ सुआँसिआ :–** पर्व–त्योहारों पर चंदोआ बाँधने का कार्य करते हैं। श्री विग्रहों की जल–क्रिड़ा के लिए छामुंडिआ तैयार करते हैं।
16. **खटसेज मेकाप (खटिया या बिस्तर की सेवा) :–** जीउ की रत्नपलंग सेवा इनकी जिम्मेदारी है।
17. **खटुलि (चौपाई) सेवक :–** विभिन्न सेवा के लिए खटुलि डालते हैं।
18. **खुंटिआ :–** मंगल आरती के लिए पुष्पालकों को बुलाने का कार्य करते हैं, अवकाश के समय 'तड़प उतुरी'नीति तथा रात के 'चंदन लागि' में खंडुआ पकड़कर प्रभु के सामने खड़े होते हैं।
19. **गरा बडु :–** मंगल आरती एवं मइलम के समय पुष्पालकों को हाथ धोने के लिए पानी देते हैं।
20. **गीत गोविंद सेवा :–** चंदन लागि पर श्री जीउ के सम्मुख 'गीत गोविंद' का पाठ करते हैं। फिलहाल के यह सेवा बंद है।
21. **गोछिकार :–** ये गौरी बेंत पकड़े जय–विजय द्वार पर रहते हैं। निषेध के समय भक्तों को भीतर जाने से रोकते हैं।
22. **घटुआरि :–** आँवला तथा चंदन आदि घिसने का काम करते हैं एवं महादीप तैयार करते हैं।
23. **घंट (घड़ियाल) सेवा :–** दैनिक आरती पर घड़िआल बजाते हैं।
24. **घंटुआ :–** पर्व त्योहारों पर घड़िआल बजाते हैं।
25. **चका अणसर सेवक :–** ये वस्त्रादि दरजी से लाने का काम करतेहैं।
26. **चक्र दिहुड़िआ :–** कलाकारीपूर्ण दिहुड़ी (मशाल) जलाते हैं।
27. **चर्चाइत करण :–** सेवकों को बुलाकर रीति–नीति संपादन कराते हैं।
28. **चाउलबछा करण :–** चावल एवं मुँग बिनने का कार्य करते हैं।
29. **चाप दलेइ :–** मदनमोहन एवं रामकृष्ण की नाव खेते हैं।
30. **चाप बेहेरा और चाप दलेइ :–** चंदन यात्रा में नाव खेने का कार्य करते हैं तथा नाव की मरम्मत करते हैं।
31. **चांगड़ा मेकाप :–** देवताओं के लिए प्रतिदिन आवश्यक वस्त्र पुष्पालक तक पहुँचाने वाले सेवक।
32. **चित्रकर :–** ये शूद्र होते हैं। भिन्न–भिन्न त्योहारों के लिए पटि (परदा) पर चित्र आँकते हैं।
33. **चूनरा गरूड़ सेवक :–** मंदिर शिखर पर महादीप उठाना तथा नीलचक्र पर ध्वजा बाँधने का कार्य करते हैं।
34. **छतार सेवक :–** पर्व त्योहारों पर छता (छाता) पकड़े खड़े होते हैं ।
35. **छामु दिहुड़ि :–** दिहुड़ि (मशाल) लिए चलते हैं।
36. **जगिआ महासुआर व रोष अमिन :–** कोठ भोग प्रस्तुति की सामग्री बड्डुसुआर को देते हैं।
37. **ज्योतिष खुरि नाहाक :–** अवकाश पूजा के समय देवताओं के सम्मुख पंचांग का पाठ करते हैं।
38. **तलिछ महापात्र :–** प्रतिदिन संध्या आरती में प्रभु की आरती उतारते हैं। रात के पहुड़ के पश्चात् कलाहासट द्वार, जय–विजय द्वार को सिल करते हैं तथा मंदिर के शोधन परखने की जिम्मेदारी इनकी

है।

39. **ताटुआ :–** श्री मंदिर ताट (प्रसाद) राजमहल तक पहुँचाते हैं।
40. **तामरा बिसोइ :–** रथ निर्माण के समय ताँबे का कार्य करते हैं।
41. **तोला बडु :–** मुँह पर बाघमुँहा (पट्टी) बाँधे छेक (भोग कुड़िआ भार) लेने का कार्य करते हैं।
42. **दइता :–** रथ यात्रा, नवकलेवर एवं अणसर जैसे विशेष अवसरों पर ये कार्य संपादन करते हैं। इन्हें 'दैत्य' भी कहा जाता है। दइता विश्वावसु के वंशज हैं।
43. **दउड़ि बला :–** श्री जीउ के दैनिक व्यवहार के लिए जल जो माता विमला के कुएँ से निकाला जाता है उसके लिए आवश्यक रस्सी की व्यवस्था करते हैं।
44. **दड़उ करण :–** भंडार के हिसाब रखने के साथ–साथ समस्त रीति–नीति की रिपोर्ट रखते हैं।
45. **दत्त :–** हर रविवार को अवकाश से पहले कपड़े को कजूर से भिगोकर तीनों विग्रहों के मुँह पोंछने का कार्य संपादन करते हैं।
46. **दयणापत्री :–** दमनकोत्सव से संबंधित सेवक।
47. **दयणा मालि :–** दैनिक सेवा तथा विशेष त्योहारों के अवसर पर आवश्यक फूल, तुलसी, बेल पत्ता, दूब घास आदि पहुँचाने का कार्य करते हैं।
48. **दर्जी सेवा :–** सिलाई का कार्य करते हैं।
49. **दर्पणिआ एवं बइरखिआ :–** नीति के समय दर्पण लाते हैं एवं मंगल आरती में व्यवहृत बर्तन धोने का काम करते हैं।
50. **देउल करण :–** भंडार, चांगड़ाघर तथा सेवा हस्तांतरण का हिसाब रखते हैं।
51. **देउल पुरोहित (मंदिर के पुरोहित) :–** अक्षय तृतीया में रथ निर्माण का अनुकूल करना, श्री गुंडिचा यात्रा (रथ यात्रा) में रथों की प्रतिष्ठा, पौष पूर्णिमा में होमादि का कार्य इन्हीं से होता है।
52. **निकाप व गंधण निकाप :–** अद्रक, हिंग, जीरा, काली मीर्च आदि मसाला सामग्री प्रस्तुत करते हैं।
53. **पतर (पत्ता) बंधा :–** ताट (प्रसाद) को पत्ते से बाँधकर ताटुआ को देते हैं।
54. **पति महापात्र :–** नृसिंह जी की सेवा, जगन्नाथ जी की पहुड़ आरती जैसी दैनिक नीतियों का पालन करते हैं एवं अन्य त्योहारों पर वंदापना, चंदन सर्वांग तथा मंगलारोपण आदि कार्य करते हैं।
55. **पत्रि बडु :–** सूर्य पूजा एवं द्वारपालों के पूजा–स्थल पर पूजा सामग्री पहुँचाना इनका काम है।
56. **पनिकि (पहँसुल) पटा :–** सब्जी काटने कार्य करते हैं। यह सेवा अभी बंद है।
57. **परिच्छा/परीक्षा/राजगुरू :–** स्वत्व लिपि के अनुसार ये परिच्छा श्री मंदिर के परिचालक हैं। हर एक नीति एवं सेवकों के कार्य की देखरेख इनकी जिम्मेदारी है। किसी सेवक द्वारा हुई त्रुटियों का समाचार राजा तक पहुँचाने का काम इनका होता है।
58. **पर्व–यात्रा (त्योहार) जोगाणिआ :–** कोठ भोग के लिए आवश्यक सामग्री गोदाम से लाकर महासुआर के जिम्मे देते हैं।
59. **पाइक :–** दलेइ बेहेरा के निर्देशन से विभिन्न प्रकार के सेवकों को बुलाने का कार्य करते हैं।
60. **पाटजोषी महापात्र (छत्तीस नियोग नायक) :–** हर दिन की मंगल आरती से पहले की नीति और सेवा

के संचालन का दायित्व इन पर है। साथ ही ये भंडार के नायक व मुखिया भी हैं।

61. **पाटरा बिसोइ :–** ये पाट की रस्सी बनाने का कार्य करते हैं।
62. **पाणिआ पट :–** विमला मंदिर सन्निकट कुएँ से दिनभर के लिए आवश्यक पानी लाने का कार्य करते हैं।
63. **पालिआ मेकाप :–** प्रतिदिन द्वार खोलते समय उपस्थित होना, रात को जय–विजय द्वार पर पहरा देना तथा अखंड मेकाप के साथ–साथ बइठा (दीया) से श्री अंगों को देखना जैसे कार्य करते हैं।
64. **पुराण पंडा :–** संध्या आरती के बाद टेरा (पर्दा) गिरने से लेकर परदा उठने तक कलाहाट द्वार पर दीए जलाते हुए पुराणों का पाठ करते हैं।
65. **पुष्पालक :–** बलभद्र एवं सुभद्रा की मंगल आरती की बत्ती, अलंकार, फूल की माला मइलम (परिवर्तन) आदि कार्यों की जिम्मेदारी पुष्पालक सेवकों की होती है।
66. **पूजा पंडा :–** ये पाकशाला में हवन, सूर्य जी की पूजा, द्वारपालों की पूजा, सूबह की आरती, दोपहर तथा साँझ की आरती का संपादन करते हैं।
67. **प्रतिहारी :–** 'प्रतिहारी' शब्द का अर्थ है द्वारपाल। भिन्न–भिन्न द्वार के लिए प्रतिहारी सेवा का प्रावधान है। इन्हें भी आठ भागों में जैसे– बड़द्वार प्रतिहारी, धुकुड़ि द्वार प्रतिहारी, दक्षिण द्वार प्रतिहारी, द्वारी नायक प्रतिहारी, जय–विजयद्वार प्रतिहारी, भोग मंडप प्रतिहारी, द्वारघर प्रतिहारी तथा सिंहद्वार प्रतिहारी नामों से बाँट गया है।
68. **प्रधानि :–** विभिन्न रीति–नीति के संपादन के लिए पूजा पंडा को बुलाने का कार्य करते हैं।
69. **प्रसाद बडु :–** श्री मंदिर से महाप्रसाद लेकर श्री नअर (राजमहल) भेजते हैं।
70. **बइठि करण :–** श्री मंदिर को मिलने वाले ध्वजा तथा उपहारों का हिसाब रखते हैं।
71. **बजयंत्री (वाद्यकार) :–** दैनिक नीति तथा सेवाओं के साथ–साथ साल भर के पर्व–त्योहारों पर बाजा बजाने का कार्य करते हैं।
72. **बणिआ :–** सोने तथा रत्नजटित अलंकार बनाते हैं।
73. **बड़ पंडा (बड़ा पंडा) :–** पूजा के समय, सुबह, दोपहर एवं शाम की आरती के समय तथा अणसर पिंडि (मुंडेरे) पर चँवर सेवा करना बड़ पंडा का दायित्व होता है।
74. **बडु सुआर :–** इन्हें विभिन्न श्रेणियों में बाँटा गया है। मुख्यतः ये भोग बनाते हैं तथा उसे प्रसाद निमित्त प्रस्तुत करते हैं।
75. **बढ़ेइ (बढ़ई) सेवक :–** रथ भी बनाते हैं एवं नवकलेवर में दारु अन्वेषण करते हुए मूर्तिनिर्माण करते हैं।
76. **बाणुआ :–** पर्व त्योहारों पर पटाखे फोड़ते हैं। यह सेवा बंद है।
77. **बाहर देउलि जोगाणिआ :–** प्रतिदिन कोठ भोग की सामग्री बाहरदेउलि सुआर को प्रदान करते हैं।
78. **बाहर देउलि सुआर :–** प्रतिदिन जोगाणिआ से कोठ भोग की सामग्री लेकर लक्ष्मी जी के लिए पीठा प्रस्तुत करते हैं।
79. **बिड़िआ जोगाणिआ (पान पहुँचाने वाला) :–** दैनिक नीति तथा विशेष अवसरों पर पान पहुँचाते हैं।
80. **बिडुआ पंति बडु, पंति बडु :–** ये छेक (प्रसाद) व मथमल प्रस्तुत करते हैं एवं पंतिबडु को प्रदान करते हैं।

81. **बिरिबिटा समर्था सेवा** :– बिरि (उरद) एवं चावल पीसते हैं।

82. **बिरिबुहा सेवक** :– प्रतिदिन पीसे हुए बिरि (उरद) और चावल कोठ भोग सुआर तक पहुँचाते हैं।

83. **बेंट बिंधा पाइक** :– पर्व–नीति में सेवा प्रदान करते हैं।

84. **भंडार मेकाप** :– श्री जीउ की दैनिक सेवा के लिए स्वर्ण वस्तुएँ इनके जिम्मे पर होती हैं। ये छेरा पहँरा (रथों पर झाड़ू लगाना) के समय फूल छींटते हैं।

85. **भीतर गाआणि देवदासी** :– प्रातः आरती के समय जगमोहन पर नृत्य करती हैं। बड़ सिंहार भोग के पश्चात् गीतगोविंद का गान करती हैं। वर्तमान यह सेवा उपलब्ध नहीं है।

86. **भीतरच्छ महापात्र** :– बड़े भोर से सिंह द्वार (मुख्य द्वार) इन्हीं के आदेश से खोला जाता है एवं पतित पावन की किवाड़ खोलते हैं। सुबह मंगल आरती में शिरकत होते हैं।

87. **महाजन** :– दक्षिण घर में अवस्थित सभी देवताओं (ठाकुर) की सेवा करते हैं एवं वल्लभ भोग लगाते हैं। श्री गुंडिचा (रथ यात्रा) में लक्ष्मी (श्री देवी) एवं भू देवी को वल्लभ भोग लगाने का कार्य करते हैं।

88. **महा भाइ** :– प्रतिदिन की नीति सेवा और विशेष त्योहारों के लिए आवश्यक दूध, दही, मक्खन आदि पहुँचाते हैं।

89. **महासुआर** :– पाकशाला की तदारख करना तथा किसी बाहरी व्यक्ति को अंदर प्रवेश करने से रोकना महासुआरों का काम है।

90. **मंडणि सेवा** :– मंदिर के भीतर आयोजित होने वाले पर्व–त्योहारों के लिए चँदवा बाँधने का कार्य संभालते हैं।

91. **मादेलि** :– मादल (मृदंग) बजाते हैं।

92. **माप साइता करण व महा प्रशस्त सेवा** :– प्रसाद (भोग) सेवकों तक पहुँचाने तथा उसका संचालन का दायित्व इन पर है।

93. **माल चूल सेवा** :– जगन्नाथ के लिए फूल और तुलसी की वेणी/जूड़ा बनाते हैं। यह सेवा अभी उपलब्ध नहीं है।

94. **मुख पखाल सेवा** :– प्रतिदिन अवकाश के समय प्रभु के लिए दाँतुन, जीभी आदि पुष्पालक को देते हैं। साथ ही फूल, तुलसी, चंदन तथा दही आदि पूजा में देते हैं।

95. **मुदुलि** :– पूजा के बर्तन तथा पूजा उपकरणों का दायित्व इन पर होता है।

96. **मुद्र हस्त (मुदिरथ)** :– यह सेवक गजपति की सेवा के प्रतिनिधि का कार्य करते हैं। महाराजा की अनुपस्थिति में उनके द्वारा संपादित होने वाली प्रत्येक नीति का संपादन यही करते हैं।

97. **मुद्रा सेवक** :– महाप्रभु की 'चंदन लागि'सेवा के लिए घटुरिया से चंदन लाकर पुष्पालकों को देते हैं। वसंत पंचमी के दिन ही फाल्गुन दशमी से चतुर्दशी तक की नीतिओं के लिए संबद्ध सेवकों को गुलाल और चंदन देते हैं।

98. **मूलिआ सुआँसिआ** :– विभिन्न कर्म के लिए लकड़ी की सामग्री जैसे पीढ़ा तथा भद्रासन बढ़ई से लाते हैं।

99. **रथ डाहुक** :– रथों पर गीत गाया करते हैं।

100. **रथ भोइ** :– रथ बनाने का कार्य करते हैं।

101. **रूपकर** :– लकड़ी की मूर्ति बनाकर अपनी सेवा का संपादन करते हैं।

102. **रोष धोपखालिआ (पाकशाला धोने वाला), अंगारूआ, गोबर पाणिआ** :– ये पाकशाला धोने का कार्य करते हैं, अंगारुआ चूल्हे से राख निकालता है तथा गोबर पाणिआ गोमय और पानी छींटकर पवित्र करते हैं।

103. **रोष पाइक** :– रसोईशाला शुद्ध एवं पवित्र करने का कार्य करते हैं।

104. **लुगा धुआ (कपड़े धोना) एवं पानी कुंड सेवक** :– कपड़े धोने का कार्य तथा विमला मंदिर सामने स्थित कुएँ से पानी लाने का काम करते हैं।

105. **लेंका** :– प्रतिदिन भोर से पालिआ पत्रि एवं गराबडु को बुला लाते हैं।

106. **वल्लभ जोगाणिआ** :– गोपाल वल्लभ सामग्री पहुँचाने का कार्य करते हैं।

107. **विमान बडु** :– प्रतिमा बिजे के लिए विमान, पलंग तथा रथ को ढोने का कार्य करते हैं।

108. **वीणाकर सेवा** :– वीणाकर वीणा बजाने का कार्य करते हैं परंतु यह सेवा अब प्रचलित नहीं है।

109. **वैद्य** :– अणसर पर श्री जगन्नाथ को दवा देते हैं।

110. **वैयक्तिक या आनुष्ठानिक सेवा** :– यह सेवा व्यक्तिगत है एवं कई मठ आनुष्ठानिक या सामूहिक रूप से कुछ सेवा प्रदान कर रहे हैं।

111. **शंखुआ** :– शंख बजाते हैं।

112. **संप्रदा नियोग** :– ये नृत्य करती हैं, गाना गाती हैं।

113. **साबत नियोग** :– ये पंचतीर्थ (स्वर्गद्वार, श्वेतगंगा, मार्कंड, इद्रद्युम्न और चक्रतीर्थ) पर श्राद्ध एवं दान कराते हैं।

114. **सुआर बडु** :– आपट से पानी लाकर पोखरिआ से अर्गलि तक पानी डाल कर झाडू से साफ करते हैं। ये तीन प्रकार के हैं– (क) सुआर बडु, (ख) भोग साइता सुआर बडु एवं (ग) बेहेरा सुआर बडु।

115. **सुआर महासुआर नियोग** :– इस नियोग के अंतर्गत बडुसुआर, महासुआर, पंतिबडु आदि सेवक आते हैं।

116. **सुना गोस्वामी** :– ये कई सेवकों के दीक्षागुरु हैं। स्नान पूर्णिमा के अवसर पर सोने के कुएँ (सुना कूअ) से पानी निकालते हैं।

117. **हड़प नाएक/नायक** :– ये सेवक श्री विग्रहों के लिए पान की व्यवस्था करते हैं।

118. **हांडि जोगाणिआ और तोला बत्ती (रूई बत्ती) सेवा** :– कुंभार से मिट्टी का बर्तन इन्हीं के द्वारा आता है तथा आरती देने का कार्य करते हैं।

इनके अलावा सन् 1988 ई. से 'बेहेरा करण सेवा'को 'श्री मंदिर परिचालना समिति' द्वारा स्वीकृति मिली है। श्री श्याम सुंदर च्याउ पटनायक वर्तमान यह सेवा उपलब्ध करा रहे हैं।[3]

विभिन्न कारणों से वर्तमान कई सेवा बंद हैं जो इस प्रकार हैं– पनिकिकटा, दउड़िबला, वीणाकार, गीतगोविंद, भीतर गाआणि, संप्रदा नियोग, मादेलि, पतरबंधा, शंखुआ, कलाबेठिआ, कुंभार बिसोइ, मालचूल, बानुआ, मापसाइता करण एवं चर्चाकरण।[4]

उपसंहार :–

श्री जगन्नाथ ने पुराण, किंबदंती तथा इतिहास को किसी न किसी रूप में कमोवेश प्रभावित किया है। श्री जीउ के प्रति गभीर आस्था होने के कारण कई लोककथाओं का सृजन हुआ है ओड़िशा में, ओड़िआ जनता द्वारा। ओड़िआ चिंता–चेतना में श्री जगन्नाथ इस प्रकार घुल–मिल गए हैं कि एक नई संस्कृति जिसे 'जगन्नाथ संस्कृति' की संज्ञा दी जाती है का सूत्रपात हुआ। यह एक ऐसी सामासिक संस्कृति है, जहाँ पूजा–अर्चना पौराणिक मतवाद के आधार पर ब्राह्मण गोष्ठी (सूत्रधार) द्वारा '?' मूर्ति एवं उससे संबद्ध समस्त क्रियाधिकार दइता व शबरों पर न्यस्त है। यह कम महत्त्व की बात नहीं है। अनेकता में एकता इस संस्कृति का मूलमंत्र है।

जगन्नाथ संस्कृति में विश्व के सभी धर्मशास्त्रों के मूलतत्व तथा सार तत्व को अनुभव किया जा सकता है। परंतु यह संस्कृति किसी एक धारा में बँधी नहीं है या कहें कि इसमें किसी प्रकार की भौगोलिक संकीर्णता नहीं है। जगन्नाथ संस्कृति ने सभी जाति, धर्म, प्रथा, परंपरा एवं संस्कृति को अपने अंदर आत्मसात किया है। इसका प्रमाण यह है कि विश्व में शायद ही ऐसा धार्मिक स्थल है जहाँ विश्व–बंधुत्व के संदेश स्वरूप भाईयों एवं बहन की आधारना व पूजा की जाती हो। इसलिए यह संस्कृति अद्‌भुत है.... अनुपम है.... अनन्य भी।

संदर्भ सूची :–

1. Allen, Marguerite (2012). 'Kamat Research Database: The Jagannath Car Festival'- Kamat-com- Retrieve 20 April 2012. "Jagnnath" was originally a Tibetan term meaning Buddha.
2- Mohanty (1980) quoting Mishra.
3. त्रिपाठी महीमोहन : श्री जगन्नाथ : आम ओड़िशा, भुबनेश्वर–2016 : पृ–95।
4. वही, पृ–95।

सहायक ग्रंथ एवं आलेखों की सूची :–

1. त्रिपाठी महीमोहन – श्री जगन्नाथ : आम ओड़िशा, भुबनेश्वर – 2016
2. दाश पं. सूर्यनारायण – जगन्नाथ मंदिर ओ जगन्नाथ तत्व – फ्रेंड्स पब्लिशर्स, कटक – 2015
3. पत्रि उमेश – जीशु ओ जगन्नाथ – सत्यम पब्लिकेशन, भुबनेश्वर – 1998
4. महांति असित – नवकलेवर कथा – आम ओड़िशा, भुबनेश्वर – 2015
5. S. Samanta, R.K. Nanda and P.Routray: A socio-economic study of ritual functionaries (SEVAKS) of world-famous shri Jagannath temple, Puri, India. (Cogent social science), 15 October 2019.
6. www.google.com
7. Wikipedia. Shree Jagannath.

Mob: 9853555223

Email: pratapakesharihota@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 106-113

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

SANJAY LEELA BHANSALI : AN AUTEUR AND ARCHITECT

DEVANSHI MEHTA

136/40, Venkat Rao Colony, P.G. Road, Secunderabad, Telangana, 500003.

Abstract :

The following article closely looks at Sanjay Leela Bhansali as a master filmmaker. The paper critically analyses his cinematic spectacles under various aspects, including music, screenplay, production design, costume and makeup, color palette and props, portrayal of women, choreography, powerful dialogues, his worldview, signature motifs and tropes, etc. Subsequently, the paper also looks at the trajectory of his body of work, recurring themes in his films, his signature style that sets him apart from the rest and makes him a visually stunning director. For the purpose of study, three of his iconic films have been chosen- Devdas (2002), Bajirao Mastani (2015) and Padmaavat (2018). Moving forward, the article also studies the factors, incidentsand anecdotes from Bhansali's personal life, that have over the years, influenced and inspired his stories, settings, taste of music and choice of color palette. While identifying similarities in his films, the article also throws a glance at Bhansali's various other works, time and again.

Keywords : Worldview, Mise-en-scène, Devdas, Padmaavat, Bajirao Mastani, Choreography, Motifs and Tropes, Raag Bhoopali, Raag Maand, Malik Muhammad Jayasi, Colour Palette and Props, Symbolism.

Introduction :

Sanjay Leela Bhansali is a visually stunning director, a master filmmaker, screenwriter,and a music composer. If there's a synonym for visual grandeur in the Bollywood film industry, it's Sanjay Leela Bhansali. His oeuvre has melody adjoining drama. The beauty of his every signature piece of art rests upon its eternal music, grand cinematic representation of culture and place, in the form of larger-than-life sets, and powerful, iconic, poetic and metaphorical dialogues.Every frame is a sheer genius and a picturesque painting, in the way Bhansali uses symbolism, emotional furniture, motifs, tropes, costumes, color palette, setting, etc. to convey the emotional state of the characters. Every

prop comes to life and adds to the emotional and mental state of the characters.

The following analysis discusses Sanjay Leela Bhansali's journey as a director, the trajectory of his body of work and his signature style in terms of his portrayal of women, music and dance, tropes and motifs he uses, sets and costumes, everything that makes him a master filmmaker.

Plot and Themes :

Most of his films have plots revolving around powerful female characters. There is portrayal of tragic, inner worlds with emotionally weak characters, who are emotionally drifted but connected with love. His focus is on the more subtle, sensitive and gentler things in life.

His entire body of work is mainly based on two broad themes. While films like Padmaavat, Bajirao Mastani and Devdas are primarily love triangles represented opulently, the basic theme bottles down to love not getting fulfilled. None of these films end up having the protagonists marrying their lover. Even Hum Dil De ChukeSanam is an incomplete love story. Lovers remain parted either because of death or change of heart, giving a tragic undertone. He takes us on a journey of selfless love and sacrifice. Despite introducing a tragedy that is irreversible, he paints his characters so powerfully on the canvas, that they resonate with us for long. All his love stories follow the mainstream structure, only with a twist in aesthetics. His other body of classics like Khamoshi: The Musical, Black and Guzaarish are about sorrow and finding normalcy and meaning in life despite physical handicap.Besides loneliness as a constant theme, he also looks at one not being deprived of dignity.

Bhansali has a taste for period dramas, hence he picks up and recreates stories from the history, that confront historical past. He strongly believes in celebrating history on the larger-than-life canvas, with his grand presentation of peculiar and intriguing characters that bear the weight of the Indian history.

Devdas, a masterpiece is an adaptation of a novel by the same name written by Sarat Chandra Chattopadhyay. It has elaborate cinematography that exaggerates the melodrama.

Bajirao Mastani is a period drama but based on N.S. Inamdar's work, 'Rau'- a love triangle of Peshwa Bajirao I, his first wife Kashibai and second wife Mastani. The film isn't a historically accurate account and takes creative liberty within the setting and story. The matter of heart is what takes the front seat. The Hindu-Muslim angle is confined to the argument of politics of color. But the film's take on religion and orthodox conventionsis worth appreciating.

Padmaavat, againa period drama is a recreation of Malik Muhammad Jayasi's epic poem with the same name. This piece of Hindi literature itself is said to be a combination of historical figures and fictional characters. Here too, creative liberty is drawn by the director in the process of adapting it on the silver screen. The film garnered undue political drama with claims being made in respect of,

distortion of historical facts.

Worldview, Inspiration and Influences :

Sanjay Leela Bhansali's films speak of his worldview. His movies promote feminist and anti-Brahmanical ideals, neo-conservative ideologies and the alt-right with a twist.

What influences his trajectory of work? Are they a product of his personal life?

The self-awareness within him has a great influence on the setting, the plot and even the characterization in his film's universe.His films are somewhere inspired from his brought up, his relations with his parents or even some instances from the past. One of the reflections is the recurring archetypes – patriarchal family, resilient mother, a male character taking to self-destruction and a woman who yearns. The huge mansions, mahals and havelis in his movies are an outcome of his obsession with spaciousness, since his childhood was spent in a very claustrophobic house and environment. Bhansali returns to the subject of prostitution in several of his works, since growing up in a chawl situated close to the red-light area captivated him to the figure of sex-workers. In an interview with Anupama Chopra, he says, "Their faces had tremendous stories, they made themselves up with paint and powder…but how can you camouflage the grief? These are moments that for me as a film-maker matter." His works are moulded with deep-rooted empathy and dignity for the prostitutes.

Bhansali has also mentioned the master filmmaker Guru Dutt as his inspiration, though unlike him, Bhansali presents their world in an aesthetic vision. He enquires into politics of womanhood. His characters like Chandramukhi and Gangu not only demand love but also the right to refuse her services in the face of disrespect. The liberties that Bhansali takes within his film's worldare layered with his personal past. It all started with Devdas. His father was his inspiration to adapt Devdas. He drew quite a few similarities in Dev's character and his father, including both being alcoholic. They never gelled well, and infact the day he passed away in a state of coma, he witnessed his dad reaching out his mother. He realised the deep bond they shared.

His inherent passion for music and dance comes from his mother who was a trained dancer. For his eternal music, he credits KishoriAmonkar to be his idol. In fact, he has used her renditions in Raag Bhoopali as an inspiration for AlbelaSajan in Bajirao Mastani.

Colours coming to life and emerging as central characters in his narrative, is also rooted in his past. The lifeless and colourless walls of the chawl have over time, made him obsessive of painting set walls in bright saturated hues.

Powerful and headstrong women characters, their constant lookout for agency and his love to introduce his women in feisty glory on the silver screen, is a signature in Bhansali films. His women are active decision makers and find a voice. Though he sketches them as intelligent, bold andsharp-

witted, their portrayal of beauty carries the audience away. His plots centre around women in a way that they become the driving force.

In Devdas, Chandramukhi usesdialogues to establish her own right as a woman first and then a sex worker. There is an introduction song, Hum Pe Yeh Kisne Hara Rang Daala, that is dedicated to assert her right to love and be loved back.

Paro too doesn't stay away from asserting power, be it marrying someone her father's age in retaliation to Dev's actions. Both of them don't bow down to society's wishes.

In Bajirao Mastani, Mastani is depicted as a warrior princess. She stands gutsy, fierce and is unapologetic about her choices and desires. Mastani is determined about treading her own path, despite the fact that she would always remain unaccepted.

Following the signature style, Kashibai is drawn as an assertive figure simply stating what she wants. She owns and exercises her agency, and is adamant in her beliefs.

Rani Padmavatigets a glorious establishment- similar to Mastani. She is presented with a sense of grace and pride, without compromising on her strong and commanding persona.

A Microscopic View of the Cinematic Language :

Sanjay Leela Bhansali has a flair for the cinematic language. His innate ability to skilfully use the language of camera, makes him the master of visual storytelling. His shot composition, lensing and camera language can be compared to a master from the Hollywood, Wes Anderson.Symmetrical, Wide-Angle shots are a trademark of Bhansali films. You take almost any shot and it fits in this bracket. This technique gives a detailing of even the smallest elements in the frame. Bhansali uses Long Takes too, like the opening scene of Devdas where the camera follows Dev's mother as she goes around the house. The camera captures her energy and excitement. The Dev-Chandramukhi intense conversation, and a scene from Ram Leela are all long takes. He has an eye for Bird's Eye View shots. Be it Nagada Sang Dhol,Deewani Mastani, Khalibali or Ghoomar, all these dance sequences have this type of shot, that gives us a complete view of the dancers in magnificence. His films have the mandatoryhorizontal Track Shots as a part of his signature camera choreography. Guzaarish, Hum Dil De ChukeSanam, Bajirao Mastani and Devdas, all have track shots that either create the idea of separation or keep the audience focused where the main action is happening.

Rich music is a pillar of all his narratives. The filmmaker's style statement includes grand, expansive and layered musicthat has a strong fanbase, which is richly orchestrated and arranged. If there is dholak and classical sitar, there is also violin and piano. He serves a diverse platter of music but which is grounded in traditional ethos. Bhansali cites that he treads on the path of art filmmakers like Satyajit ray and RitwikGhatak, in understanding he importance of music to convey emotions. His

film is a complete package of Indian, classical, semi-classical, devotional and folk. The soundscape in all his films, mirrors the authentic culture of the place it depicts. As a part of his signature style, in case of period dramas, his music celebrates history, recreates an era from the past. The space comes alive with music that reflects the folklore of the culture he depicts. At times he has also utilized songs to introduce his heroines, to celebrate the saga of love and sometimes to take us on the journey of heartbreak.

As a music composer, Bhansali is sensitive to the classical raag, and hence this forms another element of his signature style. While he composed AajIbaadat in Raag Yaman, he adapted AlbelaSajan in Raag Bhoopali and Mohe Rang Do Laal in Raag Maand and PuriyaDhanashree. He also uses Raag Sohini in another song in Bajirao Mastani.

The most significant style in his dance numbers is the speed and progression towards the end of the song, be it Nagada, Dholida, Pinga, Dola Re Dola, etc.Besides similarities, there are certain themes and other elements that connect most of Bhansali's dance sequences. There are twirls, choreography incorporating combination of circular sequences, jugalbandi between the heroines (Pinga- Mastani and Kashibai, Dola Re Dola- Chandramukhi and Paro) and also folk-dance element. Sanjay Leela Bhansali has an innate sensibility for aesthetics, rhythm and expressions.He uses the trio of nritta, nritya and natyain his dances.

A Bhansali film always has a classical dance in its purest form. Be it KaheChhedMohe (Devdas) Mohe Rang Do Lal (Bajirao Mastani), Pinga (Bajirao Mastani) (is an example of semi-classical). Since melodyheightens the drama in his movies, an SLB film is incomplete without folk songs; right from DholiTaaro, Nimbooda, Dola Re Dola,Pinga, Nagada Sang to Ghoomar.

Sets that are picture-perfect paintings and pour out soul to the story, breath taking costumes and amazing style books of his characters are elements that make an SLB film stand out from the rest. His period dramas in fact draw heavy inspiration from the scale and lavishness of K. Asif's works. Every element of mise-en-scene transports the audience into the universe of the story and its characters, be it theroyal costumes that echo traditions or the regal and traditional jewellery.

His lighting and color palette are in rhythm with the mood and tone of the film. For instance, in case of a murder attempt, he fills up the frame with red. (In Bajirao Mastani, right before the assassination attempt on Mastani or even in Ram-Leela). Since he is well versed with the aesthetics of visual storytelling and influenced by Indian performative arts, it is echoed in his work. Slight changes in color and setting narrate his story. He uses hues quite a lot to depict the tonality. Devdas, Bajirao Mastani and Padmaavat have a similar bright color scheme, because it's a purely Indian and traditional representation there.

Padmaavat, the 14th century period drama, functions on sepia colours. Rani Padmaavati initially wears pastels, but once a Rajputani, she is decked in reds, greens and golds. On the contrary, Khilji is seen in earthy shades- browns and blacks. While Padmaavati's world is brightly illuminated, Khilji's kingdom is full of shadows and darkness to underline his brutality and evilness.

While in Bajirao Mastani, he is driven by desaturated colours. His hues are inspired by Raja Ravi Varma's paintings. He experimented using fabrics as a part of his unforgettable set design. They were all age-old sarees and fabrics used as bedsheets and pillow covers in the film. He grabbed the idea of a ceiling fan with zardozi work on it and it became part of Kashibai's room in the film. Talking of the actor look book, Mastani is dressed in soft pastels and whites to reflect her purity. Kashibai is seen in bright, confident colours from the start.

The color scheme of Devdas is a high dose of red-yellow-orange. Our introduction to Chandramukhi happens in a wine-red attire. But later, after meeting Devdas, she is in bare white, again, this is symbolic of her internalpurity.

Motifs, Tropes and Emotional Furniture :

Sanjay Leela Bhansali uses numerous recurring signature motifs, tropes and emotional furniture, in his oeuvre.

Water : His love for water can be noticed right from his first film. Water signifies life in his work. In Bajirao Mastani, when Mastani reveals she is pregnant, the scene happens in a water fountain. Similarly, Kashibai too takes along Bajirao in water, to reveal that she is pregnant. On the contrary, Bhansali uses water to emphasize death. Again, in the same film, there's a heavy downpour during Shiva Bhatt's death. In fact, towards the end when Bajirao experiences hallucinations, he meets death when he is water. In Devdas too, Dev goes on a self-destructive mode and performs his own last rites in water. Since romance is a key theme in all his movies, water stands for passionate love too. Hence, any intimate moments between his characters, it could possibly be inrain or fountain!

Fire : Bhansali uses fire motif to signify heartbreaks and jealousy. In Bajirao Mastani, when Kashi is heartbroken upon realizing that Bajirao is in love with Mastani, she burns the curtain out of jealousy. In Devdas too, Paro burns Dev's letter, wherein he talks about forgetting their relationship. Diyas and lighting: Bhansali has a deep obsession with illumination. Hence, any film of his would have numerous diyas or lamps of any other form of lighting, depending upon the era it depicts. For instance, since Bajirao Mastani was set in the 18th century, the palace there had glass lamps since by then glass was widely used. Whereas in the 14th century period drama, Padmaavat, the Chittorgarh palace is lit up with purely simple diyas. In a much later film, Devdas, besides diyas, he uses candles and lamps.

Ornaments : Since he believes in glorifying heroines' beauty and works on the element of prostitute, several times he adorns his women characters with payal and ghungroos. His songs too have lyrics talking about anklets. There are scenes in Hum Dil De ChukeSanam, where romance happens around an anklet. In Devdas too, there is a line in Dola Re Dola, 'bandh ke main ghungroo, pehenke main payal…' Both Chandramukhi and Mastani refuse to wear ghungroos and dance.

Mirrors and Glass : Mirrors are another signature motifs. The set of Aaina Mahal that was built for the song Deewani Mastani, was completely made of mirrors. A similar set is seen in the song Maar Dala, where its mirror everywhere, the floor, the background. Bhansali is a visual master and hence only a master can use 12 crore pieces of stained glass to design Paro's room.

Moon : Moon has a special place in all SLB films. There are songs that metaphorically use moon to describe the beauty. When Dev meets Paro for the first time, her beauty is compared to that of the moon. In a scene later, Paro's face is juxtaposed with a full moon to sketch her celestial beauty. There is a romantic song 'wo chaandjaisiladki' that is all about love and beauty. Chandramukhi is named after the moon itself. In Bajirao Mastani, Kashi is sitting in ShaniwarWada gazing at the moon, which is followed by a dialogue 'Yeh chaandbhina, kabhiissbadlikepeeche, tohkabhiussbadlike.'she compares the moon to Bajirao and subtly states that she is aware of the fact that he spends time with Mastani. In Pinga, Mastani's arrival is compared to the arrival of moon.She sings, "Dekho mere piya ki sanwari, jiya se banwari. Mere angnameindekhoaajkhilahaichaand." Their costumes also include an element of moon as a part of cultural depiction. Kashi (throughout the film) and Mastani (in Pinga) have a Chandrakor (crescent moon) bindi.

Weaving : Every film of his, has a scene where the women are weaving a carpet, sweater, etc. It is symbolic of weaving love. In Bajirao Mastani, Kashi and Maa Saheb bond over weaving the saffron flag, signifying that they are held together by tradition. We also see Mastani embroidering a green carpet, in one of the scenes. In Devdas too, Paro weaves a sweater, and in Padmaavat, Rani Padmavati weaves a thread of pearls on Ratan Sen's turban as she gets him ready to meet Khilji, who's invited as a guest to the palace.

Curtains : They are subtly symbolic of passionate love and sexual desire in all his films. It is the curtain in Bajirao Mastani that reveals Bajirao's extra marital affair. Mastani's entry in Aaina Mahal happens when the curtains lift. Paro's entry song has her dancing along curtains as she is excited about Dev's arrival.

Chandeliers : One of his most obvious tropes as a part of Bhansali's set design is grand lavish jhoomars. Be it Devdas, Bajirao Mastani or Padmaavat, all of them have royal chandeliers. In fact, most of the time they even become active props like in Hum Dil De ChukeSanam.

Festivals : Festivals are used as a signature trope in every SLB film. They are presented to us in the form of a song, and they develop a politics of their own, bring together the protagonists or even introduce a climax right after the celebration of a festival ends with the song. In Dola Re Dola, Paro and Chandramukhi have a jugalbandi and it offers us moments of their bond. In Pinga too, Kashi and Mastani bond over the celebration of a festival. In Ram-Leela, LahuMuh Lag Gaya commences the celebration of Holi, and it starts the love story of Ram and Leela. In Padmavat, Diwali is celebrated to highlight Ratan Sen's valour even during time of an impending danger.

Hence every frame speaks of the sheer genius by the auteur director,Sanjay Leela Bhansali

References :

1. Arora, Kamya, 2017, Kathak : As Employed by Sanjay Leela Bhansali in Three Key Works.
2. Prasad, M, 2019, May, AN INVESTIGATION INTO THE USE OF COLOUR IN SANJAY LEELA BHANSALI'S PADMAVAT, Int. j. of Social Science and Economic Research.
3. T, Anjana., 2021, Hum Dil De ChukeSanam to Padmaavat: An Epitome on Traditional Indian Folk Dance in Sanjay Leela Bhansali's Movies, Journal of Humanities, Music and Dance
4. Thapa, Anu, 2016, Bajirao Mastani: The Love Story of a Warrior (India, Sanjay Leela Bhansali, 2015). Film Criticism.
5. https://www.vervemagazine.in/arts-and-culture/dreaming-in-colour-interpreting-sanjay-leela-bhansalis-spellbinding-visual-universe
6. https://www.business-standard.com/article/beyond-business/sanjay-leela-bhansali-the-picture-perfectionist-116040800714_1.html
7. https://dichotomy-of-irony.blogspot.com/2016/05/weaving-lovea-motif-in-films-of-sanjay.html

+91 7993462321

devanshimehta09@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 114-118

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

नंगातलाई का गाँव में उत्तर प्रदेश की संस्कृति का प्रतिबिम्बन

श्वेता सिंह

शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, किला भवन, इन्दौर (म.प्र.)

संस्कृति मानव जीवन के संस्कारों का वह समग्र रूप है, जिसमें मनुष्य के समस्त विचारों, विश्वासों, क्रियाकलापों तथा अभिवृत्तियों की ओर संकेत किया जाता है। जो अपने स्वच्छ भाव से निरन्तर प्रवाहित होती रहती है, संस्कृति उसी सरिता के समान है। यदि सरिता का प्रवाह बाँध दिया जाए तो सरिता फिर सरिता नहीं रह जाएगी। इसी प्रकार संस्कृति को शब्दों की सीमा से बाँध देने पर उसकी प्रवाहशीलता का निदर्शन नहीं हो सकता। आत्मा की भाँति संस्कृति का स्वरूप शब्दों द्वारा प्रकट करना कठिन है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर संस्कृति के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि, "संस्कृति जिन्दगी का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है, जिसमें हम जन्म लेते हैं। इसलिए जिस समाज में पैदा हुए हैं अथवा जिस समाज से मिलकर हम जी रहे हैं, उसकी संस्कृति हमारी संस्कृति है, यद्यपि अपने जीवन में जो संस्कार जमा करते हैं वह भी हमारी संस्कृति का अंग बन जाता है और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी सन्तानों के लिए छोड़ जाते हैं। इसलिए संस्कृति वह चीज मानी जाती है, जो हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए है तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक सदियों के अनुभवों का हाथ है। यही नहीं बल्कि संस्कृति हमारा पीछा जन्म जन्मांतर तक करती है।"[1]

इसी प्रकार डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल के शब्दों में, "व्यक्ति के जीवन का आधार, उसके आचार एवं विचार ही हैं। किन्तु इन आचार–विचारों के मूल में व्यक्ति के वे संस्कार ही होते हैं जिन्हें प्रकृति ने विश्व के विराट मंच पर उसके मन, वचन और कर्म में पिरोया है। इस दृष्टि से भी संस्कृति का अर्थ सुसंस्कार सम्पन्न जीवन ही ठहरता है।"[2]

इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि संस्कृति किसी समाज में गहराई से व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने–पीने, बोलने, संगीत, नृत्य, गायन, साहित्य, कला, वास्तु शिल्प, दर्शन, धर्म और विज्ञान, रीति–रिवाज, परंपराओं, पर्व जीने के तरीके और जीवन के विभिन्न पक्षों पर व्यक्ति विशेष के अपने दृष्टिकोण आदि में परिलक्षित होते हैं। मानव का शारीरिक–मानसिक अस्तित्व जिन साधनों से बना रहता है, उन साधनों की समग्रता को ही संस्कृति कहते हैं।

वस्तुतः जहाँ व्यक्ति सांस्कृतिक प्रक्रियाओं का परिणाम है, वहाँ संस्कृति भी व्यक्ति की प्रक्रियाओं का परिणाम है इसके अंतर्गत वे बौद्धिक, कलात्मक और सामाजिक आदर्श तथा संस्थाएँ सम्मिलित है, जिन्हें समाज के सदस्य अपनाते हैं।

अतः संस्कृति किसी समाज में वे सूक्ष्म संस्कार है, जिनके माध्यम से लोग परस्पर संप्रेषण करते हैं, विचार करते हैं और जीवन के विषय में अपनी अभिवृत्तियों और ज्ञान को दिशा देते हैं। प्रत्येक संस्कृति के कुछ जीवन–मूल्यों, जिनका पालन करने की अपेक्षा उस सांस्कृतिक परिवेश से जुड़े समाज के सदस्यों द्वारा की जाती है।

संस्कृति अर्जित व्यवहार तथा समाज में रहने वाले व्यक्तियों का विचार है। लोग अपनी–अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनके रहन–सहन, आचार–विचार, वेष–भूषा आदि का अनुकरण करने लगते हैं। उनकी भाषा सभ्य और सुशिक्षित होने की पहचान का मानक और शिक्षा ज्ञान, विधान और प्रशासन का माध्यम बन जाती है।

नंगातलाई का गाँव और उत्तर प्रदेश की संस्कृति :–

'नंगातालई का गाँव' 'विश्वनाथ त्रिपाठी' का 2004 में प्रकाशित महत्वपूर्ण संस्मरण संग्रह है। जिसमें 'उत्तर प्रदेश' 'बस्ती' जिले (अब सिद्धार्थ नगर) के बिस्कोहर गाँव की स्मृतियाँ संचयित है। यह संग्रह 'बिस्कोहर' के बहाने भारतीय ग्रामीण जीवन की सभ्यता और संस्कृति को स्वयं में आत्मसात किए हुए है। दस अध्यायों और 143 पृष्ठों में बमुश्किल समाहित 'बिस्कोहर' की आपबीती वहाँ के सांस्कृतिक परिदृश्य को उजागर करने में समर्थ है।

'विश्वनाथ त्रिपाठी जी' अपनी माँ, गाँव, गाँव के लोगों का जीवन, गाँव और आस–पास के प्राकृतिक परिवेश, खान–पान, रहन–सहन, भाषा, गायन, साहित्य, धर्म, रीति–रिवाज, परंपराओं, पर्व मनाने के तरीके और अपने आस–पास की ग्रामीण जीवन शैली, लोक कथाओं और लोक मान्यताओं आदि को इस संग्रह के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

यह संस्मरण संग्रह ग्रामीण चरित्रों के जीवन, प्रकृति के साथ उनकी एकता और सामाजिक परिवर्तन के साथ आने वाले उनके दिलो–दिमाग के बदलाव को बड़े सजीव व जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है।

'नंगातलाई का गाँव' में सन्निहित 'उत्तर प्रदेश की संस्कृति' को निम्न आधारों पर समझ सकते हैं।

समन्वय भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषता है, समय–समय पर इस देश पर कितनी ही संस्कृतियों का आगमन और आविर्भाव हुआ। परन्तु वे घूल मिलकर एक हो गई। संस्मरणकार ने समन्वय को आधार बनाकर जनता के हृदय की धड़कन को पहचाना है और स्मर्ण्य व्यक्ति के रूप में समन्वय का अद्भुत आदर्श प्रस्तुत किया। लेखक ने धार्मिक समन्वय, पारिवारिक समन्वय, सांस्कृतिक समन्वय, जातिगत समन्वय, भाषागत समन्वय आदि को अनेक चरित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। जातिगत भिन्नता होते हुए भी स्मर्ण्य चरित्र एक दूसरे से सामंजस्य बनाये हुए है –

"मुसलमानों के त्योहार हैं – ईद, बकरीद, शब्बेरात। बकरीद के दिन बिसनाथ के घर में गोश्त और गेहूँ बहुत आता। आस–पास के मुसलमान हमारे घर गेहूँ और गोश्त भिजवाते। दिवाली के दिन तिवारी लोग, मौलबी साहब, जाकिर नदबी साहब और आस–पास के लोगों को मिठाई ही नहीं खिलाते थे बल्कि घर पर खाना भी खिलाते थे। आस–पास के मुसलमानों, जिनमें ज़्यादातर कुँजड़े होते थे, उनके यहाँ से बधना (मुसलमानों द्वारा

प्रयोग किया जाने वाला लोटा जिसमें टोंटी लगी होती है) और थाली मँगा लेते थे और खाना खिला करके इन्हें वापस कर देते।"[3]

इसी प्रकार लेखक ने अनेक चरित्रों के द्वारा धर्म के कार्यों में साथ–साथ हाथ बँटाना, परिवार के सभी सदस्यों का एक दूसरे से प्रेम, अनेक जातियों का एक दूसरे के कार्यों को मिलकर करना, अनेक जातियों द्वारा वहाँ की भाषा को बोलना समन्वयवादी संस्कृति के द्योतक हैं।

'नंगातलाई का गाँव' संग्रह वहाँ के लोगों के रहन–सहन को पूर्णतः उद्घाटित करता है। जहाँ पर ईंट सीमेंट की सहायता से बने पक्के मकान, मिट्टी के बने कच्चे मकान तथा कहीं कहीं घास फूस से बने छप्पर आदि देखने को मिल जायेंगे। भिन्न–भिन्न जाति समुदाय के लोगों के निवास करने के कारण यहाँ बने घरों में काफी विविधता देखने को मिलती है।

"पुराने जमाने के जैसे घर होते थे। पक्का घर नहीं था, खपरैल था। मिट्टी की दीवारें थीं। लेकिन बहुत विशाल था। उसके आस–पास और किसी का घर नहीं था। घर के सामने दो पक्के कुएँ थे। दाहिने तरफ एक पोखरा था जिसे लोग बाबू साहेब का पोखरा कहते थे। उसकी मछली कभी मारी नहीं जाती थी। .... उसी के साथ एक बहुत बड़ा पत्थर का बना हुआ मन्दिर था। बाबू लोगों के उस घर को एक छोटा–मोटा राजभवन समझिए।"[4]

उत्तर–प्रदेश के खान–पान की बात करें तो यहाँ के लोग शाकाहरी तथा मांसाहारी दोनों पकार का भोजन करते हैं। विभिन्न प्रकार की मिठाइयाँ भी यहाँ प्रचलित है जिसका उल्लेख लेखक ने किया है। साथ ही अनेक प्रकार के शरबतों जैसे – गुड़का शरबत, दही/लस्सी, बादाम की ठंडाई, आम का पन्ना, इमली का शरबत, नींबू व पुदीने की शिंकजी आदि।

अनेक धार्मिक वर्गों और समुदायों के अलावा उत्तर प्रदेश में आबादी के बीच मिश्रित जातीयता है। यहाँ के लोगों के पहनावे तथा वेशभूषा में देशीय पारम्परिक और पश्चिमी भी एक मिश्रित सांस्कृतिक विविधता है। इस विविधता का संस्मरणकार ने अनेक स्थानों पर चित्रण किया है। मुस्लिम औरतों के बनाव श्रृंगार तथा पर्दे में रहने का चित्रण, बेड़िनो के पहनावे का चित्रण, समाज में प्रचलित पोशाक व पहनावे का चित्रण, सोने के जेवरों का चित्रण, लड़कियों के चूड़ीदार पाजामा और कुर्ता पोशाक के रूप में पहनने का चित्रण, हिन्दू महिलाओं का साड़ी पहनना आदि संस्मरण में दृष्टव्य है जो उत्तर प्रदेश की पोशाक को दर्शाता है।

उत्तर प्रदेश की राजकीय भाषा हिंदी तथा दूसरी उर्दू है। यहाँ अलग–अलग क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न भाषाएँ तथा बोली का प्रयोग होता है। यहाँ मुख्य रूप से सात बोलियाँ प्रचलित है। ये बुंदेली, ब्रजभाषा, कन्नोजी, कौरवी (खड़ी बोली) अवधी, बघेली, भोजपुरी है। 'नंगातलाई का गाँव' में पूरबी अवधी का समृद्ध भाषा संसार है, जिसे बताने के लिए संग्रह का एक संस्मरण 'बिस्कोहर का भाषा विज्ञान' समर्पित है। उर्दू भाषा का भी उल्लेख संस्मरण में मिलता है साथ ही वहाँ की लोकोक्ति, मुहावरे, कहावतें, शब्द प्रयोग, गालियाँ, शैली आदि का भी भान संस्मरण में व्यक्त है।

लीलाधर मंडलोई जी ने पुस्तक की भाषा के सम्बन्ध में लिखा है कि, "इस कालजयी आख्यान में लोक सौंदर्य के स्वाभिमान से पगी ऐसी सजल भाषा है जो शोख, तीखी, मीठी, चोट खाई, लचीली और विदग्ध है। शब्द यहाँ अनेक अदेखी अनूठी भंगिमाओं में अर्थों का नया संसार रचते हैं। शब्दों की विपन्नता के रूदन के

बीच यह किताब एक ऐसे आधार ग्रन्थ की तरह है जिसमें पूरबी अवधी का अजाना समृद्ध भाषा संसार है।"[5]

उत्तर प्रदेश में अनेक जाति वर्ग के लोग निवास करते हैं। यहाँ वर्ष भर त्योहारों की धूम मची रहती है। यहाँ मनाये जाने वाले हिन्दू त्योहारों में दीपावली, होली, दशहरा, रक्षाबन्धन, भाईदूज, गंगा स्नान, हरियालीतीज, कृष्ण जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी आदि अनेकों त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाये जाते हैं। यहाँ मुस्लिम समुदाय द्वारा भी अनेक त्योहार, ईद–उल–फितर, ईद–उल–जुलहा, मुहर्रम, शब–ए–बरात, रमजान आदि मनाये जाते हैं। 'नंगातलाई का गाँव' संस्मरण पूर्णतः इसकी पुष्टि करता है। संग्रह में अनेक स्थानों पर इन त्योहारों का विस्तृत वर्णन है। साथ ही इनसे जुड़े रीति–रिवाजों पर भी लेखक ने प्रकाश डाला है।

"दीवाली की आहट दशहरे से ही मिलने लगती थी। वस्तुतः दीवाली का पर्व दशहरे से जुड़ा है। दशहरा का अर्थ है दश + हरा। दस सिर वाले रावण का संहार। गाँव में प्रचलित था कि दीवाली का उत्सव अयोध्या में राम के लौट आने के उल्लास में किया गया था। दशहरा और दीवाली के बीच में एक और पर्व होता है – करवा चौथ – शुक्ल पक्ष कार्तिक की चतुर्थी। बिसनाथ की अम्मा अक्सर गुनगुनायी थी :

करवा करवारी। ओकरे बरहें दिया दिवारी।
दिवारी बैठी कोनें – तब आग लाग डिठौने।[6]

उत्तर प्रदेश में सभी धर्मों के लोग मिलजुलकर भाईचारे तथा सौहार्द के साथ सभी त्योहार मनाते हैं। यहाँ की सभी जाति, धर्म के लोग एक दूसरे के त्योहारों में भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते हैं।

"वहाँ सचमुच, मोहर्रम के जुलूस में मुसलमानों से कहीं ज़्यादा हिन्दू हिस्सा लेते हैं। जब कोई मस्जिद बनती है तो उसके लिए सब पैसा देते हैं। रामलीला की व्यवस्था बुद्धु प्रधान करते थे। मन्दिर बनवाने के लिए मुसलमान भी पैसा देते हैं।"[7]

उत्तर प्रदेश के अलग–अलग क्षेत्रों में विभिन्न अवसरों तथा त्योहारों पर अनेक लोकगीतों का गायन प्रस्तुत किया जाता है। ऐसे ही कुछ लोकगीतों का उल्लेख 'नंगातलाई का गाँव' संग्रह में हुआ है जैसे–कजरी, सोहर, होरी, फाग, ईसुरी फाग, आल्हा, मर्सिया आदि संस्मरणकार यहाँ मर्सिये के प्रभाव को करूण बताते हैं और कहते हैं कि, "बिस्कोहर की संस्कृति को बिना मर्सिये के नहीं समझा जा सकता। ..... उनके चेहरे भक्ति–भावना से आपूरित होते। वे सामूहिक रूप से मर्सिया गाती थीं। उनमें से कुत्तन जान, सोनापती और जाफरी के नाम याद हैं।"[8]

'नंगातलाई का गाँव' संकलन में उत्तर प्रदेश की संस्कृति की जातिगत विभिन्नता और एक दूसरे से सामंजस्य की भावना को भी उजागर किया गया है। वहाँ के हिन्दू–मुस्लिम जातियों की विभिन्न जातियों पर भी संस्मरणकार ने प्रकाश डाला। ब्राम्हण, ठाकुर, बनिया, तिवारी, ठठेर, कसेर, पटेल, धानुक, डफाली, शेख, सैयद, जुलाहा, धुनिया आदि जैसे हिन्दू आबादी के कई स्तर थे वैसे ही मुस्लिम आबादी के भी।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भारत की सबसे बड़ी आबादी वाला राज्य उत्तर प्रदेश जहाँ बहुरंगी संस्कृति का विकास हुआ है। उत्तर प्रदेश एक बहुसांस्कृतिक तथा बहुजातीय राज्य है जिसकी संस्कृति और सभ्यता भारत की भी सबसे प्राचीन संस्कृति है। 'नंगातलाई का गाँव' संकलन में इसी विभिन्न धर्मों की जन्मस्थली कहे जाने वाले उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक एकता और भाईचारे का प्रतिबिम्बन हुआ है।

संदर्भ :–

1. रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति के चार अध्याय, 1956, पृष्ठ 653
2. डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, वागधारा, पृष्ठ 10
3. 'नंगातलाई का गाँव' बिस्कोहर के जमींदार, बांमन, मुसलमान, विश्वनाथ त्रिपाठी पृष्ठ 103
4. वही पृष्ठ 83
5. फ़्लैप से
6. वही पृष्ठ 20
7. वही पृष्ठ 16
8. वही पृष्ठ 67

ए/9, सदर बाजार, पुलिस लाईन
पानी की टंकी के पास, इन्दौर (म.प्र.) 452006
E-mail – swetajeetsingh1991@gmail.com
Mob. - 8435004560

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 119-123

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

विश्व सिनेमा में स्त्री अस्मिता का संघर्ष

डॉ. कनक लाता रिद्धि

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, निर्मला कॉलेज, राँची विश्वविद्यालय।

स्त्री अस्मिता पर रचित साहित्य दुनियाभर में अपनी जगह सुनिश्चित कर रहा है। आज साहित्य में स्त्री की पहचान एक ऐसा सशक्त सवाल बन कर उभरा है जो परंपरा और परिवेश को एक साथ खंगालने को मजबूर कर रहा है। ऐसे समय में वरिष्ठ लेखिका एवं आलोचक विजय शर्मा की पुस्तक 'स्त्री, साहित्य और विश्व सिनेमा विश्वपटल पर स्त्री की अस्मिता एवं अधिकार की आवाज उठाता है। यह साहित्य एवं सिनेमा के माध्यम से स्त्री के आक्रोश की अभिव्यक्ति है। यह विश्व सिनेमा के फलक पर रची गई स्त्री के साहस और संघर्ष की वह कहानी है जो अब तक आँखों के सामने होने पर भी ध्यान का विषय नहीं बन सकी है। विश्व एवं भारतीय सिनेमा पर कलम चलाने में सिद्धहस्थ लेखिका ने स्त्री पर बनी लगभग 3 दर्जन फिल्मों का विश्लेषण कर स्वाभिमान एवं साहस से लबरेज ऐसी स्त्रियों का जीवन सामने रखा है जो साहित्य और उस पर बने सिनेमा के यादगार चरित्र हैं। 35 फिल्मों के कोलाज से बना यह कैनवास केवल किताब नहीं ऐसा खिताब है जिससे हर स्त्री प्रेरणा ले सकती है।

सिने–समीक्षक उपमा ऋचा का विचार है, ''अरस्तू कहते हैं कि नाटक में कैथेरसिस फैक्टर ऐलोपैथिक चिकित्सा जैसी स्थिति है– विद अनलाइक क्योर अनलाइक, यानि कडुवाहट से कडुवाहट का इलाज। जिस तरह से चिकित्सक कड़वी दवा से कड़वे रोग का इलाज करता है, ठीक वैसे ही परदे पर घटती अनेक घटनाएँ दशकों की कटुवृत्तियों और प्रवृत्तियों का इलाज करती हैं। राहत देती हैं और सुकून देती हैं। स्त्री, साहित्य और विश्व सिनेमा ''किताब पुरुष सत्तात्मक समाज और पितृसत्तात्मक परिवार में अपने दोयम दर्जे की स्थिति से असंतुष्ट श्वेत और श्याम दोनों वर्ग की स्त्रियों के संघर्ष की वह कथा है जिनकी पीड़ा दर्शकों का भावात्मक रोचन करती है तो उनकी जीत सुकून की साँस भी देती हैं।''[1]

अफ्रो–अमेरिकन स्त्री साहित्य पर 2014 में एक स्वतंत्र पुस्तक की रचना कर चुकी विजय शर्मा ने आलोच्य किताब में अश्वेत दास स्त्रियों पर बनी 'द कलर पर्पल', 'बिलवड', 'ए रेसिनइन द सन', 'व्हाई द केज्डबर्ड सिंग' 'टूकिल ए मॉकिंग बर्ड, अमेरिकन वॉयलेट जैसी फिल्मों का चयन किया है। लेखिका चित्रपट और पन्नों में दर्शायी दास स्त्रियों की यंत्रणा पर विशेष टीका टिप्पणी नहीं करती हैं परन्तु उनकी वर्णन शैली ऐसी है कि पाठक खुद–ब–खुद यंत्रणा और त्रास का अनुभव करता है। अश्वेत स्त्री जीवन पर व्यापक शोध कार्य कर चुकी लेखिका जानती है कि ऐसी स्त्रियों के बच्चों को उनसे जबरन अलग कर देना ऐसी अमानवीयता है जिसकें समानान्तर किसी अन्य उत्पीड़न को खड़ा नहीं किया जा सकता है। अपनी एक अन्य पुस्तक 'अफ्रो–अमेरिकन

साहित्य : स्त्री स्वर' में प्रारंभिक अश्वेत लेखिका लिड़ाब्रेंट की किताब 'इंसीडेंट्स इन द लाइफ ऑफ ए स्लेवगर्ल' के विश्लेषण के क्रम में विजय शर्मा लिखती हैं, '' बच्चे पैदा करती पर उन्हें प्रेम करने, पालने–पोसने का हक उसे बिल्कुल न था। उसके बच्चे कभी भी उससे छीन कर बेचे जा सकते थे। भले ही उसका अपना श्वेत मालिक या कोई अन्य श्वेत व्यक्ति इन बच्चों का पिता हो।''[2]

इस पुस्तक में ली गई पहली फिल्म 'रैबिट प्रूफफेंस' है। लेखिका बच्चों को माँ से अलग करने का कारण बताती है कि इन वर्णसंकर अर्द्धश्वेत बच्चों में श्वेत जिन्स ज्यादा होने से आदिवासी गुलामों की ताकत बढ़ने का डर था। फिल्म में मोली, डेजी और ग्रेस तीनों बच्चियों को माँ, दादी और समुदाय से अलग कर 15,000 मील दूर ट्रेनिंग कैंप में जबरन ले जाया जाता है। हालांकि अपने साहस और समझदारी से तीन में दो बहनें लौट आती हैं किन्तु एक का न लौट पाना और मर जाना 'रैबिट प्रूफफेंस' शीर्षक को अर्थ संगत बनाता है। लेखिका यह बताती चलती है कि आगे चलकर मोली की एक बेटी डोरिस ने परिवार के अनुभव लिखे उसी को क्रिस्टीन ओल्सेन ने पर्दे पर प्रस्तुत किया है।

'द कलर पर्पल एलिस वाकर की प्रसिद्ध किताब है जिसे सिनेमा में ढालने का काम निर्देशक स्टीवन स्पीयल बर्ग ने किया है। यह पितृसत्तात्मक समाज में अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही स्त्री का एकल संघर्ष है। फिल्म स्त्री की असहायता से शुरु होकर उसके सशक्तिकरण की ओर गमन करती है। विजय शर्मा की खासियत है कि वे वक्त लेती हैं और किताब तथा उस पर बनी फिल्म के सूक्ष्म तंतुओं को उधेड़ कर सामने रखना नहीं भूलती है। बहन रुथ ने जब वाकर से कहा, जानती हो एक दिन पत्नी ने दूसरी औरत से उसका एक जोड़ा, कपड़ा माँगा।[3] इस पर एलिस वाकर के दिमाग में 'द कलर पर्पल' की कहानी कौंध गई जिसमें दो औरतें मानसिक रूप से एक ही आदमी की विवाहिता महसूस करती हैं। काम में उत्कृष्टता न हो तो लेखिका स्टीवन स्पीयल बर्ग जैसे महान निर्देशक की आलोचना से भी नहीं चूकती हैं। वे लिखती हैं कि इस फिल्म में स्टीवन स्पीयल बर्ग उपन्यास की आत्मा को पहचान न सकें एवं कलाकारों का चुनाव भी सटीक नहीं रहा।

अगर कोई फिल्म उपन्यास के प्रति ईमानदारी रखकर बनाई जाती है तो लेखिका के शब्द प्रशंसा में भी कंजूसी नहीं करते हैं। इसी आधार पर वह ओप्रा विन्फ्रे द्वारा टोनी, मॉरीसन के उपन्यास 'बिलवड' पर बनी फिल्म 'बिलवड' के बारे में कहती हैं कि बिरले ही कोई फिल्म 'बिलवड' जितनी सुंदर बनती हैं। दो साल की बिलडर को गुलामी के शिकंजे से बचाने के लिए माँ सेथे उसे मार डालती है। वह 18 साल बाद किशोरी के शरीर में शिशु का मन लेकर एक हॉन्टिंग चरित्र के रुप में सामने आती है। यह फिल्म मनुष्य के भीतर के देवता और दानव दोनों को सामने लाती है।'' अतृप्त आत्मा, अपराध बोध, पारिवारिक संबंध सब फिल्म समाप्त होने के बाद भी दर्शक को छोड़ते नहीं हैं। दोबारा फिल्म देखने को बाध्य करते हैं।''

'देयर आई जवर वॉचिंग गॉड' बीसवीं सदी के दूसरे और तीसरे दशक में चले अफ्रो–अमेरिकन सांस्कृतिक आंदोलन से प्रसिद्ध हुई रचनाकार जोरनील हर्सटन की पुस्तक है। इन्होंने अपने जीवन और लेखन में नस्लवाद को नकारा। लेखिका जब भी किसी पुस्तक को उठाती है तो उस पर अब तक बनी सभी फिल्मों एवं टी.वी. सीरीज संबंधित बातें विस्तार से बताती हैं। 1937 में प्रकाशित जोरा के इस उपन्यास पर 2005 में टी. वी. फिल्म बनी। 2005 में ही प्रसिद्ध अभिनेत्री हेलबेरी की केन्द्रीय भूमिका में फीचर फिल्म बनीं। अधेड़ से ब्याही गई युवा जेनी भागकर एक के बाद एक दो पुरुषों के साथ जीने की कोशिश करती है परन्तु दोनों की मौत के

बाद जेनी खुद में ही खुश रहना सीख लेती है। लेखिका का निरीक्षण है कि जटिज उपन्यास को फिल्म में सरल बनाकर प्रस्तुत किया गया है। लेखिका यहाँ भी कमियाँ बताना नहीं चूकती हैं। उपन्यास में जेनी को अश्वेत होने के कारण लगातार प्रताड़ित होना पड़ता है किन्तु फिल्म में दर्शकों की रुचियों को ध्यान में रखकर स्क्रिप्ट को बदलकर जेनी की यौन भावना पर अधिक जोर दिया गया है।

अफ्रो अमेरिकन जीवन पर बनी एक और फिल्म है 'ए रेसिन इन द सन'। लारेन सबसे पहली अफ्रो–अमेरिकन नाटककार है जिनके नाटक ब्राडवे पर खेले गए। उनके नाटक ए रेसिन इन द सन को 1961 मेंडैनियल पिट्री ने सिनेमा के रूप में प्रस्तुत किया। इसमें 20वीं सदी के 40 के दशक में शिकागो में रह रहे एक अश्वेत परिवार की कहानी है जिसमें इस परिवार की आंतरिक और बाह्य मुसीबतों को चित्रित किया गया है। 1961 और 2008 में बनी दोनों फिल्मों के तुलनात्मक अंतर को लेखिका स्पष्ट करती हैं। पात्रों के चयन एवं अभिनय में अंतर है किन्तु दोनों में ही यह अश्वेत परिवार डटकर श्वेत अन्याय का विरोध करता है।

'आइनो व्हाई द केज्डबर्ड सिंग' अश्वेत अमेरिकन साहित्यकार माया एंजोलो की विश्व प्रसिद्ध आत्मकथा है। आत्मकथा के वैशिष्ट्य पर लिखना शुरू करती हैं। उनकी खासियत है कि वे जिस भी साहित्यिक कृति एवं उस पर बनी फिल्म को उठाती हैं उसके मूल प्रतिपाद्य को प्रारंभ के पैराग्राफ में बड़े रोचक तरीके से प्रस्तुत करती हैं। विजय शर्मा आत्मकथा लेखन को साहसिक कार्य मानती हैं। इसका अनुमोदन माया एंजेलो के इस कथन से होता है, ''मुझे इसके (नस्लवाद) पार जाना ही था। अगर मैं ऐसा न करती तो वे लोग (नस्लवादी) जीत जाते।''[5] उनकी 6 भागों में लिखी आत्मकथा के पहले भाग को विशेष प्रसिद्धि मिली। किताब का सर्वाधिक मार्मिक प्रसंग यह है कि 5 वर्ष की उम्र में अपनी माँ के पुरुष मित्र द्वारा बलत्कृत माया 5 साल तक कुछ नहीं बोलती है। टीचर फलावर्थ ने माया को साहित्य लेखन से जोड़ा। इस सशक्त गर्वीली स्त्री को नस्लवाद के पोषक लोगों द्वारा अश्वेतों का नाम बिगाड़कर बुलाना अच्छा नहीं लगता है। 'आइनोब्हाई द केज्डबर्ड सिंग' उन सारे अश्वेत मजबूत पक्षियों को समर्पित है जो विषमताओं को धत्ता बताकर अपने गीत गाते हैं। फील्डर कुक की इसी नाम से बनी फिल्म में उपन्यास की कई घटनाओं को स्थान नहीं दिया गया है लेकिन फिल्म आत्मकथा के पहले भाग के जितने भी अंश दर्शाती है वे दर्शकों को बाँधते हैं।

'अमेरिकन वायलट' में लेखिका पाठकों से सवाल से ही शुरूआत करती है। यह वैश्विक सवाल है कि हममें से कौन भेदभाव का शिकार नहीं है या भेदभाव करने में शामिल नहीं है? उनका एक सवाल यह भी है कि क्या अकेला व्यक्ति सत्ता के खिलाफ लड़ सकता है? अगर वह व्यक्ति 'अमेरिकन वायलेट की नायिका चार बच्चों की माँ 24 साल की अश्वेत डी रोबर्ट्स हो तो जबाब हाँ ही होगा। ड्रग रखने के झूठे आरोप में पकड़े जाने पर भी वह गुनाह कबूल कर छूटना अस्वीकार कर देती है। वह लड़ती है तो साथ देने वाले भी मिल जाते हैं और अंततः जेल से उसकी रिहाई होती है। लेखिका इस पर 2009 में बनी फिल्म की आलोचना इस आधार पर करती है कि इसमें जेल में अश्वेतों पर होने वाले अत्याचारों को कहीं नहीं दिखाया गया है जो कि सर्वविदित तथ्य है।

विजय शर्मा ने अपनी एक प्रसिद्ध पुस्तक 'सिनेमा और साहित्य : नाजी यातना शिविरों की त्रासद गाथा में नाजी क्रूरताओं पर बनी 20 फिल्मों का चयन किया है। उस पुस्तक में 'सोफीज च्वाइस' को न लेकर इस पुस्तक में लेने का कारण शायद यह है कि अपने एक बच्चे को बचाने के लिए दूसरे बच्चे को खोने के निर्णय का संताप झेलती सोफी की चट्टान सी अदम्य जिजीविषा के चित्रण को 'स्त्री, साहित्य और विश्व सिनेमा' पुस्तक

के अनुकूल माना है। वे लिखती है, होलोकास्ट कथानक पर अब तक कई फिल्में बन चुकी हैं मगर सबका स्तर एक जैसा नहीं है। श्रेष्ठता की दृष्टि से मैं 'फेटलेस' को काफी ऊँचा दर्जा देना चाहूँगी हालाँकि मेरी नजर में अब भी 'द पियानिस्ट', 'सनशाइन' तथा सोफीज च्वाइस' ही शीर्ष पर है।''[6] आश्चर्य नहीं कि लेखिका ने 'सनशाइन' को दोनों पुस्तकों में शामिल किया है। इस फिल्म में जिस ताकत से स्त्री मुक्ति का चित्रण है वह इस पुस्तक में शामिल करने के योग्य है। यहाँ नारीवाद वैलेरी, ग्रेटा, वैलेरी की सास जैसी स्त्री पात्रों के वजूद न का अविभाज्य अंग है न कि ऊपर से थोपे गए सिद्धांत के रुप में सामने आया है।

अन्य फिल्मों की बात करें तो लेबनान में बनी नादियाल बाकी की 'कैरेमल' है। इसमें अलग–अलग स्वभाव की पाँच स्त्रियों के जीवन और बहनापे को दिखाया गया है। अगोरा फिल्म में विदुषी हिपेशिया एलेक्जेंड्रिया की लाइब्रेरी को जलने से बचाने का प्रयास करती है। 'द क्वीन' प्रिसेस डायना की मृत्यु के बाद के एक सप्ताह का घटनाक्रम है। इसमें प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर एवं महारानी के व्यवहार एवं सोच के अंतर को दो पीढ़ी के मतभेद के रुप में देख सकते हैं। 'टूवीमेन' का कथानक इटली के साहित्यकार एल्बर्टो मोराबिया के उपन्यास पर आधारित है। फिल्म में युद्ध के दौरान माँ और बेटी दोनों का सैनिक बलात्कार करते हैं। माँ लाचार है तो बेटी दुःखी कि माँ उसे बचा नहीं पाई। बाद में जब वे दोनों गले मिलती है तो लेखिका उसे माँ और बेटी का नहीं बल्कि दो स्त्रियों का गले मिलना बताती हैं। 'वाजदा' में रियाद में रहने वाली 10 साल की अल्हड़ किशोरी वाजदा की साईकिल खरीदने एवं पड़ोसी लड़के अब्दुल को हराने की छोटी सी लालसा के माध्यम से निर्देशिका है फा अल मंसूर ने स्त्री लालसा को स्वर दिया है। वाजदा की माँ बेटा पैदा न कर पाने के कारण पति एवं परिवार से उपेक्षित होकर पीड़ित तो है किन्तु पति को रिझाने के लिए लाल ड्रेस न खरीद कर वाजदा को साईकिल दिलाती है। यह परंपरागत समाज में स्त्री की अपनी विवशता के खिलाफ विद्रोह की कहानी है। 'अन्ना कारेनिना', 'मादाम बॉबेरी, ''द स्कारलेट लेटर'' नैतिकता के दोहरे मूल्यों को धत्ता बताकर स्त्री की अपनी शर्त्तों पर जीने की जिद्द है।

'द पियानोटीचर : स्त्री की दमित, इच्छाओं का उच्छ्वास', 'जेन एयर : प्यार की तलब', 'द पियानो : स्त्री भावनाओं की अभिव्यक्ति', अनंत रात्रि : तोलस्तोय श्रीलकां में', 'मदर ऑफ जार्ज : बेटे की चाहत,' 'द जापानीज वाइफ :' जापानी पत्नी वाया पत्र,' रोजेटा : सार्थकता की तलाश, 'बेंडइट लाइक बेखम : ऐसा बेंड किया मजा आ गया,' द चाइनीज बोटानिस्ट डॉटर्स : प्राकृतिक प्रेम का अंजाम 'द स्टोनिंग ऑफ सोराया एम : संगसार से शर्मसार तक, अलिफः ज्ञान का पहला अक्षर,' 'एटोनमेंट : झूठ, तबाही और पश्चाताप' इन सभी पर लिखे उपन्यासों एवं बनी फिल्मों का सार्थक एवं रोचक विश्लेषण पुस्तक में मिलता है। लेखिका ने इसके माध्यम से दुनिया के अलग–अलग देशों एवं काल खंडो की स्त्री पात्रों के संघर्ष एवं जिजीविषा का जो आख्यान रचा है वह पाठक के मन को बॉधता है एवं वेदना की ऐसी पूँजी देता है जो ज्ञान का विस्तार कर मन को अधिक न्यायशील बनाता है जहाँ स्त्री–पुरुष तुला में समान नजर आते हैं।

उनकी अन्य किताबों की तरह इस किताब में दिए गए परिशिष्ट काफी ज्ञानवर्द्धक एवं रोचक हैं। पहला परिशिष्ट विश्व की प्रसिद्ध महिला फिल्म निर्देशकों एवं दूसरा परिशिष्ट भारत की प्रसिद्ध महिला फिल्म निर्देशकों की उपलब्धियों से पाठकों को अवगत कराता है। फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में आरंभ में हाशिये पर रहीं स्त्री निर्देशकों की परिधि से केन्द्र तक की यात्रा का साक्षी थे दोनों परिशिष्ट हैं। 'अपनी बात' में लेखिका का बाल सुलभ

उच्छ्वास हृदय को छूता है कि उन्हें फिल्म देखकर मजा आया, लिखने में भी आनंद मिला। बचपन से अब तक के फिल्म प्रेम एवं फिल्में देखने की रोचक यात्रा का वर्णन दिमाग को तरंगित है एवं स्माईल को चौड़ी करता है। बतौर आलोचक मेरा विश्वास है कि पाठक इस पूरी पुस्तक को पढ़कर आनन्द का अनुभव करेंगे एवं वैश्विक स्त्री संघर्ष को परदे पर कैसे उतारा गया है यह जानने के लिए इन फिल्मों को खोज–खोजकर देखना पसंद करेंगे।

संदर्भ सूची :–

1. उपमा ऋचा, हिन्दी सिनेमा और आम आदमी का कैथेरसिस, अहा! जिंदगी, जून 2013, पृष्ठ सं0 42
2. डॉ. विजय शर्मा, अफ्रो–अमेरिकन साहित्य : स्त्री स्वर, पृष्ठ सं0 – 62
3. डॉ. विजय शर्मा, स्त्री साहित्य और विश्व सिनेमा, पृष्ठ सं0 – 147
4. वही, पृष्ठ सं0 : 156
5. वही, पृष्ठ सं0 221
6. डॉ. विजय शर्मा, सिनेमा और साहित्य, नाजी यातना शिविरों की त्रासद गाथा, पृष्ठ सं0 –144

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 124-129

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Cultural Criminology

Sanjeev Kumar Nimesh
Assistant professor, School of Law, IEC University, Baddi, Himachal Pradesh
Kumar Vivek Kant
LLM , School of Law, IEC University, Baddi, Himachal Pradesh

Abstract :-

As an emergent orientation in sociology, criminology, and criminal justice, cultural criminology explores the convergence of cultural and criminal pro-cesses in contemporary social life. Drawing on perspectives from cultural studies, postmodern theory, critical theory, and interactionist sociology, and on ethnographic methodologies and media/textual analysis, this orientation highlights issues of image, meaning, and representation in the interplay of crime and crime control. Specifically, cultural criminology investigates the stylized frameworks and experiential dynamics of illicit subcultures; the symbolic criminalization of popular culture forms; and the mediated con-struction of crime and crime control issues. In addition, emerging areas of in-quiry within cultural criminology include the development of situated media and situated audiences for crime; the media and culture of policing; the links between crime, crime control, and cultural space; and the collectively em-bodied emotions that shape the meaning of crime.

Key word :- Emergent, Pro-cesses

INTRODUCTION :-

The concept of "cultural criminology" denotes both specific perspectives and broader orientations that have emerged in criminology, sociology, and criminal justice over the past few years. Most specifically, "cultural criminology" represents a perspective developed by Ferrell & Sanders (1995), and likewise employed by Redhead (1995) and others (Kane 1998a), that interweaves particular intellectual threads to explore the convergence of cultural and criminal processes in contemporary social life. More broadly, the notion of cultural criminology references the increasing analytic attention that many criminologists now give to popular culture constructions, and especially mass media.

Cultural Criminology examines and describes crime and forms of crime control as cultural products. Criminality and actors in crime control are understood as creative constructs that find expression in symbolically mediated cultural practices.

Cultural criminology is not a crime theory in the narrower sense. Rather, it is a theoretical current that has emerged in the English-speaking world and, based on cultural studies and critical theories of criminality, understands deviance and phenomena of crime control as an integrationist, symbol-mediated process and analyses them with recourse to primarily ethnological research methods. Cultural criminology is a subfield in the study of crime that focuses on the ways in which the "dynamics of meaning underpin every process in criminal justice, including the definition of crime itself.1" In other words, cultural criminology seeks to understand crime through the context of culture and cultural processes.2 Rather than representing a conclusive paradigm per se, this particular form of criminological analysis interweaves a broad range of perspectives that share a sensitivity to "image, meaning, and representation" to evaluate the convergence of cultural and criminal processes.

Theoretical perspective :-

Cultural Criminology examines and describes crime and forms of crime control as cultural products. Criminality and actors in crime control are understood as creative constructs that find expression in symbolically mediated cultural practices. Members of subcultures, control agents, politicians, state and private security agencies, media producers and recipients, commercial enterprises, and other social actors attribute meanings to these cultural practices that become the meaningful and justifying basis for their own actions. Cultural criminology sees its task in the analysis of this never-ending process of interpretation, reinterpretation and de-construction. Cultural Criminology does not see itself as a theory of crime in the narrower sense, but rather as a paradigm or perspective approach to phenomena of crime and criminalization, paying particular attention to images, symbols, representations and self-staging.

In analogy to Cultural Studies' claim to point out and analyze the reciprocal, symbol-mediated relationships between actors, Cultural Criminology is located as a qualitatively oriented social science that draws on the methods of ethnography and textual and content analysis (see: Ferrell, 1995): Cultural theories of crime provide distinct frameworks to understand the influence of human agency, social forces, and peers on behavior. The dominant frameworks argue that culture is a set of values, beliefs, and actions that are learned through interactions with others.

Crime as Culture :-

Deviant subcultures are characterized by a system of symbols (slang expressions, appearance, style – "stylized presentation of self" – Ferrell, 1999). Belonging to a subculture requires the ability

to construct and deconstruct this system of collective codes and practices. In addition, symbolic communication often takes place outside face-to-face interactions (e.g. hackers, graffiti sprayers, drug couriers, etc.). Cultural criminology is a subfield in the study of crime that focuses on the ways in which the "dynamics of meaning underpin every process in criminal justice, including the definition of crime itself." In other words, cultural criminology seeks to understand crime through the context of culture and cultural processes.

Culture as Crime :-

This thematic area includes the criminalization of cultural products and artists. The analysis focuses on the one hand on the distinction between so-called high culture (i.e. forms of culture that are primarily popular with the dominant social classes) and popular culture on the other. The criminalization of cultural products and forms mainly affects popular culture. However, there are isolated examples where criminalization also affects art products of so-called high culture (e.g. photographs by Robert Mapplethorpe and Jock Sturges are branded as pornographic). On the other hand, this stigmatization and criminalization mainly affects artists who belong to social minorities or subcultures (e.g. punk musicians, black rap musicians, gay and lesbian artists, etc.).

Media Constructions of Crime and Crime Control :-

This third major thematic focus and is dedicated to the analysis of the reciprocal mechanisms of action of the media and the judicial system. Building on the works of Howard S. Becker on "Moral Entrepreneurship" (1963) and Albert Cohen (1972/1980) on his concept of moral panics and the construction of folk devils, media coverage of crime phenomena is analyzed. The interdependence of the media and law enforcement agencies is at the centre of this analysis. While the media are based on statements and data provided by police and courts, the media reports resulting from this information convey the delivered (desired) reading. In addition, this relationship of dependency plays a role in relation to agenda setting, i.e. the determination of which crime phenomena are given news value and – equally relevant – to which phenomena and events no media attention is paid. As a final aspect in this thematic focus, to which cultural criminology pays specific attention, the media construction of crime as an entertainment product must be mentioned.

Political dimension of culture, crime and cultural criminology :-

The fourth major thematic area, Cultural Criminology, is dedicated to the analysis of power relations in which media, social control, culture and crime stand: Deviant subcultures become the object of stately surveillance and control or are subject to a process of commoditization and become the object of hegemonic culture. In "cultural wars", the alternative art establishment and established artists argue about the aesthetic value of the works, declare alternative art a crime, and take action

against the artists. The censorship of politically motivated artists represents the extreme case of these arguments about the hegemonic interpretation of aesthetics. Mass media succeeds in focusing on crimes and forms of social control by focusing on or, alternatively, ignoring certain themes. In an alliance with the state system of crime control, thematic fields are trivialized or dramatized, thus supporting a desired discourse/political agenda. The television landscape constructs "hundreds of tiny theatres of punishment" (after Foucault in Cohen 1979: 339) in reality shows, court documentaries and crime series, in which ethnic minorities, followers of youthful subcultures, gays and lesbians play the villains who deserve just punishment. Cultural Criminology makes the sub cultural counter-movements the subject of discussion, in which social criticism and resistance are shown and which in turn are the subject of counter-movements (resistance as counter-movement to hegemonic culture but also as thrill-seeking activity).

Key terms of Cultural Criminology :-

In almost all societies one finds ritualized and to varying degrees institutionalized forms of excess. From the celebration of Osiris in ancient Egypt, to the Greek festival in honor of Dionysus, to celebrations in ancient Rome in honor of the deities Kalends and Saturnalia, to the carnival period still celebrated today (whose direct origins date back to the Middle Ages), all these festivities have in common that an in stitutionalised free sphere is created. During this fixed period of time, otherwise valid norms and power relations are abolished: Class differences, gender differences and the social order are turned upside down (fool becomes king, laymen preach as bishops; women storm the town hall and take over the government, etc.). All irrational, senseless and ordinary behavior is legitimate and the participants do not have to fear sanctions.

The time of carnival is a time of delimitation, ecstasy and excess, facing the dominant attitude of limitation and reason. The authors of Cultural Criminology argue that these ritualized times of delimitation have lost their meaning and power in modern societies and can at best serve as a commoditized confirmation of the ruling order.

Instead, postmodern societies have produced a series of cultural practices and activities that have a carnivalesque character (satire events on television, body modification, S&M practices, raves, consumption of soft drugs/ party drugs, gang rituals, festivals, extreme sports, partly also political demonstrations, joyrides (reclaim your streets) – activities are not originally carnivalesque but contain elements of per formative pleasure and oppose the dominant attitude towards reason and sobriety.

Criminological Verstehen :-

The concept of criminological Verstehen (Ferrell & Hamm, 1998) goes back to the German sociologist Max Weber (here: Verstehende Soziologie). At the centre of understanding (or

interpretative) sociology/ criminology is social action. Social action is constitutive for social development. The focus is on the acting actors and their respective constructions of meaning that underlie their actions. The task of understanding or interpretive sociology/criminology is to analyse these subjective constructions of meaning and their deconstruction, taking into account the social and historical framework conditions.

Style :-

The term style refers to the sociological theoretical tradition of symbolic interactionism (George H. Mead). According to symbolic interactionism, interactions are characterized by symbols that express themselves primarily in social objects, relationships and situations. The symbols have no meaning as such. Only in interaction do social actors communicate through language, gestures and facial expressions about the interpretation and assignment of meaning to the symbols. The meaning of a symbol or the interpretation of the meaning structure of this symbol is synonymous with the adoption of values and motifs, which goes hand in hand with the socially predominant meaning structure of a symbol. Both the conferring of meaning (i.e. the construction of symbols) and the perception and decoding (i.e. the deconstruction) of symbols is learned in the course of the socialization of a member of society.

"Style" in the sense of Cultural Criminology could be described as a collection of symbols and their respective attribution of meaning. Above all (youthful) subcultures are characterized by a complex system of symbols and their shared attribution of meaning. Style is thus far more than just an aesthetic category. Belonging to the subculture rather requires knowledge about the meaning of the respective symbol and thus the ability to decipher this symbol according to the meaning ascribed within the subculture (e.g. the "reading" of graffiti, but also e.g. the meaning of certain sports and training jackets as a sign of a gang membership). The construction and meaning of symbols within a subculture often takes place in a conscious departure from the usual hegemonic attribution (e.g. the oversized suits of the "Zoot Suiter", see illustration) and refers to the social situation of the subculture members and their attitudes towards systems of norms and values that are shared by the majority of society.

Implication for Criminal Policy :-

With the explicit reference to the Birmingham School of Cultural Studies and the tradition of (British) Critical Criminology ("New Criminology"), and not least to interactions (American) sociology, the authors of Cultural Criminology place themselves in a left-wing political spectrum. In agreement with representatives of labeling theory, Marxist and feminist theories of crime (see: Conflict-oriented theories of crime), Cultural Criminology understands crime and crime control as

the result and consequence of attribution processes. The main implication of this analysis in terms of criminal policy is a departure from the punitive turnaround in criminal policy. Instead of increasingly criminalizing and (increasingly harshly) punishing other persons (groups) and actions, the authors of Cultural Criminology advocate an understanding of socially marginalized groups and for more social justice.

Critical Appraisal & Relevance :-

Although cultural criminology does not claim to be a self-contained theorem, it is subject to various criticisms: the program is too vague, the methodological approach too arbitrary, crimes are played down, and integration with Marxist theories is inadequate. For a detailed discussion of this criticism, see e.g. Hayward, 2016 and Ilan, 2019.

References :-

1. Ilan, Jonathan (March 2019). "Cultural Criminology: The Time is Now" . Critical Criminology. 27 (1): 5– 20.
2. Ferrell, Jeff; Hayward, Keith J; Young, Jock (2008). Cultural criminology. An invitation. 1. publ. Los Angeles: SAGE, ISBN 9781412931267.
3. Ferrell, Jeff; Hayward, Keith J; Young, Jock (2008). Cultural criminology. An invitation. 1. publ. Los Angeles: SAGE.
4. Ferrell, Jeff (2007) Cultural Criminology. In: Ritzer, George (ed). Blackwell Encyclopedia of Sociology. Blackwell Publishing. Blackwell Reference Online.
5. Ferrell, Jeff (2004). Cultural criminology unleashed. London: Glass House.
6. Jeff Ferrell (1999). Cultural Criminology, Annual Review of Sociology, Vol. 25, pp. 395-418
7. Ferrell, Jeff; Hamm, Mark (eds) (1998). Ethnography at the edge: Crime, deviance, and field research. Boston: Northeastern University Press.
8. Ferrell, Jeff; Sanders Clinton R. (1995). Cultural criminology. Boston: Northeastern University Press.
9. Ferrell, Jeff (1995). Culture, Crime, and Cultural Criminology. Journal of Criminal Justice and Popular Culture, 3(2), S. 25-42. [Volte]
10. Hayward, Keith J. (2016). Cultural criminology: Script rewrites. Theoretical Criminology, 20(3), 297–321.
11. Ilan, Jonathan (2019). Cultural Criminology: the time is now. Critical Criminology. 1-16.
12 Presdee, Mike (2001). Cultural criminology and the carnival of crime. Reprint. London: Rutledge.

M. 7275579505

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 130-135

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

जनसंचार में हिन्दी भाषा की भूमिका

सुमेध आनन्द

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, भूपेन्द्र ना० मंडल विश्वविद्यालय, लालूनगर, मधेपुरा – 852113 (बिहार)

'संचार' शब्द 'चर्' धातु में सम् उपसर्ग लगने से बना है। जिसका अर्थ है – बढ़ना, फैलना या प्रचारित–प्रसारित होना। संचार के दो घटक होते हैं – जन(डें) और समूह(ळतवनच)। इस तरह सूचना, खबर, ज्ञान–विज्ञान, तथ्य, विचार और मनोरंजन को जन सामान्य तक पहुँचाने की प्रक्रिया को जनसंचार (Mass communication) कहा जाता है। श्रोता, प्रभाव, माध्यम और संदेश इसके चार प्रमुख तत्व माने जाते हैं, तथा संकलन, लेखन, श्रव्य–दृश्य रूपांतरण, सम्पादन, प्रकाशन अथवा प्रस्तुतीकरण इसके प्रमुख सोपान हैं। संचार वर्ग, वय, गति, मुद्रा, लिंग और परिवेश के अनुसार चरितार्थ होते हैं। संचार और माध्यमों की उपादेयता भाषा पर निर्भर करती है। स्थूल रूप से संचार भाषा के तीन भेद किए जा सकते हैं – लिखित, मौखिक और प्रतीक चिह्नों के सहारे चलने वाली देहभाषा। इसके आलावे चित्रभाषा, मशीनी भाषा, कूट भाषा, मूक बधिरों की भाषा आदि इसके गौण भेद हैं। आज जनसंचार के नए प्रकार विकसित हो गए हैं। जिसमें ब्लूटूथ, टच टेक्नोनलॉजी, वैप तकनीक, नियर फील्ड कम्यूनिकेशन तकनीक, रिसोर्स डिस्क्रिप्शन फ्रेम वर्क, वॉयस, ओवर इंटरनेट प्रोटोकॉल, जनरल पैकेट रेडियों सर्विसेज, सैटेलाईट तकनीक, पेन ड्राइव, एनिमेशन, उपग्रह संचार आदि प्रमुख हैं।

आज के युग में जनसंचार में हिन्दी भाषा की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रिंट मीडिया या इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में इस भाषा की भूमिका बढ़ती जा रही है। पाठक या दर्शक तक विधिवत सम्प्रेषण स्थापित करने के लिए भाषाओं का चयन महत्वपूर्ण हो जाता है। जन सामान्य की रूचि उनकी शैक्षिक स्थिति को देखते हुए भाषा का स्तर ठीक करना पड़ता है। अल्पशिक्षित या अशिक्षित लोगों से लेकर शिक्षित लोगों तक संप्रेषण स्थापित करने के लिए संचार भाषा हिन्दी के प्रयोजनमूलक रूप का प्रयोग होता है। आरंभ में संचार के रूप में बोलचाल की हिन्दुस्तानी भाषा के शब्दों का प्रयोग किया जाता था जो अधिक सुगम मानी जाती थी। फिर परिनिष्ठित साहित्यिक हिन्दी ने जन सामान्य तक संचार स्थापित किए। रामायण, महाभारत, वेद और पुराणों के साथ–साथ हिन्दी साहित्य के इतिहास में बीजक, रामचरितमानस, पद्मावत, आदि ग्रंथों की संचार भाषा हिन्दी ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन धार्मिक ग्रंथों पर बने धारावाहिकों ने इलेक्ट्रिक माध्यमों से जनसंचार स्थापित किए। हिन्दी अंग्रेजी मिश्रित संकर भाषा जिसे 'हिंग्रेजी' कहा जाता है, इसका भी रेडियों और टी. वी. आदि पर धरल्ले से प्रयुक्त हो रहे हैं। जनसंचार में तकनीकों के नए–नए प्रयोगों से यह भाषा राज्यों और देशों के अतिरिक्त दूसरे देशों में भी अपना पंख पसार रहा है। अहिन्दी प्रदेशों में भी सिनेमा में प्रयुक्त भाषा हिन्दी टेलीविजन के माध्यम से संचार भाषा के रूप में महती भूमिका निभा रही है।

जनसंचार के तकनीकी माध्यमों में हिन्दी की भूमिका :–

आज भूमंडलीकरण के दौर में अखबार और रेडियों के बाद कई ऐसे तकनीकी माध्यमों में हिन्दी का प्रयोग वैश्विक स्तर पर बढ़ा है। मोबाईल और कम्प्यूटरों में यूट्यूब, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप्प आदि सोशल साईट्स के माध्यमों में संचार भाषा हिन्दी का प्रयोग व्यापक स्तर पर हो रहा है। टेलीविजन पर सिनेमा, साहित्य, नृत्य, शिक्षा, ज्ञान–विज्ञान, समाचार चैनलों पर कृषि और रोजगार आदि की खबरों को संचार भाषा हिन्दी के रूप में प्रचारित–प्रसारित होना हिन्दी की भूमिका को रेखांकित करता है।

जनसंचार में भी हिन्दी का प्रयोजनमूलक स्वरूप काम करता है। सारे संसार में संचार और सूचना का विस्फोट हो रहा है। हिन्दी भाषा के सामने भी अनेक चुनौतियाँ हैं। अब हम मुद्रण युग से बाहर इलेक्ट्रॉनिक युग में आ रहे हैं। टैलेक्स, फैक्स और टेलीप्रिंटर का भी व्यापक प्रयोग हो रहा है। आज टेलीविजन पर हिन्दी कार्यक्रमों की भरमार है। समाचारों के चैनल भी बहुत बढ़ गए हैं। अधिक से अधिक विज्ञापनों का हिन्दी में आना इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी भाषा–भाषी समाज दुनिया भर की कम्पनियों के निशाने पर है। यह हिन्दी की स्थिति को मजबूत करता है। हिन्दी फिल्मों में भाषा की व्यापक शैलियाँ प्रयुक्त हुई हैं और आज भी हो रही हैं। टेलीविजन के धारावाहिकों में हिन्दी के विविध रूप मिलते हैं। कम्प्यूटर और हिन्दी में देवनागरी एक वैज्ञानिक लिपि है और इस लिपि में कम्प्यूटर पर काम करना कठिन नहीं है। अमेरिकी वैज्ञानिक नाम्स चाम्सकी ने संस्कृत और नागरी को सबसे अधिक वैज्ञानिक माना है। अब कम्प्यूटर की तकनीकी चुनौती का हिन्दी ने सामना कर लिया है। प्राथमिक शिक्षा से लेकर सभी अनुशासनों में उच्चस्तरीय शिक्षा तक की सारी व्यवस्था अब संगणकों के माध्यम से की जा सकती है। संचार भाषा के रूप में हिन्दी की मजबूत स्थिति को देखते हुए सूर्यप्रसाद दीक्षित लिखते हैं :–

"मल्टीमीडिया के इस युग में हिन्दी ने मुद्रित समाचार पत्रों की भाषा के स्तर से और ऊपर उठकर स्वयं को रेडियो, टी.वी., इण्टरनेट के उपयुक्त ढाल लिया है। उसमें मीडिया लेखन अर्थात् पटकथा, फीचर, वार्त्ता, रिपोर्ताज, संवाद, समीक्षा, समाचार – लेखन, प्रचार, साहित्य–सृजन आदि इन दिनों सफलता के शिखर पर हैं। वाचिक या उच्चरित भाषा के रूप में हिन्दी ने डबिंग, रूपान्तरण, कमेण्ट्री, कम्पेयरिंग, उद्घोष और वाचन कला में अप्रत्याशित सफलता अर्जित की है। विगत दशकों में मीडिया भाषा के रूप में अंग्रेजी सहित अन्य भाषाओं को बहुत पीछे छोड़ दिया है।"[1]

शिक्षण, अनुसंधान, प्रशासनिक कार्य, मूल्यांकन तथा शिक्षा से संबंधित लगभग सभी कार्यों में हिन्दी में संगणकों का उपयोग काफी बढ़ गया है। भाषा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में तकनीकी हिन्दी का प्रभाव बढ़ता जा रहा है और इसके लिए कम्प्यूटर एक शक्तिशाली तंत्र बन गया है।

इंटरनेट और हिन्दी :–

उपग्रहों और कम्प्यूटर की संचार भाषा हिन्दी ने आधुनिक और उपभोक्तावादी जीवन में क्रांति ला दी है। कम समय में अधिकाधिक कार्यों का निपटारा ससमय हो जाता है। डिजिटल टेक्नोलॉजी के द्वारा इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों से संचार भाषा हिन्दी में समाचार घर–घर पहुंचने लगे हैं। इंटरनेट दुनियां भर में अलग–अलग जगहों

पर लगे कम्प्यूटरों को जोड़कर एक व्यापक प्रणाली बना चुका है। हिन्दी ने सबसे विकसित इंटरनेट प्रौद्योगिकी की चुनौतियों का भी सामना करना आरम्भ कर दिया है। इंटरनेट पर भारतीय भाषाओं के आगमन का पहला अवसर हिन्दी पोर्टल वेब दुनिया को मिला। हमारे जीवन के दिन–प्रतिदिन के कामों में इंटरनेट की उपयोगिता निरंतर बढ़ती चली जा रही है। अब हम बातचीत और गपशप से लेकर शोधपरक सूचनाओं, उपयोगी डाटा, मनोरंजक संदेश और उपयोगी जानकारी आदि सब कुछ आपस में शेयर कर सकते हैं। इंटरनेट पर हिन्दी और देवनागरी लिपि के संरक्षण के भविष्य को लेकर 'प्रयोजनमूलक हिन्दी और पत्रकारिता के नए परिप्रेक्ष्य' पुस्तक में इसका उल्लेख किया गया है – "भारत सरकार द्वारा देवनागरी लिपि में निर्मित वेबसाइट का मानकीकरण होने पर ही उन्हें बाजार में उपलब्ध कराया जाए। मान्यता प्राप्त फांट लोडिंग, प्रशिक्षण, वितरण, शब्दकोश निर्माण की व्यवस्था की जाए। विज्ञान, चिकित्सा विधि, कृषि, स्वास्थ्य, जल–संवर्द्रन खेल–कूद, यातायात, रेलवे, व्यवसाय, उपभोक्ता संरक्षण साक्षरता, परिवार नियोजन आदि विषयों के लिए वेबसाइटों एवं फांटों का निर्माण किया जाए। इन के प्रचार–प्रसार के लिए समाचार पत्रों इलेक्ट्रोनिक मीडिया में स्थान निर्धारित हो।

इस प्रकार इंटरनेट के हिन्दीकरण से सूचना क्रांति में भारतीयता और भारतीय संस्कृति को संरक्षण प्राप्त होगा एवं राष्ट्रीयता की प्रतिष्ठाभी।"[2]

प्रोटोकॉल के माध्यम से हिन्दी की पत्रकारिता के विभिन्न आयामों को प्राप्त किया जा सकता है। शब्द संसाधन में कामकाज की जो भी सुविधा और गुण मौजूद रहे हैं, वे सभी हिन्दी के लिए उपलब्ध किए जा रहे हैं। अब हिन्दी में टेक्स्ट मेसेज, फैक्स और ईमेल आदि भेजना संभव हो गया है। सभी सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों में ईमेल को वैधानिक मान्यता मिल गयी है। दिल्ली से गृह मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय, और विदेश मंत्रालय आदि ईमेल के माध्यम से त्वरित कार्रवाई या अनुसंधान का आदेश/निर्देश देते रहते हैं। कोरोना जैसी महामारी के समय भी शासन–प्रशासन को चुस्त–दुरूस्त एवं सजग रहने के लिए समय–समय दिशा–निर्देश ईमेल और व्हाट्सएप्प आदि के माध्यम से देकर जान–माल की रक्षा हेतु उचित कदम उठाते रहे हैं। 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' द्वारा जारी एडवाइजरी भी जन–जन तक संचार भाषा हिन्दी के माध्यम से ही संभव हो सका है।

मोबाईल और हिन्दी :–

मोबाईल उपकरणों में बहुभाषिक सुविधा उपलब्ध होने के कारण नोकिया कंपनी ने अपने हैंडसेट– 1100, 1110, 1112, 1600, 1800, 2310, 6030, 6070 आदि में हिन्दी भाषा को शामिल किया थाऔर इसके बाद प्रायः सभी एण्ड्रॉयडकम्पननियों ने मोबाईल में हिन्दी भाषा को शामिल किया है। आजसैमसंग, रेडमी, विवो, ओप्पो और एप्पल आदि लगभग सभी मोबाईल हिन्दी में संदेश भेजने और पाने में सक्षम है। हिन्दी पाठ्यलेखन की विधि नोकिया कंपनी ने प्रयोक्ता मार्गदर्शिका के माध्यम से हिन्दी भाषा में प्रस्तुति दी है। हिन्दी भाषा के साथ–साथ अंग्रेजी भाषा के वाक्यों का मिश्रण एस. एम. एस. में किया जा सकता है। मोबाईल पर विदेशी पर्यटकों के लिए अंग्रेजी हिन्दी शब्दकोश, अनुवाद, वीडियो आदि की सुविधा उपलब्ध हो गई है। इसमें पर्यटन, बाजार, सामाजिक प्रसंग पर अनेक हिन्दी के विकल्प उपलब्ध किए गए हैं।

सूचना और संचार का निरन्तर विकास हो रहा है। इस संचार प्रक्रिया ने एक ग्लोबल विलेज की स्थापना

कर दी है। सूचना प्रौद्योगिकी और आधुनिक संचार क्रांति के इस युग में यदि हम यह स्वीकार कर लें कि भारत की एक संपर्क भाषा आवश्यक है और वह केवल हिन्दी ही हो सकती है, तो हिन्दी उस चुनौती का सामना करने में सामर्थ्यवान भाषा है। आज टेलीविजन, वीडियो और इंटरनेट ने सारी दुनिया को बदल कर रख दिया है। इससे भारत भी अलग नहीं रह सकता। कई चुनौतियों के बाद भी संचार भाषा के रूप में हिन्दी द्रुत गति से विकसित हो रही है और इसका एक अर्न्तर्राष्ट्रीय स्वरूप भी बन गया है। प्रौद्योगिकी की चुनौतियों का विभिन्न जनसंचार माध्यमों में हिन्दी ने अपनी सामर्थ्य से सामना किया है। इस प्रकार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में संचार भाषा हिन्दी विज्ञान और टेक्नोलॉजी की सम्मुन्नत भाषा बन गई है।सूर्यप्रसाद दीक्षित के अनुसार – "भारतीयों की भाषा हिन्दी को विज्ञान, टेक्नोलॉजी, उद्योग, विपणन, शिक्षा – माध्यम, जनसंचार और कार्यालयी कामकाज के लिए प्रयोजनीय बनाया जा सकता है, बशर्ते शुद्ध नीयत के अनुसार हिन्दीकरण का एक 'राष्ट्रीय एजेण्डा' तैयार कर लिया जाये और युद्धस्तर पर इस प्रबन्धन विज्ञान को लागू कर दिया जाये।"[3]

जनसंचार और हिन्दी भाषा का तकनीकी संदर्भ :-

वैश्विक स्तर पर जनसंचार के माध्यमों में परिवर्त्तन हुआ है। जब हम जनसंचार में तकनीक के प्रयोग या तकनीकी संदर्भ पर विचार–विमर्श करने पर यह पाते हैं कि जनसंचार में तकनीकी संदर्भों में हिन्दी भाषा का संबंध आधुनिक काल से है। परम्परागत जनसंचार माध्यमों में तकनीक का प्रयोग नहीं होता था। लेकिन आधुनिक युग में वैज्ञानिक खोजों के बाद तकनीक में वृद्धि हुई और जनसंचार के विभिन्न माध्यमों में इसका इस्तेमाल किया जाने लगा। प्रिंट मीडिया से लेकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में तकनीक के इस्तेमाल से ही दूर–दूर तक ससमय खबरों का आदान–प्रदान संभव हो सका। आज 21वीं सदी में भूमंडलीकरण की अवधारणा को विकसित करने में जनसंचार भाषा हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान है। अखबार, रेडियो, टेलीविजन और सिनेमा आदि में तकनीकी रूप से हिन्दी का उपयोग कर संचार को सुगम बनाया गया। कम्प्यूटर से इंटरनेट जुड़ने के बाद संचार की दुनियाँ में एक नई क्रांति आ गयी। इस क्रांति में हिन्दी भाषा भी कदम से कदम मिलाकर चल पड़ी। आज सोशल मीडिया में हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान है। फेसबुक, ट्वीटर, कू आदि एप्लीकेशन पर बड़े–बड़े सेलिब्रिटी अपनी बात को आम आवाम तक पहुँचाने के लिए हिन्दी भाषा का प्रयोग कर रहे हैं।

डॉ० पंडित बन्ने संचार के क्षेत्र में हिन्दी के निरंतर विकास को देखते हुए लिखते हैं – "सामाजिक और बौद्धिक आवश्यकताओं को लेकर लेकर हर विषय का निरूपण–राजनीतिक, व्यावसायिक, आर्थिक, वैज्ञानिक, सामाजिक रीति रिवाज संबंधी, साहित्य और क्रीड़ा जगत संबंधी, मनोरंजन, बाल–बच्चे और वयस्कों से संबंधित पत्रिकाओं में आवश्यक साबित हुआ। और आवश्यकतानुसार, जल्दबाजी में ही सही, नये–नये शब्द प्रयोग गढ़ जाने लगे और दिन–प्रतिदिन पत्रिका दुनिया की ओर से भी हिंदी भाषा का निरंतर संवर्धन होनेलगा।"[4]

आज राजनेता, फिल्मी सितारे, वैज्ञानिक और विभिन्न सरकारी विभागों का अपना सोशल साइट्स पर अकाउंट है, जिसके माध्यम से हर तरह की योजनाओं से संबंधित खबरो को सीधे जन–जन तक पहुँचा दिया जाता है तथा बड़े–बड़े शैक्षणिक संस्थान प्रवेश, परीक्षा और परिणाम से संबंधित सूचनाओं को तकनीक के माध्यम से छात्रों व उनके अभिभावकों तक पहुँचाने के लिए कम्प्यूटर, टेलीविजन आदि तकनीकों का प्रयोग करते

हुए सोशल साइट्स के द्वारा संचार स्थापित करते हैं। जिसमें हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग देखा जा सकता है। परम्परागत कॉलेज व विश्वविद्यालयों के साथ आई.टी.आई., एन.आई.टी., आई.आई.टी. और मेडिकल कॉलेज जैसे संस्थान भी सूचना जन–जन तक पहुँचाने के लिए हिन्दी भाषा को संचार का माध्यम बना रहे हैं। वैज्ञानिक भी मौसम का पूर्वानुमान कर किसान, मजदूर, व्यापारी आदि तक को जानकारी देने के लिए संचार भाषा हिन्दी का प्रयोग कर रहा है। आम जनमानस के लिए संचार भाषा के रूप में हिन्दी प्रतिष्ठित हो रही है। व्हाट्सएप्प के द्वारा हिन्दी में संचार स्थापित करने के लिए इमेज, पी.डी.एफ., सॉर्ट विडियो आदि में भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग किया जा रहा है। यूट्यूब के द्वारा आज तमाम आवश्यकताओं से जुड़े हुए चीजों की पूर्ति हो रही है। जो जिस कला में निपुण है, वह अपनी बातों या कला के द्वारा आम जनमानस तक पहुँच रहे हैं, चाहे बात शिक्षा की हो, मेडिकल की हो, इंजीनियरिंग की हो या कारीगरी की हो, सब की पूर्ति बड़ी आसानी से हो रही है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी का प्रचार–प्रसार भी व्यापक स्तर पर हो रहा है। जिसमें जनसंचार माध्यमों अंग्रेजी भाषाई पत्रिकाओं की प्रतिस्पर्धा में हिन्दी काफी आगे निकल गयी है। हिन्दी में ई–समाचार पत्र और पत्रिकाओं की भरमार है। जिससे मनुष्य के जीवन के विविध संदर्भों को बढ़ावा मिल रहा है।

संचार भाषा हिन्दी के माध्यम से बड़े–बड़े राजनेता सत्ता को प्राप्त करते हैं, लेकिन हिन्दी के सामासिक संस्कृति के वहन का जिम्मा नहीं लेते। हिन्दी में भाषणों के दम पर हिन्दी प्रदेश के बड़े भूभाग को सिर्फ वोट बैंक बनाते हैं, पर हिन्दी के लिए संवैधानिक स्तर पर बड़ा कदम उठाने से हिचकते हैं, ताकि अहिन्दी भाषी प्रदेश भी नाराज न हो। हिन्दी अपनी पहचान अपने दम पर बना रही है। इस भाषा की वैज्ञानिकता इस भाषा को मजबूती प्रदान कर रही है। फिल्मी सितारे हिन्दी फिल्मों के माध्यम से लोकप्रियता पाते हैं, लेकिन वे केवल पर्दे तक ही सिमट कर रह जाते हैं। फिल्म के प्रमोशन आदि की बैठकों में मीडिया के सामने अंग्रेजी में बोलने में गौरवान्वित महसूस करते हैं। हिन्दी उन्हें रोजी–रोटी प्रदान करता है लेकिन वे अंग्रेजी का मोह नहीं छोड़ते। बी. बी. सी. द्वारा आयोजित 'हिन्दी का बदलता स्वरूप, नए समाचार माध्यम, नई चुनौतियाँ' नामक विषय पर आयोजित सेमिनार में मशहूर पत्रकार रजत शर्मा हिन्दी भाषा की त्रासदी पर अपनी बात इस प्रकार रखते हैं – "नहीं जाता है, पुराने को गिराया न जाए। हमारी हिन्दी भाषा के साथ है, अंग्रेजी के साथ है, हम अंग्रेजी को छोड़ना चाहते हैं हिन्दी से जुड़ा रहना चाहते हैं।

आज हिन्दी बहुत बड़ा मार्केट है, लेकिन अंग्रेजी को छोड़ नहीं पा रहे हैं इस चौराहे पर, इस क्रास रोड पर हम खड़े हैं। ये हिन्दी ब्राडकॉस्टिंग की हिन्दी, टेलीविजन की, सबसे बड़ी दिक्कत है, इसीलिए जब हम भाषा का इस्तेमाल करते हैं उसे सरल बनाने के लिए कोशिश करते हैं अंग्रेजी में हिन्दी शब्दों का इस्तेमाल करना शुरू करते हैं और हिन्दी के शब्दों का इस्तेमाल करना शुरू कर रहे हैं। अपनी सुविधा के लिए हम कह देते हैं कि कोशिश करते हैं। हम अंग्रेजी का मोह नहीं छोड़ पा रहे हैं क्योंकि पिछले चालीस–पचास वर्षों में मुझे लगता है अंग्रेजी पत्रकारिता की क्रेडिबेलिटी विश्वसनीयता ज्यादा बनी है, हिन्दी पत्रकारिता की विश्वसनीयता ज्यादा नहीं बनी है। हिन्दी पत्रकारिता को प्रिंट और टी.वी. दोनों के लिए और सही बात है हिन्दीवाले को हीन भावना से देखा जाता है, इसीलिए वो सब प्रोग्राम तो हम हिन्दी में करते हैं लेकिन जहाँ पर बातचीत होती है, किसी ड्राइंग

रूप में, तो हम अंग्रेजी बोलते हैं, हम अपनी इमेज वही बनाना चाहते हैं।"[5]

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि जनसंचार में हिन्दी की महत्वपूर्ण भूमिका है। जनसंचार के प्राचीन और नए माध्यमों में हिन्दी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रेडियों और अखबारों के बाद साहित्य और सिनेमा का धारावाहिक रूपांतरण टेलीविजन के माध्यम से वैश्विक स्तर पर हिन्दी भाषा ने अपनी पहचान बनाई है। कम्प्यूटर, मोबाईल आदि के माध्यम से विज्ञान और प्रोद्यौगिकी में भी हिन्दी संचार भाषा के रूप में स्थापित है। आज के इस आधुनिक युग में सोशल साइट्स पर संचार भाषा हिन्दी का प्रयोग बड़े स्तर पर हो रहा हैं।

संदर्भ सूची :-

1. संचार भाषा हिन्दी, दीक्षित सूर्यप्रसाद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण –2012, पृष्ठ सं० – 57
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी और पत्रकारिता के नए परिप्रेक्ष्य, डॉ० विनय कुमार चौधरी और डॉ० सिद्धेश्वर काश्यप, संदर्भ प्रकाशन, मधेपुरा, संस्करण –2007, पृष्ठ सं० – 96
3. संचार भाषा हिन्दी, दीक्षित सूर्यप्रसाद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण –2012, पृष्ठ सं० – 108
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी के नए आयाम, डॉ० पंडित बन्ने, अमन प्रकाशन, कानपुर, संस्करण – 2018, पृष्ठ सं० – 108
5. नए जन–संचार माध्यम और हिन्दी, संपादक – सुधीश पचौरी, अचला शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण –2011, पृष्ठ सं० – 34

ई–मेल : sumedh21jee@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 136-140

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

योग मार्तण्ड में मंत्र योग विमर्श

वसुंधरा
शोधछात्रा, संहिता एवं संस्कृत विभाग
आयुर्वेद संकाय, चिकित्सा विज्ञान संस्थान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी–२२१००५

सारांश :–

मंत्र योग आगम और निगम शास्त्र में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। योग मार्तण्ड एक प्राचीन ग्रन्थ है जो मंत्र योग के पहलुओं को समझाता है। इस शोध पत्र में, योग मार्तण्ड पाण्डुलिपि में मंत्र योग साधना का विश्लेषण किया गया है और इसके महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई है।

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य है योग मार्तण्ड में मंत्र योग का विश्लेषण करके उनका शास्त्रीय मूल्यांकन करना है। इस प्रक्रिया में, योग मार्तण्ड में वर्णित मंत्र योग साधना के यौगिक एवं व्यवहारिक दृष्टिकोण पर प्रकाश डाला गया है। यह शोध पत्र मंत्र योग की गहनता और महत्व को समझने में सहायता करेगा।

प्रस्तुत शोध पत्र का अध्ययन विभिन्न हठ यौगिक ग्रंथों एवं योग उपनिषद पर आधारित है जैसे कि गोरक्ष संहिता, सिद्ध सिद्धांत पद्धति एवं योग चूड़ामणि व योग योगराज उपनिषद। प्रस्तुत शोध पत्र में योग मार्तण्ड का स्वरूप, विविध योग, मंत्र योग का स्वरूप, ऊँ की प्रकृति, मन्त्र योग का फल आदि विषयों का विश्लेषण किया गया है। निष्कर्ष में योग मार्तण्ड की मन्त्र योग में तथा मानव जीवन में महत्व को दर्शाया गया है।

संकेत शब्द :– योग, मंत्र योग, योग मार्तण्ड।

शोध प्रविधि :–

प्रस्तुत लेख में योग मार्तण्ड, गोरक्ष संहिता, सिद्ध सिद्धांत पद्धति एवं योग चूड़ामणि व योगराज उपनिषद का विवेचनात्मक अध्ययन द्वारा मंत्रयोग को प्रतिपादित किया गया है।

प्रस्तावना :–

योग मार्तण्ड एक प्राचीन ग्रन्थ है जो योग और आध्यात्मिक ताकि महत्वपूर्ण धारणाओं को प्रस्तुत करता है। इस ग्रंथ में मंत्र योग महत्वपूर्ण विषय है, जिसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया हैं। इस ग्रंथ के अन्तर्गत मंत्र और ध्यान को विस्तृतता से परिभाषित किया गया है।

मुख्य उद्देश्य :– 'योग मार्तण्ड' में मंत्र योग विषय को गहराई से विमर्श करना। इस विमर्श के माध्यम से इस ग्रंथ में प्रस्तुत किए गए मंत्र योग के प्रभाव, उपयोग, और अनुभव को समझने का प्रयास किया जाएगा। नए दृष्टिकोण, गहराई को जोड़कर योग और आध्यात्मिकता की गहराई को प्रस्तुत करने का यह प्रयास करेगा। मंत्र योग की परिभाषा इसके मूल तत्वों पर विचार करेंगे। मंत्र योग एक प्राचीन ध्यान प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति ध्यान

और मन को एकीकृत करने के लिए मंत्र का जप करता है। हम इस पहलु में मंत्र योग के मूल तत्वों जैसे मंत्र का चयन, ध्यान की तकनीक और मंत्र योग के उपयोग आदि पर विचार करेंगे। इस शोध पत्र द्वारा प्रस्तुत किए गए विचार योग और मंत्र योग के विषय में नई ज्ञान प्रदान कर सकते हैं और आध्यात्मिक अनुभव को समृद्ध कर सकते हैं।

मंत्र योग के लाभ :–

इस पहलू में हम मंत्र योग के विभिन्न लाभों पर चर्चा करेंगे। मंत्र योग का नियमित अभ्यास मानसिक शांति, आत्म–संयम, आत्म–जागरूकता और आत्म–विकास को बढ़ा सकता है। हम इस पहलू में मंत्र योग के विभिन्न लाभों जैसे मानसिक स्वास्थ्य, स्वयं निग्रह, ध्यान और धारणा के गुण, चित्त शुद्धि आदि पर विचार करेंगे।

योग मार्तण्ड का स्वरूप :–

योग मार्तण्ड नामक हठग्रन्थ १५वीं शताब्दी का ग्रन्थ है जो गोरक्षनाथ जी द्वारा लिखित और १८वीं शताब्दी में श्री कुलग्राम चिरस्थायी गिरिधर मिश्र जी द्वारा उधृतनाथ परंपरा का ग्रन्थ है, हठ योग साधना की मुख्यधारा शैव रही है जिसके आदिनाथ शिव आराध्य हैं तथा मत्स्येन्द्र नाथ जी और गोरक्षनाथ जी प्रमुख आचार्य माने जाते हैं जोकि नाथ योगी नाम से प्रचलित हैं।

गोरक्षनाथ जी द्वारा योग मार्तण्ड में चतुरंग योग का वर्णन किया गया है जो कि गोरक्ष नाथ जी के विभिन्न ग्रंथों से भिन्न है। यथा –

मंत्रयोगोलयश्चौवराजयोगोहठस्तथा।
योगश्चतुर्विधःप्रोक्तोयोगिनस्तत्वदार्शिभिः।।

अर्थ :– तत्वदर्शी, सूक्ष्म दृष्टि योगियों द्वारा योग के चार प्रकार बताये गए हैं जिसमें मन्त्र योग, लय योग, राज योग एवं हठ योग का वर्णन मिलता है।

मन्त्र योग (Mantra Yoga) :– मन्त्र योग मंत्रों के जाप के माध्यम से मन की शुद्धि, ध्यान और ध्येय की प्राप्ति को प्रकाशित करता है। मंत्र एक विशिष्ट ध्वनि, शब्द, या वाक्य होता है जिसे ध्याता ध्यान केंद्रित करता है। मन्त्र योग ध्यान, जप, और अंतर्मुखी ध्यान जैसी तकनीकें शामिल होती हैं।

लय योग (Laya Yoga) :– लय योग सुषुप्ति अवस्था में मन की शांति, शरीर की सुखद रहने की तकनीकों को समझाता है। इसमें प्राणायाम, ध्यान, मुद्रा, बिंदु ध्यान और नाद ध्यान जैसी तकनीकें शामिल होती हैं। लय योग शरीर, मन, और आत्मा की समर्पण और अंतर्मुखी ध्यान की प्राप्ति को प्रकाशित करता है।

राज योग (Raja Yoga) :– राज योग आठ अंगों या अष्टांग योग को प्राप्त करने के माध्यम से मन की नियंत्रण और अंतर्मुखी ध्यान की प्राप्ति को प्रकाशित करता है। इसमें यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध ारणा, ध्यान और समाधि की साधना की जाती है।

हठ योग (Hatha Yoga) :– हठ योग शारीरिक और मानसिक शुद्धि, शक्ति और शांति को प्राप्त करने के लिए विश्राम पूर्वक शरीर की आत्म–निग्रह की तकनीकों पर ध्यान केंद्रित करता है। इसमें आसन, प्राणायाम (प्राण, शुद्धि क्रियाएँ (शरीर की शुद्धि करने वाली तकनीकें), मुद्रा (शरीर की बन्धन को तोड़ने वाली तकनीकें), धारणा (ध्यान की एकाग्रता तकनीक), ध्यान (एकाग्रता में ध्यान रखने की तकनीक) और समाधि (चित्त की पूर्ण निग्रह की तकनीक) शामिल होते हैं। हठ योग शरीर, मन, और आत्मा के बीच संतुलन को सुखद बनाता है और शांति

और स्वास्थ्य को प्राप्त करने में मदद करता है।

योग मार्तण्ड में मन्त्र योग का स्वरूप :-

मंत्र परिचय :- मंत्र शब्द मन् धातु. 'ट्रन् प्रत्यय के संयोग से बना है। मन् शब्द से तात्पर्य मनन या चिंतन करना तथा = शब्द से त्राण का अर्थ ग्रहण किया जाता है।

अर्थात् – मनन चिंतन के माध्यम से मुक्ति।

'मननात्तरायतेइतिमन्त्रः'

अर्थात् वह शक्ति जो मन को बंधन से मुक्त करे वही मंत्र है।

'मंत्रजपान्मनोलयोमंत्रयोगः'

अर्थात् अभीष्ट मंत्र का जप करते–करते मन जब अपने आराध्य अपने ईष्ट देव के ध्यान में तन्मयता को प्राप्त कर लय भाव को प्राप्त कर लेता है, तब उसी अवस्था को मंत्र योग के नाम से कहा जाता है।

मंत्र योग एक विशेष प्रकार का योग है जिसमें मंत्र ध्यान की मुख्य तकनीक होती है। मंत्र एक विशेष शब्द, वाक्य, या ध्वनि होता है जिसका उच्चारण और ध्यान मन को एकाग्र करता है और आत्मा की गहराई में ले जाता है। मंत्र योग में मन को एक विशेष ध्यान बिना भटके रखने के लिए मंत्र का उच्चारण और मन की एकाग्रता पर जोर दिया जाता है।

गोरक्ष नाथ जी अपने ग्रन्थ योग मार्तंड में मन्त्र योग को परिभाषित करते हुए कहते हैं :–

ब्रह्मा विष्णु शिवा दीनां मंत्र जप विशारदैः।
साध्यते मंत्र योग स्तुवत्सराजादिभिस्तथा।।८२।।

अन्वयः : मंत्रजपविशारदैःवत्सराजादिभिः। ब्रम्ह्माविष्णुशिवादीनांमंत्र योगः साध्यते।

अर्थ :– मंत्रादि के जाप में निपुण वत्सराज आदि ऋषियों के द्वारा ब्रह्मा–विष्णु–शिव आदि का मंत्र जाप से साधन किया जाता है अर्थात् साधना की जाती है।

ऊँ की प्रकृति :-

ऊँ शब्द तीन अक्षरों के मेल से बना हैं जो स्वयं ब्रह्मा, विष्णु व महादेव का प्रतिनिधित्व करते है। ओउम् मात्र एक शब्द नहीं बल्कि अपने आप में एक पूर्ण मंत्र है।

इसका सर्वप्रथम अक्षर "अ" हैं जो मुख से निकलने वाला प्रथम अक्षर हैं व इसके उच्चारण से नाभि पर बल पड़ता हैं जो हमारी रचना को दर्शाता हैं।

द्वितीय अक्षर 'ऊ' से शरीर के मध्य भाग (नाभि–जत्रु) में कंपन होता है।

तृतीय अक्षर 'म' से शरीर के जत्रूर्ध्व भाग में कंपन उत्पन्न होता है।

वाचिक, उपांशु तथा मानस जप के माध्यम से अकार, उकार, मकार तथा इनका प्रतिनिधित्व करने वाले देवता ब्रह्मा, विष्णु और शिव का श्रद्धापूर्वक ध्यान तथा ऊँ ध्वनि का उच्चारण करना ही मन्त्र योग है।

वाचिक जाप :- ऊंची आवाज में और स्पष्ट शब्दों के साथ ऊँ मंत्र का उच्चारण करना वाचिक जाप कहलाता है।

उपांशु जाप :- उपांशु जाप में–मंत्र का उच्चारण करने वाले की जिह्वा और ओष्ठ गतिमान होते हुए दिखाई देते हैं, लेकिन आवाज नहीं सुनाई देती।

मानस जाप :– जब मन ही मन, मंत्र का उच्चारण मंत्र का जाप किया जाये तो वह मानस जाप कहलाता है।

यौगिक ग्रंथो में मन्त्र योग स्वरूप :–

तस्यवाचकः प्रणवः ऊँ।1।27। (योग दर्शन)

प्रणव शब्द परमेश्वर का वाचक इसलिए है कि 'प्रकर्षेणनूयतेईश्वरोयेनसप्रणवः अर्थात् जिसके द्वारा ईश्वर की स्तुति प्रकृष्ट रूप से की जाती है वह प्रणव है। (द.क.)

'ओ३म्' को यहाँ 'प्रणव' शब्द से संबोधित किया गया है, उसका ईश्वरोपासना में अपना विशेष महत्त्व है। इस पद में 'प्रपूर्वकणुस्ततौ' धातु का प्रयोग है। जिससे प्रकृष्ट रूप से परमात्मा की स्तुति आदि इसी शब्द से हो सकती है। परमेश्वर के दूसरे नाम तो किसी एक–एक गुण का ही बोध कराते हैं, परन्तु प्रणव' ओ३म् शब्द परमेश्वर के समस्त गुणों का बोध कराता।

वेदव्यास जी महाराज कहते हैं कि मंत्राणां प्रणवः सेतुः यह प्रणव मंत्र सारे मंत्रों का सेतु है।

ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत।

ओमितिह्युद्गायतितस्योप व्याख्यानम्। (छान्दोग्य उपनिषद्) ऊँ १।१।१।

उद्गीथ शब्द में 'उत्त्' प्राण का पर्याय है, क्योंकि प्राण की शक्ति से प्राणी उठते हैं। वाणी ही 'गी' अक्षर है, क्योंकि वाणी को 'गिरा' कहते हैं। 'थ' अक्षर अन्न है, क्योंकि अन्न के आश्रय से सम्पूर्ण प्राणी जीवित है। इस प्रकार अन्य ग्रंथों में मंत्र योग के स्वरुप का वर्णन मिलता है।

मन्त्र योग साधना का फल :–

यह योग प्राकृतिक शांति, मानसिक स्थिरता, आत्म–संयम, और आत्म–जागरूकता को बढ़ा सकता है।

मानसिक शांति :–

मंत्र योग साधना मन को शांत, स्थिर और एकाग्र करने में मदद कर सकता है। मंत्रों का जप और ध्यान शांति और स्थिरता की अवस्था में मन को ले जाता है, जो मानसिक चंचलता को कम कर सकता है।

आत्म–संयम :–

मंत्र योग साधना योगी को आत्म–संयम और इंद्रिय निग्रह में सहायता कर सकता है। मंत्र जप के माध्यम से योगी अपने मन, वाणी, और काया को नियंत्रित कर सकता है जो आत्म–संयम को प्रोत्साहित करता है।

आत्म–जागरूकता :–

मंत्र योग साधना योगी को अपनी आत्म–जागरूकता बढ़ाने में सहायता कर सकता है। मंत्रों का जप और ध्यान योगी को अपनी आत्मा की गहराई में ले जाता है और आत्म–ज्ञान और आत्म–समझ में सुधार करता है।

विमर्श :–

योग मार्तण्ड में वर्णित मन्त्र योग, हठ योग, लय योग, राज योग अभूतपूर्व नहीं है। अन्यान्य हठयोग ग्रन्थ में भी इन योग के आयामों पर विचार किया गया है, परन्तु मन्त्र योग पर योग मार्तण्ड डण्डकार का विचार अभूतपूर्व है।

वाचिक, उपांशु तथा मानस जाप के विचार के कारण योग मार्तण्ड को विशेष बनाता है।

ध्वनि के प्रकार से भी (मन्द ध्वनि, मध्यम ध्वनि, उच्च ध्वनि) अन्तःकरण में विशेष प्रभाव पड़ता है, इस अवधारणा को स्थापित किया है, जो अन्यत्र दृष्टिगोचर नहीं होता।

उपांशु जाप में मन्त्र का उच्चारण करने वाले की जिह्वा और ओष्ठ गतिमान होते हुए दिखाई देते हैं, लेकिन आवाज नहीं सुनाई देती, यह अवधारणा यह अनुभव अभूतपूर्व है।

अतः योग मार्तण्डण्डण्ड के विषयों पर इनके अद्भुत विचार पर विशेष कार्य होने आवश्यक है।

निष्कर्ष :–

योग मानवीय संवेदनाओं के शिखर तक पहुँचने का परिपूर्ण मार्ग माना गया है, ऐसे में प्राचीनकाल से लेकर मध्यकाल तक अनेकों ऋषियों, मुनियों संतों ने अपने अनुभव जन्य ज्ञान को ग्रंथों के रूप में पिरोया है। योग मार्तण्ड ऐसे ही उन सहस्र ग्रंथो में से एक है जिस पर पाठकों ने यथोचित न्याय नहीं किया। योग के अनंत विस्तार को योग मार्तण्ड उपयुक्त आकार देने का सफल प्रयास कर सकता है, इसकी मंत्र योग पर चर्चा योग जिज्ञासाओं की साधना में विशेष रूप से सहायता करती है।

सन्दर्भ सूची :–

1. गोरक्ष संहिता, गोरक्षनाथ, सं. स्वामी कुवलयानन्द, लक्ष्मी प्रकाशन, दिल्ली, २०१७
2. सिद्ध सिद्धान्त पद्धति, गोरक्षनाथ, सं. स्वामी द्वारिकादास शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, उ.प्र., २०१४
3. हठ रत्नावली, श्रीनिवास भट्ट महायोगेन्द्र, सं. प्रो. वेंकट रेड्डी, MML रेड्डी, आंध्रप्रदेश, २०११
4. घेरण्ड संहिता, घेरंड ऋषि, सं. स्वामी निरंजनानंद सरस्वती, योग पब्लिकेशन ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, २०११
5. हठ प्रदीपिका, स्वात्माराम, सं. स्वामी दिगम्बर जी, पीताम्ब रझा, कैवल्य धाम, लोनावला, महाराष्ट्र, १९९८
6. शिव संहिता, अजय कुमार उत्तम, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी, उ.प्र., २००४
7. पातंजल योग दर्शनम्, महर्षि पतंजलिव्या, स्वामी सत्यपती परिव्राजक, दर्शन योग महाविद्यालय आर्यवन रोजड, गुजरात, २००३
8. अमृतो पनिषद्, थियोसोफिकल सोसायटी, मद्रास, १९५२
9. गोरक्ष सिद्धांत संग्रह, गोपीनाथ कविराज, सरस्वती भवन, बनारस, १९५५
10. त्रिशिखि ब्राम्हणोपनिषद्, थियोसोफिकल सोसायटी, मद्रास, १९५२
11. गोरक्ष शतकम्, कुवलयानंद एवं शुक्ल, कैवल्य धाम, लोनावला, महाराष्ट्र, १९७८
12. तेजो बिन्दू पनिषद्, थियोसोफिकल सोसायटी, मद्रास, १९५२

कोष–ग्रन्थ :–

1. अमरकोश, अमरसिंह, सं. बाल–शास्त्री, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, २०१५ शब्द कल्पद्रुम राजा राधा कान्तदेव बहादुर, सं. श्री वरदा प्रसाद वसु, श्री हरिचरण वसु, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, वाराणसी, १९६९
2. वाचस्पत्यम् – गजापति राज तथा वाचस्पति, श्री तारानाथ तर्क वाचस्पति भट्टाचार्य, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, २०१८
3. संस्कृत हिंदी कोष वामन शिवराम आप्टे, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी २०१४

मो– 7310542846

ईमेल – vasupayal250@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 141-148

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

महिला सशक्तिकरण एवं राजनीतिक सहभागिता : उत्तर प्रदेश के जनपद संभल में ग्राम पंचायतों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

कविता चौधरी सांगवान

शोधार्थिनी, राजनीति विज्ञान विभाग, डॉ0 भीमराव आंबेडकर यूनिवर्सिटी, आगरा।

सारांश :–

प्रस्तुत शोध पत्र ''महिला सशक्तिकरण एवं राजनीतिक सहभागिता उत्तर प्रदेश के जनपद संभल में ग्राम पंचायतों'' के साथ इसका संबंध दर्शाते हुए वर्तमान में इसके सुदृढ़ीकरण की उन्मुक्तता पर बल देता है। महिला सशक्तिकरण एवं राजनीतिक सहभागिता सामाजिक परिवर्तन (विकास) के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका तैयार करती है। महिला सशक्तिकरण व संवर्धन की आवश्यकता के संदर्भ में, महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता और उनकी राजनीतिक चेतना के आकलन हेतु, महिलाओं के राजनीतिक दृष्टिकोण को भी समझना अति आवश्यक (प्रासंगिक) है कि ग्रामीण विकास (ग्राम पंचायतों) में महिलाओं की स्थिति में सुधार आया या नहीं। उत्तर प्रदेश में अलग–अलग योजनाओं के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण और उन्हें विभिन्न स्तरों पर आगे बढ़ाने के लिए कई प्रयास किये जा रहे हैं। वर्तमान में विकास की बहु–आयामी धारणा राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक हैं। जोकि आर्थिक विकास के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता का कोई महत्व नहीं है इसलिए हमारे शोध का उद्देश्य अनेक कल्याणकारी योजनाओं व महिलाओं का राजनीतिक सहभागिता का विश्लेषण करना है। उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा अनेक कल्याणकारी योजनाएं बनाई गई है जो कहीं ना कहीं रोजगार, कृषि व भारी उद्योग के द्वारा विकास पर जोर लाने के लिए है।

मुख्य शब्द :– सशक्तिकरण, राजनीतिक सहभागिता, योजनाएं, महिलाओं का सशक्तिकरण, पंचायती राज संस्थाओं (व्यवस्था), उत्तर प्रदेश (राज्य) सरकार, आर्थिक विकास।

प्रस्तावना :–

सशक्तिकरण किसी भी लैंगिक भेदभाव, विषमता, अश्पृश्यता, वंचना, अधीनता, हिंसा, तथा किसी भी अभाव को मिटाने वाली वह प्रक्रिया जो अन्ततः सकारात्मक शक्ति का उपयोग करने की क्षमता का निर्माण करती है। महिलाओं के संदर्भ में सशक्तिकरण का अर्थ है संसाधनों पर उनका नियंत्रण तथा निर्णय का अधिकार।

सशक्तिकरण का अर्थ :–

"लोगों के पास शक्ति और अपने स्वयं के जीवन पर नियंत्रण होना।" साधारण शब्दों में किसी व्यक्ति के सशक्तिकरण का मतलब है कि उस को अपनी जिंदगी का फैसला करने की स्वतंत्रता देना या उनमें ऐसी क्षमताएं पैदा करना ताकि वे समाज में अपना सही स्थान स्थापित कर सकें। भारत का संविधान दुनिया में सबसे अच्छा

समानता प्रदान करने वाले दस्तावेजों में से एक है। केशब चंद्र मंडल के अनुसार महिला सशक्तिकरण को पांच अलग–अलग श्रेणियों में परिभाषित किया जा सकता है जोकि– सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक है। महिला सशक्तिकरण का राष्ट्रीय उद्देश्य महिलाओं की प्रगति और उनमें आत्मविश्वास का संचार करना हैं।

राजनीतिक सहभागिता क्या है?

राजनीतिक सहभागिता ऐसी गतिविधि है जिसके अंतर्गत कोई व्यक्ति सार्वजनिक नीतियों (public policies) और निर्णयों (Decisions) के निर्माण, निरूपण और क्रियान्वयन की प्रक्रिया में सक्रिय भाग लेता है। राजनीतिक प्रणाली के अंतर्गत किसी राजनीतिज्ञ, सरकारी अधिकारी या साधारण नागरिक की गतिविधियां हो सकती है।

ग्राम पंचायत :–

1959 से 1964 के मध्य का समय स्वर्णिम काल कहा जाता है क्योंकि 2 अक्टूबर 1959 राजस्थान के नागौर में पंचायती राज का श्रीगणेश हुआ।[1]

स्थानीय स्वशासन के लाभ :–

स्थानीय विषयों का कुशलतापूर्वक प्रबन्ध, केंद्रीय शासन का भार कम होना, सार्वजनिक क्षेत्र के प्रति रुचि जागृत करना, राजनीतिक शिक्षण का महत्वपूर्ण साधन, स्वतंत्रता और देशभक्ति की भावना उत्पन्न करना, नौकरशाही की शक्तियों को सीमित करना, मितव्ययिता, शासन में जनसहयोग या सहभागिता, केंद्र और राज्य सरकार को उचित परामर्श, नागरिक गुणों का विकास आदि।[2]

भारत में महिलाओं से संबंधित चिंता के वर्तमान क्षेत्र :–

लैंगिक भूमिका के संबंध में रुढ़िग्रस्तता, समाजीकरण प्रक्रिया में अंतर, पुरुष महिला साक्षरता दर में अंतर, ग्रामीण भारत में विद्यालय दूर स्थित हैं और सुदृढ़ स्थानीय कानून व्यवस्था के अभाव में बालिकाओं के लिये स्कूली शिक्षा के लिये लंबी दूरी की यात्रा करना असुरक्षित लगता है। कन्या भ्रूण हत्या, दहेज और बाल विवाह जैसी पारंपरिक प्रथाओं ने भी समस्या में योगदान दिया है।[3] जहाँ कई परिवारों को बालिकाओं को शिक्षित करना आर्थिक रूप से अव्यवहारिक लगता है। विधायिका में महिलाओं का प्रतिनिधित्व, अंतर–संसदीय संघ (Inter-Parliamentary Union-IPU) और संयुक्त राष्ट्र–महिला (UN Women) की एक रिपोर्ट के अनुसार, संसद में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की संख्या में भारत 193 देशों के बीच 148वें स्थान पर था। वर्ष 2011 में संयुक्त राष्ट्र बाल कोष (UNICEF) द्वारा किये गए एक अध्ययन से प्रकट हुआ कि भारत में केवल 13 प्रतिशत बालिकाओं को पहले मासिक धर्म से गुजरने के पूर्व से इसके बारे में पता था।

"ग्लास सीलिंग" :–

न केवल भारत में बल्कि विश्व भर में महिलाओं को एक सामाजिक बाधा का सामना करना पड़ता है जो उन्हें प्रबंधन क्षेत्र में शीर्ष नौकरियों तक पदोन्नत होने से रोकता है।

सुरक्षा संबंधी चिंता :–

भारत में सुरक्षा के क्षेत्र में निरंतर प्रयासों के बावजूद महिलाओं को भ्रूण हत्या, बलात्कार, तस्करी, घरेलू हिंसा, जबरन वेश्यावृत्ति, ऑनर किलिंग, कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न जैसी विभिन्न स्थितियों का सामना करना पड़ता है।

महिला सशक्तीकरण से संबंधित प्रमुख सरकारी योजनाएँ :–

महिला एंव बाल विकास कल्याण मंत्रालय द्वारा बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना, उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, स्वाधार गृह, प्रधानमंत्री महिला शक्ति केंद्र योजना, वन स्टॉप सेंटर[4] और उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा भारतीय महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए कई सारी योजनाएं चलायी जा रही है। इन्हीं में से कुछ मुख्य योजनाओं के लिए बताया गया है : बेटी बचाओं बेटी पढ़ाओं योजना, महिला शक्ति केंद्र, उज्जवला योजना, पंचायाती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण, महिला हेल्पलाइन योजना, सपोर्ट टू ट्रेनिंग एंड एम्प्लॉयमेंट प्रोग्राम फॉर वूमेन (स्टेप)।

उद्देश्य :–

1. महिलाओं को उनके अधिकारों एवं कर्तव्यों से अवगत कराना।
2. समाज में महिला एवं पुरुष की प्रधानता को मिटाकर समानता का भाव उत्पन्न करना। .
3. महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देना।
4. महिलाओं में स्वयं निर्णय लेने एवं न्याय करने की क्षमता को विकसित करना।
5. राजनीतिक पक्ष को लेकर संविधान द्वारा प्राप्त महिलाओं के अधिकारों को सुनिश्चित कर महिलाओं को जागरूक करना।
6. राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना।
7. संविधान द्वारा आरक्षित महिला के अपने पद को प्राप्त करने के उपरांत पुरुष द्वारा स्वयं सत्ता अपने अधीन कर लेने की सत्य घटना को समाज के सामने लाने का प्रयास।
8. महिला शिक्षा को बढ़ावा देना।
9. महिलाओं की राजनीतिक दशा को सुस्पष्ट करना।

साहित्य की समीक्षा :–

Anil Kumar Kaloria, (15-Feb-2023) "महिला उत्पीड़न के कारण स्वरूप एवं निदान पर सामाजिक गतिविधियों का प्रभाव", इस आर्टिकल में लेखक ने हमारे समाज में जो भी समस्याएं हैं उनका विवरण का आधार अशिक्षा को माना है। जिसमें माता–पिता के द्वारा शादी का निर्णय, अत्यधिक शंकालु, कामुक, प्रभुत्व वाले, अविवेकी, अनैतिक, सरलता से भावावेश में आने वाले, ईर्ष्यालु, अधिकार जमाने वाले व्यक्ति स्त्रियों के प्रति घृणा भी उसे उत्पीड़न के प्रति के लिए प्रेरित करती है। सुझाव में दहेज प्रथा को समाप्त करने, संविधान में महिलाओं के लिए ऐसा प्रावधान जिसके तहत महिलाओं को योग्यता अनुसार रोजगार मिल सके तथा जीवनसाथी चुनने की आजादी, गर्भनिरोधक साधनों का आसान रास्ता प्राप्त करने का सुझाव, समाज में व्याप्त कुरीतियों व अंधविश्वास को समाप्त करने हेतु वैज्ञानिक आधार पर सामाजिक जागरूकता का सुझाव लेखक के द्वारा दिया गया है।

डॉ. अखिलेश कुमार गुप्ता (2020) ''जनजातीय महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता का मूल्यांकन'' राजनीतिक जागरूकता की वर्तमान स्थिति, पंचायतीराज अधिनियम के कारण : जनजातीय महिलाओं में बढ़ रही राज. जागरूकता, महिलाओं के जीवन व्यवहार एवं राजनीतिक संबंध में आए सकारात्मक परिवर्तन, अपने दायित्वों का ठीक ढंग से निर्वहन करना, विकेंद्रीकरण की दशा में एक नए युग का सूत्रपात, सत्ता समीकरणों

में सदियों से चली आ रही जड़ता को तोड़ने में मदद, जनसंख्या के अनुरूप सीटों का आरक्षण आदि।

डॉ. नीलिमा सिंह (2017), ''भारत में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता" महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता को दर्शाया, स्वतंत्रता के साथ ही समान अधिकार होने पर भी महिलाओं की सहभागिता पुरुषों की तुलना में नगण्य है। वैधता : समाज की अन्य उपव्यवस्थाओं एवं संरचनाओं को निर्देशित, संचालित एवं प्रभावित करती है, यह सशक्तिकरण हेतु एक महत्वपूर्ण माँग, राजनीतिक सहभागिता का अध्ययन : मतदाता के रूप में सक्रियता, प्रत्याशी के रूप में प्रतिभागिता, सरकार में उनके प्रतिनिधित्व की भूमिका, लोक सभा निर्वाचन 2014 एवं 2017 के पांच विधानसभाओं में निर्वाचन महिला उम्मीदवारों का अध्ययन एवं राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं की राजनीति में कम भागीदारी, उत्तर प्रदेश की विधानसभा निर्वाचन 2017 महिला उम्मीदवारों का विश्लेषण।

फखरूद्दीन खान, (2016) "भारत में पंचायती राज व्यवस्था : एक समीक्षात्मक अध्ययन", पंचायतीराज व्यवस्था के लिए विभिन्न समितियां, बलवंत राय मेहता द्वारा नवंबर 1957 में अपनी रिपोर्ट सौंपी और 'लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण' (स्वायत्ता) योजना की सिफारिश की, इसे वाद में ''पंचायतीराज'' कहा जाने लगा। तीन स्तरीय पंचायतराज व्यवस्था : ग्राम पंचायत, पंचायत समिति, जिला परिषद, प्रत्यक्ष रूप से जुड़े प्रतिनिधियों द्वारा ग्राम पंचायत की स्थापना, अशोक मेहता समिति दिसंबर 1977 में, जी.वी.के.राव समिति (1985), एल.एम. सिंघवी समिति (1986), पी. के. थुंगन समिति (1989) में स्थानीय सरकारी निकायों के लिए संवैधानिक मान्यता की सिफारिश की थी।

विश्लेषण उत्तर प्रदेश भारत देश का सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला राज्य है यहाँ की जनसँख्या करीब 20 करोड़ हो चुकी है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ है और आर्थिक राजधानी कानपुर को माना जाता है। उत्तर प्रदेश राज्य की स्थापना 24 जनवरी 1950 में हुई थी। वैदिक काल में उत्तर प्रदेश को ब्रम्हऋषि प्रदेश कहा जाता था। यहां के पहले मुख्यमंत्री स्व. गोविन्दबलभ पंत थे और पहली राज्यपाल सरोजिनी नायडू थी। वर्तमान में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ योगी जी हैं।[5] हमारा यह शोध पत्र उत्तर प्रदेश के जिला संभल में ग्राम पंचायतों के स्तर पर महिला सशक्तिकरण एवं राजनीतिक सहभागिता के संदर्भ में है। इसकी स्थिति पिछड़े क्षेत्र के अंतर्गत आती है। यह पहले जिला मुरादाबाद के अंतर्गत आता था, अब यह (भीमनगर) संभल के नए बनाए गए जिलों में से एक है। इसके निर्माण की घोषणा 28 सितंबर 2011 को की गई। 23 जुलाई 2012 को जनपद का नाम भीमनगर से बदलकर संभल कर दिया गया।

ग्राम पंचायत स्तर पर पंचायत (ग्राम प्रधान) महिला प्रतिनिधि का विवरण : तालिका

संख्या	ग्राम प्रतिनिधि	सामान्य वर्ग	अन्य पिछड़ा वर्ग	अनुसूचित जाति	सभी ग्राम प्रधान	प्रतिशत
1.	महिला	49	182	63	294	52.8%
2.	पुरूष				262	47.12%
					556	
	महिला साक्षरता दर	सामान्य वर्ग	अन्य पिछड़ा वर्ग	अनुसूचित जाति	महिला ग्राम प्रधान	
1.	1 से 8	33	108	41	182	
2.	9 से 12	11	40	8	59	
3.	UG	2	7	1	10	
4.	PG		2	1	3	
5.	निरक्षर महिला	4	26	10	40	
6.	कुल साक्षर महिला				254	45.6%

यह विश्लेषण 25 दिसंबर 2015 से लेकर 25 दिसंबर 2020 तक का किया जा रहा है। संभल जनपद का कुल क्षेत्रफल 2453.30 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। संभल में 3 तहसील, 3 नगर पालिका परिषद और 5 नगर परिषद और 4 विधानसभा क्षेत्र आते हैं। प्रभाग मुरादाबाद, मुख्यालय बहजोई, में है। साक्षरता दर 55% और लिंगानुपात 88.9% है। 2011 की जनगणना में जनपद की जनसंख्या 22 लाख थी जिसमें 10 लाख से ज्यादा महिलाएं और 11 लाख से ज्यादा पुरुष जनसंख्या थी। तुलनात्मक रूप से ग्राम प्रधान महिलाओं की सहभागिता के अंतर्गत जनपद की 556 ग्राम पंचायतों में से महिला प्रधान संख्या– सामान्य वर्ग 49, अन्य पिछड़ा वर्ग 182 तथा अनुसूचित जाति 63 है। जिसमें सभी ग्राम प्रधान महिला संख्या 294 है। ग्राम प्रधान पुरुष संख्या 262 है। जबकि 556 ग्राम पंचायतों है। महिलाओं की सहभागिता सैद्धांतिक स्तर पर 51.07% हैं। महिला साक्षरता दर, शैक्षणिक योग्यता के स्तर पर विश्लेषणानुसार महिलाओं की स्थिति कक्षा 1 से 8 सामान्य वर्ग 33, ओबीसी 108, एससी 41, कक्षा 9 से 12 तक सामान्य 11, ओबीसी 40, एससी 8, स्नातक सामान्य 2, ओबीसी 7, एससी 1, परास्नातक में सामान्य नहीं है ओबीसी 2, एससी 1, कुल योग 3 महिला हैं। निरक्षर महिला सामान्य 4, ओबीसी 26, एससी 10, कुल योग 40 इस प्रकार कुल साक्षर महिला प्रधान संख्या 254, जोकि 45.6% है। वर्तमान में परिसीमन के बाद अब ग्राम पंचायतों की संख्या संभल में 670 हो गई है।[6]

उत्तर प्रदेश में अलग अलग योजनाओं के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण और उन्हें विभिन्न स्तरों पर आगे बढ़ाने के लिए कई प्रयास किये जा रहे हैं। इन्ही योजनाओं में से एक यूपी महिला सामर्थ्य योजना भी है।[7] भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश द्वारा ये योजना महिलाओं को सशक्त करने की ओर एक उल्लेखनीय प्रयास है। मिशन पोषण 2.0, आंगनवाड़ी सेवाएं, पोषण अभियान, किशोरियों के लिए योजना, मिशन शक्ति, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, वन स्टॉप सेंटर, महिला हेल्पलाइन, मिशन वात्सल्य बाल संरक्षण योजना, अन्य इंटर्नशिप योजना अनुसंधान, प्रकाशन और निगरानी के लिए सहायता अनुदान। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (NRLM) उप–योजनाएँ– मनरेगा, महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना : कृषि–पारिस्थितिक प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिये जो महिला किसानों की आय में वृद्धि करते हैं और उनकी इनपुट लागत और जोखिम को कम करते हैं, यह मिशन महिला किसान सशक्तीकरण परियोजना (MKSP) को लागू कर रहा है।

स्टार्ट–अप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम और आजीविका ग्रामीण एक्सप्रेस योजना : यह अपनी गैर–कृषि आजीविका रणनीति के भाग के रूप में DAY-NRLM स्टार्ट–अप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम (SVEP) कार्यान्वित कर रहा है। SVEP का उद्देश्य स्थानीय उद्यमों की स्थापना के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में उद्यमियों का समर्थन करना है। और आजीविका ग्रामीण एक्सप्रेस योजना (AGEY) जो सामुदायिक निगरानी वाली ग्रामीण परिवहन सेवाएँ प्रदान करता है। (DDUGKY) का उद्देश्य ग्रामीण युवाओं के प्लेसमेंट से जुड़े कौशल का निर्माण करना और उन्हें अर्थव्यवस्था के अपेक्षाकृत उच्च मजदूरी वाले रोजगार क्षेत्रों में रखना है। ग्रामीण स्वरोजगार संस्थान : 31 बैंकों और राज्य सरकारों के साथ साझेदारी में, ग्रामीण युवाओं को लाभकारी स्वरोजगार लेने के लिये कुशल बनाने के लिये ग्रामीण स्वरोजगार संस्थानों (RSETIs) को सहायता प्रदान कर रहा है।[8]

इसके अलावा अन्य योजनाऐं जो उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित की जा रही हैं : सौर ऊर्जा सहायता योजना, आपदा राहत सहायता योजना, आवासीय विद्यालय योजना, ऋण माफी योजना, कन्या विवाह अनुदान योजना, कन्या सुमंगला योजना, कृषि उपकरण योजना 2022, कौशल विकास, तकनीकी उन्नयन एवं प्रमाणन

योजना, खाद्यान सहायता योजना, गम्भीर बीमारी सहायता योजना, गरीब व्यक्तियों के पुत्रियों की शादी अनुदान योजना, चिकित्सा सुविधा योजना, दस्तक अभियान, निःशुल्क बोरिंग योजना, पेंशन योजना, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, बालिका मदद योजना, बेरोजगारी भत्ता ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन 2022, महात्मा गाँधी पेन्शन योजना, मातृत्व हितलाभ योजना, मातृत्व, शिशु एवं बालिका मदद योजना, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, मुख्यमंत्री शिशिक्षु प्रोत्साहन योजना, मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना, मृत्यु, विकलांगता सहायता एवं अक्षमता पेंशन योजना मैट्रिक एवं मैट्रिकोत्तर छात्रवृत्ति, राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालयों का संचालन, राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना, विश्वकर्मा श्रम सम्मान योजना 2022, वृद्धावस्था पेंशन योजना उत्तरप्रदेश, शौचालय सहायता योजना, संत रविदास शिक्षा सहायता योजना।[9]

परिकल्पना :–

1. शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
2. पितृसत्तात्मक व्यवस्था सबसे बड़ी बाधा।
3. आर्थिक स्थिति राजनीतिक सहभागिता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।
4. सरकारी प्रयासों का महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता में सकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है।

शोध की अध्ययन पद्धति :–

पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की बढ़ती हुई भूमिका और उनके सशक्तिकरण के लिए उत्तरोत्तर हुए विभिन्न आयामों का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन पंचायती राज व्यवस्था के त्रिस्तरीय आयाम के अंतर्गत महिलाओं की शिक्षा उनकी वर्तमान स्थिति राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक का पंचायती राज व्यवस्था के आधार पर अध्ययन किया हैं। शोध के उद्देश्य एवं क्षेत्र के अनुसार ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक, अनुसूची सारणीकरण सांख्यिकी इत्यादि पद्धतियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया हैं।

अध्ययन के स्रोत :–

किसी भी शोध व अनुसंधान के लिए तथ्यों का विश्वसनीय एवं सार्थक होना भी आवश्यक है। तभी शोध व अनुसंधान में वास्तविकता उभरकर सामने आती है। इस शोध में प्राथमिक व द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया हैं।

महिला प्रतिनिधियों की समस्याएं एवं उपाय :–

जागरूकता की कमी, अशिक्षित या अल्प शिक्षित, संबंधों से जुड़ा होना, भ्रष्टाचार, दबंगों का वर्चस्व, अविश्वास प्रस्ताव, चरित्र हनन, अधिकारों के प्रति अनभिज्ञता, जातिगत भेदभाव ग्रामीण महिला नेतृत्व की समस्याऐं, पारिवारिक समस्याएं बाहुबल का प्रभुत्व, सामाजिक रूढ़ियां एवं परंपराएं, जाति प्रथा, राजनीतिक समस्याएं, भारत में पंचायती राज–नकारात्मक पक्ष।[10] महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता को बढ़ाने हेतु राजनीतिक दलों की आचार संहिता के नियम बनाकर महिलाओं के स्थान प्रदान करने की आवश्यकता है।[11] राजनीतिक सहभागिता में आ रही और अड़चनें और समस्याओं को दूर करने के उपाय : पंचायत के मुखिया हैं, पर हक से वंचित, शिक्षा का अभाव, महिलाओं का पर्दानशीन होना, संकोची स्वभाव का होना, भारतीय परम्पराएं घर की चाहर दीवारी में कैद रहना, प्रभावशाली व शक्तिशाली पुरुष राजनीतिज्ञ, घरेलू कार्यों में व्यस्तता, पंचायत की बैठकों में महिलाओं का भाग न लेना, विशेषीकृत ज्ञान की कमी, अकार्यकुशलता, दलगत राजनीति, अच्छे

नागरिकों की उदासीनता, वित्तीय प्रशासन में कमी आदि।[12]

महिलाओं की वर्तमान स्थिति और उनकी कार्यबल भागीदारी के बारे में चर्चा :–

राजनीतिक भागीदारी, शिक्षा का स्तर, स्वास्थ्य की स्थिति, निर्णयकारी निकायों में प्रतिनिधित्व, कार्य का रूप एवं सीमा, संपत्ति तक पहुँच आदि कुछ प्रासंगिक संकेतक हैं, जो समाज में व्यक्तिगत सदस्यों की स्थिति को प्रकट करते हैं। हालाँकि समाज के सभी सदस्यों की विशेष रूप से महिलाओं की उन कारकों तक एक समान पहुँच नहीं रही है, पितृसत्तात्मक मानदंड भारतीय महिलाओं के शिक्षा एवं रोजगार विकल्पों को जिनमें शिक्षा प्राप्त करने के विकल्प से लेकर कार्यबल में प्रवेश और कार्य की प्रकृति तक सब शामिल हैं को सीमित या प्रतिबंधित करते हैं। लैंगिक समानता (Gender Equality) का सिद्धांत भारतीय संविधान में निहित है।[13] महिला सशक्तीकरण के बारे में संविधान क्या कहता है? महिलाओं को लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं (अनुच्छेद 15) और विधि के समक्ष समान संरक्षण (अनुच्छेद 14) का मूल अधिकार प्राप्त है। संविधान में प्रत्येक नागरिक के लिये यह मूल कर्तव्य निर्धारित किया गया है कि वह महिलाओं की गरिमा के विरुद्ध प्रचलित अपमानजनक प्रथाओं का त्याग करे।[14]

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत अध्ययन न केवल एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में ग्राम पंचायत स्तर पर राजनीतिक सहभागिता की आवश्यकता और प्रतिमाओं की दृष्टि से महत्वपूर्ण है अपितु महिला सशक्तिकरण व संवर्धन की आवश्यकता व उपादेयता के संदर्भ में भी आवश्यक है। महिलाओं की राजनीति सहभागिता और उनकी राजनीति चेतना के आकलन की दृष्टि से महिलाओं के राजनीतिक दृष्टिकोण को भी समझना प्रासंगिक है। महिला सशक्तिकरण देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। महिलाओं का सशक्तिकरण सबसे महत्वपूर्ण चीज है क्योंकि वे रचनाकार होती हैं। अगर आप उन्हें सशक्त करें, उन्हें शक्तिशाली बनाएं, प्रोत्साहित करें, यह देश के लिए अच्छा है। जिस तरह से भारत सबसे तेजी आर्थिक तरक्की प्राप्त करने वाले देशों में शुमार हुआ है, उसे देखते हुए निकट भविष्य में भारत को महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। क्योंकि सबसे पहले राजनीतिक अधिकार से ही आर्थिक अधिकार को अर्थव्यवस्था की ओर मोड़ा गया, भारत सरकार के द्वारा अनेक कल्याणकारी योजनाएं बनाई गई जो कहीं ना कहीं रोजगार, कृषि व भारी उद्योग के द्वारा विकास पर जोर लाने के लिए है। हमें महिला सशक्तिकरण के इस कार्य को समझने की आवश्यकता है क्योंकि इसी के द्वारा ही देश में लैंगिग समानता और आर्थिक तरक्की को प्राप्त किया जा सकता है। संपूर्ण भारत वर्ष की महिलाओं को आत्मविश्वास एवं स्वावलंबी बना कर। वर्तमान में स्वतंत्रता, गरिमा, समानता और प्रतिनिधित्व के संघर्ष में वे कहाँ खड़ी हैं आदि में सरकार द्वारा आधी आबादी और नागरिकता की हिस्सेदार महिलाओं की स्थिति, सुधार करने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची :–

1. चन्देल, डॉ0 धर्मवीर एवं कुमार, चन्देल, डॉ0 नरेन्द्र (2016) ''पंचायतीराज और महिला सहभागिता'' जयपुर : आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, पृ0 सं0– 21.
2. महेश्वरी प्रो. श्रीराम, (1990), ''भारत में स्थानीय शासन'' आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन,

पृ0 सं0 1, 2.
3. महिलाओं से संबंधित मुद्दे https://hi.vikaspedia.in/social.welfare/93
4. भारत में महिलाओं से संबंधित चिंता के वर्तमान क्षेत्र : https://www.drishtiias.com/hindi/daily. updates/daily.news.analysis/international.day.of.rural.women.
5. उत्तर प्रदेश से जुड़ी रोचक जानकारियाँ। September10, 2022 https://hindiexplore.com/uttar.pradesh.facts.in. hindi/#:~:text. https://mksy.up.gov.in/women_welfare/intro.php kanya sumangal yojna
6. Panchayatiraj.up.nic.in>PB2FormReports.Panchayati raj Department – Govt of Utter Pradesh ग्राम पंचायत स्तर पर पंचायत प्रतिनिधि एवं कर्मी का विवरण।
7. https://pmmodischeme.in/up.mahila.samarthya.yojana यूपी महिला सामर्थ्य योजना।
8. https://hi.vikaspedia.in/schemesall राज्य विशेष योजनाएँ।
9. ibid https://www.drishtiias.com महिला सशक्तीकरण से संबंधित प्रमुख सरकारी योजनाएँ।
10. https://hindi.indiawaterportalorg/articles/gaanvaon.kae.baunaiyaadai.vaikaasa.maen.pancaayataon.kai. bhauumaikaa#%~जमगज गाँवों के बुनियादी विकास में पंचायतों की भूमिका सिद्धार्थ झा।
11. Garg, Kumar, Vinod-Meena, Singh, Manroop, (Jan 2019) ''राजनीति में महिला सहभागिता : एक विश्लेषण'', वॉल्यूम–16(9), पृ0सं0 671–675 (5) JASRAE
12. डॉ0 अनीता, (2014)''पंचायती राज व्यवस्था एवं महिलाओं में सहभागिता" कानपुर : आशा प्रकाशन।
13. भारत में महिलाओं की स्थिति 20 Aug 2022, "महिलाओं की भूमिका सामाजिक सशक्तिकरण महिलाओं से संबंधित मुद्दे" यह एडिटोरियल 19.08.2022 को 'हिंदुस्तान टाइम्स' में प्रकाशित "Is moral policingthe newest deterrent to female labour force participation?' लेख पर आधारित है।
14. महिला सशक्तिकरण पर निबंध (Women Empowerment Essay in Hindi) By मीनू पाण्डेय / January 13, 2017 https://images.app.goo.gl/dZLiqb7rRxj4ANjj6

कविता चौधरी सांगवान, शोधार्थिनी, विषय राजनीति विज्ञान विभाग।
कविता चौधरी सांगवान क्ध्व प्रताप सिंह चौधरी ग्राम फत्तेहपुर सराय केनरा बैंक निकट पोस्ट भवानीपुर तहसील संभल जिला संभल Pin code 244302 (उत्तर प्रदेश)
डॉ. भीमराव आंबेडकर यूनिवर्सिटी आगरा Pin Code 282004.
kavichomanik@gmail.com,
kavitacho2014@gmail.com
Mobile 9917016632

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 149-156

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

बहुमुखी रचनाकार गुलजार

राकेश कुमार, शोध छात्र,
डॉ. पूनमलता मिड्ढा, अनुसंधान गाइड, प्रोफेसर
हिंदी विभाग, निर्वाण विश्वविद्यालय, आगरा रोड़, जयपुर (राजस्थान) भारत।

सारांश :-

मनुष्य सभी प्राणियों में से एक अलग और एक सभ्य प्राणी होने का स्थान रखता है। मनुष्य ने अपने मानसिक विकास और रचनात्मक कौशल से भाषाओं का निर्माण किया, भाषाओं को सदृढ़ बनाने के लिए भाषा को व्याकरण के नियमों में बांधकर साहित्य जैसी बहुमूल्य विद्या का निर्माण किया जो इतिहास को जानने और मनुष्य के विभिन्न क्रिया कलापों, रचनात्मक विद्याओं को सरंक्षित करने के लिए वरदान साबित हुआ। आज साहित्य मानव जात की अभिव्यक्ति है, आलोचना है और जीने के लिए उत्तम मार्गदर्शक है। इस मानव समाज के विभिन्न घटनाक्रमों का जो प्रभाव हमारे दैनिक जीवन पर पड़ता है, साहित्य इस प्रकार के रचनात्मक विद्या की मार्मिक अभिव्यक्ति है। विभिन्न विद्याओं जैसे एकांकी, कविता, गीत, सवांद लेखन, गजल, कहानी, गीत उपन्यास, शायरी, यात्रा वृतांत, निबंध लेखन आदि साहित्यिक विद्याओं में लेखक अपने प्रतिभाशाली लेखिनी से जाने जाते हैं। पुरन्तु एक से अधिक साहित्यिक विधाओं में अपना लोहा मनवाने वाले लेखक गुलजार, जिन्हें बहुआयामी रचनात्मक कौशल हासिल है, अतः लेखक, गीतकार गुलजार साहब को बहुमुखी रचनाकारों की श्रेणी में शामिल करना या पहचाना जाना अतिश्योक्ति नहीं होगा।

गुलजार साहब ने हर वर्ग, हर समुदाय और हर वर्ग के लिये एक सामान पीड़ा महसूस की।

गुलजार के इन भावों और विधाओं से गुलजार के बहुमुखी रचनाकार होने का कुशल प्रमाण देता है। गुलजार साहब की साहित्यिक भाषा उनकी शायरी, कविता, गीतों और उनके त्रिवेणी छंद के मिसरे भी साहित्य के हाशिये पर एक अस्पृश्य सा अस्तित्व बनाये हुए हैं। शिक्षित सम्पन्न और सम्भ्रान्त जनों को ये प्रायः अभद्र, अशालीन और यहाँ तक कि अश्लील भी लगते हैं पर फिल्मों में समाज के तलछट पर जी रहे इस वर्ग को पूरे विश्वसनीय ढंग से पेश करने के लिए न केवल इस वर्ग को इसकी पूरी बारीकियों के साथ जानना जरूरी है बल्कि इनकी बोलचाल की भाषा, गाली, बोलियों और इनके खास मुहावरों का ज्ञान भी आवश्यक है। गुलजार, एक कथाकार और कवि के रूप में अपने पैने पर्यवेक्षण क्षमता के चलते सर्वहारा वर्ग के लोगों की जिन्दगी, बोलचाल–व्यवहार आदि को अपनी रचनाओं में बेहद बारीकी से पेश करते हैं।[1]

गीतकार गुलजार वास्तव में भारतीय सिनेमा के युग पुरुष हैं, इतनी बहुमुखी कथाकार, पटकथा लेखक,

निर्माता, निर्देशक एक साथ शायद ही किसी व्यक्ति में देखने को मिले।

मूल शब्द :– बहुआयामी, त्रिवेणी, कॉमिक, गैराज, महरुम, काठी, किरदार, पटकथा, वेशभूषा, मृदभाषी और मितभाषी, पंजाबी, उर्दू, रिफ्यूजी, बंटवारे, कैरियर आदि।

प्रतावना :–

गुलजार बहुमुखी रूप से एक प्रतिभाशाली रचनाकार के रूप में सामने आते है। गुलजार साहब ने हर उम्र के लिये, हर मौसम के लिये, हर भाव के लिये गुलजार ने सबकी मार्मिक या काल्पनिक भावना ओं को अपनी कलम से किताबों में उतार देते है। गुलजार का सारा रचनात्मक दायरा गीत, शायरी, गजल, कविता, कहानी तक ही नहीं सीमित नहीं रहा बल्कि गुलजार को त्रिवेणी छंद के जन कभी कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त लेखक गुलजार को काल्पनिक, मार्मिक, बाल साहित्य लेखक, रोमांटिक, भावुक, प्रगतिशील और पूर्व प्रेमी लेखक के रूप में भी जाना जाता है।

गुलजार साहब हिंदी, उर्दू, पंजाबी भाषाओं के कवि है, इसके अलावा बंगला, मारवाड़ी, भोजपुरी जैसी अन्य भारतीय भाषाओं के अच्छे जानकार भी है। गुलजार ने बच्चों के लिये बाल साहित्य लिखाइ इसके अतिरिक्त विभाजन का दर्द, बेरोजगारी, एकता की भावना आदि जीवन के विभिन्न पड़ावों और हर उम्र के लिए गुलजार ने लिखा।

गुलजार का ह्र्दय हमेशा करुणा से द्रवित रहा, इसी करुणा की सियाही से साहित्य निर्माण के लिये अपनी कलम चलाते रहे। गुलजार का सम्पूर्ण साहित्य चाहे गीत लेखन, कविता कविता लेखन, कहानी लेखन, फिल्म निर्माण, संवाद लेखन, सभी विधाओं में करुणा, रोचकता, सहजता और भावुकता दिखाई देती है साथ ही पाठक उनकी रचना अभिव्यक्ति को समझ सकते है, महसूस कर सकते हैं।

जीवन परिचय :–

मेरा नाम सोचा न था, किसी ने
'अमा' कहके बुलालिया एक ने
'अजी' कहके बुलाया दूजे ने
अबे ओ यार
लोग कहते हैं
जो भी यूँ जिस किसी के जी आया
उसने वैसे ही बस पुकार लिया
तुमने एक मोड़ पर अचानक जब
मुझको 'गुलजार' कहकर आवाज दी
एक सीपी से खुल गया मोती
मुझको एक मानी मिल गया जैसे
आह! ये नाम खूबसूरत है

फिर मुझे इसी नाम से बुलाओ तो !!....[2]

गुलजार का विविध साहित्य पढ़ने सुनने को मिलता है।

लेखक गुलजार को बर्ष 2002 में उनकी कहानी "धुआँ" के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला इसके अलावा इन्हें भारत के तृतीय उच्चतम नागरिक सम्मान 'पद्म भूषण' से वर्ष 2004 में सम्मानित किया गया है। वर्ष 2009 में 'जय हो' गीत के लिये ऑस्कर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। साल 2008 में अकादमी पुरस्कार, 2010 में ग्रेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। फिल्मों के लिये गुलजार को दादा साहिब फाल्के अवॉर्ड से भी नवाजे जा चुके है।[3]

मशहूर लेखक गुलजार 18 अगस्त 1934 को पाकिस्तान के दीना में जन्मे, वह पंजाबी सिक्ख परिवार से संबंध रखते है उनकी माता का नाम सुजान कौर और पिता का नाम माखन सिंह कालरा था। आजादी के बाद भारत–पाकिस्तान के बीच हुए बँटवारे के बाद गुलजार का परिवार अमृतसर होता हुया दिल्ली पहुंचा कुछ वर्ष बाद उनके पिता परिवार सहित मुंबई शिफ्ट हो गए।

विभाजन के बाद उनके परिवार की आर्थिकी स्थिति बहुत दयनीय थी इसलिए गुलजार को स्कूली शिक्षा के बाद रोजमर्रा की जरूरतों के लिए नार्थ मुंबई में एक मोटर गैराज में मोटर मैकेनिक के रूप में काम करना पड़ा, वहाँ गुलजार काम करने के साथ किताबों में भी अपनी दिलचस्पी दिखाते हुये अपनी लेखनी के काम को जारी रखा काम के साथ–साथ कविता रचना भी किया करते थे। गुलजार उसी मोटर गैराज में एक्सीडेंट लकारों की मुरम्मत किया करते है और कार पर रंग पोता करते थे, अपने काम के साथ–साथ गुलजार समय मिलने पर उसी गैराज में शायरी, नज्मों, कविता लिखने का कार्य में भी लीन रहते थे, बाद में गुलजार साहब ने प्रसिद्ध लेखक रविंद्रनाथ टैगोर की कविताओं का अनुवाद किया करते थे, उनको किताबों को पढ़ने का बड़ा शौक था उनके पास या तो किराये की किताबें या किसी से पढ़ने के लिए ली गयी उधारी की किताबें होती थी।

इसी दौरान मुंबई में रहते हुए गुलजार की मुलाकात उसी गैराज में तत्कालीन फिल्म निर्देशक देवूसेन से मुलाकात हुई, देवू सेन ने गुलजार के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उन पर दिलचस्पी दिखाई और फिल्म निर्देशक बिमल रॉय से गुलजार को मिलाने ले गये उसके बाद गुलजार ने पीछे मुड़कर नहीं देखा और साहित्य में अपना कैरियर बनाने के लिए मग्न रहे। कुछ समय बाद गैराज की नौकरी छोड़ कर गुलजार सन 1960 ई. में वहाँ बिमल रॉय के सहायक के रूप में काम करना शुरू कर दिया। बंदिनी फिल्म के लिए गुलजार ने अपने कैरियर का पहला गाना लिखा "मोरा गोरा अंग लेइ ले", मोहे शाम रंग देई दे, इसके बाद गुलजार असंख्य बॉलीवुड फिल्मों के लिए गाने लिखते चले गए।[4] गुलजार ने 70 के दशक में मशहूर बांग्ला की मूल निवासी अभिनेत्री राखी के साथ परिणय सूत्र में बंधे। राखी और गुलजार के घर एक बेटी का जन्म हुआ जिसका नाम मेघना रखा।

मेघना गुलजार भी अपने पिता के नक्शे कदम पर चलकर फिल्म निर्देशन में अपना कैरियर चुना आज मेघना बतौर फिल्म निर्देशक का कार्य कर रही है उनकी पहली निर्देशित फिल्म हुतुतु (1999), फिलहाल (2002) रिलीज बॉलीवुड फिल्में है। गुलजार बचपन से ही मेघना को बोस्की कहकर पुकारते थे, बोस्की का शब्दिक अर्थ

'नरम' होता है इसलिये गुलजार को ये नाम पसंद आया मुंबई में स्थित गुलजार ने अपने घर का नाम अपनी बेटी के नाम पर बोस्कीयना रखा जो आज भी पाली हिल, नरगिस रोड मुंबई में स्थित है।

पेहराव (वेशभूषा) :–

गुलजार जहां भी दिखाई दें, गुलजार का सफेद कुर्ता–पाजामा, लाल बेल्ट वाली घड़ी और काले रंग के जूतों पर सफेद कुर्ता–पाजामा गुलजार का पेहराव है। गुलजार को सादा पहनावा और सफेद लिबास पसंद हैं गुलजार के घर बोस्कीय ना का रंग भी सफेद है।

गुलजार साहब एक अच्छे खिलाड़ी भी है वह टेनिस खेलने के शौकीन है जो आज भी खेलते हैं।[5]

गुलजार का बाल साहित्य :–

गुलजार कहते है– मैं आज भी बच्चा हूँ, मैं आज भी खेलना चाहता हूँ। बचपन में गुलजार से मातृत्व वात्सलय छिन्न गया था जब गुलजार दुधमुंहे बच्चे थे तब उनकी माता का देहांत हो गया था उसके बाद उनके पिता ने दूसरी शादी कर ली थी, बचपन में गुलजार को खिलौने की जगह मोटर गैराज में दुर्घटनाग्रस्त कारों को ठीक करने वाले औजारों से खेलना पड़ा। गुलजार अपने बचपन की स्मृत्तियां और विभाजन के बाद खोने–पाने के आँकलन से उमड़े उन्माद से गुलजार का ह्रदय एक बच्चे के ह्रदय में परिवर्तित हो गया, जिसके बाद उन्होंने बच्चों के लिए बहुत सारा बाल साहित्य लिखा शायद अपने बचपन को गुलजार इसी साहित्य में कुछ लिखकर याद करते होंगे।

बाल साहित्य में लिखी उनकी किताब 'बोस्कीयना' में उन्होंने बच्चों के लिये असँख्य कविताएं लिखी है।

बाल साहित्य में बच्चों के लिए जितना काम गुलजार साहब का है, बड़े से बड़ा साहित्यकार भी उनसे प्रेरणा ले सकता है। गुलजार बच्चों के कॉमिक लिखी बच्चों के लिए गाना लिखते थे, 1. जंगल–जंगल बात चली है, चड्डी पहन के फूल खिला हैं[6] लकड़ी की काठी, काठी का घोड़ा, जब गुलजार बच्चों के लिए लिखते हैं तो खुद भी एक बच्चे की तरह नजर आते हैं अपने बचपन को अपनी बाल रचनाओं में उड़ेल देते थे। गुलजार साहब ने जंगल बुक नामक किताब लिखी जो सीरियल के रूप के दूरदर्शन पर प्रसारित होती थी।

गुलजार द्वारा लिखी गयी 'बाल' – साहित्य की पुस्तकें :–

1. बोस की का पंचतंत्र, 2. पोटली बाबा की कहानियां, 3. समय का खटोला, 4. राजा कपि 5. बेसुरा ढोडू 6. बोस की केताल–पाताल आदि।

विभाजन की समस्या और गुलजार :–

हम सब भाग रहे थे रिफ्यू जी थे
माँ ने जितने जेवर थे,
सब पहन लिये थे।
बाँध लिये थे....
छोटी मुझसे.... छह सालों की
दूध पिलाके, खूब खिलाके

साथ लिया था।
मैने अपनी एक 'भमीरी'
और एक 'लाटू'
पजामे में उड़स लिया था।
रात की रात हम गाँव छोड़कर
भाग रहे थे, रिफ्यू जी थे....
आग धुऐं और चीख पुकार के
जंगल से गुजरे थे सारे
हम सबके सब घोर धुऐं
में भाग रहे थे।
छोटी मेरे हाथ को पकड़कर दौड़ रही थी
एकाएक छोटी का हाथ मुझसे छूट गया और वो वहीं रह गयी
वहीं उस दिन फेंक आया था अपना बचपन।[7]

देश विभाजन भारत और पाकिस्तान दोनों देशों की पीड़ा उनकी मानसिक स्मृतियों में अभी भी जिन्दा है।

इस दुर्भाग्य पूर्ण बंटवारे पर राजनीतिज्ञों, धर्म के विद्वानों, इतिहासकारों, बुद्धिजीवियों का अपना–अपना नजरिया है। गुलजार कहते है कि इस विभाजन पर उन असंख्य बदनसीब लोगों का पक्ष जानने की कोशिश किसी ने नहीं की जिन्होंने धार्मिक आधार पर हुए इस देश विभाजन के बाद उत्पन्न हुए दंगों में अपने प्रियजनों को खोया, अपनो को खोया।

विभाजन पर एक जगह गुलजार कहते है :–

"किस्से लम्बे नेल की रांदे, गोली नाल गल करदे बोल चुभ देने वीरां दे''
"किस्से लम्बे नेल की रांदे, मिट्टी विचलो हूरल्या रांझे मर गये हीरां दे!"[(8)]

इसी आत्मीयता के भाव से गुलजार की कविता 'लकीरें' की सहज ही याद आती है–लकीरें है, तो रहने दो किसी ने रूठकर, गुस्से में शायद खींच दी थी, इन्हीं को अब बनाओ पालो और आओ कबड्डी खेलते हैं।[(9)]

गुलजार की सम्पूर्ण लेखनी में उनकी अपनी डायरी के पन्ने–पन्ने न होकर उन लाखों बेघरों की हकीकत हैं जिन्होंने 1947 के विभाजन के चलते अपना घर–संसार और दोस्तों के साथ–साथ अपना बचपन भी खोया है। इसी बँटवारे के चलते उनकी कहानी' रावी पार' के मुख्य पात्रों का सब कुछ लुट गया, बेघर हुए ऐसे लोग इतिहास में केवल एक संख्या के रूप में जिन्दा है। उनका लुटना–पिटना, बँटवारे के दौर की अनेकों कहानियों में न केवल दर्ज है, बल्कि समय के साथ–साथ ऐसी रचनाएँ भी उस इतिहास का एक जरूरी हिस्सा बनती जा रही हैं। क्योंकि दोनों देशों के सरकारी इतिहास में नेहरू–जिन्ना–गाँधी जैसे लोगों का तो सविस्तार वर्णन है, पर अनगिनत दर्शन सिंह (रावी पार कहानी का एक पात्र) जैसों पीड़ितों का जिक्र नहीं है। [(10)]

गीतकार के रूप में गुलजार :–

सिनेमा के सौ वर्ष से भी अधिक इस यात्रा में गीत, संगीत तब से उसके साथ है, जब वह मौन से मुखर हुआ। हिंदी सिनेमा के गीतों से पूरा भारतीय समाज न केवल मनोरंजन करता रहा बल्कि ये गीत उसके सुख–दुख के साथी भी रहे हिंदी सिनेमा का साथ 70 के दशक अपने विषयों का चयन, सामाजिक सरोकारों के कारण अगर स्वर्ण युग कहलाता है तो उसमें साहित्यिक दर्जे के गीतों का भी कम योगदान नहीं है।

सन् 1963 की अपनी पहली फिल्म बंदिनी में मात्र एक गीत" मोरा गोरा अंग लेई ले मोहे शाम रंग देई दे "गुलजार ने अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करवाई। गुलजार साहब आमतौर पर एक रोमांटिक गीतकार के रूप में देखने को मिलते है इसलिए ऐसे शब्दों का इस्तेमाल वहाँ दिखाई नहीं देता। लेकिन जहां नज्म में हालात की मांग हो वहां गुलजार ऐसे अल्फाज से हिचकिचाते नहीं है। गुलजार अपनी नज्मों में बोलचाल की भाषा के इस्तेमाल पर भी जोर देते है।

गुलजार द्वारा लिखे गए गीतों का दायरा बहुत दूर तक का है, उनके गीतों से ये प्रतीत होता है कि गुलजार साहब की कलम की पीड़ा किसी एक विशेष वर्ग के लिये नहीं बल्कि सबके लिए है।

गुलजार की चाहत पूर्ण प्रेम की है, चाहे वह दो सजीव प्राणियों के बीच हो या प्रकृति और मन के बीच। इनके गीत आम आदमी के पीछे छूट गए सपनों को सामने लेकर आते हैं।

जहाँ वे 'छोटी–छोटी बातों की हैं यादें बड़ी' (आनन्द) और ''एक सौ सोलह चाँद की रातें, एक तुम्हारे कांधे कातिल" (इजाजत) फिल्म के बेहतरीन गाने गुलजार ने लिखें।[11]

एक फिल्म निर्देशन के रूप में गुलजार :–

अर्देशिर ईरानी द्वारा 1931 में निर्देशित फिल्म 'आलम आरा' के साथ भारतीय फिल्मों ने साइलेंट युग से निकलकर टॉकी में प्रवेश किया। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि ने भारतीय फिल्म मनोरंजन को एक उद्योग के रूप में विकसित होने के लिए एक ठोस जमीन प्रदान की और सिनेमा को मनोरंजन के एक असरदार माध्यम के रूप में प्रतिष्ठित किया। 1971 से 1980 तक बनी गुलजार की फिल्मों में सहज, सरल और स्वाभाविक अभिनय को महत्व दिया गुलजार ने अपनी पहली फिल्म 1971 'मेरे अपने' मे एक अभूतपूर्ण फिल्म निर्देशक के रूप में अपनी पहचान कायम की उसके बाद आई उनकी दूसरी फिल्म 1975 'आंधी' में तत्कालीन समय की सच्चाई को बेहतर समझा जा सकता है। हिंदी सिनेमा के इस दौर में, गुलजार शायद सबसे भिन्न निर्देशक थे। स्वयं एक स्वतंत्र साहित्यकार होने के चलते वह कथा–वाचक या स्टोरी टेलिंग की बारीकियां बखुबी जानते थे। गुलजार को एक कवि होने के लाभ उन्हें फिल्मों में एक सफल गीतकार होने के रूप में मिला।

जिस गुलजार ने विभाजन के पश्चात् भर आकर पेट भरने के लिए गैराज में काम किया हो, उस गुलजार की कलम से इतना भाव पूर्ण सृजन सामने आया जिससे गुलजार को भारतीय सिनेमा के पिता माह बनने की स्थिति में आ जाये, येकोई मामूली सी बात नहीं है।

इस सदन को इस तपस्या को, इस समर्पण को एक रवानी देने में एक मुकाम तक पहुंचाने में सलिल चौधरी, शंकर जयकिशन, एस.डी. बर्मन, हेमंत कुमार, खय्याम, मदन मोहन, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, भूपेन हजारिका,

ए.आर. रहमान, विशाल भारद्वाज का योगदान कम नही था जिनसे गुलजार को प्रोत्साहन मिला।[12]

हिंदुस्तान के सिनेमा प्रेमियों, साहित्य प्रेमियों ने भी गुलजार का बहुत साथ दिया इस प्रकार गुलजार की कलम से शब्दों के सितारे कागज पर उतरते रहे और सिनेमा के सुनहरे पर्दे को जीवंत करते रहे।

एक करुण कवि गुलजार कविता वो करुणा है, जो मजदूरन के श्रम को छाला और छाले की पीड़ा को निराला बना देती है। लेखक गुलजार भी हिंदी के सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की तरह करुण भाव मे अधिकांश अपनी रचनाएं लिखी। निराला के करुण ह्रदय का आलंबन उसकी पुत्री सरोज थी दूसरी और तत्कालीन जातीय और सामाजिक परिस्तिथियां। परन्तु गुलजार की करुणा का कारण भावुक ह्रदय का आलंबन था उसका पथरीला बचपन और तत्कालीन विभाजन की समस्या थी। गुलजार ने जीवन में जहां ऊंचे–नीचे, पथरीले, नीम रोशन सड़कों–गलियों से लेकर चकाचौंध भरे शहरों से गुजरने का मौका दिया, वहीं से उन्होंने उन निचली गहराईयों में जी रहे लोगों की बदहाल जिंदगी को न केवल करीब से देखा, बल्कि उन्हें अपनी कहानियों में रोशन किया, जिससे करुणा में महक सदा उनकी रचनाओं में साथ रही है।

करुण भाव का उदाहरण गुलजार की रचनाओं में देखने को मिलता है, जिसमें एक आर्थिक स्थिति से ग्रस्त पात्र को कैसे अपनी इच्छाओं से महरूम होना पड़ता है :–

माँ ने जिस चाँद सी दुल्हन की दुआ दी थी मुझे
आज की रात वो फुटपाथ से देखा मैंने
रात भर रोटी नजर आया वो चाँद मुझे।[13]

निष्कर्ष :–

लेखक गुलजार ने हर उन पीड़ितों और जिंदगी की तमाम खुशियों से महरूम उन लोगों के करीब रहे हैं और बार–बार उनकी जिंदगी और उनके सामाजिक परिवेश को जब कभी भी अपने गीतों में सामने लाते रहे हैं। एक पूर्व प्रेमी लेखक के रूप में अपनी लेखनी को चलाते रहे चाहे वो शायरी हो या संवाद लेखन या फिल्म के लिए लिखा सवांद, उनकी लेखनी में करुणा और विरह की झलक देखने को मिलती है।

समाज का हर वर्ग चाहे वो समाज की आर्थिक सामाजिक बदहाली के शिकार होकर, न केवल समाज की मुख्यधारा से कट कर हाशिये पर बस रहा है, गुलजार ने उनकी पीड़ा को भी समझा और अपने साहित्य में उनको स्थान दिया। गुलजार वास्तव में भारतीय साहित्य और सिनेमा के युग पुरुष है इतनी बहुमुखी प्रतिभा शायद एक साथ किसी अन्य लेखक में देखने को मिले।

आज गुलजार निरंतर अपनी प्रतिभा के अनुरूप कविता लेखन का काम कर रहे हैं। गुलजार के अलावा कोई भी व्यक्ति अपने परिश्रम और लगन से किसी एक क्षेत्र में खास मुकाम हासिल तो कर सकता है, लेकिन वही व्यक्ति साहित्य के अलग–अलग क्षेत्र में हाथ आजमाये और उसमें भी अपना खास मुकाम बनाता चले। यह गुलजार ही कर सकते हैं। उनके काम का दायरा अत्यंत ही विविध है। बावजूद इसके वह बिना थके और बिना खुद को दोहराए अपने सृजन के काम में अनवरत रूप से संलग्न हैं। इतने बृहद दायरे के साथ सृजन का वैविध्य पूर्ण कार्य तभी संभव हो सकता है, जब कोई सम्पूर्ण सिंह कालरा गुलजार में तब्दील हो जाए। लेकिन यह

तब्दीली इतनी आसान नहीं है और ना ही आसान है किसी और का सम्पूर्ण सिंह कालरा से गुलजार साहब बन जाना, जो अपनी बहुमुखी प्रतिभा के कारण साहित्यिक आकाश में तारे की भांति चमक रहे है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. जीरो लाइन पर गुलजार : अशोक भौमिक, पृष्ठ संख्या
2. बोस्कीयना : यशवंत व्यास, पृष्ठ संख्या 15
3. शब्दों से परे : डॉ. सोना सिंह, पृष्ठ संख्या 65
4. जीरो लाइन पर गुलजार : अशोक भौमिक, पृष्ठ संख्या 15
5. अमर उजाला समाचार पत्र, नई दिल्ली 4 मई 2014, पृष्ठ संख्या 14
6. थे जंगल बुक अलबम http://hindi.Lyricsgram.com
7. अबाज में लिपटी खामोशी : गुलशेर भट्ट, पृष्ठ संख्या 48
8. जीरो लाइन पर गुलजार : अशोक भौमिक, पृष्ठ संख्या 20
9. जीरो लाइन पर गुलजार : अशोक भौमिक, पृष्ठ संख्या 22
10. जीरो लाइन पर गुलजार : अशोक भौमिक, पृष्ठ संख्या 20
11. शब्दों से परे : डॉ. सोना सिंह, पृष्ठ संख्या 101
12. जीरो लाइन पर गुलजार : अशोक भौमिक, पृष्ठ संख्या 100
13. त्रिवेणी : गुलजार, पृष्ठ संख्या 11

राकेश कुमार सपुत्र श्रीचंद,
गावँ चुहाडी, पोस्ट आफिस रजेरा, तहसील व जिला चम्बा, हिमाचल प्रदेश, भारत
पिन कोड 176310, मोबाइल 9418733608, Email : Rakeshgalib@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 157-161

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

हिन्दी में कम्प्यूटर का कार्य क्षेत्र

शिबानी राजभूषण

असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग), जवाहरलाल नेहरू राजकीय महाविद्यालय, पोर्टब्लेयर,
अंडमान तथा निकोबार द्वीपसमहू– पिन –744101

आधुनिक युग में कम्प्यूटर का बहुत अधिक महत्व है, चाहे वह निजी क्षेत्र में हो या फिर कार्य क्षेत्र में। वहीं दूसरी ओर बात करें भाषा की तो हिन्दी सरल और एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे देश में बोली जाती है। आज हिन्दी भाषा का प्रयोग कम्प्यूटर में हो रहा है, जिसके कारण हिन्दी भाषा की भी उन्नति हो रही है। आज के संदर्भ में कम्प्यूटर का हिन्दी के विकास में बहुत बड़ा योगदान है।

कम्प्यूटर के शुरुआती युग में कम्प्यूटर पर केवल अंग्रेजी भाषा में ही कार्य किया जाता था किन्तु आधुनिक युग में ऐसा नहीं है। आज कम्प्यूटर में हिन्दी भाषा के विकास में कम्प्यूटर के कार्य क्षेत्र में भी बहुत ज्यादा उन्नति देखने को मिलती है। आज हरेक के जीवन में कम्प्यूटर मानो एक अंग बना हुआ है। ऐसा प्रतीत होता है मानों कम्प्यूटर के बिना हमारे जीवन में अब कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता। आज हमें हरेक कार्य क्षेत्रों में कम्प्यूटरों की मुख्य भूमिका देखने को मिलती है।

कम्प्यूटर का कार्य क्षेत्र :–

1. शिक्षा में कम्प्यूटर।
2. चिकित्सा विज्ञान एवं स्वास्थ्य देखभाल में कम्प्यूटर।
3. मीडिया और कम्प्यूटर।
4. यात्रा और टिकट में कम्प्यूटर की उपयोगिता।
5. मौसम पूर्वानुमान में कम्प्यूटर की भूमिका।
6. खेल के क्षेत्र में कम्प्यूटर की उपयोगिता।
7. कला और मनोरंजन के क्षेत्र में कम्प्यूटर।
8. सामाजिक मीडिया में कम्प्यूटर।
9. मोबाइल कम्प्यूटिंग।
10. वैज्ञानिक अनुसंधान में कम्प्यूटर।
11. सरकारी रिकॉर्ड रखने में कम्प्यूटर की उपयोगिता।
12. मुद्रण में कम्प्यूटर।
13. दैनिक जीवन में कम्प्यूटर की सहभागिता।

आज जहाँ भी देखो कम्प्यूटर का उपयोग सर्वोपरि व सर्वोच्च माना जाता है। बिना कम्प्यूटर कोई भी कार्य कर पाना मुश्किल सा हो उठता है। चिकित्सा का क्षेत्र में आज कम्प्यूटर का प्रणाली बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ है, दवाइयों की सूची का रिकॉर्ड हो, या अस्पतालों से जुड़ी किसी भी कार्य का रिकॉर्ड हो आज के युग भी कम्प्यूटर में इन रिकॉर्डों को सुरक्षित रखा जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी कम्प्यूटर का महत्व अद्वितीय है। आज कम्प्यूटर की महत्व को देखते हुए कम्प्यूटरों की शिक्षा अलग से विद्यालयों में दी जा रही है। विद्यालयों में भी कम्प्यूटर शिक्षण अनिवार्य कर दिया गया है। कम्प्यूटरों शिक्षण का अलग विषय हो गया है। आज सरकारी ही नहीं अपितु निजी विद्यालयों के कक्षाओं कम्प्यूटर शिक्षण का विषय पढ़ाया जा रहा है। आधुनिक युग की होड़ में कम्प्यूटर से कोई इस मुख्य विषय से अछूता नहीं रह सकता है। इसी से हम कम्प्यूटर की उपयोगिता और आधुनिक युग में कम्प्यूटर शिक्षण की मांग को हम समझ सकते हैं।

मीडिया एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ कम्प्यूटरों का प्रयोग अधिक किया जाता है। आधुनिक मीडिया पूरी तरह कम्प्यूटरों पर निर्भर है। समाचार, कहानी लिखने से लेकर उसे वेब पर प्रकाशित करने तक के सभी कार्य आज कम्प्यूटरों पर किए जाते हैं। अब हिन्दी के लगभग सारे समाचार पत्र भी हमें पढ़ने को मिल रहा है। कम्प्यूटर में जब हिन्दी भाषा ने अपना स्थान बना लिया तो हिन्दी भाषी के लोगों में भी जागरूकता आयी जिससे हम और अधिक आत्म–निर्भर हो गए। चाहे व किसी भी क्षेत्र में क्यूँ न हो।

यात्रा और टिकट में कम्प्यूटर बहुत लाभदायक और उपयोगी साबित हुआ है, आज कम्प्यूटर के द्वारा टिकट लेना और आरक्षण करने का कार्य सरल हो गया है आज के तारीख में इंटरनेट के जरिये रेल यात्रा की टिकट आरक्षित करना संभव है। आज के तारीख में किसी भी यात्रा के लिए टिकट का पंजीकरण कम्प्यूटर पर ही किया जाता है।

जलवायु निगरानी एवं मौसम पूर्वानुमान के लिए कम्प्यूटिंग क्षमता में उल्लेखनीय बढ़ोतरी करके भारत अब विश्व में चौथे पायदान में पहुँच गया है। आज मौसम पूर्वानुमान की जानकारी हमें कम्प्यूटर सरल तरीके से मिल जाती है।

आज के युग में कम्प्यूटर की उपयोगिता अधिक हो गयी है, आज खेल खुद से संबंधित सही परिणाम कम्प्यूटर तय करता है इसके अलावा खेल कूद का शेड्यूल भी कम्प्यूटर द्वारा तैयार किया जाता है।

कला एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ विशेष रूप से कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाता है चलचित्र अनेक प्रोटोग्राफिक प्रभाव डाला जाना, कई काल्पनिक दृश्य को जीवंत दिखाना यह सभी कार्य कम्प्यूटर द्वारा संपन्न हो पाता है।

सोशल मीडिया में कम्प्यूटर का प्रयोग आमतौर पर जानकारी आदान–प्रदान करने हेतु किया जाता है। कम्प्यूटर द्वारा कई ऐसे ऐप्स का निर्माण किया जाता है।

मोबाइल कम्प्यूटिंग के द्वारा दैनिक कामकाज भी किए जाते हैं। इसमें नेटवर्क जैसी सुविधा उपलब्ध होती है जो हमारे जीवन को और सरल बनाती है।

वैज्ञानिक अनुसंधान एवं खोज में कम्प्यूटरों की सहायता से विभिन्न प्रयोगशालाओं और वैध शालाओं में

अनुसंधान किए जा रहे हैं। अब गणनाओं और परिणामों को अपेक्षाकृत अधिक शुद्ध रूप से और तीव्र गति से प्राप्त किया जा सकता है। वैज्ञानिक उत्पादन एवं विभिन्न उद्योग–धंधों में भी इसके उपयोग से हम लाभान्वित हो रहे हैं।

सरकारी रिकॉर्ड रखने में कम्प्यूटर उपयोगी है सरकारी संगठनों में आप रिकॉर्ड के भंडार को कम्प्यूटर में सुरक्षित रखा जाता है। आम तौर नागरिकों को सेवाएँ प्रदान करने के लिए भी कम्प्यूटर उपयोगी है।

मुद्रण एवं प्रकाशन कम्प्यूटर द्वारा संचालित फोटो कम्पोजिंग मशीन ने पत्र–पत्रिकाओं और पुस्तक प्रकाशन के कार्य को तीव्र गति एवं सुविधा प्रदान की है।

अतः दैनिक जीवन में कम्प्यूटर बात करें तो प्रत्येक कार्यालयों से लेकर विद्यालयों क्षेत्र में भी आज कम्प्यूटर का प्रयोग प्रतिदिन होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कम्प्यूटर का कार्य क्षेत्र कितनी विस्तार पूर्वक फैला हुआ है।

हिन्दी का प्रयोग सरल है – जैसेकि हम सभी जानते है कि कम्प्यूटर की अपनी कोई भाषा नहीं होती न ही उसमें कोई क्षमता होती है। हम मनुष्य द्वारा ही कम्प्यूटर के भीतर भाषा तथा क्षमता प्रदान की जाती है। यही कारण है कि यदि कम्प्यूटर पर अंग्रेजी में काम किया जा सकता है तो हिन्दी में भी कम्प्यूटर का कार्य करना संभव है। वैसे देखा जाए तो कम्प्यूटर पर अंग्रेजी से ज्यादा हिन्दी में कार्य करना सरल है।

नीचे कुछ हिन्दी में काम करने की क्षमता गिनाई जा रही है :–

1. हिन्दी भाषा की लिपि का नाम देवनागरी है, जो कि सबसे अधिक वैज्ञानिक लिपि मानी जाती है और इसका प्रयोग कम्प्यूटर में करना आसान है।
2. हिन्दी भाषा में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। इसलिए शाब्दिक दुहराव से बचा जा सकता है।
3. सभी भारतीय भाषाओं में इसका अनुवाद संभव है।
4. हिन्दी भारतीय भाषा है और किसी भी भारतीय भाषाओं में अनुवाद की अधिक संभावनाएँ है।
5. "कम्प्यूटर पर हिन्दी में बोलकर लिखा जाना अधिक सरल होना प्रयोजन है तो सिर्फ इतना कि इस दिशा में प्रयास किया जाए।"[1]

निष्कर्ष रूप से हम यह कह सकते हैं कि अंग्रेजी की अपेक्षा हिन्दी में कार्य करना कम्प्यूटर पर अधिक सरल है। शर्त इतना है कि इस दशा में कुछ मौलिक काम किया जाए तो वह दिन दूर नहीं जब हिन्दी सचमुच कम्प्यूटर की भाषा बन जाएगा।

हिन्दी कुंजी पटल (keyboard) :–

कम्प्यूटर की बोर्ड पर इसके सभी बटन उकेरे रहते हैं। जिन्हें दबाने पर वही अक्षर चिन्ह और संख्या टाइप होती जाती है जो उस बटन पर उकेरी गयी है।

हिन्दी में कार्य करते वक्त भी कुंजी पटल की बनावट में कोई परिवर्तन नहीं आता है। कुंजी पटल की बनावट वही रहता और उसी से हिन्दी का भी कार्य लिया जाता है।

याद रखने के हेतु यहाँ अंग्रेजी कुंजी पटल के कुछ विशेष कुंजियों की जिक्र की जा रही है–जिनके बारे में हमें हिन्दी में भी कार्य करते वक्त भी जानकारी होना अति आवश्यक है।

कुंजियों के नाम हिन्दी में	अंग्रेजी नाम जो कुंजियों पर लिखा रहता है
इस्केप	Esc
टैब	Tab
कैप्स लाक	Capslock
शिफ्ट	Shift
कंट्रोल	Ctrl
बैक स्पेस	Backspace
एंटर	Enter
आल्ट	Alt
इन्सर्ट	Insert Ins
डिलिट	Delete
होम	Home
एंड	End
पेज अप	Pg Up
पेज डाउन	Pg Down
नमलाक	Numlock
डेल	Del
प्रिंट स्क्रीन / सिसक	Print Screen/ sysRq
स्क्रौल	Scroll Lock
पौस / ब्रेक	Pause/Break
फारवर्ड स्लैस	/ >

ये कुंजियाँ कम्प्यूटर में अपना विशेष महत्व रखता है चाहे इनका प्रयोग हिन्दी में हो यह अंग्रेजी भाषा में परंतु इन में कोई परिवर्तन नहीं होता।

वर्तमान समय में विंडोज का अप–टू–डेट किया गया है। जो विंडोज 2000 और एक्स पी के रूप में विकसित हुआ है। इसके अनुरूप माइक्रोसॉफ्ट संस्था ने एम०एस० ऑफिस के अंतर्गत 'ऑफिस 2000' जारी किया गया है। जिसमें विश्व की कठिन और जटिलतम लिपियों को भी सम्मिलित किया गया है। विंडोज के अप–टू –डेट एवं विकसित रूपों के आने से स्थानीय भाषाओं में भी 'इंटरफेस' की सुविधा हो गई है। इसी कारण हम आज देवनागरी लिपि में भी संदेशों का आदान–प्रदान कर सकते है। कम्प्यूटर पर पाठों का टंकण देवनागरी में भी किया जा रहा है। भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटर तकनीक के क्षेत्र में हो रहे तीव्रगामी विकास के कारण आज कठिन से कठिन और जटिल कम्प्यूटर संबंधी कार्यों में हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का व्यापक प्रयोग हो रहा है। भारतीय रेल की आरक्षण व्यवस्था की सुविधा आज आम आदमी को हिन्दी में भी सुलभ है। देश में हो रहे आम चुनावों में करोड़ों मतदाताओं की सूचियाँ कम्प्यूटर के माध्यम से हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में तैयार की जा रही है। भारतीय भाषाओं के साहित्य में उपलब्ध कालजयी गौरवपूर्ण कृतियाँ आज इंटरनेट पर

उपलब्ध है। सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे तीव्रतम विकास के कारण इंटरनेट के क्षेत्र में आज भी हमारे सम्मुख अनेक चुनौतियाँ उभर रही हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें और अधिक परिश्रम करना होगा। भविष्य में वही भाषा और लिपि लोकप्रिय होगी जो पूर्णतरू वैज्ञानिक होगी। प्रत्येक दृष्टि से समृद्ध हिन्दी भाषा आज किसी से कम नहीं है। इसे और अधिक समृद्ध बनाने के लिए कम्प्यूटर विज्ञान तथा भाषा विज्ञान दोनों को एक साथ मिलकर निरंतर कार्य करना होगा। निश्चय ही हिन्दी एक दिन विश्व की भाषाओं में प्रथम स्थान पर आएगी तथा कम्प्यूटर के क्षेत्र में भी और अधिक विकास करेगी।

संदर्भ :–

1. विनोद कुमार त्रिपाठी, कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम कैसे करें, पृष्ठ संख्या– 80–81
2. वही, पृष्ठ संख्या– 89–90

मोबाइल नंबर 9531819077

Email id – shibanirajbhushan@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 162-168

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

21वीं सदी में भारतीय महिलाओ कें समक्ष चुनौतियां

Devkaran Ram Hudda
Political Science

आज महिलाओं का सशक्तिकरण 21वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण चिंताओं में से एक बन गया है, लेकिन व्यावहारिक रूप से महिला सशक्तिकरण अभी भी वास्तविकता के धरातल से दूर है। हम अपने दिन–प्रतिदिन के जीवन में देखते हैं कि कैसे महिलाएं विभिन्न सामाजिक बुराईयों का शिकार हो जाती हैं। महिला सशक्तिकरण महिलाओं के पास संसाधनों की क्षमता बढ़ाने और रणनीतिक जीवन विकल्प बनाने के लिए महत्वपूर्ण साधन है। महिलाओं का सशक्तिकरण मूलतः महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति के उत्थान की प्रक्रिया है।

महिला सशक्तीकरण से तात्पर्य महिलाओं के व्यक्तिगत एवं सामुदायिक जीवन की आध्यात्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, लैंगिक या आर्थिक ताकत में वृद्धि करना है। भारत में महिला सशक्तिकरण कई अलग–अलग चर पर निर्भर है, जिसमें भौगोलिक स्थिति (शहरी एवं ग्रामीण), शैक्षिक स्थिति, सामाजिक स्थिति (जाति और वर्ग) और उम्र शामिल है। स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक अवसर, लिंग आधारित हिंसा और राजनीतिक भागीदारी सहित कई क्षेत्रों में राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय पंचायत स्तरों पर महिला सशक्तीकरण की नीतियां मौजूद हैं। हालाँकि सामुदायिक स्तर पर नीतिगत प्रगति और वास्तविक अभ्यास के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

दुनिया की आबादी का लगभग 50 प्रतिशत महिलाएं हैं, लेकिन भारत ने अनुपात में अत्यधिक अन्तर पाया जाता है। यहाँ महिलाओं की जनसंख्या तुलनात्मक रूप से पुरुषों की तुलना में कम है। जहां तक उनकी सामाजिक स्थिति का सवाल है, उन्हें सभी जगहों पर पुरुषों के बराबर नहीं माना जाता है। पश्चिमी समाजों में, महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ समान अधिकार और दर्जा मिला है। लेकिन लैंगिक विषमता और भेदभाव आज भी भारत में पाए जाते हैं। विरोधाभास की स्थिति ऐसी है कि वह कभी–कभी देवी के रूप में पूजित की जाती है तो कभी केवल दास के रूप में। प्रत्ययवादियों के दो दृष्टिकोण थे एक दृष्टिकोण यह था कि महिलाओं की प्राकृतिक जगह घर पर थी और मतदान के अधिकार उनके घरेलू जीवन को प्रभावित करने वाले कानूनों को बनाने में मदद करेंगे। दूसरा दृष्टिकोण यह था कि पुरुषों और महिलाओं को हर तरह से समान होना चाहिए और एक महिला के लिए 'स्वाभाविक' भूमिका जैसी कोई चीज नहीं थी। महिला मताधिकार आंदोलन को प्रथम चरण नारीवादी आंदोलन की पहली लहर के रूप में देखा जा सकता है, जिसने 1960 के दशक–1980 के दशक में व्यापक संकल्पनाओं का सृजन किया था। दूसरी लहर ने कानूनों की असमानताओं के साथ–साथ कथित सांस्कृतिक असमानताओं से संघर्ष का मार्ग चुना। यद्यपि नारीवादी शब्द 1880 में गढ़ा गया

था, लेकिन एक आंदोलन के रूप में इसका उपयोग 1960 के दशक में हुआ। 'फेमिनिस्ट' वे पुरुष और महिलाएं थीं जिन्होंने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता के लिए महिलाओं की ओर से उनके अधिकारों को लिखा, बोला और काम किया।' प्रसिद्ध लेखिका रेबेका वेस्ट ने नारीवाद को अपनी अब तक की प्रसिद्ध टिप्पणियों के साथ परिभाषित किया, 'मैं खुद कभी यह जानने में सक्षम नहीं रही कि नारीवाद क्या है, मैं केवल यह जानती हूं कि जब भी मैं भावनाओं को व्यक्त करती हूँ, तो लोग मुझे एक नारीवादी कहते हैं, जो मुझे एक डोरमैट या वेश्या से अलग करती है।' दुर्भाग्य से इस लहर को अब तक कुख्यात और अधिक बदनामी मिली और इसके अनुसार कुछ काल्पनिक ब्रा जलने के एपिसोड के साथ पहचाना गया। इस चरण में, महिलाओं ने यह साबित करके पुरुषों के साथ खुद को बराबरी का दर्जा देने की कोशिश की कि वे पुरुषों से बेहतर नहीं हो सकते तो उनकी ही तरह अच्छे हैं।

महिलाओं के अधिकार आंदोलन को बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में व्यापक समर्थन मिला, जब भेदभाव, असमानता और सीमित अवसरों जैसी जीवन के सभी आवश्यक समस्याओं के क्षेत्र में महिलाओं ने संघर्ष का सामना करना जारी रखा। 1966 में 'विमेंस लिबरेशन' वाक्यांश प्रिंट मीडिया में दिखाई दिया। साठ के दशक में मानव इतिहास में एक व्यापक परिवर्तन दिखा, जिस अवधि में अधिक से अधिक महिलाएं उच्च शिक्षा के संस्थानों में शामिल हुईं, तब से महिलाओं ने पीछे मुड़कर नहीं देखा। 21वीं सदी के प्रारम्भ में दुनिया भर में महिलाओं को लाभ की स्थिति में देखा गया, किन्तु क्या वे सचमुच प्रगति के पथ पर हैं। वे अपने भीतर की आवाज पर ध्यान दे रही हैं। वास्तव में उन्हें अब खोखले शब्दजाल और भाषावाद में कोई दिलचस्पी नहीं है। वह अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक आवाज पा रही हैं। वह अपने विवेक के साथ गठबंधन कर रही हैं और उद्देश्यपूर्ण प्रगति के साथ आगे बढ़ रही हैं।

21वीं सदी बदलाव की सदी है। सम्पूर्ण पृथ्वी 'द शिफ्ट ऑफ द एज' के लिए तैयार है। इस नए युग में प्यार और करुणा, पितृसत्तात्मक प्रवृत्ति पर शासन करेगी और दया की अपनी प्राकृतिक विशेषताओं के साथ महिला वैश्विक परिवर्तन के बीज बोएंगी। ये परिवर्तन पहले ही शुरू हो चुके हैं और जल्द ही वे एक अभूतपूर्व गति प्राप्त करेंगे। समय सभी जातियों, वर्गों, नस्लों और राष्ट्रीयताओं की महिलाओं के लिए एक साथ आने के लिए तैयार है, जो इस बदलाव की अग्रदूत हैं। पृथ्वी माता आह्वान कर रही है, जल्द ही पौराणिक शक्ति की अवधारणा की तरह यह अपनी असली ताकत दिखाएगी और रास्ते में आने वाली सभी बुरी शक्तियों का सफाया करेगी। केवल महिलाओं को उनकी जरूरत के समय में माता कहने की सहानुभूति से छुटकारा मिलेगा, जब मैं महिला कहता हूं, तो मेरा मतलब उन पुरुषों और महिलाओं से समान रूप से है जो नारीवादी चिन्तन करते हैं। भारतीय धर्मग्रंथों ने हमेशा 'अर्धनारीश्वर' के बारे बात की है अर्थात् स्त्री एवं पुरुष सम्मिलित देवता के रूप में प्रकट किये गये हैं। हम सभी में उस स्त्री–पुरुष संतुलन को लागू करने का समय आ गया है। पृथ्वी पर होने वाली अधिकाँश घटनाएँ चारों ओर प्रेम के स्त्री सार के उद्भव की मांग करती हैं।

21वीं सदी में महिलाओं को अपने साथ हुए ऐतिहासिक अन्याय को देखने की जरूरत नहीं है। अब समय उनको पीछे हटाकर इस 'एक्वेरियन युग' में उनकी भूमिका को आगे बढ़ाने का है। महिलाओं को आज एक आदर्श रोल मॉडल के लिए कहीं भी देखने की जरूरत नहीं है। उन्हें सही समय पर सही कदम उठाने के लिए अपने अंतर्ज्ञान को देखने और सुनने की जरूरत है। अभी उन्हें सही इरादे निर्धारित करने की जरूरत है और

उनके सभी इरादे बाद में जल्द ही प्रतिफलित होंगे। यही नव युग की शक्ति है।

यह अक्षय प्रश्न आज भी है कि, हम उन परंपराओं को कैसे बदल सकते हैं जो हमारी व्यवस्था में युगों से व्याप्त हैं? मैं बस इतना ही कह सकता हूं कि चाहे जितनी भी परंपराएं क्यों न दिखती हों, अगर वे आपकी वर्तमान वास्तविकता के साथ सामंजस्य नहीं रखती हैं, तो वे आपके लिए उपयोगी नहीं हैं। यह पूरा ब्रह्मांड निरन्तर बदल रहा है, हमें पुरानी व्यवस्था में फंसने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि वे अब किसी उद्देश्य की पूर्ति नहीं करते? यहां तक कि हमारी तथाकथित परम्पराएं समाज का भी गला घोंट रही हैं। उन्हें समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए। क्या आपने एक साधारण हाथी को एक छोटे से रस्से में बंधे हुए देखा है? क्या आपने कभी सोचा है कि शक्तिशाली जानवर सिर्फ एक छोटे रस्से से मुक्त होने के लिए प्रयत्न क्यों नहीं करता है? समस्या यह है कि बचपन से हाथी को यह विश्वास करने के लिए अनुकूलित किया गया है कि वह इस बन्धन को तोड़ने में सक्षम नहीं है। एक बच्चे के रूप में, जब वह पहली बार रस्से से बंधा था, तो उसने मुक्त होने की कोशिश की लेकिन सफल नहीं हो सका, आखिरकार उसने कोशिश करना छोड़ दिया, यह सोचकर कि वह नहीं कर सकता और अब जब वह इस ग्रह पर सबसे शक्तिशाली जानवरों के रूप में बड़ा हो गया है, तब भी वह मानता है कि वह ऐसा नहीं कर सकता। वास्तव में विश्वास ही व्यक्ति को शक्तिशाली बनाता है। इसलिए महिलाओं को अपनी सीमित मान्यताओं से मुक्त होने की जरूरत है।

यह आश्चर्य का विषय है कि हम एक व्यक्ति के रूप में एक व्यक्ति से कैसे फर्क कर सकते हैं? इस लौकिक जगत में हम सभी इस कृत्य में भागीदार हैं। जब हममें से कोई एक कदम बढ़ाता है, तो वह ब्रह्मांड को एक डिग्री घुमाने में मदद करता है। जब हम में से प्रत्येक एक छोटा प्रयास भी करता है, तो उसमें पहाड़ों को हिलाने की शक्ति होती है। अब हमें स्वयं अपनी शक्ति पर विश्वास करना है? किसी को अपने समुदाय, अपने पड़ोस, अपने देश में कदम रखने के लिए पहले आगे बढ़ना होगा। एक कदम उठाकर, एक नये प्रयास से उन महिलाओं के जीवन को प्रभावित करेंगे, जिन्हें हम जानते भी नहीं हैं।

हममें से कुछ लोग संदेह का सामना कर रहे होंगे, कि मेरे पास इतना साहस नहीं है। इस बदलाव को लाने के लिए हमें अपने आपको रानी लक्ष्मीबाई होने की आवश्यकता नहीं है। हमें बस अपनी आवाज ढूंढनी है। हमें बस बिना शर्त प्यार और करुणा फैलाने की जरूरत है। बस हम जो भी कर सकते हैं, उसमें पहला कदम उठाएं। आंसुओं की शक्ति का उपयोग करें, क्रोध की शक्ति का उपयोग करें और शब्दों की शक्ति का उपयोग करें। भारतीय संविधान में लैंगिक समानता का सिद्धांत अपने प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्तव्यों और निर्देशात्मक सिद्धांतों में निहित है। संविधान न केवल महिलाओं को समानता प्रदान करता है बल्कि राज्य को यह शक्ति प्रदान करता है कि वह महिलाओं से भेदमूलक कुरीतियों को समाप्त कर उन्हें शक्तिशाली बनाये। लोकतांत्रिक राजनीति के ढांचे के भीतर, हमारे कानून, विकासात्मक नीतियां, योजनाएं और कार्यक्रम विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की उन्नति के उद्देश्य से सृजित की गयी हैं। भारत में महिलाओं के अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में इसकी पुष्टि की है। भारत में महिलाओं के आंदोलन और गैर–सरकारी संगठनों (एनजीओ) के व्यापक नेटवर्क की मजबूत उपस्थिति है और महिलाओं की चिंताओं में गहरी अंतर्दृष्टि ने महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए प्रेरक योगदान दिया है। महिलाएं आज समाज में अपनी स्थिति को समझने की कोशिश कर रही हैं। महिलाएं जीवन के हर क्षेत्र में लैंगिंग असमानताओं के प्रति तेजी से जागरुक हो गई

हैं और वह उनसे लड़ने के तरीके तलाश रही हैं।

भारतीय महिलाओं ने स्वयं दासता और पुरुष वर्चस्व को अपने जीवन के लिये चयनित किया है वह अपनी मर्जी से आयी है और गर्व तथा गरिमा के साथ सामाजिक उन्नति की सीढ़ी चढ़ने लगी है। भारत की महिलाएं अब राजनीतिक, सामाजिक, घरेलू और शैक्षणिक सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ उत्थान और मुक्ति तथा समानता का दर्जा प्राप्त करती हैं। उनके पास मताधिकार है, वे किसी भी सेवा में शामिल होने या किस भी पेशे को अपनाने के लिए स्वतंत्र हैं। मुक्त भारत में महिलाओं ने प्रधानमंत्री, राजदूत, कैबिनेट मंत्री, विधायक, राज्यपाल, वैज्ञानिक, इंजीनियर, डॉक्टर, अंतरिक्ष शोधकर्ता, दिग्गज आईटी विशेषज्ञ, जनरलों, सार्वजनिक अधिकारियों, न्यायपालिका अधिकारियों और कई अन्य जिम्मेदार पदों को धारित किया है। अब लड़कों और लड़कियों के बीच शिक्षा के मामले में कोई अंतर नहीं किया जाता उनकी आवाज अब पुरुषों की तरह ही सशक्त और महत्वपूर्ण है। वह सरकार बनाने या खारिज करने में बराबर की भागीदारी कर रही हैं।

महिला सशक्तिकरण वास्तविकता या भ्रम :–

भारत में महिलाओं की स्थिति में उल्लेखनीय बदलाव हुए हैं, किन्तु अभी भी बहुत कुछ करना शेष है। संवैधानिक स्थिति, अभाव और गिरावट की वास्तविकता के बीच एक महान विचलन उत्पन्न होता है। भारतीय समाज में जो भी मुक्ति की लहरें फूटी हैं, वे शहरी महिलाओं द्वारा प्रारम्भ की गई हैं। और उनका आनंद उठाया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में वे अभी भी परिवर्तनों की हवा से पूरी तरह से अछूती हैं। वे अभी भी गरीबी, अज्ञानता, अंधविश्वास और गुलामी में डूबी हुई दयनीय परिस्थितियों में रह रही हैं। भारत में महिलाओं की स्थिति पर एक ओर संविधान विधानों, नीतियों योजनाओं, कार्यक्रमों और संबंधित तंत्रों द्वारा सकारात्मक प्रयास करता है दूसरी ओर स्थितिगत वास्तविकता के बीच एक व्यापक खाई अभी भी मौजूद है। देश में मानवाधिकार का परिदृश्य निराशाजनक बना हुआ है। महिलाओं के साथ अमानवीय शोषण और भेदभाव किया जाता है। हालाँकि, संविधान द्वारा लैंगिक भेदभाव पर प्रतिबंध लगाया गया है और महिलाओं को पुरुषों के साथ राजनीतिक समानता की गारंटी दी गई है, फिर भी संवैधानिक अधिकारों और महिलाओं द्वारा वास्तविकता में प्राप्त अधिकारों के बीच अंतर है।

आजादी के 72 वर्षों बाद भी कुछ अपवादों को छोड़कर, महिलाएं ज्यादातर सत्ता और राजनीतिक अधिकार क्षेत्र से बाहर ही रही हैं। यद्यपि वे लगभग 50 प्रतिशत आबादी हैं और वर्षों से मतदान के माध्यम से अपनी भागीदारी कर रही हैं, फिर भी कानून बनाने और कानून लागू करने वाले निकायों में उनकी भागीदारी और प्रतिनिधित्व बहुत संतोषजनक नहीं है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि 73वें और 74वें संवैधानिक संशोधन अधिनियमों ने महिलाओं को जमीनी स्तर पर निर्णय लेने की प्रक्रिया में पहुंच प्रदान की है, लेकिन संसद और राज्य विधानसभाओं में उनका प्रतिनिधित्व काफी खराब है। असुरक्षा महिला नेताओं को जमीनी स्तर पर नेतृत्व की पहचान करने की अनुमति नहीं देती है। राजनीति में जब कोई पुरुष किसी महिला का प्रस्ताव करता है, तो वह खुद को प्रकट कर देता है।

वास्तव में महिला प्रतिनिधित्व स्वभाव से सजावटी है और उनमें राजनीतिक चेतना का अभाव पाया जाता है। वे जाति और वर्ग विभाजन, सामंती मनोवृत्ति, परिवार की पितृसत्तात्मक प्रकृति और गाँव–सामाजिक, पर्यावरण, जातीय, धार्मिक अलगाववाद से प्रभावित हैं और इसी तरह वे केवल रिकॉर्ड पर सदस्य हैं। कथित तौर पर, निर्णय लेते समय उनसे सलाह नहीं ली जाती है। इस प्रकार, महिला प्रतिनिधि ग्राम प्रशासन में पुरुष के प्रभुत्व से मुक्त

नहीं हैं और गांवों में महिला स्वयं शक्ति के बराबर कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं कर पाती हैं। घोटालों की राजनीति के दिनों में, चुनावों में, धन और माफिया की बढ़ती भूमिका ज्यादातर महिलाओं को राजनीति से दूर रखती है। उनके खिलाफ बढ़ती हिंसा और अश्लीलता महिलाओं को भयभीत करती है और फलस्वरूप वे राजनीति से बाहर रहना पसंद करती हैं। इस खेदजनक स्थिति के कारण क्या हैं? मुद्दे विभिन्न और विविध हो सकते हैं, लेकिन कुछ बुनियादी मुद्दे विशिष्ट रूप से उल्लेखनीय हैं :–

(क) जागरुकता की कमी

(ख) सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण का अभाव

(ग) राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव

(घ) जवाबदेही तंत्र की विफलता

(ङ) पुलिस बल द्वारा प्रवर्तन में कमी

(च) लिंग संस्कृति का अभाव।'

प्रश्न यह उठता है कि राजनीति में महिलाओं की अधिक से अधिक भागीदारी कैसे हो सकती है? आम तौर पर इसका जवाब 'आरक्षण' के रूप में दिया जाता है। हालाँकि, महज आरक्षण से समस्या का समाधान नहीं होगा जब तक कि महिलाओं को प्रभावी ढंग से काम करने के लिए सामुदायिक शक्तियां नहीं दी जाती हैं और वे खुद अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति अधिक जागरुक नहीं हो जाती हैं।

महिला सशक्तिकरण के लिए कुछ आवश्यक कदम उठाने होंगे। केवल ग्राम पंचायत में महिला सदस्यों को शामिल करके व्यवस्था में कोई सकारात्मक परिवर्तन नहीं किया जा सकता है। इसी समय, सामाजिक–आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका और महत्व के बारे में कुछ रूढ़िवादी प्रचलित धारणाओं को समाप्त करना भी आवश्यक है। महिलाओं को अधिक सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। पुरुष प्रतिनिधियों को महिला प्रतिनिधियों के साथ तालमेल स्थापित करना होगा और उनके विचारों को उचित सम्मान और ध्यान देना होगा। विकास और निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं को पुरुषों के साथ काम करना पड़ता है। बेशक, पंचायती राज संस्थानों (पीआरआई) में उनके लिए आरक्षण के कारण महिलाओं में कुछ जागरुकता है।' लेकिन पंचायतों के कामकाज में विभिन्न पहलुओं से संबंधित उपयुक्त प्रशिक्षण और शिक्षा की आवश्यकता है ताकि महिला सदस्यों को पंचायत समिति में उनकी प्रभावी भूमिका और प्रतिनिधित्व के बारे में जागरुक किया जा सके। चुनाव के तुरंत बाद इस तरह का प्रशिक्षण जिला या ब्लॉक स्तर पर आयोजित किया जा सकता है।

हमें यह समझना होगा कि महिला प्रतिनिधि विभिन्न महिला और बाल विकास कार्यक्रमों के निर्माण और क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। इससे ऐसे कार्यक्रमों की प्रभावकारिता में वृद्धि होगी। उदाहरण के लिए, महिला प्रतिनिधियों और ग्राम पंचायत का प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल और सार्वजनिक वितरण प्रणाली को चलाने पर पर्याप्त नियंत्रण होना चाहिए। इस संदर्भ में उन महत्वपूर्ण विवरणों का अभ्यास किया जाना है, जो 21वीं सदी के इस तेज गति वाले जीवन में एक वास्तविक चुनौती है, जिसका मानव को उसकी दिव्यता के साथ होना चाहिए। (नीचे दिये प्वाइंटस के पहले कुछ होना चाहिए। अधूरा प्रतीत होता है। कृपया चेक करे।)

1. अपनी चेतना, स्पष्टता, स्वतंत्रता, साहस और अनुशासन को अपडेट करें।

2. खुद को झूठी मान्यताओं और धारणाओं से मुक्त करें।
3. स्वयं को विचार, अनुभव और व्यवहार में जड़ताओं से मुक्त करें।
4. अपराध बोध, शर्म, दोष, पीड़ित चेतना और सह–निर्भरता को त्यागें।
5. अपने अनुभव के माध्यम से सार्थक तरीके से संवाद और मार्गदर्शन करें।
6. अपने जीवन से सीखें और आगे बढ़ें।
7. अपनी जागरुकता की स्थिति बढ़ाएं।
8. अपने दैनिक जीवन में अधिक पूर्ण और उद्देश्यपूर्ण बनें।

मुख्य ध्यान समान काम और रोजगार में भेदभाव को खत्म करने पर होना चाहिए। बुनियादी नीति उद्देश्यों में से एक महिला की सार्वभौमिक शिक्षा होनी चाहिए, जिसका अभाव असमान स्थिति को समाप्त कर देता है। यूनेस्को का लोकप्रिय नारा इस उपयोग में आना चाहिए, 'एक आदमी को शिक्षित करेंगे तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करेंगे और यदि एक महिला को शिक्षित करेंगे तो आप एक परिवार को शिक्षित करेंगे।' महिलाओं को ऊपर से सशक्त करने के लिए सरकार को मजबूर करने के लिए खुद को नीचे से सशक्त बनाना होगा। इसके अलावा, समाज के मूल्यों और व्यवहार में बदलाव, सकारात्मक सामाजिक–सांस्कृतिक और आर्थिक सशक्तीकरण की आवश्यकता और राजनीति से जुड़ने के लिए महिलाओं की दृढ़ इच्छा शक्ति को और दृढ़ संकल्पित करने की जरूरत है। शिक्षा महिलाओं के बीच वांछनीय व्यवहारिक परिवर्तनों को लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है और उन्हें विभिन्न राजनीतिक समस्याओं से निपटने के लिए ज्ञान और क्षमता के मामले में अच्छी तरह से सुसज्जित करती है।

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि महिलाओं ने अपनी भूमिकाओं और क्षमताओं के बारे में परम्परागत धारणाओं को स्थानांतरित कर दिया है। समाज में एक उल्लेखनीय बदलाव आया है और यह बेहतरी के लिए किया गया है। इसके कई लाभ समाज को मिलना शेष हैं। यदि महिलाओं के सरोकारों को संबोधित करने के लिए बनाए गए कानूनों का महिलाओं के जीवन पर एक नाटकीय और सकारात्मक प्रभाव पड़ता है, तो उन्हें दुनिया भर में महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक उन्नयन के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। उनकी सफलता का सबसे महत्वपूर्ण उपाय यह होना चाहिए कि वे किस हद तक महिला को उनकी स्वयं की आवाज, मूल्यों और चिंताओं को शामिल करते हुए अपने स्वयं के निर्माण के कानूनों की व्याख्या, आवेदन और लागू करने में सक्षम बनाते हैं।

संदर्भ :–

1. एग्नेस, लाविया, परिवार में हिंसा : पत्नी की पिटाई, बॉम्बे, एसएनडीटी, महिला केंद्र, 1980
2. आहूजा, आर, महिला के विरुद्ध अपराध, रावत प्रकाशन, जयपुर, 1987
3. फोर्ब्स, गेराल्डिन, 1981, द इंडियन वूमेन मूवमेंट : ए राइट फॉर वूमेन राइट्स या नेशनल लिबरेशन?, गेल मिनाल्त (एड), विस्तारित परिवार,चाणक्य पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ0 सं0 49–821
4. फोर्ब्स, गेराल्डिन, वूमन इन मॉडर्न इंडिया, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, 2000 कुमार, राधा, ईज/एज ऑफ डूइंग, काली फॉर वूमेन, नई दिल्ली, 1993

5. केलकर, गोविंद, भारत में महिलाओं के खिलाफ हिंसा परिप्रेक्ष्य और –रणनीतियाँ, एशियाई प्रौद्योगिकी संस्थान, बैंकॉक, 1991
6. किश्वर, मधु और वनिता, रूथ (संपा)), उत्तर की तलाश में, लंदन, जेड बुक्स, 1984
7. मजूमदार, वीना, शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन : 19वीं शताब्दी में तीन –अध्ययन, बंगाल, भारतीय उन्नत अध्ययन संस्थान, शिमला, 1972
8. पांडे, रेखा, भारत में प्रारंभिक युग की शादी एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, उड़ीसा के इतिहास के नए पहलुओं के जर्नल में वॉल्यूम XV, 2013, पृ0सं0 19–31
10. पांडे रेखा बिन्दू, के.सी. मुमताज फातिमा, नुजहत खातून, घरेलू हिंसा के आख्यान, मर्दानगी और स्त्रीत्व का पुनर्निर्माण, सिंह, मंजीत और डी. पी. सिंह (संपा0), हिंसा – हिंसा और हस्तक्षेप, नई दिल्ली, अटलांटिक प्रकाशक और वितरक, पृ0सं0 121–140, 2008

Devkaran Ram Hudda
S/o Shri HariramHudda, Vpo : Morra, Teh. Merta city, Dist. Nagaur (Rajasthan), Pin code - 341510
M. 9549173401
Email - huddasusheel@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 169-175

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Disturbances in American Society due to Second World War : A Study of the Works of Edward Albee

Dr. Ashok Kumar
Govt. College Mahendergarh, Haryana

Abstract :-

Albee deals with psychological disturbances of his civilization and suggests a remedy for them through the psychoanalysis. Psychoanalysis, thus, is not only helpful for sick (mentally) people to overcome their weaknesses, but it also helps normal people to overcome the disturbing elements residing in their mental apparatus i.e., in unconscious, sub-conscious and conscious. Psychoanalysis, by disturbing our mind, makes us capable to think and to find out reasons and consequences of our thoughts and actions. A psychologist can be well compared to a biographer, as they both share an interest in reconstructing history for the sake of better understanding of human being; but a psychoanalyst is a step ahead to the biographer because he focuses more on the unconscious understanding of human being.

Introduction :-

Psychoanalytic study is a tight blow to man's ego and imagination in which he is the sole emperor of his body, mind and the universe. Man, bound by his nature, always thinks himself to be the master of this universe; but time and again there have been certain oppositions to previous great efforts of mankind to preserve his own sense of self importance. The two major blows to the naïve self-love of man were at the hands of science. The first blow was when man learnt that the earth was not the centre of this universe but only a tiny fragment of a cosmic system of scarcely imaginable vastness. The second blow fell when researches destroyed man's supposedly privileged place in creation and proved his descent from animal kingdom. Despite these two blows, another revolutionary thought or perplexing 'revolution' came from the psychologists in the twentieth century. The third and the most wounding blow fell from the psychological research which demonstrated that ego is not the master in human body but it is just a slave to the unconscious mind. Along with this blow psychoanalytic study has shaken man's idealism with various questions and has proved an important tool for bringing

humanity back to earthly level. This is what takes place in Albee's works, as in all his plays Albee attempts to bring illusionary man back to the earth of reality.

Thus man, who knows how to distinguish himself from other animals in the context of anatomy and physiognomy as a conscious reflecting being gifted with speech, lacks all the criterion for self-judgment. In simple words, "Man is an enigma to himself" (Jung, Undiscovered Self 31). He is on this planet a unique phenomenon and cannot be understood so easily. Jung compares man with a hermit who knows that in respect of comparative anatomy he has affinities with the anthropoids but, to judge by appearance, is extraordinarily different from his cousins, especially in respect to psyche. This idea is enough to arouse the most violent doubts and resistances, so one needs help of psychoanalytic study to assert the valuelessness of individual in comparison with the vastness of this universe and its unanimous assets. Thus, this self-proclaimed lord of earth, air and water just hangs on the historical fate of nations. The proud picture of man is only an unfortunate illusion which is counterbalanced by reality – a very different reality. In this reality this lord of elements hugs to his bosom notion which stumps his dignity and worthiness, and finally turns man's autonomy into absurdity. Thus, for accepting the truth, which he knows but does not accept, and to understand his own psyche the help of psychology is required. In order to understand man, it is equally important to understand his psyche, as human psyche is "an insolvable puzzle and an incomprehensible wonder, an object of abiding perplexity" (Jung, Undiscovered Self 32). Albee's characters do possess this characteristic as they are not able to understand their own psyche – their actions and desires. So to say, psychoanalytical study is an important tool for uncluttering the minds of characters.

It is the specific task of psychology to provide the knowledge and understanding of human psyche. It is, therefore, accepted that for the study of human behaviour psychoanalysis remains a vital instrument. Without psychoanalytic theory, learning models of human behaviour would seem futile and if our understanding of human behaviour is left undone we shall be left to wonder in a circular maze of undefined reinforcement. Thus, with the dawn of twentieth century psychoanalysis became a new ray of hope that smoothed away the bafflement of mental and moral stress by paying attention to the reasons of these bafflements. Floyd Dell described that the psychoanalysis is destined to cure, "inability to achieve results in one's work commensurate with the efforts put forth; infelicity in personal relationships, and a sense of not being able to get at grips with the realities of life" (qtd. in Hale 401). Psychoanalytic study covers a large number of problems which American civilization has faced. This is the raison d'être that psychoanalysis spread its wings in the United States very quickly.

Freud, the father of psychoanalytic study, though never was an undisputed and unqualified favourite in America, yet nowhere else the idea of psychoanalysis triumphed on such a scale. The

reception of psychoanalysis in America can be well understood with the fact that "translations of Freud's books appeared almost simultaneously in England and America, from the period before the First World War and thereafter Freud found to his consternation a far more responsive audience in the United States" (Roazen 372). William James – one of America's greatest philosophers was aware of the writings of Freud as early as the 1890s. James welcomed Freud and other psychologists' contributions and said, "They can not fail to throw light on human nature" (qtd. in Roazen 372).

Sigmund Freud, the father of psychoanalytic study, paid his only visit to the United States when he was invited to Massachusetts to celebrate the twentieth anniversary of Clark University in 1909. He visited United States with his two disciples – Carl Jung and Sandor Ferenczi. At this time Freud and psychoanalysis became a valuable part of reality. Leaders in American medicine took an early interest in Freud's writings. During this first and the only visit to the United States, within American psychiatry, a large number of scientists started "moving from somatic to psychological explanations of disease. The ground had been readied for a new comprehensive theory that would focus on causes and cures related to sexual and psychological development" (Kramer 128). During the visit, Freud delivered five lectures to a rapt audience and lay people. Freud presented a historical review of psychoanalysis, starting with Breuer's Anna O. case. The second lecture pointed how the conflict between the desire and social or moral values results in repression. The next lecture explained dream interpretation. Then came a lecture on infantile sexuality and Oedipus complex, and the final lecture was a global defense of psychoanalysis. Though some blamed Freud as a "man obsessed with fixed ideas" (Kramer 130), yet various thinkers defended Freud's methods, such as Freud's American translator A. A. Brill. These lectures sold well in books and made psychology a popular subject in United States, and writers and thinkers started concentrating on unconscious.

This focus on unconscious had an optimistic slant in America. Americans were not mistaken in seeing Freud as an optimist because Freud had hinted at the positive effect of psychological study. There were various questions related to psychoanalysis in America – why did America welcome psychoanalysis more warmly than any other country? What was the reason which created an affinity between psychoanalysis and American condition? To find out the answers of the above mentioned questions, one has to survey the whole field of psychoanalysis which Freud used for the 'practical Americans.' In the Clark lectures, Freud's synthesis and elements were presented in his system up to 1914, and there were appropriate emphasis on American environment. These lectures emphasized practicality, optimism and sublimation. So Freud came so near in understanding the cause of American problems and suggested a cure too. In this conference William James, the pioneer of psychoanalysis in United States met Freud and Jung, and appreciated as well as condemned the views of European

psychologists on various grounds.

Americans modified psychoanalysis to solve a conflict between the radical implication of foreign psychologists' views and the pulls of American culture. Americans, in order to simplify psychoanalysis, took interest in Freud's system as a coherent theory. Freud and the Americans held a number of similar intellectual as well as moral assumptions, such as history and cause were equivalent, to trace origins in the past is to discover the causes of the present, development of the individual reflects in microcosm the development of the race. Psychoanalytic study and American literature were going on the same track as the purpose of both, in one way or the other, was same. But a large number of American psychologists differ from Freud on the ground of biology and sexuality because they are more concerned with other ideas such as – confrontations of reality, psychic imbalances, individuals not from biological point-of-view but from collective consciousness (social). Nathan G. Hale rightly remarks, "Most of the Americans developed psychoanalysis into an ethical system. It's first commandment was to face 'reality', to know one's own inner desires and better to control and sublime them" (346). The same purpose is of American literature as well. Thus psychoanalytic study and literature together can cure the society and civilization from some heart-rending diseases.

The first American novel which combined all the psychoanalytic elements together is Mrs. Marden's Ordeal. The main elements of the novel are – traumatic childhood experiences, the detective story, the miraculous cure, an upper class neurotic, a wise psychologist and the fulfillment of social roles. The author James Hay, a Washington D C journalist, accepts that there is psychoanalytic touch in the novel. The structure of the novel makes it clear that writers and thinkers have been deeply interested in psychology at that time. In the novel Mrs. Marden – a sensitive and young society matron – strikes dumb after witnessing the murder of a friend. A famous psychologist as well as family confidant undertakes to cure her. The analyst, with his convincing way of discussing things, delves deep into Mrs. Marden's psyche, and finally she tells him about her dreams. Towards the end, she as well as the audience come to know that Mrs. Marden has strangled the girl in a fit of jealousy because she thought that her husband loved that girl. But after murdering the girl she blots out all the memory of the hideous act and is troubled by her subconscious because the blots of her acts remain there. This novel presents the popular images of psychoanalytic process and by confining psychoanalysis to catharsis, Hay assimilates psychoanalysis and literature. C G Jung also points out the togetherness of psychology and literature, and in his essay Psychology and Literature remarks, "It is obvious enough that psychology, being the study of psychic process, can be brought to bear upon the study of literature, for the human psyche is the womb of all sciences and all arts" (175).

Both psychology and literature deal with materials which are drawn from the realm of human

consciousness – with the lessons of life, emotional shocks, experience of passion and crisis of human life. Edward Albee's work is an epitome of this type of art because it deals with the aesthetic problems. As a work of psychological education the works of realistic writers destroy the previous aesthetic views of art which is only entertaining and their work moves to what is beautiful in form and meaningful in content. Such works help us to find out and to accept the new ground of reality. Thus, the juxtaposition of literature and psychology has turned literature into a tool to find out the answers of some bewildering questions.

Any study of psychoanalysis in the United States must begin with the myths – first created by the founders of America who believe in the over optimism of American Dream, and second by the non-believers of the dream. Most of the psychologists agree that, "America" as a civilization has its own "share of truth as well as illusions" (Hale xiii). In the first chapter this has already been discussed that the truth and illusions which Americans believe in are the truths and illusions related to the history of American civilization. It is well known that American Dream and 'Life-Lies' are the two sides of the same coin, so one should accept both in order to lead a blissful life. But as it has been noticed that the civilization is more inclined to illusions than reality, thus psychoanalytic study helps to understand and to accept the realities of life.

The psychoanalytic study and the American literature of twentieth century both try to find out the truth hidden beneath the American success myth, so the bond between psychoanalysis and American literature became strong. Robert A Segal's book Myth: A Very Short Introduction talks about various classical, Biblical and social myths and indicates that these myths influence the life of the people. He relates myth with psychology as well as literature because "myth provides the ideal kind of fulfillment" (Segal 93). With the point of time various layers of myths hide its true meaning, and thereby only a blocked and generalized meaning of myth is accepted by common masses. Thus, there are two levels of myth – the level above and the level below. The level above partly reveals as it partly hides the meaning hidden below and the true meaning often lies at the level below. Myth, in this way, is constituted to satisfy the desires. Segal rightly asserts, "In all these ways myths parallel dreams, which, like science for Taylor and Frazer, provide the modal by which Freud and Jung analyze myths" (94). Though myths and dreams are similar, yet there is a big difference between myths and dreams – myths are public and dreams are private . For Freud and Jung similarities are more significant.

The American success myth, better known as American Dream, fills in the gap between myth and dream for it is both, public and private – public because it is the success myth of whole America and private in the sense that it fulfills a number of unfulfilled desires of every individual in America. In the previous chapter it has been discussed that American Dream is a lie, for it is just an attempt to

attain through their illusions what Americans were lacking in reality, and finally this became a habit of this civilization. Jaques Lacan's concept of 'subject as lack or the lacking subject' can be related to this success myth. Usually in the process of dreaming, we enter into a complex relationship with the dream in which we allow it to master us or to fill our lack. The roots of this conception of subjectivity can be traced back to the Freudian idea of 'spaltung' (splitting). Lacan points out that the subject of psychoanalysis is not the self-sufficient subject of knowledge as it is constructed in the tradition of philosophy, but the ex-centric subject – one structured around a radical split, a radical lack.

The idea of American Dream is also structured around the radical split or lack which American civilization tried to fulfill through this psychological belief. The reason, thus, of having faith in American Dream lies deep in Lacanian conception of a lacking subject. This conception can also be related to the idea of 'Life-Lies' because it permits a thorough grasping of the socio-symbolic dependence of subjectivity. If lack is central in Lacanian concept of the subject as well as in Albee's concept of 'Life-Lies', it is only because the subjectivity constitute the space where a whole politics of identification takes place. Yanis Stavrakakis thinks that the idea of lack cannot be separated from the fact that man always tries to escape from this lack. He says, The idea of the subject as lack can not be separated from the recognition of the fact that the subject is always attempting to cover over this constitutive lack at the level of representation, through continuous identification acts. The lack necessitates the constitution of every identity through processes of identification with socially available objects of identification such as political ideologies, patterns of consumption and social roles. (23)

In this sense the notion of subject, in Lacanian concept, does not only invoke lack but also attempts to eliminate this lack.

Lacanian subject can be related to the story of American success myth in three different ways. First, subject as the "subject" of a sentence or story – the center around which the idea revolves. In this sense, the heart or the subject of the matter of the conception of 'American Dream' as well as 'Life-Lies' is just the lacking thing , and an endless craving to gain what they lack by various dreams, illusions or lies. Secondly, subject from a colonial point-of-view is just a medium for the colonizer to become more powerful by assimilating the colony into the colonizer because the colonizer can gain the things it has been lacking through its new subject. In this regard the story of America's discovery is very helpful, as America was discovered by the old world only because they wanted to discover a new world where their unfulfilled desires could be fulfilled. Though America did not remain a colony for a long time yet it served (as a 'New World') the world in attaining or fulfilling their unfulfilled dreams or desires. Thirdly, the concept of 'Life-Lies' or 'American Dream' both are

made of the words – lie and dream – which man uses in order to escape from the bitter realities. One lies only if the truth cannot attain him what he wants to attain, and one dreams only in order to gain in his dream world the things he is lacking in the real-world. Thus lack is the raison d'être of the origin of the concept of 'Life-Lies' just like it is the center of Lacan's idea of lack because both represent the lacking or incomplete order of man's survival in this universe.

References :-

1. Becker, Raymond De. The Understanding of Dreams or the Machinations of the Night.
2. London: George Allen & Unwin, 1968. Print.
3. Bertens, Hans. Literary Theory: The Basics. London & NY: Routledge, 2011. Print.
4. Betaille, George. Death and Sensuality. New York: Walker & Co, 1962. Print.
5. Bigsby, C. W. E. Albee. Edinburgh: Oliver & Boyd, 1969. Print.
6. ---. Edward Albee: A Collection of Critical Essays. New Jersey: Prentice Hall Inc, 1975. Print.
7. ---. Modern American Drama, 1945-2000. Cambridge: Cambridge UP, 2016. Print.
8. Bloom, Harold, ed. Modern Critical Views: Edward Albee. New York: Chelsea House Pub,1987. Print.
9. Bocock, Robert. Sigmund Freud. Chichester: Ellis Horwood Ltd, 1983. Print.
10. Bottoms, Stephen, ed. The Cambridge Companion to Edward Albee. Cambridge and NY : Cambridge UP, 2015. Print.
11. Brereton, Geoffrey. A Short History of French Literature. England: Penguin, 1978. Print.
12. Broussard, Louis. American Drama: Contemporary Allegory from Eugene O'Neill to Tennessee Williams. Norman: U of Oklahoma P, 1963. Print.
13. Cage, John. Silence. Cambridge: MIT P, 1961. Print.
14. Camus, Albert. "Preface to the American University Edition of The Outsider." Albert Camus: Selected Essays and Notebooks. Ed. and trans. Philip Thody. Britain: Penguin Books, 1970: 207-208. Print.
15. Dahlstorm, Daniel O. Modern European Philosophy: Heidegger's Concept of Truth. Cambridge: Cambridge UP, 2011. Print.

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 176-181

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

विधि विरूद्ध बालकों के मानवाधिकारों के परिप्रेक्ष्य में कोविड–1 महामारी की प्रभावशीलता

Devkaran Ram Hudda
Political Science

ऐतिहासिक विवरणों के माध्यम से ज्ञात होता है कि मानव सभ्यताओं ने मानव जाति व मानव संस्कृति के इतिहास में अनेक अप्रत्याशित विभिषिकाओं का सामना किया है। वैश्विक स्तर पर अनेक बार आपदायें आई जो मानव जाति के नियंत्रण से बाहर थी पर मानव ने अपने विवेक, साहस तथा धैर्य से उन आपदाओं पर विजय प्राप्त की एवं अपने विकास रूपी चक्र को सदा गतिशील रखा। समय के साथ अपने सम्मुख उत्पन्न संकटों को चीरते हुए आगे बढ़ने का साहस मानव में मानव सभ्यता के मूल मंत्र 'संकल्प से सिद्धि' के भाव के साथ आता है। यह मूल मंत्र संदेश देता है कि मानव द्वारा जो लक्ष्य निर्धारित किया जाता उसकी पूर्ति सम्भव है। भारत में वर्तमान की भाँति पूर्व में 1918 की स्पैनिश फ्लू नाम की महामारी का प्रभाव हमारे परिवेश में पड़ा। एक अनुमान के अनुसार स्पैनिश महामारी से देश में 1.8 करोड़ लोगों की मृत्यु हुई थी जो उस समय की आबादी का 6 प्रतिशत था। आज की इस वैश्विक महामारी की तुलना वॉल स्ट्रीट जर्नल के एक लेख में स्पैनिश फ्लू से की गई है तथा यह भी कहा गया है कि पूर्व की भाँति मृत्यु दर वर्तमान में उतनी नहीं होगी क्योंकि संसाधनों की उपलब्धता के कारण संसार भर में अनेक बदलाव हुए हैं। बच्चों के अधिकारों के संदर्भ में यदि हम विश्व पटल पर दृष्टि डाले तो सर्वप्रथम 'लीग ऑफ नेशन्स' ने 1924 में जेनेवा घोषणा पत्र के अंतर्गत बच्चों को अधिकार तत्व स्वास्थ्य, भोजन शोषण से मुक्ति आदि की उपलब्धता प्रदान की गयी। बाद के वर्षों में बच्चों के अधिकार संरक्षण हेतु मानवधिकारों का सार्वभौमिक घोषणा पत्र 1948, बीजिंग नियम 1985 तथा बाल अधिकार प्रसंविदा 1989 आदि ऐसे प्रपत्र हैं जिनमें बच्चों के अधि कारों का वर्णन किया गया है। भारत ने बाल अधिकार प्रसंविदा को 1992 में स्वीकारा तथा वर्तमान में किशोर न्याय अधिनियम, 2015 इनका आधार है। इसका उद्देश्य भारतीय संविधान के अनुच्छेद 15, 39ई, 45 व 47 में वर्णित उद्देश्यों का परिपालन करना है जो बच्चों के सुखमय जीवन जीने हेतु आवश्यक है। बच्चों को प्राप्त यह अधिकार किसी भी स्थिति में उनके सुखमय जीवन जीने हेतु आवश्यक हैं तथा उनकों इन से विमुख नहीं किया जा सकता है।

उद्देश्य :–

प्रस्तुत शोध पत्र का मूल ध्येय कोविड 19 महामारी की प्रभावशीलता का विधि विरूद्ध बालकों के मानवाधिकारों पर क्या प्रभाव पड़ा इसके परिप्रेक्ष्य में जनमानस को जानकारी प्रदान कराना है।

विधि :– प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीय स्रोतों के माध्यम से तथ्यों का संकलन कर उसका वर्णनात्मक विश्लेषण किया गया है।

परिकल्पना :– महामारी के दौर में भी विधि विरूद्ध बालकों के मानवधिकारों का संरक्षण सम्भव है।

प्रस्तुत शोध पत्र को निम्न बिन्दुओं के आधार पर रेखांकित किया गया है।

1. ऐतिहासिक पृष्ठठभूमि।
2. किशोर न्याय अधिनियम के अनुरूप विधि विरूद्ध बालकों के मानवधिकार कोविड के दौर में।
3. कोविड 19 महामारी के दौर में न्यायालय द्वारा निर्देशित दिशा निर्देश विधि विरूद्ध बालकों के परिप्रेक्ष्य में।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :–

कोविड 19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में यह कहाँ जा सकता है कि आधुनिक विश्व में यह कोई प्रथम महामारी नहीं इससे पूर्व 1918–1920 में स्पेनिश फ्लू, 1957 में एशियाई फ्लू ने कई देशो में अपने आप को स्थापित किया, 1968 में हॉन्ग कॉन्ग फ्लू ने कहर बरपाया, 2002 में सार्स वायरस तो 2009 में एस.एन.। फ्लू की महामारी फैली और वर्ष 2016–2018 के दौरान पश्चिमी अफ्रीका में इबोला वायरस ने अपना प्रकोप दिखाया। ये समस्त महामारी आज की महामारी की भाँति भौगोलिक दायरे में नहीं फैली थी इसलिए अन्य महामारियों से कोविड 19 महामारी कुछ अलग है क्योंकि विश्व के समस्त देशों में यह फैली। पूर्व की अन्य महामरियों का भौगोलिक क्षेत्र का दायरा इतना व्यापक नहीं था, उन्होंने क्षेत्रीय स्तर पर अपना कहर बरपाया तथा इसके बाद विश्व परिदृश्य में परिवर्तन हुआ। आने वाले कल में कोविड 19 महामारी के बाद अनेक परिर्वतन समाज में होंगे तथा इतिहासकार उसकी प्रभावशीलता के लिए उसे याद करेंगे। वाशिंगटन पोस्ट की रिपोर्ट के अनुसार कोरोना वायरस कोई साजिश का परिणाम नहीं बल्कि यह प्राकृतिक वायरस है।

'नेचर मैगजीन' में क्रिस्टियान एंडरसन के पब्लिश रिसर्च पेपर में इस वायरस के प्राकृतिक होने की बात कही गयी है तथा वुहान शहर के प्रोफेसर शी झेंगली की रिसर्च रिपोर्ट के अनुसार उनके द्वारा 28 गुफाओं में जाकर चमगादड़ों का मल एकत्रित कर चमगादड़ों के वायरसों का पूरा आर्काइव तैयार किया जिसमें कोरोना वायरस का जिक्र किया गया था जो हॉर्सजू प्रजाति के चमगादड़ों में पाया गया था। प्राफेसर शी झेंगली ने चीन में इस वायरस के संक्रमण फैलने के बाद वायरस का बायोस्ट्रक्चर तैयार किया और उसे पब्लिश किया इस आधार पर चीन ने कोरोना वायरस के टीके बनाने की अनुसंधान प्रक्रिया प्रारम्भ की तथा वैश्विक स्तर पर टीके पर कार्य प्रारम्भ हो गया। वर्ष 2020 के अंत में वैश्विक स्तर पर अनेक देशों ने टीकाकरण पर कार्य प्रारम्भ किया। भारत में भी 16 जनवरी 2021 से टीकाकरण प्रारम्भ हुआ जो अपने आप में इस वायरस के विरूद्ध लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेगा ऐसी उम्मीद की जा सकती है। इसके अतिरिक्त 3 जनवरी 2022 से 15 से 18 वर्ष के किशोरों का टीकाकरण प्रारम्भ हो गया।

2. किशोर न्याय अधिनियम के अनुरूप विधि विरूद्ध बालकों के मानवधिकार कोविड के दौर में :–

किशोर न्याय अधिनियम 2015 की धारा 2 (13) के अनुसार विधि विरूद्ध बालकों की संज्ञा उन्हें दी गयी है, जिन्होंने अपराध के दिन तक 18 वर्ष की आयु पूर्ण नहीं की है। धरातल पर जन्म लेने वाला प्रत्येक मानव अपनी जीवन यात्रा को प्रारम्भ एक अबोध शिशु के रूप में करता है। आज के बच्चे कल का भविष्य है इस आधार पर बच्चों के अधिकारों का संरक्षण करना समाज का केन्द्रीय दायित्व बन जाता है क्योंकि बच्चे अपनी उपेक्षा और

पीड़ा को ठीक ढंग से व्यक्त नहीं कर पाते हैं और प्रौढ़ भी बच्चे समझकर उनकी भावनाओं को उतना महत्व नहीं देते हैं जितना कि दिया जाना चाहिए यही से बच्चों के अधिकारों का हनन् होना प्रारम्भ हो जाता है।

विधि विरूद्ध बच्चों के अधिकारों के संरक्षण की बात करे तो किशोर न्याय अधिनियम, 2015 की धारा 10 के अनुसार 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चे जिन्होंने कोई कानून विरूद्ध कार्य किया है, ऐसे बच्चों को पुलिस द्वारा अपनी अभिरक्षा में लेने के 24 घण्टे के भीतर किशोर न्यायिक बोर्ड के समक्ष प्रस्तुत करना आवश्यक है तथा किशोर न्याय अधिनियम, 2015 की धारा 12 के अनुसार न्यायिक बोर्ड के समक्ष प्रस्तुत करने के बाद बच्चों को जमानत पर छोड़कर घर भेजने का प्रावधान भी है। यदि जमानत नहीं दी जाती है तो बच्चे को संप्रेक्षण गृह में रखा जाता है तथा वहीं पर उसकी काउंसलिंग व उचित परामर्श के साथ आगे की कार्यवाही की जाती है तथा किशोर न्याय की अवधारणा को मूर्त रूप प्रदान किया जाता है।

किशोर न्याय अधिनियम, 2015 की धारा 3 के अंतर्गत विधि विरूद्ध बच्चों के मानवधिकार संरक्षण हेतु 16 सिद्धान्त जो कोविड 19 महामारी के दौर में उनके हित संवर्धन हेतु आवश्यक है, उनका वर्णन इस प्रकार है –

निदोषिता की अवधारण का सिद्धान्त :– इसके अंतर्गत 18 साल के व्यक्ति, जिसे यह कानून बच्चा मानता है को आपराधिक आशय का दोषी नहीं माना जाएगा।

गरिमा व योग्यता का सिद्धान्त :– इसके अंतर्गत सभी मनुष्यों के साथ गरिमापूर्ण व अधिकारों में समान बर्ताव किया जाना चाहिए।

भाग लेने (सहभागिता) का सिद्धान्त :– इसके अंतर्गत प्रत्येक बच्चे को अपनी बात कहने व उसके सुने जाने का व उसके हितों को प्रभावित करने वाली हर प्रक्रिया व निर्णयों में सहभागी होने का अधिकार प्राप्त है।

सर्वोत्तम हित का सिद्धान्त :– इसके अंतर्गत बच्चों से सम्बंधित हर प्रक्रिया इस सिद्धान्त पर आधारित होनी चाहिए। यह प्रक्रिया बच्चों के सबसे ज्यादा हित में है और बेहतरी के लिए है।

कौटुम्बिक जिम्मेदारी का सिद्धान्त :– इसके अंतर्गत बच्चे की देखरेख, उसके पोषण व उसकी सुरक्षा की सबसे पहली जिम्मेदारी उसके परिजन–परिवार की है।

सुरक्षा का सिद्धान्त :– इसके अंतर्गत यह सुनिश्चित करना है कि बच्चा सुरक्षित रहें। देखरेख व संरक्षण की प्रक्रिया में रहते हुए तथा उसके बाद भी उसे हानि नहीं पहुंचे, उसके साथ दुर्व्यवहार नहीं हो तथा बुरा बर्ताव नहीं किया जाए। सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम किये जाएँ।

गैर–कलंकीय शब्दार्थो का सिद्धान्त :– इसके अंतर्गत बच्चों के सम्बन्ध में ऐसे शब्दों का उपयोग नहीं किया जाएगा, जो उन्हें अभियोगी बताते हो या उनके प्रतिकूल हो । अधिकारों का त्याग नहीं किये जाने का सिद्धान्त इसके अंतर्गत बच्चों के अधिकारों को किसी भी परिस्थिति में सीमित नहीं किया जाएगा इसका प्रावधान है।

समानता का विभेद नहीं किये जाने का सिद्धान्त इसके अंतर्गत किसी भी बच्चे के खिलाफ किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा व हर बच्चे को पहुँच, अवसर व बर्ताव में समानता का हक प्राप्त है।

एकान्त व गोपनीयता का अधिकार सिद्धान्त इसके अंतर्गत हर बच्चे को सभी तरीकों से पूरी न्यायिक प्रक्रिया में निजता व गोपनीयता की सुरक्षा का अधिकार प्राप्त है।

संस्थागत संरक्षण का सिद्धान्त यानी हर बच्चे को प्रकरण में जाँच के बाद बिना किसी देरी के संस्थागत देखरेख में रखा जाएंगा।

परिवार, कुटुम्ब, समुदाय में फिर से मिलने–बसने का अधि कार यानी किशोर न्यायिक प्रक्रिया में हर बच्चे को जल्दी से जल्दी अपने परिवार कुटुम्ब में फिर से मिलने व उसी सामाजिक–आर्थिक–सांस्कृतिक व्यवस्था में फिर से जाने, पुनः बसने का अधिकार प्राप्त है।

नये सिरे से शुरूआत करने का सिद्धान्त यानी कानून के तहत कुछ परिस्थितियों को छोड़ कर, बच्चे के प्रकरण से सम्बन्धि पिछले सभी कागज, अभिलेख नष्ट कर दिए जाने का अधिकार प्राप्त है।

सकारात्मक उपाय का सिद्धान्त इसके अंतर्गत बच्चों के कल्याण को प्रोन्नति, पहचान के विकास और असुरक्षा कम करने के लिए समावेशित वातावरण उपलब्ध कराने के लिए परिवार और समुदाय को गतिमान किया जाना चाहिए।

अपयोजन का अधिकार यानी कानून का उल्लंघन करने वाले बच्चे से सम्बन्धित कार्यवाहियों को अविलम्ब निपटाया जाना चाहिए।

नैसर्गिक न्याय का सिद्धान्त यानी सभी व्यक्तियों के लिए न्यायोजित व निष्पक्ष प्रक्रिया के मानकों का (जैसे उचित सुनवाई, निष्पक्षता, समीक्षा आदि) पालन हो।

किशोर न्याय आदर्श नियम 2016 के अंतर्गत राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में रहने के दौरान बच्चों के हित संवर्धान हेतु निम्न प्रावधान किए गए है।

नियम 30 :– राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में रहने के दौरान बच्चों को कपड़े, बिस्तर और प्रसाधन के सामान आदि की उपलब्धता का प्रावधान है।

नियम 31 :– इस नियम के अंतर्गत यह प्रावधान है कि बच्चों को राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में स्वच्छता व सफाई की उपलब्धता प्राप्त होगी।

नियम 32(2) :– इस नियम के अंतर्गत यह प्रावधान है कि बच्चों के जीवन को अनुशासित बनाने हेतु राजकीय सम्प्रेक्षण गृह की दिनचर्या में रोजमर्रा की क्रियाओं के अन्तर्गत निजी स्वछता, शारीरिक व्यायाम, व्यावसायिक प्रशिक्षण, मनोरंजन तथा नैतिक शिक्षा आदि हेतु विशेष कार्यक्रम होने चाहिए।

नियम 33 :– राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में रहने वाले बच्चो के पोषण व और आहार मानक का उल्लेख किया गया है। नियम 33 (8) खण्ड (iv) के अनुसार अस्वस्थ बच्चों को विशेष चिकित्सा भोजन तथा नियम 33 (8) खण्ड (iv) में उल्लेख किया गया है कि छुट्टी और त्यौहार के दिनों में बच्चों को विशेष भोजन देने का प्रावधान है।

नियम 34 :– इस नियम के अंतर्गत राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में रहने के दौरान बच्चों को चिकित्सा व्यवस्था की सुविधा प्राप्ति का अधिकार हैं।

नियम 35 (5) :– इसके अंतर्गत प्रावधान है कि राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य हेतु प्रशिक्षित सलाहकारों की सेवाएं मनोवैज्ञानिक आंकलन और रोग निदान के लिए प्राप्त होगी।

नियम 36(1) :– इस नियम के अंतर्गत राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में बच्चे की आयु और क्षमता के अनुसार शिक्षा प्राप्ति का अधिकार प्राप्त है।

नियम 37(1) :– इस नियम के अंतर्गत राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में बच्चों को उनकी आयु, रूचि, क्षमता व योग्यता अनुसार व्यावसायिक प्रशिक्षण की प्राप्ति का अधिकार प्राप्त है।

नियम 38(1) :– इस नियम के अंतर्गत राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में रहने के दौरान बच्चों के मानसिक,

बौद्धिक व शारीरिक विकास हेतु योग, ध्यान, संगीत, टेलीविजन, पिकनिक हेतु बाहर जाना और सांस्कृतिक कार्यक्रम, बगीचे की देखरेख, पुस्तकालय, डांस आदि की व्यवस्था का अधिकार प्राप्त है।

नियम 74 (1) :– इस नियम के अंतर्गत बच्चों के अभिभावकों को राजकीय सम्प्रेक्षण गृह में बच्चों के रहने के दौरान सप्ताह में एक बार मिलने का अधिकार प्राप्त है।

नियम 78 :– यह नियम राजकीय सम्प्रेषण गृह के खुलापन व पारदर्शिता को रेखांकित करता है।

नियम 78 (1) :– प्रत्येक नागरिक जो स्वैछिक संस्थाएं, सामाजिक कार्यकर्ता, अनुसंधानकर्ता और शिक्षक है वे अध्ययन हेतु किशोर न्याय बोर्ड या प्रभारी व्यक्ति की अनुमति से यहाँ पर आ सकता है।

3. कोविड 19 महामारी के दौर में न्यायालय द्वारा निर्देशित दिशा निर्देश विधि विरूद्ध बालकों के परिप्रेक्ष्य में :–

बच्चे किसी भी देश के भविष्य निर्धारक तत्व है। उनके मानवधिकारों के संरक्षण हेतु वैश्विक व राष्ट्रीय स्तर पर अनेक कानूनों व अनेक समझौते राष्ट्रों के मध्य समय–समय पर होते रहते हैं, इसके अतिरिक्त बच्चों के अधिकार संरक्षण हेतु देश की न्यायिक प्रणाली द्वारा विशेष परिस्थितियों में या आवश्यकता अनुसार स्वतः संज्ञान लेते हुए निर्देशित किया जाता है कि इस प्रकार से बच्चों के हितों का संवर्धन किया जाए। 21वीं सदी की इस वैश्विक महामारी के दौर में न्यायालय ने अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए बाल देखरेख संस्थाओं तथा विधि विरूद्ध बच्चों के सर्वोत्तम हितों तथा किशोर न्याय की अवधारणा को साकार करने हेतु इस प्रकार के महत्वपूर्ण कदम उठाए जिसका विवरण इस प्रकार है –

देश में वैश्विक महामारी को मदेनजर रखते हुए 22 मार्च को जनता कर्फ्यू के बाद 25 मार्च 2020 से 14 अप्रैल तक 1 चरण का लॉक डाउन घोषित किया गया था। 3 अप्रैल 2020 कोविड महामारी को ध्यान में रखते हुए बाल देखभाल संस्थाओं में भीड़ कम करने के लिए, सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति एल. नागेश्वर राव और दीपक गुप्ता की खण्ड पीठ ने बाल संरक्षण गृहों की दशा पर स्वतः संज्ञान लेते हुए किशोर न्याय बोर्ड और बाल न्यायालयों को निर्देश दिया : वे उन बच्चों को अस्थाई जमानत पर रिहा करने पर विचार करें, जो कानून के साथ संघर्ष के चलते इन गृहों में रखे गए है तथा जो किशोर न्याय अधिनियम 2015 की धारा 12 के अंतर्गत आते हो। इसके अतिरिक्त पीठ द्वारा बाल देखरेख संस्थाओं में सुरक्षा व व्यक्तिगत स्वच्छता उत्पादों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया गया।

न्यायालय द्वारा निर्देशित प्रमुख दिशा निर्देश :–

जिन बच्चों को उनके परिजनों के पास भेजा जा रहा है, उनके मामलों में दूरभाषा के माधयम से बाल कल्याण समितियों द्वारा निगरानी की जाए व जिला बाल संरक्षण समितियों के माध्यम से समन्वय भी किया जाए।

किशोर न्याय बोर्ड व बाल न्यायालयों द्वारा बच्चों से सम्बंधि पूछताछ तथा बच्चों से जुड़े मामलों को तेजी से निपटाने हेतु ऑनलाइन वीडियों सेशन के माध्यम से सुनवाई की जाए। बाल देखरेख संस्थाओं में कार्यरत कर्मियों द्वारा कार्य अवधा के दौरान किसी प्रकार की चूक होने पर किशोर न्याय आदर्श नियम 2016 के नियम 66(1) के अनुसार सख्त कार्यवाही की जाए।

संस्थाओं में रखे गए बच्चों की नियमित जांच की जाए और हेल्थ रफेरल सिस्टम का पालन किया जाए।

सीसीआई सकारात्मक स्वच्छता व्यवहारों के अभ्यास, प्रचार और प्रदर्शन के लिए आवश्यक कदम उठाएं

और उनको अपनाए जा रहा है या नहीं इसकी निगरानी की जाए।

न्यायमूर्ति एल. नागेश्वर राव और दीपक गुप्ता की खण्डपीठ द्वारा व्यक्त विचार :–

'ऐसे बच्चे है जिन्हें देखभाल और ध्यान की आवश्यकता होती है, परन्तु उनकों इन होम में रखा गया है। वहीं कानून के साथ संघर्ष कर रहे बच्चों को भी विभिन्न प्रकार के होम में रखा जाता है। ऐसे बच्चे भी होते हैं जिन्हें पालक और रिश्तेदारी की देखभाल में रखा जाता है। इन परिस्थितियों में, यह महसूस किया गया है। कि इन बच्चों के हित पर ध्यान दिया जाना चाहिए'।

जमानत पर रिहा बच्चों की शिक्षा हेतु न्यायालय निर्णय :–

15 दिसम्बर 2020 को सुप्रीम कोर्ट के न्यायमूर्ति एल नागेश्वर राव, हेमन्त गुप्ता व अजय रस्तोगी की पीठ ने सभी राज्य सरकारों को निर्देश दिया कि उनके द्वारा कोविड महामारी के दौरान परिवारों को सौंपे गए बाल देखभाल संस्थाओं के बच्चों को उनकी शिक्षा के लिए हर माह 2 हजार रूपये प्रदान किए जाए। न्यायालय द्वारा दिया गया यह आदेश बच्चों के शिक्षा के अधिकार प्राप्ति में सहायक का कार्य करेगा जिससे ज्ञानवान जीवन की परिकल्पना को साकार किया जा सकता हैं तथा एक सुखमय व गरिमामय जीवन की अभिलाषा की जा सकती है, जिससे समाज विरोधी कार्य करने वाले बच्चों को समाज की मुख्य धारा में आसानी से लाया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार बाल सुधार गृह में रह रहे बच्चों को अंतरिम जमानत पर छोड़ने की प्रक्रिया के अंतर्गत दण्ड से स्पष्ट होता है कि देश में प्रथम लॉकडाउन से पूर्व कितने बच्चे बाल देखरेख संस्थाओं में रह रहे थे व कितनों को अंतरिम जमानत पर रिहा किया गया।

निष्कर्ष :–

21वीं सदी की इस वैश्विक महामारी के दौरान न्यायालय ने बाल देखरेख संस्थाओं में रह रहे विधि विरूद्ध बच्चों के हितों को ध्यान में रखकर स्थापित कानूनों व अंतर्राष्ट्रीय अनुबंधों के उचित क्रियान्वयन हेतु महत्वपूर्ण दिशा निर्देश जारी किए जो मानवाधिकार संरक्षण हेतु आवश्यक था, जिसके अंतर्गत बच्चों से जुड़े मामलों को तेजी से निपटाने हेतु ऑनलाइन वीडियों सेशन के माध्यम से सुनवाई का प्रावधान किया गया, बाल देखरेख संस्थाओं में कार्यरत कर्मियों द्वारा कार्य अवधि के दौरान किसी प्रकार की चूक होने पर किशोर न्याय आदर्श नियम 2016 के नियम 66(1) के अनुसार सख्त कार्यवाही हेतु निर्देश दिया गया तथा अन्य बिन्दुओं के अंतर्गत बच्चों के सर्वोत्तम हित हेतु अनेक दिशा निर्देश न्यायालय द्वारा दिए गये जो मानवधिकार संरक्षण में सहायक हैं।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. मिश्रा. डॉ महेन्द्र कुमार, 2008, भारत में मानवधिकार, आत्म राम एण्ड सन्स, जयपुर।
2. सिंह, डॉ संजय, 2010, मानवाधिकार और दलित, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
3. भसीन अनीश, 2011, जानिए मानव अधिकारों को, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. https://www.nhrc.nic.in
5. https://hindi.livelaw.in/releasing&children&from& covid&19&sc&directs&jjbs&154771
6. https://www.amarujala.com/&provide&rs&2000&per&month&to&
7. https://m.jagran.com/world/& generate&know&more&the&expert&20207467.Html
8. https://www.orfonline.org/& like&after&the&coronavirus&epidemic& 64599/\amp

DEVKARAN RAM HUDDA S/o SHRI HARIRAM HUDDA
VPO – Morra, Teh. Merta city, Dist. Nagaur (Rajasthan) Pin code – 341510, M. 9549173401, 9660076411
Email : huddasusheel@gmail.com

www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
April 2023 Page No. : 182-185

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Opportunities for Exchanging Sports BowlingManagement Skills in Career of Youth Cricketers in Bikaner Region

Jitender Singh, Researcher
Dr. Braj Kishor Choudhary, Supervisor
Tantia University, Sriganganagar, Rajasthan.

Introduction :-

Sports Management is a noticeably new concept in India taught in only a few institutes at some stage in the Sports and video games are critical for the holistic improvement of the man or woman. Today, sports activities of several types are performed at some point of international locations and with the passage of time large portions of cash, call, reputation, and glamour and media hobby have grown to be an important part of any pastime.

Sports manage is the study of making plans, supervising and organizing numerous sporting sports like international and domestic tournaments for cricket, soccer, hockey, golf, and numerous specific video games.

Cricket :-

In the game of cricket effectiveness of the player's ability to act quickly andaccurately depends upon how efficient the visual system can process theinformation.Cricket may be a bat-and-ball amusement played between two bunches of 11 playerson a field, at the central point of which may be a rectangular 22-yard long pitch. One bunchbats, endeavouring to score anything number keeps running as may well be anticipatedbeneath the circumstances whereas the other gather bowls and areas, endeavouring to dismissthe batsmen and along these lines constrain the runs scored by the batting bunch. A run isscored by the striking batsman hitting the ball with his bat, hustling to the distant edge of thepitch and reaching the wrinkle there without being removed.

Sports Management Skills :-

Before searching at any Situation as a profession preference, it is often useful to assess your talent set and person kind. The kinds of capabilities required for dealing with Sports Finance are

manifestly exclusive from those required to deal with Sports Operations. But we ought to actually enlist a few abilities important for Sports Management in famous.

BOWLING :-

Bowlers require both explosive strength and speed,combined with good muscular endurance, in order to be able tomaintain a high count of number of overs. Poor fitness andmuscular strength will result in inaccurate bowling and greaterrisk of injury, especially for high speed bowlers and also allowsthe batsmen to settle down in the wicket to score more runs. Allplayers will at some time in the game, bat and field. A crickettraining programme shall be designed with these as objectives inthe mind.

Methodology :-

Researcher has used survey method to get the information of the present circumstances.

Sample :-

The present study will be based on 100youth cricketers who were the participants of inter-collegiate level tournament at Bikaner Region's rural and urban area.Samples will be collected from various colleges from Bikaner Region. Researcher collects data from various colleges for raw score. Total sample are 100 in which 50 rural area's player and 50 urban area's players. The selected players must have shown their ability at district level tournaments several times.

Data Collection :-

To achieve the purpose of the present study, 100youth cricketers studying in college were selected assubjects. They were between the age group of 19-24 years. The selectedsubjects were given opportunities for exchanging their sports management skill performance through pre-test and post-test. A pre-test is taken before exchange their skill and after a post-test has been taken. Researcher collects data from pre-test and post-test of youth cricketers in help of questionnaire.

Tool :-

The researchers have used Rating Scale for Evaluation of exchanging Sports Management Skills in Cricket for this study.

Objective :-

To find out the significant difference in opportunities for exchanging sports bowling management skills in career of youth cricketers in Bikaner region.

Analysis of Data :-

Table showing the significant difference in opportunities for exchanging sports bowling management skills in career of youth cricketers in Bikaner region-

Table – 1 (Bowling)

Source of Variation	N	Mean	S.D.	Df.	t-value	Level of significance
Pre Test	100	35.26	4.49	198	3.98	S*
Post Test	100	37.34	4.78			

*Significant at 0.01& 0.05 levels

Table 1-Significant difference in opportunities for exchanging sports batting management skills in career of youth cricketers in Bikaner region-

Description :–

In order to compare the bowling performance among pre-test and post-test of youth cricketer's independent t-test was applied. To determine the significance dissimilarity among means of score of pre-test & post-test of youth cricketers, the level of significance was set at (0.01 &0.05).

Mean score of pre-test & post-test of youth cricketer's 35.26 and 37.34 with a SD values are 4.49 and 4.78 respectively. Since the considered t value is 3.98 which are greater than tabulated t value.So it was major at both (0.01 & 0.05) levels. It may be completed to there is significantdifference in opportunities for exchanging sports bowling management skills in career of youth cricketers in Bikaner region.

Table 1. Reveals that the significant difference in opportunities for exchanging sports bowling management skillsin career of youth cricketers among pre-test and post-test was 3.98 which are greater than the requiredvalue.

So the null hypothesis, "There is no significant difference in opportunities for exchanging sports bowling management skills in career of youth cricketers in Bikaner region" was rejected.

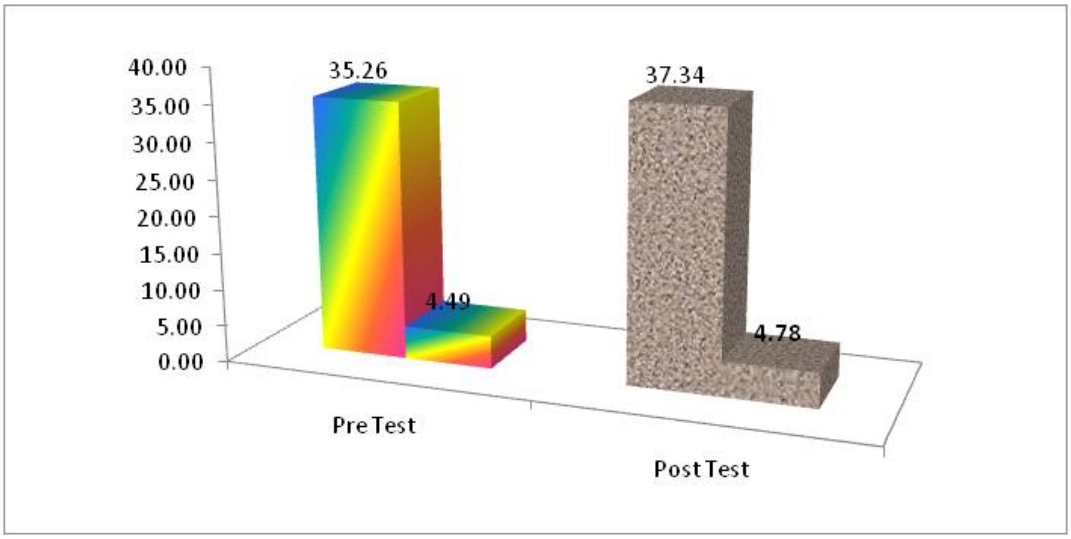

Result :-

There is significant difference in opportunities for exchanging sports bowling management skills in career of youth cricketers in Bikaner region.

Conclusion :-

The current research work was undertaken into the opportunities for exchanging sports management skills in career of youth cricketers in Bikaner region. Therefore it now becomes essential at this stage of the research work to see whether the hypothesis were rejected or accepted on the basis of data analyzed.

References :-

1. Amarnath, Mohinder (1996), Learn to Play Good Cricket. New Delhi : UBS Publishers Distribution Ltd.
2. Barrow Harold M., Man and Movement (1983), Principles of Physical Education. Third Edition, Lea aFebiger, Philadelphia, 1983, P-167.
3. Bright Jagat S. (1973), Right Way to Play Cricket, (Delhi: Universal Publication), p. 6.
4. Bucher Charles A. (1983), Foundation of Physical Education and Sports, Edition 9th, The Mosby Co. St. Louis, Toronto, P - 7.
5. Cogan,K., and Bryant. J. Cratty (1986),The self-management skills of women gymnasts. Didactica Dellomovimento, 12. p. 45-47.
6. Conrad Frederick A. (2012), "A Comparison of the Effect of Skill Practice Sessions on Vertical Jumping Ability" Completed Research in Health, Physical Education and Recreation 8 : 96
7. Elizabeth S. Bressan (2003), Effects of visual skills training, vision coaching and sports vision dynamics on the performance of a sport skill, African Journal forPhysical, Health Education, Recreation and Dance , Volume 9, No 1.
8. Felshin Jan (1972),More than Movement, an Introduction to Physical Education, (Philadelphis Lea and Febiger), p. 37.
9. Gill Manmeet, et.al., (2010), "Comparative Study of Physical Fitness Components of Rural and Urban Female Students of Punjabi University, Patiala", Anthropologist, 12(1): 17-21
10. Helsen, W.F., &Starkes, J.L. (1999),A multidimensional approach to skilled perception and performance in sport. Applied Cognitive Psychology, 13: 1–27.

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

डॉ. वर्षा रानी

संस्कृत विभाग,
डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
संपर्क सूत्र - 9671904323
ईमेल vasu14rani@gmail.com

शिक्षा :- M.Ed; MA (संस्कृत), UGC NET/JRF, Ph.D

प्रकाशन, सम्मान एवं अनुसंधान :-

- नारी गौरव सम्मान 2022
- कृष्णा बसंती रिसर्च लिटरेचर एक्सीलेंस अवॉर्ड 2022
- गीना देवी शोधश्री सम्मान 2023, गीना देवी शोध संस्थान, भिवानी।
- 6 पुस्तकें प्रकाशित।
- 2 पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य चल रहा है।
- 11 शोध आलेख प्रकाशित।
- 32 सेमिनार, कॉन्फ्रेंस, वेबीनार इत्यादि में सहभागिता।
- अन्तराष्ट्रिय विद्वत् संगोष्ठी में सहभागिता और सम्मानित।
- बोहल शोध मंजूषा पत्रिका की विषय विशेषज्ञ/परामर्शदात्री/शोधपत्र निरीक्षण समिति में शामिल।
- एशियन सोसाइटी ऑफ डिजास्टर मैनेजमेंट की सदस्य।

Dr. Neelam Yadav

(NET, Ph.D; D.Litt.)
Assistant Professor
भाषा विज्ञान विभाग, डॉ. बी. आर. आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा (उ.प्र.)

प्रकाशन, सम्मान एवं अनुसंधान :-

- 4 पुस्तकें प्रकाशित।
- 17 शोध आलेख प्रकाशित।
- 37 सेमिनार, फ्रेंस, बेबीनार इत्यादि में सहभागिता।
- अन्तराष्ट्रिय विद्वत् संगोष्ठी में सहभागिता और सम्मान।
- गीना देवी शोधश्री सम्मान 2023, गीना देवी शोध संस्थान, भिवानी।
- एशियन सोसाइटी ऑफ डिजास्टर मैनेजमेंट की सदस्य।
- **Member of Editorial Board of International Research Journal of English Language & Literature IRJELL.**
- **20 Invited Lecture.**

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115